* श्रीजिनाय नमः *

जिनज्ञान रत्नाकर।

प्रकाशक—

कस्तूरचन्द सूरजमल चौधरी।

मु० बड़नगर (मालवा)

मुद्रक—

महालचन्द बयेद।

"ओसवाल प्रेस"

१९, सीनागोग स्ट्रीट, (हमामगली)

कलकत्ता।

वीर निर्वाणाब्द २४६०

प्रथमावृत्ति ३०००]

[अमूल्य


विषय-सूची ।

॥ मंगलाचरण ॥

दोहा।

ॐ नमो अरिहन्त सिद्ध, आचारज उवज्झाय।
साधु सकल के चरण कूं, वन्दूं शीश नमाय ॥१॥
महामन्त्र ए सुध जपूं, प्रात समय सुखकार।
विघ्न मिटै संकट कटै, बरतै जय जयकार ॥२॥
सुमरूं श्री भिक्षु गुरु, प्रबल बुद्धि भण्डार।
तासु प्रसादे पामिये, समकित रत्न उदार ॥३॥

॥ णमो अरिहंताणं ॥

नमस्कार थावो अरिहंत भगवंतने।

ते अरिहंत भगवंत केहवा छै १२ बारे गुणे करी सहित छै ते कहै छै अनन्तो ज्ञान १ अनन्तो दर्शण २ अनन्तो बल ३ अनन्तो सुख ४ देव ध्वनि ५ भामण्डल ६ फटिक सिंहासण ७ आशोकवृक्ष ८ पुष्प वृष्टि ९ देव दुन्दुभी १० चमरबीजै ११ छत्र धारे १२

॥ णमो सिद्धाणं ॥

नमस्कार थावो सिद्ध भगवंतने।

ते सिद्ध भगवंत केहवा छै आठ गुणे करी सहित छै ते कहै छै केवल ज्ञान १ केवल दर्शण २ आत्मिक

सुख ३ षायक समकित ४ अटल अवगाहणा ५ अमु-र्त्तिभाव ६ अगुरु लघुभाव ७ अन्तराय रहित ८

॥ णमो आयरियाणं ॥

नमस्कार थावो आचाय महाराजने ।

ते आचार्य महाराज केहवा छै ३६ षटत्रीस गुणे-करी सहित छै ते कहै छै आरजदेश ना उपनां १ आरज कुल ना उपनां २ जातवंत ३ रूपवंत ४ थिर संघयण ५ धीरजवंत ६ आलोवणा दूसरा पासे कहे नहीं ७ पोतेरा गुण पोते वर्णन न करे ८ कपटी न होवे ९ शब्दादिक पांच इन्द्री जीते १० राग द्वेष रहित होवे ११ देश ना जाण होवे १२ काल नां जाण होवे १३ तिक्षण बुद्धि होवे १४ घणा देशांरी भाषा जाणे १५ पांच आचार सहित १६ सूत्रांरा जाण होवे १७ अर्थरा जाण होवे १८ सूत्र अर्थ दोना रा जाण होवे १९ कपटकरी पूछै तो छलावे नहीं २० हेतुना जाण होवे २१ कारणरा जाण होवे २२ दृष्टान्त ना जाण होवे २३ न्यायरा जाण होवे २४ सीखने समर्थ २५ प्रायश्चित्तना जाण होवे २६ थिर परिवार २७ आदेज बचन बोले २८ परीषह जीते २९ समय परसमय ना जाण ३० गंभीर होवे ३१ तेजवंत होवे ३२ पण्डित विचक्षण होवे ३३ सोमचन्द्रमाजिसा ३४ शूरवीर होवे ३५ बहु गुणी होवे ३६ ।

पुनः

५ पांच इन्द्रि जीते ४ च्यार कषाय टाले, नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य पाले ५ पंच महाव्रत पाले ५ पंच आचार पाले ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ तप ४ वीर्य ५, ५ पंच सुमति पाले इर्या १ भाषा २ ऐषणा ३ अयाण भंडमत नषेवणा ४ उचारपासवण ५, ३ तीन गुप्ति मन १ बचन २ काय गुप्ति ३

इति षटत्रीस गुण संपूर्ण ।

॥ णमो उवज्झायाणं ॥

नमस्कार थावो उपाध्याय महाराजने ।

ते उपाध्याय महाराज केहवा छै २५ पचवीस गुणे करी सहित छै ते कहै छै १४ चवदे पूरब ११ इग्यारे अंग भणे भणावे ।

पुनः

११ इग्यारे अंग १२ बारे उपंग भणे भणावे ।

॥ णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

नमस्कार थावो लोकने विषै सर्व साधु मुनिराजोंने

ते साधु मुनिराज केहवा छै सतवीस गुणे करी सहित छै ते कहे छै ५ पंच महाव्रत पाले ५ इन्द्री जीते ४ च्यार कषाय टाले भाव संत्त्य १५ करण संत्त्य १६

जोग संचय १७ क्षमावंत १८ वैराग्यवंत १९ मन समा धारणिया २० बचन समा धारणिया २१ काय समा धारणिया २२ नाण संपना २३ दर्शन संपना २४ चारित्र संपना २५ वेदनी आयां समो अहियासे २६ मरण आयां समो अहियासे २७

इति संपूर्णम्।

॥ सामायक लेणेकी पाटी ॥

करेमि भन्ते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चखामि जाव नियमं (मुहूर्त्त एक) पज्जुवासामि दुविहेणं तिविहेणं मणेणं वायाये कायाये न करेमि न कारवेमि तस्स भन्ते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि।

॥ सामायक पारणेकी पाटी ॥

नवमा सामायक व्रतके विषै ज्यो कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोऊं सामायक में समता न कीधी बिकथा कीधी हुवे अणपूरी पारी होय पारतां बिसार्यो होय मन बचन काया का जोग माठा परिवरताया होय सामायक में राज कथा देश कथा स्त्री कथा भत्त कथा करी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

॥ अथ तिक्खुत्ता की पाटी ॥

तिक्खुत्तो अयाहीणं पयाहीणं वन्दामि नमंसामि

सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मङ्गलं देइयं चेइयं पज्जु वासामि मत्थेण वन्दामि ।

अथ पंचपद वन्दणा ।

पहिले पद श्री सीमंधर स्वामी आदि देई जघन्य २० (बीस) तीर्थङ्कर देवाधिदेवजी उत्कृष्टा १६० (एक सह साठ) तीर्थङ्कर देवाधिदेवजी पञ्च महाविदेह खेत्रां के विषै बिचरै छै अनन्त ज्ञान का धणी अनन्त दर्शण का धणी अनन्त बल का धणी एक हजार आठ लक्षणा का धारणहार चौसठ इन्द्रां का पूजनीक, चौतीस अति-शय, पेंतीस बाणी, द्वादश गुण सहित बिराजमान छै ज्यां अरिहन्ता से मांहरी वन्दना तिक्खुता का पाठ से मालूम होज्यो ।

दूजे पद अनन्ता सिद्ध पन्दरा भेदे अनन्ती चौवीसी मोक्ष पहुंता तिहां जनम नहीं जरा नहीं रोग नहीं सोग नहीं मरण नहीं भय नहीं संयोग नहीं वियोग नहीं दुःख नहीं दारिद्र नहीं फिर पाछा गर्भावास में आवै नहीं इसा उत्तम सिद्ध भगवन्ता से मांहरी वन्दना तिक्खुत्ता का पाठ से मालूम होज्यो ।

तीजे पद जघन्य दोय कोड़ केवली उत्कृष्टा नव कोड़ केवली पञ्च महाविदेह खेत्रां में विचरै छै केवल

ज्ञान केवल दर्शण का धारक लोकालोक प्रकाशक सर्व द्रव्य खेत्र काल भाव जाणै देखै छै ज्यां केवलीजी से मांहरी वन्दना तिक्खुत्ता का पाठ से मालूम होज्यो।

चौथे पद गणधरजी आचार्यजी उपाध्यायजी थविर जी ते गणधरजी महाराज केहवा छै अनेक गुणा विराजमान छै आचार्यजी महाराज केहवा छै छत्तीस गुणा विराजमान छै उपाध्यायजी महाराज केहवा छै पचीस गुणा विराजमान छै थविरजी महाराज केहवा छै धर्म से डिगता हुआ प्राणी ने थिर करी राखै शुद्ध आचार पालै पलावे ज्यां उत्तम पुरुषां से मांहरी वन्दना तिक्खुत्ता का पाठ से मालूम होज्यो।

पञ्चमें पद मांहरा धर्म आचारज गुरु पूज्य श्री श्री श्री १००८ श्री श्री कालूरामजी स्वामी (वर्त्तमान आचारज को नाम लेणो) जघन्य दोय हजार कोड़ साधु साध्वी उत्कृष्टा नव हजार कोड़ साधु साध्वी अढ़ाई द्वीप पन्दरै खेत्रां में विचरै छै ते महा उत्तम पुरुष केहवा छै, पञ्च महाव्रत का पालणहार, छव काया ना पीहर, पञ्च सुमति सुमता, तीन गुप्ति गुप्ता, बारै भेदै तपस्या का करणहार, बावीस परीषह का जीतणहार, बयालीस दोष टाल आहार पाणी का लेवणहार, बावन अनाचार का टालणहार, सताबीस गुण संयुक्त निर्लोभी

निरलालची, सचित्त का त्यागी, अचित्त का भोगी, संसार सें पूठा, मोक्ष से म्हामां, अस्वादी, त्यागी, बैरागी, तेडिया आवै नहीं, नोंतियां जीमें नहीं, बायरा नीं परै अप्रतिबन्ध विहारी इसा महापुरुषां से मांहरी बन्दना तिक्खुत्ता का पाठ से मालूम होज्यो ।

पच्चीस बोल ।

१ पहले बोलै गति च्यार ४

नरकगति १ तिर्यंचगति २ मनुष्यगति ३ देव-गति ४

२ दूजै बोलै जाति ५

एकेन्द्री, बेइन्द्री, तेइन्द्री, चौइन्द्री, पंचेन्द्री,

३ तीजै बोलै काया छव ६

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वायुकाय ४ बनस्पतिकाय ५ त्रसकाय ६

४ चौथे बोलै इन्द्रियां ५

श्रोतइन्द्री १ चक्षुइन्द्री २ घ्राणइन्द्री ३ रसइन्द्री ४ स्पर्शइन्द्री ५

५ पांचमें बोलै पर्याय छव ६

आहार पर्याय १ शरीर पर्याय २ इन्द्रिय पर्याय ३ श्वासोश्वास पर्याय ४ भाषा पर्याय ५ मन पर्याय ६

६ छठै बोलै प्राण १०

श्रोतइन्द्री बलप्राण १ चक्षुइन्द्री बलप्राण २ घ्राण-इन्द्री बलप्राण ३ रसेन्द्री बलप्राण ४ स्पर्शइन्द्री बलप्राण ५ मन बलप्राण ६ बचन बलप्राण ७ काया बलप्राण ८ श्वासोश्वास बलप्राण ९ आयुष बलप्राण १०

७ सातमें बोलै शरीर पांच ५

औदारिक शरीर १ बैक्रिय शरीर २ आहारिक शरीर ३ तेजस शरीर ४ कार्मण शरीर ५

८ आठवें बोलै जोग पन्द्रह १५

४ च्यार मनका

सत्य मन जोग १ असत्य मन जोग २ मिश्र मन जोग ३ व्यवहार मन जोग ४

४ च्यार बचन का

सत्य भाषा १ असत्य भाषा २ मिश्र भाषा ३ व्यवहार भाषा ४

७ काया का

औदारिक १ औदारिक मिश्र २ बैक्रिय ३ बैक्रिय को मिश्र ४ आहारिक ५ आहारिक मिश्र ६ कार्मण जोग ७

९ नवमें बोलै उपयोग बारह १२

५ पांच ज्ञान

मति ज्ञान १ श्रुति ज्ञान २ अवधि ज्ञान ३ मन पर्यव ज्ञान ४ केवल ज्ञान ५

३ तीन अज्ञान

मति अज्ञान १ श्रुति अज्ञान २ विभङ्ग अज्ञान ३

४ च्यार दर्शन

चक्षु दर्शन १ अचक्षु दर्शन २ अवधि दर्शन ३ केवल दर्शन ४

१० दशमें बोलै कर्म आठ ८

ज्ञानावरणी कर्म १ दर्शनावरणी कर्म २ वेदनी कर्म ३ मोहनीय कर्म ४ आयुष्य कर्म ५ नाम कर्म ६ गोत्र कर्म ७ अन्तराय कर्म ८

११ इग्यारमें बोलै गुणस्थान चौदा १४

१ पहिलो मिथ्यात्व गुणस्थान

२ दूजो सहस्वादन समदृष्टि गुणस्थान

३ तीजो मिश्र गुणस्थान

४ चौथो अव्रत समदृष्टि गुणस्थान

५ पांचमों देशव्रत श्रावक गुणस्थान

६ छठो प्रमादी साधू गुणस्थान

७ सातमो अप्रमादी साधू गुणस्थान

८ आठमों नियट्ट बादर गुणस्थान

९ नवमों अनियट्ट बादर गुणस्थान

१० दशमूं सूक्ष्म संपराय गुणस्थान

११ इग्यारमूं उपशान्त मोह गुणस्थान

१२ बारमूं क्षीणमोहनीय गुणस्थान

१३ तेरमूं संयोगी केवली गुणस्थान

१४ चौदमूं अयोगी केवली गुणस्थान

१२ बारमें बोलै पांच इन्द्रियां की तेवीस विषय

श्रोतइन्द्री की तीन विषय

जीव शब्द १ अजीव शब्द २ मिश्र शब्द ३

चक्षु इन्द्री की पांच विषय

कालो १ पीलो २ नीलो ३ रातो ४ धोलो ५

घ्राणइन्द्री की दोय विषय

सुगन्ध १ दुर्गन्ध २

रसइन्द्री की पांच विषय

खट्टो १ मीठो २ कड़वो ३ कसायलो ४ तीखो ५

स्पर्श इन्द्री की आठ विषय

हलको १ भारी २ खरदरो ३ सुहालो ४ लूखो ५

चिक्कणूं ६ ठण्डो ७ उन्हो ८

१३ तेरमें बोलै दश प्रकार की मिथ्यात्व

१ जीवनें अजीव सरदह ते मिथ्यात्व

२ अजीवनें जीव सरदहै ते मिथ्यात्व

३ धर्मनें अधर्म सरदहै ते मिथ्यात्व

४ अधर्मनें धर्म सरदहै ते मिथ्यात्व

५ साधूनें असाधूं सरदहै ते मिथ्यात्व

६ असाधूनें साधू सरदहै ते मिथ्यात्व

७ मार्गनें कुमार्ग सरदहै ते मिथ्यात्व

८ कुमार्गनें मार्ग सरदहै ते मिथ्यात्व

९ मोक्ष गयानें अमोक्ष गयो सरदहै ते मिथ्यात्व

१० अमोक्ष गयानें मोक्ष गयो सरदहै ते मिथ्यात्व

१४ चौदमें बोलै नव तत्व को जाणपणो तींका ११५ एक सौ पन्दरा बोल

चौदै जीव का

सूक्ष्म एकेन्द्री का दोय भेद—

१ पहिलो अपर्यासो २ दूसरो पर्यासो

बादर एकेन्द्री का दोय भेद—

३ तीजो अपर्यासो ४ चौथो पर्यासो

बेइन्द्री का दोय भेद—

५ पांचमूं अपर्यासो ६ छट्ठो पर्यासो

तेइन्द्री का दोय भेद—

७ सातमूं अपर्यासो ८ आठमूं पर्यासो

चौइन्द्री का दोय भेद—

९ नवमूं अपर्यासो १० दशमूं पर्यासो

असन्नी पंचेन्द्री का दोय भेद—

११ इग्यारमूं अपर्यासो १२ बारमूं पर्यासो

सन्नी पंचेन्द्री का दोय भेद—

१३ तेरमूं अपर्यासो १४ पर्यासो.

१४ चौदे अजीव का भेद—

धर्मास्तिकाय का ३ भेद—

खन्ध, देश, प्रदेश

अधर्मास्तिकाय का ३ भेद—

खन्ध, देश, प्रदेश

आकाशास्तिकाय का ३ भेद—

खन्ध, देश, प्रदेश

काल को दशमूं भेद (ये दश भेद अरूपी छै)

पुद्गलास्तिकाय का च्यार भेद—

खन्ध, देश, प्रदेश, परमाणु

९ पुन्य नव प्रकारे

अन्नपुन्ने १ पाणपुन्ने २ लैणपुन्ने * ३ सयण पुन्ने † ४ वत्थपुन्ने, ५ मनपुन्ने ६ बचनपुन्ने ७ कायापुन्ने ८ नमस्कारपुन्ने ९

---

* लैण=जगां जमीनादिक † सयण=पाट बाजोटादिक

१८ पाप आठारे प्रकार—

प्राणातिपात १ मृषावाद् ❀ २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैसुन्य ‡ १४ परपरिवाद १५ रति अरति १६ मायामृषा १७ मिथ्यादर्शन शल्य १८

२० बीस आस्रव का—

मिथ्यात्व आस्रव १ अव्रत आस्रव २ प्रमाद् आस्रव ३ कषाय आस्रव ४ जोग आस्रव ५ प्राणातिपात आस्रव ६ मृषावाद् आस्रव ७ अदत्तादान आस्रव ८ मैथुन आस्रव ९ परिग्रह आस्रव १० श्रोतइन्द्री मोकली मेले ते आस्रव ११ चक्षुइन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १२ घ्राणइन्द्री मोकली मेले ते आसूव १३ रसइन्द्री मोकली मेले ते आसूव १४ स्पर्शइन्द्री मोकली मेले ते आसूव १५ मन प्रबर्तावै ते आसूव १६ बचन प्रबर्तावै ते आसूच १७ काया प्रबर्तावै ते आसूव १८ भण्डोपकरणमेलतां † अजयणा करै ते आसूव १९ सुई कुसाग्रमात्र सेवै ते आसूव २०

❀ वाद=बोलना

‡ पैसुन्य=चुगली

† अजयण=यत्न नहीं।

२० बीस संबर का—

सम्यक् ते संबर १ व्रत ते संवर २ अप्रमाद ते संवर ३ अकषाय संबर ४ अजोग संबर ५ प्राणातिपात न करे ते संबर ६ मृषावाद न बोलै ते संबर ७ चोरी न करे ते संबर ८ मैथुन न सेवै ते संबर ६ परिग्रह न राखे ते सम्बर १० श्रुतइन्द्री वश करे ते सम्बर ११ चक्षुइन्द्री वश करे ते संबर १२ घ्राणइन्द्री वश करे ते संबर १३ रसेन्द्री वश करे ते संबर १४ स्पर्शइन्द्री वश करे ते संबर १५ मन वश करे ते संबर १६ वचन वश करे ते सम्बर १७ काया वश करे ते संबर १८ भण्डउवगरणमेलतां अजयणा न करे ते संबर १६ सुई कुसाग्र न सेवे ते सम्बर २०

१२ निर्जरा बारे प्रकारे

अणसण * १ उणोदरी † २ भिक्षाचरी ३ रस परित्याग ४ कायाक्लेश ५ प्रतिसंलेषना ६ प्रायश्चित ७ विनय ८ वेयावच्च ६ सिज्झाय १० ध्यान ११ विउसग्ग ‡ १२

४ बंध च्यार प्रकारे—

प्रकृतिबंध १ स्थितिबंध २ अनुभागबंध ३ प्रदेशबंध ४

---

* अणसण=उपवासादिक † उणोदरी=कम खाना

‡ विउसग्ग=निवर्तवो तथा कायोत्सर्ग

४ मोक्ष च्यार प्रकारे—

ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ तप ४

१५ पन्द्रमें बोलै आत्मा आठ—

द्रव्यआत्मा १ कषाय आत्मा २ योग आत्मा ३ उपयोग आत्मा ४ ज्ञान आत्मा ५ दर्शन आत्मा ६ चारित्र आत्मा ७ वीर्य आत्मा ८

१६ सोलमें बोलै दण्डक चौबीस—

१ सात नारकियां को एक दण्डक

१० दश दण्डक भवनपतिका—

असुरकुमार १ नागकुमार २ सोवन कुमार ३ विद्युत कुमार ४ अग्नि कुमार ५ दीपकुमार ६ उदधि कुमार ७ दिसाकुमार ८ वायु कुमार ९ स्तनित कुमार १०

५ पांच थावरका पञ्च दण्डक—

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वायुकाय ४ वनस्पतिकाय ५

१ बेइन्द्री को सतरमों

१ तेइन्द्री को अठारमों

१ चौइन्द्री को उगणीसमों

१ तिर्यञ्च पंचेन्द्री को बीसमों

१ मनुष्य पंचेन्द्री को इकवीसमो

१ वानव्यन्तर देवतां को बावीसमों

१ जोतिषी देवतां को तेबीसमों

१ वैमानिक देवतां को चौबीसमों

१७. सतरवें बोलै लेश्या छव ६—

कृष्णलेश्या १ नील लेश्या २ कापोत लेश्या ३ तेजो लेश्या ४ पद्म लेश्या ५ शुक्ल लेश्या ६

१८ अठारमें बोलै दृष्टि ३ तीन—

सम्यक्‌दृष्टि १ मिथ्या दृष्टि २ सममिथ्या दृष्टि ३

१९ उगणीसमें बोलै ध्यान ४ च्यार—

आर्तध्यान १ रौद्रध्यान २ धर्मध्यान ३ शुक्लध्यान ४

२० बीसमें बोलै षटद्रव्य को जाणपणो

धर्मास्तिकायने पांचां बोला ओलखीजै—

द्रव्यथकी एक द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे, कालथकी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी गुणथकी जीव पुद्गल ने हालवा चालवा को सहाय, अधर्मास्तिकाय ने पांचां बोलां ओलखीजै—द्रव्य थी एक द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे कालथकी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी गुण थी थिर रहवा नो सहाय, आकाशास्तिकाय ने पांच बोल करी ओलखीजै—द्रव्य थी एक द्रव्य, खेत्र थी लोक अलोक प्रमाणे, काल थी आदि अन्त रहित, भाव थी

अरूपी, गुण थी भाजन गुण, काल ने पांचां बोलां ओलखीजै—द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी अढ़ाई द्वीप प्रमाणे, काल थी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी, गुण थी वर्त्तमान गुण, पुद्गलास्तिकाय ने पांच बोल थी ओलखीजै—द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे, काल थी आदि अन्त रहित भाव थी रूपी, गुण थी * गले मले, जीवास्तिकाय ने पांच बोल करी ओलखीजै—द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे, काल थी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी, गुण थी चैतन्य गुण।

२१ एकबीसमें बोलै रासि २ दोय—
जीवरासि १ अजीवरासि २

२२ बावीसमें बोलै श्रावक का १२ बारह व्रत—

१ पहिला व्रत में श्रावक स्थावर जीव हणवा को प्रमाण करे और त्रस जीव हालतो चालतो हणवा का सउपयोग त्याग करे।

२ दूजा व्रत में मोटकी झूठ बोलवा का सउपयोग त्याग करे।

---

* गले मलेः घटे वधैः अथवा जुदा एकत्र होय।

३ तीजा ब्रत में श्रावक राजदण्डे लोक भण्डे इसी मोटकी चोरी करवा का त्याग करे ।

४ चौथा ब्रत में श्रावक मर्याद उपरान्त मैथुन सेवा का त्याग करे ।

५ पांचमां ब्रत में श्रावक मर्याद उपरान्त परिग्रह राखवा का त्याग करे ।

६ छट्ठा ब्रतके विषय श्रावक दशों दिशि में मर्याद उपरान्त जावा का त्याग करे ।

७ सातवां ब्रतके विषय श्रावक उपभोग परिभोग का बोल २६ छबीस छै जिणरी मर्याद उपरान्त त्याग करे तथा पन्दरह कर्मादान की मर्याद उपरान्त त्याग करे ।

८ आठमां ब्रत के विषय श्रावक मर्याद उपरान्त अनर्थ दण्ड का त्याग करे ।

९ नवमां ब्रत के विषय श्रावक सामायक की मर्याद करे ।

१० दशमां ब्रत के विषय श्रावक देसावगासी संबर की मर्याद करे ।

११ इग्यारमूं ब्रत के विषय श्रावक पोषह करे ।

१२ बारमूं ब्रत के विषय श्रावक शुद्ध साधू निर्ग्रन्थ

ने निर्दोष आहार पाणी आदि चउदह प्रकार नो दान देवे।

२३ तेवीसमें बोलै साधूजी का पंच महाव्रत—

१ पहिला महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे जीव हिंसा करे नहीं, करावै नहीं, करतां ने भलो जाणै नहीं, मनसे बचन से काया से।

२ दूसरा महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे झूठ बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलतां प्रते भलो जाणै नहीं, मन से बचन से काया से।

३ तीजा महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे चोरी करे नहीं, करावे नहीं, करतां प्रते भलो जाणे नहीं, मन से बचन से काया से।

४ चौथा महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे मैथुन सेवे नहीं, सेवावे नहीं, सेवतां प्रते भलो जाणे नहीं, मन से बचन से काया से।

५ पांचवां महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे परिग्रह राखे नहीं, रखावे नहीं, राखतां प्रते भलो जाणे नहीं, मन से बचन से काया से।

२४ चौबीसमें बोलै भांगा ४६ गुणचास—

करण ३ जोग ३ तीन से हुवै।

करण ३ का नाम—करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनु-

मोदूं नहीं, जोग ३ का नाम—मनसा, बायसा, कायसा।

आंक ११ का भांगा ६—

एक करण एक जोग से कहणा, करूं नहीं, मनसा १, करूं नहीं बायसा २, करूं नहीं कायसा ३, कराऊं नहीं मनसा ४, कराऊं नहीं बायसा ५, कराऊं नहीं कायसा ६, अनुमोदूं नहीं मनसा ७, अनुमोदूं नहीं बायसा ८, अनुमोदूं नहीं कायसा ६

आंक १२ बारमां का भांगा ६—

एक करण दोय जोगसे, करूं नहीं मनसा बायसा १, करूं नहीं मनसा कायसा २, करूं नहीं बायसा कायसा ३, कराऊं नहीं मनसा बायसा ४, कराऊं नहीं मनसा कायसा ५, कराऊं नहीं बायसा कायसा ६, अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा ७, अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा ८, अनुमोदूं नहीं बायसा कायसा ६

आंक १३ का भांगा ३—

एक करण तीन जोग से, करूं नहीं मनसा बायसा कायसा १, कराऊं नहीं मनसा बायसा कायसा २, अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा कायसा ३

आंक २१ का भांगा ६—

दोय करण एक जोगसे, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा १, करूं नहीं कराऊं नहीं बायसा २, करूं नहीं कराऊं नहीं कायसा ३, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा ४, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं बायसा ५, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा ६, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा ७, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं बायसा ८, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा ९

आंक २२ बावीस का भांगा ९ नव—

दोय करण दोय जोग से, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा बायसा १, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा कायसा २, करूं नहीं कराऊं नहीं बायसा कायसा ३, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा ४, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा ५, करूं नहीं अनुमोदूं बायसा कायसा ६, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा ७, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा ८, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं बायसा कायसा ९

आंक २३ तेबीस का भांगा ३ तीन—

दोय करण तीन जोगसे, करूं नहीं कराऊं नहीं

मनसा बायसा कायसा १, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा कायसा २, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा कायसा ३

आंक ३१ का भांगा ३ तीन—

तीन करण एक जोगसे, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा १, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं बायसा २, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा ३

आंक ३२ बत्तीस का भांगा ३ तीन—

तीन करण दोय जोग से, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा १, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा २, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं बायसा कायसा ३

आंक ३३ तेतीस को भांगो १ एक—

तीन करण तीन जोगसे करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा कायसा।

२५ पच्चीसमें बोलै चारित्र पांच—

सामायिक चारित्र १ छेदोस्थापनीय चारित्र २ पड़िहार विशुद्ध चारित्र ३ सूक्ष्म संपराय चारित्र ४ यथाख्यात चारित्र ५

॥ इति पच्चीस बोल सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ पाना की चरचा ॥

१ जीव रूपी के अरूपी. अरूपी किणन्याय कालो पीलो नीलो रातो धोलो ए पांच वर्ण नहीं पावे इण न्याय।

२ अजीव रूपी के अरूपी, रूपी अरूपी दोनूं हीं, किणन्याय धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय काल ये च्यार तो अरूपी और पुद्गलास्तिकाय रूपी।

३ पुन्य रूपी के अरूपी, रूपी, ते किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म कर्म ते पुद्गल, पुद्गल ते रूपी ही छै।

४ पाप रूपी के अरूपी, रूपी, ते किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म, कर्म ते पुद्गल, पुद्गल ते रूपी

५ आस्रव रूपी के अरूपी, अरूपी ते किणन्याय आस्रव जीव का परिणाम छै, परिणाम ते जीव छै, जीव ते अरूपी छै, पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय।

६ संबर रूपी के अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण पावे नहीं।

७ निर्जरा रूपी के अरूपी, अरूपी छै, ते किणन्याय निर्जरा जीव का परिणाम छै पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय ।

८ बन्ध रूपी के अरूपी, रूपी किणन्याय बन्ध ते शुभ अशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते रूपी छै ।

९ मोक्ष रूपी के अरूपी, अरूपी छै, ते किणन्याय समस्त कर्म से मुकावे ते मोक्ष अरूपी ते जीव सिद्ध थया ते मां पांच वर्ण पावे नहीं इणन्याय ।

छट्ठी द्वजी सावद्य निरवद्य की ।

१ जीव सावद्य के निरवद्य, दोनूं ही छै, ते किण-न्याय चोखा परिणामां निरवद्य, खोटा परिणामां सावद्य छै ।

२ अजीव सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं अजीव छै ।

३ पुन्य सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं अजीव छै ।

४ पाप सावद्य के निरवद्य, दोनूं नहीं अजीव छै ।

५ आस्रव सावद्य के निरवद्य, दोनूं ही छै किणन्याय मिथ्यात्व आस्रव, अव्रत आस्रव, प्रमाद आस्रव, कषाय आस्रव, ये च्यार तो एकान्त सावद्य छै, शुभ जोगां से निर्जरा होय जिण आसरी निरवद्य छै अशुभ जोग सावद्य छै ।

६ संवर सावद्य के निरवद्य. निरवद्य छै, ते किण न्याय कर्म रोकवारा परिणाम निरवद्य छै।

७ निरजरा सावद्य के निरवद्य, निरवद्य छै ते किण न्याय कर्म तोड़वारा परिणाम निरवद्य छै।

८ बन्ध सावद्य के निरवद्य, दोनूं नहीं ते किणन्याय अजीव छै इणन्याय।

९ मोक्ष सावद्य के निरवद्य, निरवद्य छै, सकल कर्म मूकाय सिद्ध भगवन्त थया ते निरवद्य छै।

छट्ठी तीजी आज्ञा मांहि बाहर की।

१ जीव आज्ञा मांहि के बाहिर, दोनूं छै ते किणन्याय, जीव का चोखा परिणाम आज्ञा मांहि छै खोटा परिणाम आज्ञा बाहिर।

२ अजीव आज्ञा मांहि के बाहिर, दोनूं नहीं अजीव छै।

३ पुन्य आज्ञा मांहि के बाहिर, दोनूं नहीं, अजीव छै इणन्याय।

४ पाप आज्ञा मांहि बारे दोनूं नहीं, अजीव छै।

५ आस्रव आज्ञा मांहि के बारे, दोनूं ही छै, ते किण न्याय, आस्रव नां पांच भेद छै तिणमें मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद कषाय ए च्यार तो आज्ञा बाहिर छै,

अने जोग नां दोय भेद शुभ जोग तो आज्ञा मांहि छै, अशुभ जोग आज्ञा बाहिर छै।

६ संबर आज्ञा मांहि के बाहिर, आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम आज्ञा मांहि छै।

७ निर्जरा आज्ञा मांहि के बाहिर, आज्ञा मांहि छै, ते किणन्याय कर्म तोड़वारा परिणाम आज्ञा मांहि छै।

८ बन्ध आज्ञा मांहि के बाहिर, दोनूं नहीं, ते किण न्याय, आज्ञा मांहि बाहिर तो जीव हुवे ए बन्ध तो अजीव छै इणन्याय।

९ मोक्ष आज्ञा मांहि के बाहिर, आज्ञा मांहि छै, ते किणन्याय, कर्म मूंकाय सिद्ध थया ते आज्ञा में छै।

छट्ठी चौथी जीव चोर के साहूकार।

१ जीव चोर के साहूकार, दोनूं छै, किणन्याय चोखा परिणामां साहूकार छै, मांठा परिणामां चोर छै।

२ अजीव चोर के साहूकार, दोनूं नहीं, किणन्याय चोर साहूकार तो जीव हुवै ये अजीव छै।

३ पुन्य चोर के साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

४ पाप चोर के साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

५ आस्रव चोर के साहूकार, दोनूं छै किणन्याय च्यार आस्रव तो चोर छै, अने अशुभ जोग पण चोर छै, शुभ जोग साहूकार छै।

६ संवर चोर के साहूकार, साहूकार छै, किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम साहूकार छै।

७ निर्जरा चोर के साहूकार, साहूकार छै, किणन्याय कर्म तोड़वारा परिणाम साहूकार छै।

८ बन्ध चोर के साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

९ मोक्ष चोर के साहूकार, साहूकार, किणन्याय कर्म मूंकाय कर सिद्ध थया ते साहूकार छै।

छट्ठी पांचवीं जीव अजीव की।

१ जीव ते जीव छै के अजीव, जीव, ते किणन्याय सदाकाल जीव को जीव रहसे अजीव कदे हुवे नहीं।

२ अजीव ते जीव छैके अजीव छै, अजीव छै, अजीव को जीव किण ही काल में हुवै नहीं।

३ पुन्य जीव छै के अजीव छै, अजीव छै, ते किण न्याय शुभ कर्म पुद्गल छै पुद्गल ते अजीव छै।

४ पाप जीव छै के अजीव, अजीव छै, किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म पुद्गल छै, पुद्गल ते अजीव छै।

५ आस्रव जीव छै के अजीव छै, जीव छै, ते किण न्याय शुभ अशुभ कर्म ग्रह ते आस्रव छै कर्म ग्रह ते जीव ही छै।

६ संबर जीव के अजीव, जीव छै, ते किणन्याय कर्म रोके ते जीव ही छै।

७ निर्जरा जीव के अजीव, जीव छै, किणन्याय कर्म तोड़ै ते जीव छै।

८ बन्ध जीव के अजीव छै, अजीव छै, ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म को बन्ध अजीव छै।

९ मोक्ष जीव के अजीव, जीव छै, किणन्याय समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष जीव छै।

लड़ी छट्ठी जीव छांडवा जोग के आदरवा जोग।

१ जीव छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग छै, किणन्याय पोते जीव नूं भाजन करे अनेरा जीव पर ममत्व भाव नं करे।

२ अजीव छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग छै, किणन्याय अजीव छै।

३ पुन्य छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग छै, ते किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म पुद्गल छै, कर्म ते छांडवा ही जोग छै।

४ पाप छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग छै, किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म पुद्गल छै जीव ने दुखदाई छै ते छांडवा ही जोग छै।

५ आस्रव छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग छै, किणन्याय आस्रव द्वारे जीव रे कर्म लागे छै, आस्रव कर्म आवा नां बारणा छै, ते छांडवा जोग छै।

६ संवर छांडवा जोग के आदरवा जोग, आदरवा जोग छै, किणन्याय कर्म रोके ते संवर छै ते आदरवा जोग छै।

७ निर्जरा छांडवा जोग के आदरवा जोग, आदरवा जोग छै, किणन्याय देश थी कर्म तोड़ै देश थी जीव उज्ज्वल थाय ते निर्जरा छै ते आदरवा जोग ही छै।

८ बन्ध छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग छै ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म नो बन्ध छांडवा जोग ही छै।

९ मोक्ष छांडवा जोग के आदरवा जोग, आदरवा जोग छै, ते किणन्याय सकल कर्म खपावे, जीव निरमल थाय, सिद्ध हुवे, इणन्याय आदरवा जोग छै।

षट्द्रव्य पे लड़ी सातमी रूपी अरूपी की।

१ धर्मास्तिकाय रूपी के अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

२ अधर्मास्तिकाय रूपी के अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

३ आकाशास्तिकाय रूपी फे अरूपी, अरूपी, किण न्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

४ काल रूपी के अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण पावे नहीं इणन्याय।

५ पुद्गल रूपी के अरूपी, रूपी, किणन्याय पांच वर्ण पावे नहीं इणन्याय।

६ जीव रूपी के अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

छव द्रव्य पर

लड़ी आठमी सावद्य निरवद्य की।

१ धर्मास्तिकाय सावद्य के निरवद्य, दोनूं नहीं, अजीव छै।

२ अधर्मास्तिकाय सावद्य के निरवद्य, दोनूं नहीं, अजीव छै।

३ आकाशास्तिकाय सावद्य के निरवद्य, दोनूं नहीं, अजीव छै।

४ काल सावद्य के निरवद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

५ पुद्गलास्तिकाय सावद्य के निरवद्य, दोनूं नहीं, अजीव छै।

६ जीवास्तिकाय सावद्य के निरवद्य, दोनूं नहीं, अजीव छै।

छव द्रव्य पर लड़ी १ नवमी।

१ धर्मास्तिकाय आज्ञा मांहि के बाहर, दोनूं नहीं, ते किणन्याय, आज्ञा मांहि बाहर तो जीव छै अने ए अजीव छै।

२ अधर्मास्तिकाय आज्ञा मांहि के बाहर, दोनूं नहीं, किणन्याय अजीव छै।

३ आकाशास्तिकाय आज्ञा मांहि के बाहर, दोनूं नहीं किणन्याय अजीव छै।

४ काल आज्ञा मांहि के बाहर, दोनूं नहीं, किणन्याय अजीव छै।

५ पुद्गल आज्ञा मांहि के बाहर, दोनूं नहीं, किणन्याय अजीव छै।

६ जीव आज्ञा मांहि के बाहर, दोनूं छै, किणन्याय

निरवद्य करणी आज्ञा मांहि छै सावद्य करणी आज्ञा बाहर छै।

लड़ी १० दशमी।

१ धर्मास्तिकाय चोर के साहूकार, दोनूं नहीं, किण न्याय, चोर साहूकार जीव छै, ए धर्मास्तिकाय अजीव छै, इणन्याय।

२ अधर्मास्तिकाय चोर के साहूकार, दोनूं नहीं, अजीव छै।

३ आकाशास्तिकाय चोर के साहूकार, दोनूं नहीं, अजीव छै।

४ काल चोर के साहूकार, दोनूं नहीं, अजीव छै।

५ पुद्गल चोर के साहूकार, दोनूं नहीं, अजीव छै।

६ जीव चोर के साहूकार, दोनूं छै, किणन्याय मांठा परिणामां आंसरी चोर छै, चोखा परिणामां आंसरी साहूकार छै।

छव द्रव्य पर लड़ी ११ मी जीव अजीव की।

१ धर्मास्तिकाय जीव के अजीव, अजीव छै।

२ अधर्मास्तिकाय जीव के अजीव, अजीव छै।

३ आकाशास्तिकाय जीव के अजीव, अजीव छै।

४ काल जीव के अजीव, अजीव छै।

५ पुद्गलास्तिकाय जीव के अजीव, अजीव छै।

६ जीवास्तिकाय जीव के अजीव, जीव छै।

छव द्रव्य पर लड़ी १२ बारमी एक अनेक की।

१ धर्मास्तिकाय एक छै के अनेक छै, एक छै, किण न्याय द्रव्य थकी एक ही द्रव्य छै।

२ अधर्मास्तिकाय एक छै के अनेक छै, एक छै, द्रव्य थकी एक ही द्रव्य छै।

३ आकाशास्तिकाय एक के अनेक, एक छै, लोक अलोक प्रमाणे एक ही द्रव्य छै।

४ काल एक छै के अनेक छै, अनेक छै, द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य छै, इणन्याय।

५ पुद्गल एक छै के अनेक छै, अनेक छै, द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य छै, इणन्याय।

६ जीव एक छै के अनेक छै, अनेक छै, अनन्ता द्रव्य छै इण न्याय।

लड़ी १३ तेरमी।

छव में नव में की चरचा।

१ कर्मों को कर्त्ता छव पदारथ में कोण? नव तत्व में कोण?

उत्तर—छव में जीव, नव में जीव, आस्रव ।

२ कर्मों को उपार्जिता छव में कोण ? नव में कोण ?

उ०—छव में जीव, नव में जीव, आस्रव ।

३ कर्मों को लगावता छव में कोण ? नव में कोण ?

उ०—छव में जीव, नव में जीव, आस्रव ।

४ कर्मों को रोकता छव में कोण ? नव में कोण ?

उ०—छव में जीव, नव में जीव, संबर ।

५ कर्मों को तोड़ता छव में कोण ? नव में कोण ?

उ०—छव में जीव, नव में जीव, निर्जरा ।

६ कर्मों को बांधता छव में कोण ? नव में कोण ?

उ०—छव में जीव, नव में जीव, आस्रव ।

७ कर्मों को मूकावता छव में कोण ? नव में कोण ?

उ०—छव में जीव, नव में जीव, मोक्ष ।

लड़ी १४ चौदमी ।

१ अठारे पाप सेवे ते छव में कोण ? नव में कोण ?

छव में जीव, नव में जीव, आस्रव ।

२ अठारे पाप सेवा का त्याग करे ते छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, निर्जरा, अने त्याग छव में जीव, नव में जीव, संबर ।

३ सामायक छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, संबर ।

४ व्रत छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, संबर।

५ अव्रत छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, आस्रव।

६ अठारे पाप को वहरमण छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, संबर।

७ पञ्च महाव्रत छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, संबर।

८ पांच चारित्र छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव संबर।

९ पांच सुमति छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, निर्जरा।

१० तीन गुप्ति छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, संबर।

११ बारे ब्रत छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, संबर।

१२ धर्म छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, संवर, निर्जरा।

१३ अधर्म छव में कोण ? नच में कोण ? छव में जीव, नव में जीव आस्रव।

१४ दया छव में कोण ? नव में कोण ! छव में जीव, नव में जीव, संवर निर्जरा ।

१५ हिंसा छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, आस्रव ।

लड़ी १५ पंद्रहमी ।

१ जीव छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, आस्रव, संवर, निर्जरा, मोक्ष ।

२ अजीव छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पांच नव में अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध ।

३ पुन्य छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल नव में अजीव, पुन्य, बन्ध ।

४ पाप छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में अजीव, पाप बन्ध ।

५ आस्रव छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, आस्रव ।

६ संवर छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, संवर ।

७ निर्जरा छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव. निर्जरा ।

८ बन्ध छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध ।

९ मोक्ष छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, मोक्ष ।

लड़ी १६ सोलमी ।

१ धर्मास्ति छव में कोण ? नव में कोण ? छव में धर्मास्ति, नव में अजीव ।

२ अधर्मास्ति छव में कोण ? नव में कोण ? छव में अधर्मास्ति नव में अजीव ।

३ आकाशास्ति छव में कोण ? नव में कोण ? छव में आकाशास्ति, नव में अजीव ।

४ काल छव में कोण ? नव में कोण ? छव में काल, नव में अजीव ।

५ पुद्गल छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध ।

६ जीव छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव नव में जीव, आस्रव, संबर, निर्जरा मोक्ष ।

लड़ी १७ सतरमी ।

१ लेखण (कलम) पूठो कागद को पानो, लकड़ी की पाटी, छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में अजीव ।

२ पात्रो, रजोहरण, चादर, चोलपट्टो, आदि भण्ड

२ धर्म सावद्य के निर्वद्य ? निर्वद्य छै ।

३ धर्म आज्ञा मांहि के बाहर ? श्री वीतराग देव की आज्ञा मांहि छै ।

४ धर्म चोर के साहूकार ? साहूकार छै ।

५ धर्म रूपी के अरूपी ? अरूपी छै ।

६ धर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग ? आदरवा जोग छै ।

७ धर्म पुन्य के पाप ? दोनूं नहीं, किणन्याय ? धर्म तो जीव छै, पुन्य पाप अजीव छै ।

लड़ी २१ इक्कीसमी ।

१ अधर्म जीव के अजीव ? जीव छै ।

२ अधर्म सावद्य के निर्वद्य ? सावद्य छै ।

३ अधर्म चोर के साहूकार ? चोर छै ।

४ अधर्म आज्ञा मांहि के बाहर, बाहर छै ।

५ अधर्म रूपी के अरूपी ? अरूपी छै ।

६ अधर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग ? छांडवा जोग छै ।

७ अधर्म पुन्य के पाप ? दोनूं नहीं, किणन्याय, पुन्य पाप अजीव छै, अधर्म जीव छै ।

लड़ी २२ बाइसमी।

१ सामायक जीव के अजीव ? जीव छै।

२ सामायक सावद्य के निर्वद्य ? निर्वद्य छै।

३ सामायक चोर के साहूकार ? साहूकार छै।

४ सामायक आज्ञा मांहि के बाहर ? आज्ञा मांहि छै।

५ सामायक रूपी के अरूपी ? अरूपी छै।

६ सामायक छांडवा जोग के आदरवा जोग ? आदरवा जोग छै।

७ सामायक पुन्य के पाप ? दोनूं नहीं, किणन्याय पुन्य पाप अजीव छै, सामायक जीव छै।

लड़ी २३ तेवीसमी।

१ सावद्य जीव के अजीव ? जीव छै।

२ सावद्य सावद्य छै के निर्वद्य ? सावद्य छैं।

३ सावद्य आज्ञा मांहि के बाहर ? बाहर छै।

४ सावद्य चोर के साहूकार ? चोर छै।

५ सावद्य रूपी के अरूपी ? अरूपी छै।

६ सावद्य छांडवा जोग के आदरवा जोग ? छांडवा जोग छै।

७ सावद्य पुन्य के पाप ? दोनूं नहीं, पुन्य पाप तो अजीव छै, सावद्य जीव छै।

लड़ी २४ चौवीसमी।

१ निर्वद्य जीव के अजीव ? जीव छै।

२ निर्वद्य सावद्य के निर्वद्य ? निर्वद्य छै।

३ निर्वद्य चोर के साहूकार ? साहूकार छै।

४ निर्वद्य आज्ञा मांहि के बाहर ? मांहि छै।

५ निर्वद्य रूपी के अरूपी ? अरूपी छै।

६ निर्वद्य छांडवा जोग के आदरवा जोग ? आदरवा जोग छै।

७ निर्वद्य धर्म के अधर्म ? धर्म छै।

८ निर्वद्य पुन्य के पाप ? पुन्य पाप दोनूं नहीं, किण-न्याय ? पुन्य पाप तो अजीव छै, निर्वद्य जीव छै।

लड़ी २५ पच्चीसमी।

१ नव पदार्थ में जीव कितना पदार्थ ? अने अजीव कितना पदार्थ ? जीव आस्रव, संबर, निर्जरा, मोक्ष ये पांच तो जीव छै, अनें अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध, ये च्यार पदार्थ अजीव छै।

२ नव पदार्थ में सावद्य कितना निर्वद्य कितना ? जीव अने आस्रव ये दोय तो सावद्य निर्वद्य दोनूं छै, अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध, ये सावद्य निर्वद्य

दोनूं नहीं। संवर, निर्जरा, मोक्ष, ये तीन पदार्थ निर्वंध छै।

३ नव पदार्थ में आज्ञा मांहि कितना आज्ञा बाहर कितना? जीव, आस्रव, ये दोय तो आज्ञा मांहि पण छै, अने आज्ञा बाहर पण छै। अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध, ये च्यार आज्ञा मांहि बाहर दोनूं ही नहीं। संवर, निर्जरा, मोक्ष ये आज्ञा मांहि छै।

४ नव पदार्थ में चोर कितना साहूकार कितना? जीव, आस्रव, तो चोर साहूकार दोनूं ही छै। अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध ये चोर साहूकार दोनूं नहीं, संवर, निर्जरा, मोक्ष ये तीन साहूकार छै।

५ नव पदार्थ में छांडवा जोग कितना आदरवा जोग कितना? जीव, अजीव, पुन्य, पाप, आस्रव, बन्ध ये छव तो छांडवा जोग छै, संवर, निर्जरा, मोक्ष ये तीन आदरवा जोग छै अने जाणवा जोग नवों ही पदार्थ छै।

६ नव पदार्थ में रूपी कितना अरूपी कितना? जीव, आस्रव, संवर, निर्जरा, मोक्ष ये पांच तो अरूपी छै, अजीव रूपी अरूपी दोनूं छै पुन्य, पाप, बन्ध रूपी छै।

७ नव पदार्थ में एक कितना अनेक कितना?

उत्तर—अजीव टाली आठ पदार्थ तो अनेक छै, अने अजीव एक अनेक दोनूं छै, किणन्याय ? धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्ति ए तीनूं द्रव्य थकी एक एक ही द्रव्य छै।

छट्ठी २६ छत्रीसमी।

१ छव द्रव्य में जीव कितना अजीव कितना ? एक जीव पांच अजीव छै।

२ छव द्रव्य में रूपी कितना अरूपी कितना ? जीव, धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल ए पांच तो अरूपी छै, पुद्गल रूपी छै।

३ छव द्रव्य में आज्ञा मांहि कितना आज्ञा बाहर कितना ? जीव तो आज्ञा मांहि बाहर दोनूं छै, बाकी पांच आज्ञा मांहि बाहर दोनूं नहीं।

४ छव द्रव्य में चोर कितना साहूकार कितना ? जीव तो चोर साहूकार दोनूं छै, बाकी पांच द्रव्य चोर साहूकार दोनूं नहीं, अजीव छै।

५ छव द्रव्य में सावद्य कितना निर्वद्य कितना ? एक जीव द्रव्य तो सावद्य निर्वद्य दोनूं छै, बाकी पांच द्रव्य सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं।

६ छव द्रव्य में एक कितना अनेक कितना ? धर्मास्ति अधर्मास्ति, आकाशास्ति, ए तीनों तो एक ही द्रव्य

छै, काल, जीव, पुद्गलास्ति ए तीन अनेक छै, इणा का अनन्ता द्रव्य छै।

७ छव द्रव्य में सप्रदेशी कितना अप्रदेशी कितना ? एक काल तो अप्रदेशी छै, बाकी पांच सप्रदेशी छै।

लड़ी २७ सत्ताइसमी।

१ पुन्य धर्म के अधर्म ? दोनूं नहीं, किणन्याय ? धर्म अधर्म जीव छै, पुन्य अजीव छै।

२ पाप धर्म के अधर्म ? दोनूं नहीं, किणन्याय ? धर्म अधर्म तो जीव छै, पाप अजीव छै।

३ बन्ध धर्म के अधर्म ? दोनूं नहीं. किणन्याय ? धर्म अधर्म तो जीव छै, बन्ध अजीव छै।

४ कर्म अने धर्म एक के दोय ? दोय छै, किणन्याय ? कर्म तो अजीव छै, धर्म जीव छै।

५ पाप अने धर्म एक के दोय ? दोय छै, किणन्याय ? पाप तो अजीव छै, धर्म जीव छै।

६ धर्म अने अधर्मास्ति एक के दोय ? दोय, किणन्याय ? धर्म तो जीव छै, अधर्मास्ति अजीव छै।

७ अधर्म अने धर्मास्ति एक के दोय ? दोय, किणन्याय ? अधर्म तो जीव छै, धर्मास्ति अजीव छै।

८ धर्मास्ति अने अधर्मास्ति एक के दोय? दोय, किणन्याय? धर्मास्ति को तो चालवा नो सहाय छै; अधर्मास्ति नो थिर रहवा नो सहाय छै।

९ धर्म अने धर्मी एक के दोय? एक छै, किणन्याय? धर्म जीव का चोखा परिणाम छै।

१० अधर्म अने अधर्मी एक के दोय? एक छै, किणन्याय? अधर्म जीव का खोटा परिणाम छै।



प्रश्नोत्तर

१ थारी गति कांई—मनुष्य गति ।

२ थारो जाति कांई—पंचेन्द्री ।

३ थारी काय कांई—त्रस काय ।

४ इन्द्रियां कितनीं पावे—५ पांच ।

५ पर्याय कितना पावे—६ छव ।

६ प्राण कितना पावे—१० दश पावे ।

७ शरीर कितना पावे—३ तीन—औदारिक, तेजस कार्मण ।

८ जोग कितना पावे—९ नव पावै च्यार मन का, च्यार बचन का, एक काया को, औदारिक ।

९ उपयोग कितना पावै—४ च्यार पावै मति ज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ चक्षु दर्शन ३ अचक्षु दर्शन ४ ।

१० थारे कर्म कितना ८ आठ ।

११ गुणस्थान किसो पावै—व्यवहार थी पांचमूं, साधु ने पूछै तो छट्ठो ।

१२ विषय कितनी पावै—२३ तेवीस।

१३ मिथ्यात्व ना दश बोल पावै के नहीं, व्यवहार थी पावै नहीं।

१४ जीव का चौदा भेदां में से किसो भेद पावै, १ एक चौदमूं पर्यासो सन्नी पंचेन्द्री को पावै।

१५ आत्मा कितनी पावै—श्रावक में तो ७ सात पावै, अने साधु में आठ पावै।

१६ दण्डक किसो पावै—एक इकवीसमूं।

१७ लेश्या कितनी पावै—६ छव।

१८ दृष्टि कितनी पावै—व्यवहार थी एक सम्यक् दृष्टि पावै।

१९ ध्यान कितना पावै—३ तीन, शुक्ल ध्यान टाल के।

२० छव द्रव्य में किसा द्रव्य पावै—१ एक जीव द्रव्य।

२१ राशि किसी पावै—एक जीव राशि।

२२ श्रावक का बारा व्रत श्रावक में पावै।

२३ साधू का पञ्च महाव्रत पावै के नहीं—साधू में पावै श्रावक में पावै नहीं।

२४ पांच चारित्र आवक में पावै के नहीं—नहीं पावै, एक देश चारित्र पावै।

१ एकेन्द्री की गति कांई—तिर्यञ्च गति।

२ एकेन्द्री की जाति कांई एकेन्द्री।

काय किसी	अप्पकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

९ अग्नि तेउकाय ना प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	तेउकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

१० वायुकाय का प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय कांई	वायुकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, ऊपर प्रमाणें
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

११ वृक्ष, लता, पान, फूल, फल, लीलण, फूलण आदि वनस्पतिकाय ना प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री

काय कांई	वनस्पतिकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

१२ लट गिण्डोला आदि बेन्द्री का प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर	
गति काई	तिर्यंच गति	
जाति कांई	बेन्द्री	
काय कांई	त्रसकाय	
इन्द्रियां कितनी	२ दोय, स्पर्श, रस, इन्द्री	
पर्याय कितनी	५ पांच, मन पर्याय टली	
प्राण कितना	६ छव, रस इन्द्री बल प्राण	१
	स्पर्श इन्द्री बल प्राण	२
	काय बल प्राण	३
	श्वाशोश्वाश बल प्राण	४
	आउषो बल प्राण	५
	भाषा बल प्राण	६

१३ कीड़ी मकोड़ा आदि तेन्द्री का

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	तेन्द्री
काय कांई	त्रसकाय
इन्द्रियां कितनी	३ तीन स्पर्श १ रस २ घ्राण ३

पर्याय कितनी	५ पांच, मन पर्याय टली
प्राण कितना	७ सात, छव तो ऊपर प्रमाणे,
	१ घ्राण इन्द्री बल प्राण बध्यो

१४ माखी मच्छर टीडी पतंगिया बिच्छु आदि चौइन्द्री का

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	चौइन्द्री
काय कांई	त्रसकाय
इन्द्रियां कितनी	४ च्यार, श्रुत इन्द्री टली
पर्याय कितनी	५ पांच, मन पर्याय टली
प्राण कितना	८ आठ, सात तो ऊपर प्रमाणे
	एक चक्षु इन्द्री बल प्राण
	और बध्यो

१५ पचेन्द्री का

प्रश्न	उत्तर
गति कितनी पावैं	४ च्यारूं ही पावैं
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रसकाय
इन्द्रियां कितनी	पांचों ही
पर्याय कितनी	६ छवों ही पावैं सन्नीमें, और
	असन्नी में ५ पांच, मन टल्यो
प्राण कितना पावैं	सन्नी मे तो १० दशों ही पावैं
	असन्नी मे ६ पावै मन टल्यो

१६ नारकी की पृछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	नरक गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रसकाय
इन्द्रियां कितनी	५ पांचोंही
पर्याय कितनी	६ छः
प्राण कितना	१० दशों ही

१७ देवता की पृछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	देव गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रसकाय
इन्द्रियां कितनी	५ पांचों ही
पर्याय कितनी	५ मन भाषा भेली लेखवनी
प्राण कितना	१० दशों ही

१८ मनुष्य की पृछा असन्नी की

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रसकाय
इन्द्रियां कितनी	पांच
पर्याय कितनी	३॥ श्वाश लेवे तो उश्वाश नहीं
प्राण कितना	७॥ श्वाश लेवे तो उश्वाश नही

१६ सन्नी मनुष्य की पृच्छा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रसकाय
इन्द्रियां कितनी	५ पांच
पर्याय कितनी	६ छव
प्राण कितना	१० दश

१ तुमे सन्नी के असन्नी ? सन्नी, किणन्याय ? मन छै।

२ तुमे सूक्ष्म के बादर ? बादर, किणन्याय ? दीखूं छूं।

३ तुमे त्रस के स्थावर ? त्रस, किणन्याय ? हालूं चालूं छूं।

४ एकेन्द्री सन्नी के असन्नी ? असन्नी, किणन्याय ? मन नहीं।

५ एकेन्द्री सूक्ष्म के बादर ? दोनूं ही छै, किणन्याय ? एकेन्द्री दोय प्रकार की छै, दीखै ते बादर छै, नहीं दीखे ते सूक्ष्म छै।

६ एकेन्द्री त्रस के स्थावर ? स्थावर छै, हालै चालै नहीं।

७ एकेन्द्री में इन्द्रियां कितनी ? एक स्पर्श इन्द्री (शरीर)

८ पृथ्वीकाय, अप्पकाय, तेउकाय, वायुकाय, बनस्पति काय ।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छे मन नहीं
सूक्ष्म के बादर	दोनूं ही प्रकार की छै
त्रस के स्थावर	स्थावर छै ।

९ बेन्द्री तेन्द्री चौइन्द्री की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै मन नहीं
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१० तिर्यञ्च पंचेन्द्री की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनूं ही छ
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

११ असन्नी मनुष्य चौदे स्थानक में उपजै

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१२ सन्नी मनुष्य ते गर्भ में उपजै जिणरी पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै

१३ नारकी का नेरियां की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१४ देवता की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१५ गाय भैंस हाथी घोड़ा बलद पक्षी आदि पशु जानवर की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनूं ही प्रकार छै छमोर्छमके मन नहीं, गर्भज के मन छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै, नेत्र से देखवा में आवै छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै, हालै चालै छै

१ एकेन्द्री में वेद कितना पावै—एक नपुंसक वेद पावै।

२ पृथ्वी पाणी बनस्पति अग्नि बायरो यां पांचां में वेद कितना पावै—१ एक नपुंसक ही छै।

३ बेन्द्री तेन्द्री चौइन्द्री में वेद कितना पावै—एक नपुंसक वेद ही पावै छै।

४ पंचेन्द्री में वेद कितना पावै—सन्नी में तो तीनों ही वेद पावै छै, असन्नी में एक नपुंसक वेद ही छै।

५ मनुष्य में वेद कितना पावै—असन्नी मनुष्य चौदे थानक में उपजै जिणां में तो वेद एक नपुंसक ही पावै छै, सन्नी मनुष्य गर्भ में उपजै जिणा में वेद तीनों ही पावै छै।

६ नारकी में वेद कितना पावै—एक नपुंसक वेद ही पावै छै।

७ जलचर, थलचर, उरपर, भुजपर, खेचर यां पांच प्रकार का तिर्यंचा में वेद कितना पावै—छमोर्छम उपजै ते असन्नी छै जिणा में तो वेद नपुंसक ही पावै छै, अने गर्भ में उपजै ते सन्नी छै जिणा में वेद तीनों ही पावै छै।

८ देवता में वेद कितना पावै—उत्तर भवनपति, वाणव्यन्तर, जोतिषी, पहिला दूजा देवलोक नांई

तो बेद दोय स्त्री १ पुरुष २ पावै छै, और तीजा देवलोक से स्वार्थ सिद्ध तांई बेद एक पुरुष ही छै।

६ चौबीस दण्डक का जीवां के कर्म कितना—उगणीस दण्डक का जीवां में तो कर्म आठ ही पावै छै, अने मनुष्य में सात आठ तथा च्यार पावै छै।

१ धर्म ब्रत में के अब्रत में—ब्रत में।

२ धर्म आज्ञा मांहि के बाहर—श्री वीतराग देव की आज्ञा मांहि छै।

३ धर्म हिन्सा में के दया में—दया में।

४ धर्म मोल मिलै के नहीं मिलै—नहीं मिलै, अमूल्य छै।

५ देव मोल मिलै के नहीं मिलै—नहीं मिलै, अमूल्य छै।

६ गुरु मोल लियां मिलै के नहीं मिलै—नहीं मिलै, अमूल्य छै।

७ साधूजी तपस्या करै ते ब्रत में के अब्रत में—ब्रत पुष्ट को कारण छै, अधिक निर्जरा धर्म छै।

८ साधूजी पारणो करै ते ब्रत में के अब्रत में—अब्रत में नहीं, किणन्याय ? साधू के कोई प्रकार अब्रत रही नहीं सब सावद्य जोग का त्याग छै। तिणसूं निर्जरा थाय छै तथा ब्रत पुष्टको कारण छै।

९ श्रावक उपवास आदि तप करै ते ब्रत में के अब्रत में—ब्रत में।

१० श्रावक पारणूं करै ते ब्रत में के अब्रत में—अब्रत में किणन्याय ? श्रावक को खाणो पीणो पहरणो ए सर्व अब्रत में छै श्री उववाई तथा सूयगडांग सूत्र में विस्तार कर लिख्या छै।

११ साधूजी ने सूजतो निर्दोष आहार पाणी दियां कांई होवै ब्रत में के अब्रत में—अशुभ कर्म क्षय थाय तथा पुन्य बंधै छै, १२ मूं ब्रत छै।

१२ साधूजी ने असूजतो दोष सहित आहार पाणी दियां कांई होवै तथा ब्रत में के अब्रत में—श्री भगवती सूत्र में कह्यो छै, तथा श्री ठाणांग सूत्र के तीजै ठाणे में कह्यो छै अल्प आयु बंधै अकल्याणकारी कर्म बंधै तथा असूजतो दीधो ते ब्रत में नहीं, पाप कर्म बंधै छै।

१३ अरिहन्त देव देवता के मनुष्य—मनुष्य छै।

१४ साधू देवता के मनुष्य—मनुष्य छै।

१५ देवता साधू नीं बञ्छा करै के नहीं करै—करै साधू तो सबका पूजनीक छै।

१६ साधू देवता की बञ्छा करै के नहीं करै—नहीं करै

१७ सिद्ध भगवान देवता के मनुष्य—दोनूं नहीं।

१८ सिद्ध भगवान सूक्ष्म के बादर—दोनूं नहीं ।

१९ सिद्ध भगवान त्रस के स्थावर—दोनूं नहीं ।

२० सिद्ध भगवान सन्नी के असन्नी—दोनूं नहीं ।

२१ सिद्ध भगवान पर्याप्ता के अपर्याप्ता—दोनूं नहीं ।

॥ इति पाना की चरचा ॥

---

१ असंयति अव्रती ने दियां कांई होवै—श्री भगवती सूत्र के आठमें शतक छठै उदेशो कह्यो असंयति अव्रती ने सूजतो असूजतो सचित अचित च्यार प्रकार को आहार दियां एकान्त पाप होय निर्जरा नहीं होय ।

२ असंयति अव्रती जीवां को जीवणो बांछणो के मरणो बांछणो—असंयति को जीवणो बांछणो नहीं, मरणो बांछणो नहीं, संसार समुद्र से तिरणो बांछणो ते श्री वीतरागदेव को धर्म छै ।

३ कसाई जीवां ने मारै तिण वेल्यां साधू कसाई ने उपदेश देवे के नहीं देवे—अवसर देखे तो उपदेश देवै हिंसा का खोटा फल कहै ।

प्रश्न—जीवां को जीवणो बांछ कर उपदेश देवै के कसाई ने तारवा निमित्त उपदेश देवै ।

उत्तर—कसाई ने तारवा निमित्त उपदेश देवै तै वीत-राग को धर्म छै।

४ कोई बाड़ा में पशु जानवर दुखिया छै अने साधू जिण रास्ते जाय रह्या छै तो जीवां की अनुकम्पा आणी छोडै के नहीं छोडै—नहीं छोडै, किणन्याय,

उ०—श्रीनिशीथ सूत्र के १२ बारमें उद्देशे में कह्यो छै अनुकम्पा करी त्रस जीव बांधै बंधावै अनुमोदै तो चौमासी प्रायश्चित आवै, तथा साधु संसारी जीवां की सार संभार करै नहीं साधु तो संसारी कर्तव्य त्याग दिया।



॥ अथ तेरा द्वार ॥

प्रथम मूल द्वार ।

मूल १ दृष्टान्त २ कुण ३ आत्मा ४ जीव ५ अरूपी ६ निर्वद्य ७ भाव ८ द्रव्य गुण पर्याय ९ द्रव्यादिक १० आज्ञा ११ गिनय १२ तलाव १३ ए तेरा द्वार जाणवा, प्रथम मूल द्वार कहै छै—जीव ते चेतना लक्षण अजीव ते अचेतना लक्षण, पुन्य ते शुभ कर्म, पाप ते अशुभ कर्म, कर्म ग्रहै ते आस्रव, कर्म रोकै ते संवर, देशथकी कर्म तोड़ी देशथी जीव उज्ज्वल थाय ते निर्जरा, जीव संघाते शुभाशुभ कर्म बन्ध्या ते बन्ध, समस्त कर्मों से मुकावै ते मोक्ष ।

॥ इति प्रथम द्वार सम्पूर्ण ॥

दूसरो दृष्टान्त द्वार ।

जीव चेतन का २ दोय भेद—

एक सिद्ध, दूजो संसारी, सिद्ध कर्मां रहित छै, संसारी कर्मां सहित छै, तिणरा अनेक भेद छै,

सूक्ष्म अने बादर त्रस ने स्थावर, सन्नी अने असन्नी तीन वेद, च्यार गति, पांच जाति, छव काय, चौदे भेद जीवनां, चौबीस दण्डक इत्यादि अनेक भेद जाणवा, चेतन गुण ओलखवा ने सोनारो दृष्टान्त कहै छै, जिम सोनारो गहणो भांजी भांजी ने और और आकारे घड़ावे तो आकार नो विनाश थाय पण सोनारो विनाश नहीं, तैसे कर्मों का उदय थी जीव की पर्याय पलटै पण मूल चेतन गुण को विनाश नहीं।

अजीव अचेतन तिणरा पांच भेद—

धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल, पुद्गलास्ति, तिणमें च्यारां की पर्याय पलटै नहीं एक पुद्गलास्ति की पर्याय पलटै ते ओलखवा ने सोनारो दृष्टान्त कहै छै—जिम कोई सोनारो गहणो भांजी भांजी और और आकारे घड़ावे तो आकारनों विनाश होय सोनारो विनाश नहीं, ज्यूं पुद्गल की पर्याय पलटै पण पुद्गल गुण को विनाश नहीं। पुन्य ते शुभ कर्म पाप ते अशुभ कर्म ने पुन्य पाप ओलखवा ने पथ्य अपथ्य आहार नो दृष्टान्त कहै छै, कदेक जीवकै पथ्य आहार घटै और अपथ्य आहार बधै, तो जीव के निरोगपणो घटै अने

सरोगपणो बधै कदे जीव रै अपथ्य आहार घटै पथ्य बधै तब जीव रै सरोगपणो घटै अने निरोग पणो बधै पथ्य अपथ्य दोनूं घट जाय तो प्राणी मरण पामे, ज्यों जीव के पुन्य घटै अरु पाप बधै तो सुख घटै अने दुख बधै, कदे जीव रै पाप घटै अरु पुन्य बधै तो सुख बधै अने दुख घटै, पुन्य पाप दोनूं क्षय होय तो जीव मोक्ष पामें, कर्म ग्रह ते आस्रव ते ओलखवा ने तीन दृष्टान्त पांच कहण कहै छै।

१ प्रथम कहण (कथन)

१ तलाव रे नालो ज्यों जीव रे आस्रव।

२ हवेली के बारणो ज्यों जीव रे आस्रव।

३ नाव के छिद्र ज्यों जीव रे आस्रव।

२ दूजो कहण (कथन)

१ तलाव अने नालो एक ज्यूं जीव आस्रव एक।

२ हवेली बारणो एक ज्यों जीव आस्रव एक।

३ नाव अने छिद्र एक ज्यूं जीव आस्रव एक।

३ कर्म आवै ते आस्रव ते ओलखवा ने तीजो कहण कहै छै।

१ पाणी आवै ते नालो ज्यों कर्म आवै ते आस्रव।

२ मनुष्य आवै ते बारणो ज्यों कर्म आवै ते

आस्रव ।

३ पाणी आवै ते छिद्र ज्यों कर्म आवे ते आस्रव।

४ इम कह्यां थकां कोई कर्म अने आस्रव एक सरधै तेहने दोय सरधावा ने चौथो कहण कहै छै।

१ पाणी अने नालो दोय ज्यों कर्म अने आस्रव दोय।

२ मनुष्य अने बारणो दोय ज्यों कर्म अने आस्रव दोय।

३ पाणी छिद्र दोय ज्यों कर्म अने आस्रव दोय।

५ विशेष ओलखवा ने पांचमूं कहण कहै छै।

१ पाणी आवै ते नालो पण पाणी नालो नहीं ज्यों कर्म आवै ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं।

२ मनुष्य आवै ते बारणो पण मनुष्य बारणो नहीं, ज्यों कर्म आवै ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं।

३ पाणी आवै ते छिद्र पण पाणी छिद्र नहीं ज्यों कर्म आवै ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं।

कर्म रोकै ते संवर ते ओलखवा ने तीन दृष्टान्त कहै छै।

१ तलाव रो नालो रूंधै ज्यों जीव रे आस्रव रूंधै ते संवर।

२ हवेली रो बारणो रूंधै ज्यों जीव रे आस्रव रूंधै ते संबर।

३ नाव रे छिद्र रूंधै ज्यूं जीव रे आस्रव रूंधै ते संबर।

देशथकी कर्म तोड़ी जीव देश थी उज्वल थाय ते निर्जरा ओलखवा ने तीन दृष्टान्त कहै छै।

१ तलाव रो पाणी मोरियांदिक करी ने काढ़ै ज्यों जीव भला भाव प्रवर्तावी ने कर्म रूपियो पाणी काढ़ै ते निर्जरा।

२ हवेली रो कचरो पूंजी २ ने काढ़ै ज्यों भला भाव प्रवर्तावी ने जीव कर्म रूपियो कचरो काढ़ै ते निर्जरा।

३ नाव को पाणी उलेची २ ने काढ़ै ज्यूं जीव भला भाव प्रवर्तावी ने कर्म रूपियो पाणी काढ़ै ते निर्जरा।

जीव संघाते कर्म बंधिया हुया ते बन्ध, ते ओलखवा ने छव बोल कहै छै।

१ पहिले बोलै कहो स्वामीजी जीव अने कर्म नी आदि छै ए बात मिले अथवा न मिले? गुरु बोल्या न मिले। प्रश्न—क्यों न मिले, गुरु बोल्या ए उपनो नहीं।

२ दूजै बोलै कहो स्वामीजी पहली जीव और पाछै कर्म ए बात मिलै ? गुरु बोल्या नहीं मिलै। प्रश्न—क्यों न मिलै, उ०—कर्म विना जीव रह्यो किहां मोक्ष गयो पाछो आवै नहीं यों न मिलै।

३ तीजै बोलै कहो स्वामीजी पहली कर्म अने पछै जीव ए मिलै ? गुरू कहै नहीं मिलै। प्र०—क्यों न मिलै, गुरू कहै कर्म कियां बिना हुवै नहीं, तो जीव विना कर्म कुण किया।

४ चौथे बोलै कहो स्वामीजी जीव कर्म एक साथ उपना ए मिलै ? गुरू कहै न मिलै। प्र०—किण-न्याय ? उ०—जीव, कर्म यां दोयां ने उपजा-वण वालो कुण।

५ पांचमें बोलै जीव कर्म रहित छै ए बात—मिलै ? गुरू कहै न मिलै। प्र०—किणन्याय ? उ०—ए जीव कर्म रहित होवै तो करणी करवा री खप (चूंप) कुण करै मुक्ति गयो पाछो आवै नहीं।

६ छठै बोलै कहो स्वामीजी जीव अने कर्म नो मिलाप किण विधि थाय छै गुरू कहै अपच्छान पूर्व पणै अनादि काल से जीव कर्म रो मिलाप चल्यो जाय छै तिण बन्ध रा च्यार भेद छै।

प्रकृति बन्ध कर्म स्वभाव रे न्याय १ स्थिति

बन्ध काल व्यवहार रे न्याय २ अनुभाग बन्ध रस विपाक रे न्याय ३ प्रदेश बन्ध जीव कर्म लोलीभूत रे न्याय ४ ते ओलखवा ने तीन दृष्टान्त कहै छै ।

१ तेल अने तिल लोलीभूत ज्यों जीव कर्म लोलीभूत ।

२ घृत दूध लोलीभूत ज्यों जीव कर्म लोलीभूत ।

३ धातू माटी लोलीभूत ज्यों जीव कर्म लोलीभूत ।

समस्त कर्मां से मूकावे ते मोक्ष ते ओलखवाने तीन दृष्टान्त कहै छै ।

१ घाणीयांदिक नूं उपाय करी तेल खल रहित होवै ज्यों तप सञ्जमादि करी जीव कर्म रहित होवै ते मोक्ष ।

२ जेरणादिक को उपाय करी घृत छाछ रहित होवै ज्यों तप सञ्जम करी जीव कर्म रहित होवै ते मोक्ष ।

१ अग्नियादिक नूं उपाय करी धातू माटी अलग होवै ज्यों तप सञ्जम करी जीव कर्म रहित होवै ते मोक्ष ।

॥ इति द्वितीय द्वारम् ॥

तीजो कुण द्वार कहै छै ।

जीव चेतन छव द्रव्यां में कोण नव पदार्थों में कोण? छव द्रव्यां में तो एक जीव नव पदार्थों में पांच। जीव १ आस्रव २ संबर ३ निर्जरा ४ मोक्ष ५

अजीव अचेतन छव में कोण नव में कोण—छव में ५ नव में ४ छव द्रव्यां में तो धर्मास्ति १ अधर्मास्ति २ आकाशास्ति ३ काल ४ पुद्गलास्ति ५, नव पदार्थों में अजीव १ पुन्य २ पाप ३ बन्ध ४

पुन्य ते शुभ कर्म छव में कोण नव में कोण—छव में एक पुद्गल, नव में तीन, अजीव १ पुन्य २ बन्ध ३

पाप ते अशुभ कर्म छव में कोण नव में कोण—छवमें एक पुद्गल, नवमें तीन, अजीव १ पाप २ बन्ध ३

कर्म ग्रह ते आस्रव छव में कोण नव में कोण—छव में जीव, नव में जीव १ आस्रव २

कर्म रोकै ते संबर छव में कोण नव में कोण—छव में जीव, नव में जीव सम्बर

देशथी कर्म तोडी देशथी जीव उज्वल थाय ते निर्जरा छव में कोण नव में कोण—छव में जीव, नव में जीव १ निर्जरा २

बन्ध छव में कोण नव में कोण—छव में पुद्गल नव में अजीव १ पुन्य २ पाप ३ बन्ध ४

मोक्ष छव में कोण नवमें कोण—छव में जीव नव में जीव मोक्ष ।

चालै ते कोण चालवा नो सहाय किणरो—चालै ते जीव पुद्गल, अने सहाय धर्मास्तिकाय नो ।

थिर रहै ते कोण थिर रहवा नो सहाय किणरो—थिर रहै जीव पुद्गल, सहाय अधर्मास्तिकाय नो ।

बसे ते कोण भाजन किणरो—बसे तो जीव पुद्गल भाजन आकाशास्तिकाय नो ।

बरतै ते कोण बरतै किण ऊपर—बरतै तो काल अने बरतै जीव अजीव ऊपर ।

भोगवै ते कोण अने भोग में आवै ते कोण—भोगवै ते जीव, भोग में आवै ते पुद्गल, दोय प्रकारे एक तो शब्दादिक पणै दूजो कर्म पणै ।

कर्मां रो करता कोण कीधा होवै ते कोण, करता तो जीव कीधा हुवा ते कर्म ।

कर्मां रो उपाय ते कोण उपना ते कोण—उपाय तो जीव उपना ते कर्म ।

कर्मां ने लगावै ते कोण लाग्या हुवा ते कोण—लगावै ते जीव, लागै ते कर्म ।

कर्मां ने रोकै ते कोण रुक्या ते कोण—रोकै तो जीव, रुक्या ते कर्म।

कर्मां ने तोड़ै ते कोण तूट्या ते कोण—तोड़ै ते जीव, अने तूट्या ते कर्म।

कर्मां ने बांधै ते कोण बंध्या ते कोण—बांधै ते जीव बंधिया ते कर्म।

कर्मां ने खपावै ते कोण अने क्षय थया ते कोण—खपावै ते जीव क्षय थया ते कर्म।

॥ इति तृतीय द्वारम् ॥

अथ चौथो आत्म द्वार कहे छै।

जीव चेतन ते आत्मा छै अनेरो नहीं।

अजीव अचेतन आत्मा नहीं अनेरो छै।

आत्मा रे काम आवै छै पण आत्मा नहीं, कोण कोण काम आवै छै ते कहै छै:—

धर्मास्तिकाय अवलम्ब न चालै छै।

अधर्मास्तिकाय अवलम्ब ने स्थिर रहै छै।

आकाशास्तिकाय अवलम्ब ने वसै छै।

काल अवलम्ब ने कार्य करै छै।

पुद्गल खाय छै, पीवै छै, पहरै छै, ओढै छै, इत्यादि अनेक प्रकारे आत्मा रे काम आवै छै पण आत्मा नहीं।

पुन्य ते शुभ कर्म आत्मा रै शुभ पणै उदय आवै छै पण आत्मा नहीं।

पाप ते अशुभ कर्म आत्मा रै अशुभ पणै उदय आवै छै पण आत्मा नहीं।

शुभाशुभ कर्म ग्रहै ते आस्रव आत्मा छै अनेरो नहीं।

कर्म रोकै ते संबर आत्मा छै अनेरो नहीं।

देश थकी कर्म तोड़ी देश थकी जीव उज्वल थाय ते निर्जरा आत्मा छै अनेरो नहीं।

जीव संघाते कर्म बंधाणा ते बंध आत्मा नहीं अनेरो छै आत्मा ने बांध राखी छै पण आत्मा नहीं।

समस्त कर्मां से मूकावै ते मोक्ष आत्मा छै अनेरो नहीं।

॥ इति चतुर्थ द्वारम् ॥

अथ पांचमूं जीव द्वार कहे छै।

जीव ते चेतन तिण जीव ने जीव कहीजे, जीव ने आस्रव कहीजे, जीव ने संबर कहीजे जीव ने निर्जरा कहीजे, जीव ने मोक्ष कहीजे।

अजीव अचेतन ने अजीव कहीजे, पुन्य कहीजे, पाप कहीजे, बन्ध कहीजे।

पुन्य ते शुभ कर्म तेहने पुन्य कहीजे, तेहने अजीव कहीजे, तेहने बन्ध कहीजे।

पाप ते अशुभ कर्म तेहने पाप कहीजे. अजीव कहीजे, बन्ध कहीजे।

कर्म ग्रहै ते आस्रव कहीजे, तेहने जीव कहीजे, कर्म रोकै ते संबर कहीजे, जीव कहीजे।

देश थकी कर्म तोड़ी देश थकी जीव उज्वल थाय तेहने निर्जरा कहीजे, जीव कहीजे।

जीव संघाते कर्म बंधाणा ते बंध कहीजे, अजीव कहीजे।

समस्त कर्म मूंकावे ते मोक्ष कहीजे, जीव कहीजे हिवे एहनी ओलखणा न्याय सहित कहै छै।

जीव ने जीव किणन्याय कहीजे, गये काल जीव छो, वर्त्तमान काल जीव छै, आगामी काल जीव को जीव रहसी इणन्याय।

अजीव ने अजीव किणन्याय कहीजे, गये काल अजीव छो, वर्त्तमान काल अजीव छै, आगामी काले अजीव को अजीव रहसी।

पुन्य ने अजीव किणन्याय कहीजे, पुन्य ते शुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते अजीव छै।

पाप ने अजीव किणन्याय कहीजे, पाप ते अशुभ कर्म छै कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते अजीव छै।

आस्रव ने जीव किणन्याय कहीजे, आस्रव तो कर्म ग्रहै छै, कर्मां रो करता छै, कर्मां रो उपाय छै, उपाय ते जीव ही छै।

१ मिथ्यात्व आस्रव ने जीव किणन्याय कहीजे, विपरीत सरधान ते मिथ्यात्व आस्रव जीवरा परिणाम छै।

२ अव्रत आस्रव ने जीव किणन्याय कहीजे, अत्याग भाव ते जीव री आशा वांछा अव्रत आस्रव छै, ते जीव रा परिणाम छै।

३ प्रमाद आस्रव ने जीव किणन्याय कहीजे, अण-उत्साह पणो ते प्रमाद आस्रव छै, ते जीवरा परिणाम छै।

४ कषाय आस्रव ने जीव किंणन्याय कहीजे, कषाय आत्मा कही छै, कषाय ते जीवरा परिणाम छै, ते जीव छै।

जोग आस्रव ने जीव किणन्याय कहीजे, जोग आत्मा कही छै, जोग ते जीवरा परिणाम छै, तीनूं ही जोगां रो व्यापार जीवरो छै।

संवर ने जीव किणन्याय कहीजे, सामाई पच्चखाण,

संयम, संबर, विवेक, बिउसग, ए छऊं आत्मा कही छै, बलि चारित्र आत्मा कही छै, चारित्र जीवरा परिणाम छै इणन्याय।

निर्जरा नें जीव किणन्याय कहीजे, भला भाव प्रवर्ताँवी नै जीव देशथी उज्वलो हुवै ते जीव छै।

बन्ध ने अजीव किणन्याय कहीजे, बन्ध ते शुभ अशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै पुद्गल ते अजीव छै।

मोक्ष ने जीव किणन्याय कहीजे, समस्त कर्म मूंकावै ते मोक्ष कहीजे, निर्वाण कहीजे, सिद्ध भगवान कहीजे, सिद्ध भगवान ते जीव छै, इणन्याय मोक्ष ने जीव कहीजे।

॥ इति पञ्चम द्वारम् ॥

अथ छट्ठो रूपी अरूपी द्वार कहै छै।

जीव अरूपी छै, अजीव रूपी अरूपी दोनूं छै, पुन्य रूपी छै, पाप रूपी छै, आस्रव अरूपी छै, संबर अरूपी छै, निरजरा अरूपी छै, बंध रूपी छै, मोक्ष अरूपो छै, हिवे एहनी ओलखना कहै छै।

जीवने अरूपी किणन्याय कहीजे? छव द्रव्य में जीव ने अरूपी कह्यो छै, पांच वर्ण पावै नहीं।

अजीव ने अरूपी रूपी दोनूं किणन्याय कहीजे? अजीव का पांच भेद धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल, पुद्गल, इणमें च्यार तो अरूपी छै, यामें पांच वर्ण पावै नहीं एक पुद्गल रूपी छै।

पुन्य ने रूपी किणन्याय कहीजे? पुन्य तो शुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते रूपी छै।

पाप ने रूपी किणन्याय कहीजे? पाप ते अशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै पुद्गल तें रूपी छै।

आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे? कृष्णादिक छऊं भाव लेश्या अरूपी कही छै।

मिथ्यात्व आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे? मिथ्या दृष्टि अरूपी कही छै।

अव्रत आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे? अत्याग भाव परिणाम जीवरा अरूपी कह्या छै।

प्रमाद आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे? अण-उछाहपणो ते प्रमाद आस्रव छै, जीवरा परिणाम छै, ते जीव छै जीव ते अरूपी छै।

कषाय आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे? श्री ठाणांग दशमें ठाणे जीव परिणामी रा दश भेदां में कषाय परिणामी कह्यो छै, अने ज्ञान दर्शन चारित्र परि-णामी कह्या छै, ए जीव छै, तिम कषाय परिणामी जीव

छै, कषायपणे परिणमें ते कषाय परिणामी आस्रव छै, जीव छै, जीव ते अरूपी छै।

जोग आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे ? तीनों ही जोगां रो उठान कर्म बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम अरूपी छै।

संवर ने अरूपी किणन्याय कहीजे ? अठारे पाप ठाणा रो विरमण अरूपी छै।

निरजरा ने अरूपी किणन्याय कहीजे ? कर्म तोड़वा रो बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम अरूपी छै।

बन्ध ने रूपी किणन्याय कहीजे ? बन्ध ते शुभाशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते रूपी छै।

मोक्ष ने अरूपी किणन्याय कहीजे ? समस्त कर्मां ने मूकावे ते जीव छै, तेहने मोक्ष कहीजे, निर्वाण कहीजे, सिद्ध भगवान कहीजे, सिद्ध भगवान ते अरूपी छै।

॥ इति छट्ठो द्वारम् ॥

अथ सातमूं सावद्य निर्वद्य द्वार।

जीव तो सावद्य निर्वद्य दोनूं छै, अजीव सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं। पुन्य पाप सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं, अजीव छै। आस्रव का पांच भेद, मिथ्यात्व आस्रव, अव्रत आस्रव, प्रमाद आस्रव, कषाय आस्रव, ए च्यार

तो सावद्य छै, अशुभ जोग सावद्य छै, शुभ जोग निर्वद्य छै। इणन्याय आस्रव सावद्य निर्वद्य दोनूं छै। संवर निर्वद्य छै। निरजरा निर्वद्य छै। बंध सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै। मोक्ष निर्वद्य छै।

॥ इति सप्तम द्वारम् ॥

अथ आठमूं भाव द्वार कहै छै।

भाव ५ पांच—उदय भाव १, उपशम भाव २, क्षायक भाव ३, क्षयोपशम भाव ४, परिणामिक भाव ५।

उदय तो आठ कर्म नो अने उदय निपन्न रा दोय भेद—जीव उदय निपन्न १, दूजो जीव रे अजीव उदय निपन्न २, तिणमें जीव उदय निपन्नरा ३३ तेतीस भेद ते कहै छै, च्यार गति ४, छव काय १०, छव लेश्या १६, च्यार कषाय २०, तीन वेद एवं २३ मिथ्याती २४, अव्रती २५, असन्नी २६, अनाणी २७, आहारता २८, संसारता २९, असिद्ध ३०, अकेवली ३१, छद्मस्थ ३२, सजोगी ३३।

हिवै जीव रे अजीव उदय निपन्नरा ३० तीस भेद ते कहै छै, पांच शरीर ५, पांच शरीर रे प्रयोगे परिणम्यां द्रव्य, ५ पांच वर्ण, २ दोय गन्ध, ५ पांच रस, ८ आठ स्पर्श, एवं तीस।

उपशम रा दोय भेद—एक तो उपशम १ दूजो उपशम निपन्न भाव, उपशम तो एक मोह कर्मरो होय, उपशम निपन्न रा दोय भेद, उपशम समकित १, उपशम चारित्र २ ।

क्षायक रा दोय भेद—एक तो क्षायक दूजो क्षायक निपन्न, क्षायक तो आठ कर्मां को होय अने क्षायक निपन्न रा १३ तेरा भेद, ते कहै छै ।

केवल ज्ञान १, केवल दर्शन २, आत्मिक सुख ३, क्षायक सम्यक्त्व ४, क्षायक चारित्र ५, अटल अवगाहना ६, अमुर्त्तिक पणो ७, अगुरु लघु पणो ८, दान लब्धि ६, लाभ लब्धि १०, भोग लब्धि ११, उपभोग लब्धि १२, वीर्य लब्धि १३ ।

क्षयोपशम रा दोय भेद, एक तो क्षयोपशम १, दूजो क्षयोपशम निपन्न भाव २, क्षयोपशम तो च्यार कर्म को ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय अन्तराय, अने क्षयोपशम निपन्न भाव रा ३२ बत्तीस बोल, ते कहै छै ।

ज्ञानावरणीय कर्म रो क्षयोपशम होय तो ८ आठ बोल पामै, केवल बरजी ४ च्यार ज्ञान, ३ तीन अज्ञान, १ एक भणवो गुणवो ।

दर्शनावरणीय कर्म रो क्षयोपशम होय तो आठ

बोल पामै, ५ पांच इन्द्री, ३ तीन दर्शन केवल बरजी।

मोहनीय कर्म रो क्षयोपशम होय तो आठ बोल पामै, ४ च्यार चारित्र, एक देश व्रत, ३ तीन दृष्टि।

अन्तराय कर्म रो क्षयोपशम होवै तो आठ बोल पामैं, ५ पांच लब्धि, ३ तीन वीर्य।

परिणामिक रा दोय भेद सादिया परिणामी १, अनादिया परिणामी २, अनादिया परिणामिक रा १० दश भेद तिणमें ६ छव द्रव्य धर्मास्ति आदि, ७ सातमूं लोक, ८ आठमूं अलोक, ९ नवमूं भवी, १० दशमूं अभवी। अने सादिया परिणामी रा अनेक भेद जाणवा। गाम नगर गड़ा पहाड़ पर्वत पताल समुद्र द्वीप भुवन विमान इत्यादि अनेक भेद आदि सहित परणामिक रा जाणवा।

जीव आसरी जीव परिणामिक रा १० दश भेद, ते कहै छै।

गति परिणामी १, इन्द्रिय परिणामी २, कषाय परिणामी ३, लेश्या परिणामी ४, जोग परिणामी ५, उपयोग परिणामी ६, ज्ञान परिणामी ७, दर्शन परिणामी ८, चारित्र परिणामी ९, बेद परिणामी, दश १०।

हिवै जीव आसरी अजीव परिणामी रा १० दश भेद कहै छै।

बंधन परिणामी १, गई परिणामी २, संठाण परि-णामी, ३, भेद परिणामी ४, वर्ण परिणामी ५, गन्ध परिणामी ६, रस परिणामी ७, स्पर्श परिणामी ८, अगुरु लघु परिणामी ६, शब्द परिणामी १० ।

जीव में भाव पावै ५ पांचूं ही ।

अजीव पुन्य पाप बन्ध में भाव एक परिणामिक ।

आस्रव भाव दोय—उदय, परिणामिक ।

संबर भाव ४ च्यार, उदय बरजी ने ।

निरजरा भाव ३ तीन—क्षायक, क्षयोपशम, परि-णामिक ।

मोक्ष भाव दोय—क्षायक परिणामिक ।

॥ इति अष्टम द्वारम् ॥

अथ नवमूं द्रव्य गुण पर्याय द्वार ।

द्रव्य तो जीव असंख्य प्रदेशी, गुण आठ, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य, उपयोग, सुख, दुःख, एक एक गुणरी अनन्ती अनन्ती पर्याय ।

ज्ञान करी अनन्ता पदार्थ जाणै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

दर्शन करी अनन्ता पदार्थ सरधै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

चारित्र थी अनन्त कर्म प्रदेश रोकै तिणसूं अनन्ती पर्याय।

तप करी अनन्त कर्म प्रदेश तोड़ै तिणसूं अनन्ती पर्याय।

वीर्य नी अनन्ती शक्ति तिणसूं अनन्ती पर्याय।

उपयोग थी अनन्त पदार्थ जाणै देखै तिणसूं अनन्ती पर्याय।

सुख अनन्त पुन्य प्रदेश सूं अनन्त पुद्गलिक सुख बेदै तिणसूं अनन्ती पर्याय। वलि अनन्त कर्म प्रदेश अलग हुयां थी अनन्त आत्म सुख प्रगटे तिणसूं अनन्ती पर्याय।

दुख अनन्त पाप प्रदेश सूं अनन्त दुख बेदै तिणसूं अनन्ती पर्याय।

अजीव ना पांच भेद—धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल, पुद्गलास्ति यांको द्रव्य गुण पर्याय कहै छै।

द्रव्य तो एक धर्मास्ति, गुण चालवा नो साझ पर्याय अनन्त पदार्थ ने चालवा नो सहाय तिणसूं अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो एक अधर्मास्ति, गुण थिर रहवा नो सहाय, पर्याय अनन्ता पदार्थ ने थिर रहवा नो साझ तिणसं अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो एक आकाशास्ति, गुण भाजन पर्याय अनन्त पदार्थों नो भाजन तिणसूं अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो काल, गुण वर्त्तमान, पर्याय अनन्ता पदार्थां पर बरतै तिणसूं अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो एक पुद्गल, गुण अनन्त गलै अनन्त मिलै तिणसूं अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो पुन्य. गुण जीवकै शुभ पणै उदय आवै, पर्याय अनन्त प्रदेश शुभ पणै उदय आवै सुख करै तिणसूं अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो पाप, गुण जीवरे अनन्त प्रदेश अशुभ पणै उदय आवै, अनन्त दुख करै तिणसूं अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो आस्रव गुण कर्म ग्रहै पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश ग्रहै तिणसूं अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो संवर गुण कर्म रोकवा रो, पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश रोकै तिणसूं अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो निर्जरा गुण देश थकी कर्म प्रदेश तोड़ी देश थी जीव उजलो थाय, पर्याय अनन्त कर्म प्रदेश तोड़ै तिणसूं अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो बन्ध, गुण जीव ने बांध राखवा रो, पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश करी बांधै तिण सूं अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो मोक्ष, गुण आत्मिक सुख, पर्याय अनन्त कर्म प्रदेश क्षय हुयां अनन्त सुख प्रगटै तिण सूं अनन्ती पर्याय ।

॥ इति नवम द्वारम् ॥

अथ दशमूं द्रव्यादिकरी ओलखना द्वार

जीवने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे, काल थकी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी, गुण थी चेतन गुण ।

अजीव ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी लोकालोक प्रमाणे, काल थकी आदि अन्त रहित, भाव थी रूपी अरूपी दोनूं, गुण थकी अचेतन गुण ।

पुन्य ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थकी जीवां कने, काल थकी आदि अन्त सहित, भाव थकी रूपी गुण थकी जीव के शुभ पणै उदय आवै ।

पाप ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी जीवां कने, काल

थकी आदि अन्त सहित, भाव थकी रूपी, गुण थकी जीव रै अशुभ पणै उदय आवै ।

आस्रव ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी जीवां कने, काल थकी रा ३ तीन भेद—एकेक आस्रव री आदि नहीं अन्त नहीं ते अभव्य आसरी, एकेक आस्रव री आदि नहीं पण अन्त छै ते भव्य आसरी, एकेक आस्रव री आदि छै अन्त छै ते पड़वाई आसरी, तेहनी स्थिति जघन्य अन्तर मुहूर्त्त उत्कृष्टी देश ऊणी अर्ध पुद्गल परावर्तन, भाव थकी अरूपी गुण थकी कर्म ग्रहवा नो गुण ।

संबर ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी तो असंख्याता द्रव्य, खेत्र थी जीवां कने, काल थकी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी, गुण थकी कर्म रोकवा रो गुण ।

निर्जरा ने पांच बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अकाम निर्जरा का तो अनन्ता द्रव्य, सकाम निर्जरा का असंख्याता द्रव्य, खेत्र थी जीवां कने, काल थकी आदि अन्त रहित भाव थकी अरूपी, गुण थकी कर्म तोड़वा रो गुण ।

बन्ध ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थकी जीवां कने, काल थकी आदि अन्त सहित, भाव थकी रूपी, गुण थकी कर्म बांध राखवा रो ।

मोक्ष ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थकी जीवां कने, काल थकी एकेक सिद्धां री आदि अन्त नहीं, एकेक सिद्धां री आदि छै पण अन्त नहीं, भाव थकी अरूपी गुण थकी आत्मिक सुख ।

धर्मास्तिकायने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी एक द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे, काल थकी आदि अन्त रहित, भाव थकी अरूपी, गुण थकी जीव पुद्गल ने चालवा रो साझ ।

अधर्मास्तिकाय ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी एक द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे, काल थकी आदि अन्त रहित, भाव थकी अरूपी, गुण थकी जीव पुद्गल ने थिर रहवा नो सहाय ।

आकाशास्तिकाय ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी एक द्रव्य, खेत्र थकी लोक अलोक प्रमाणे, काल थकी आदि अन्त रहित, भाव थकी अरूपी, गुण थकी भाजन गुण ।

काल ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी अढाई द्वीप प्रमाणे, काल थकी अदि अन्त रहित, भाव थकी अरूपी, गुण थकी वर्त्तमान गुण।

पुद्गलास्तिकाय ने पांचां बोलां करी ओलखीजे।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थकी लोक प्रमाणे, काल थकी आदि अन्त सहित, भाव थकी रूपी, गुण थकी गलै मलै।

॥ इति दशम द्वारम् ॥

अथ एकादशमूं आज्ञा द्वार कहै छै।

जीव आज्ञा मांहि बाहर दोनूं छै, ते किणन्याय? सावद्य कर्तव्य आसरी आज्ञा बाहर छै अने निर्वद्य कर्तव्य आसरी आज्ञा मांहि छै।

अजीव आज्ञा मांहि के बाहर? अजीव आज्ञा मांहि बाहर दोनूं नहीं, ते किणन्याय? अजीव छै, अचेतन छै, जड़ छै।

पुन्य, पाप, बंध, ए तीनूं आज्ञा मांहि बाहर नहीं अजीव छै।

आस्रव आज्ञा मांहि बाहर दोनूं छै, किणन्याय? आस्रव ना पांच भेद—मिथ्यात्व १, अव्रत २, प्रमाद ३

कषाय ४, ए च्यार तो आज्ञा वाहर छै। जोग आस्रव का दोय भेद—शुभ जोग वर्त्ततां निर्जरा हुवै तिण अपेक्षाय आज्ञा मांहि छै। अशुभ जोग आज्ञा वाहर।

संबर आज्ञा मांहि छै, ते किणन्याय? संवर थी कर्म रुकै ते श्री वीतराग की आज्ञा मांहि छै।

निर्जरा आज्ञा मांहि छै, किणन्याय? कर्म तोड़वा रा उपाय श्री वीतराग की आज्ञा में छै।

मोक्ष आज्ञा मांहि छै, ते किणन्याय? सकल कर्म खपावारी श्री वीतराग की आज्ञा छै।

॥ इति एकादशम द्वारम् ॥

॥ अथ बारमूं जिनय द्वार कहे छै ॥

जीव ने जीव जाणवो। अजीव ने अजीव जाणवो। पुन्य ने पुन्य जाणवो। पाप ने पाप जाणवो। आस्रव ने आस्रव जाणवो। संबर ने संबर जाणवो। निर्जराने निर्जरा जाणवो। बंधने बंध जाणवो। मोक्ष ने मोक्ष जाणवो। एह नव पदार्थ जाणवा योग कह्या छै। इणां में आदरवा जोग ३ तीन, संबर १, निर्जरा २, मोक्ष ३, बाकी ६ छांडवा जोग छै।

जीवने छांडवा जोग किणन्याय कहीजे ? आपरा जीव को भाजन करी किणी जीव ऊपर ममत्व भाव न करवो।

अजीव छांडवा जोग किणन्याय कहीजै ? किणी अजीव पर ममत्व भाव न करवो।

पुन्य पाप छांडवा जोग किणन्याय कहीजै ? शुभ अशुभ कर्म छांडवा जोग छै।

आस्रव ने छांडवा जोग किणन्याय कहीजै ? आस्रव कर्म ग्रहै छै। कर्मा रो उपाय छै। शुभाशुभ कर्म आवाना बाराणा छै। ते छांडवा जोग छै।

कर्म रोकै ते संबर आदरवा जोग छै।

देश थकी कर्म तोड़ी, देश थकी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा आदरवा जोग छै।

बंध नें छांडवा जोग किणन्याय कहीजै ? शुभाशुभ कर्म जीव के बंध रह्या छै ते बंध तो छांडवा ही जोग छै।

मोक्ष ने आदरवा जोग किणन्याय कहीजै ? समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष आदरवा जोग छै।

॥ इति द्वादशम द्वारम् ॥

अथ तेरमूं तलाव द्वार कहै छै ।

तलाव रूपी जीव जाणवो । अतलाव ते तलाव रूपी अजीव जाणवो । निकलता पाणी रूप पुन्य पाप जाणवा । नाला रूप आस्रव जाणवो । नाला बंध रूप संबर जाणवो । मोरी करी ने पाणी काढ़ै ते निर्जरा जाणवो । मांहिला पाणी रूप बंध जाणवो । खाली तलाव रूप मोक्ष जाणवो ।

॥ इति तेराद्वार-सम्पूर्णम् ॥

॥ जाणपणा का पच्चीस बोल ॥

१ देव अरिहन्त, गुरु निग्रन्थ, धर्म्म केवली प्ररूप्यो । ये तीन अमूल्य रत्न छै ।

२ जीव, अजीव, पुन्य, पाप, धर्म, अधर्म, व्रत, अव्रत, आज्ञा, अणआज्ञा, यथार्थ जाण्यां बिना समकित नहीं, समकित बिना चारित्र नहीं तथा मुक्ति नहीं, उघाड़ै मुख बोल्यां धर्म नहीं ।

३ साधू का भेष पहन कर साधू नाम धराने से साधू नहीं जैसे ही पञ्चम गुणस्थान स्पर्शं बिना श्रावक नहीं, छः द्रव्य, नव तत्व, च्यार गति, छः काय, देव गुरु धर्म ओलख्यां से सम्यक्त्वी जाणवो ।

४ असंजती जीव को जीवणो बंछै ते राग, मरणो बंछै ते द्वेष, संसार समुद्र से तिरणो बंछै ते वीतराग देव को धर्म।

५ जीव जीवै ते दया नहीं, मरै ते हिन्सा नहीं, मारण वाला ने हिन्सा, नहीं मारै ते दया।

६ पृथ्वी पाणी बनस्पति अग्नि वायरो (हवा) त्रस-काय में बेन्द्री से पंचेन्द्री तक यह छऊं काया ने मारै नहीं मरावे नहीं मारतां प्रते भलो जाणै नहीं, तेह दया छै, भय नहीं उपजावै ते अभय दान छै।

७ श्रावक च्यारूं आहार भोगवै ते अब्रत छै तेहथी पाप कर्म लागै छै, देश थकी या सर्व थकी त्याग करै तेह ब्रत छै, संबर धर्म छै, मन बचन काया का शुभ जोग बरतावै ते निर्जरा धर्म तिण थी पुन्य कर्म लागै छै।

८ गृहस्थ खावै पीवै, दूजा ने खुवावै पावै खावतां पीतां प्रते भलो जाणै ते अधर्म अब्रत आस्रवद्वार तेहथी अशुभ पाप कर्म लागै छै।

९ सर्व सावद्य जोग का त्याग करी पञ्च महाब्रत पालै तेह साधू, नहीं पालै ते असाधू, देश थकी त्याग करी शुद्ध देवगुरु धर्म की आराधना करै संसार सगपण अनित्य जाणै साधूपणा का भाव राखै श्रमण निग्रंथ की उपाशना करै, ते श्रमणोपासक।

१० अठारे पाप सेवा का त्याग करै, तीन कर्ण तीन जोग से सावद्य जोग पचखै, साधू तणी पर गौचरी करै, पड़िमा आदरै, पादोगमनादि संथारो करै, साधू पणों नहीं पचखै, तो श्रावक ही छै गुणस्थान पांचमो हीं पावै उणने साधू नहीं कहीजै आनन्दजी ने संथारा में अन्तसमां तांई उपासगदसा सूत्रमें गृहस्थ कह्यो छै।

११ शुद्ध साधू मुनिराज ने सूजतो निर्दोष आहार पाणी दियां कर्म निर्जरा होय, तथा कल्याणकारी कर्म ते पुन्य बंधै, प्रति संसार करै, शुभ दीर्घ आयु बांधै, ठाणांग भगवती विपाक आदि सूत्रांमें घणी जगां कह्यो छै।

१२ सर्व ब्रतधारी साधू ते संजती छट्ठा गुणस्थान से चौदमां तांई, अब्रती अपच्चखाणी ते असंजती पहिला गुणस्थान से चौथा तांई, देश ब्रतधारी ब्रताब्रती श्रावक ते पञ्चम गुणस्थान जाणवो, त्याग करै ते ब्रत देश संबर, आगार राख्यो सो सेवे सेवावे भलो जाणै ते अब्रत आस्रव छै, सूयगडांग उववाई आदि घणां सूत्रां में विस्तार छै।

१३ असंजती अब्रती अपच्चखाणी ने च्यारुं आहार सूजता असूजता निर्दोष तथा दोष सहित पडिलाभै तो एकान्त पाप, निर्जरा नथी। भगवती सूत्रके आठ में शतक छट्ठे उद्देशे कह्यो छै।

१४ साता दियां साता होय ए प्ररूपणां वाला ने भगवान सूत्र सूयगडांग अध्ययन ३ उद्देशे ४ में इम कह्यो छै आर्य मार्ग थी न्यारो १, समाधि मार्ग थी अलगो २, जिन धर्म की हेलणारो करणहार ३, अल्प सुखां रे वास्ते घणां सुखांरो हारण हार ४ असत्य पक्ष थी अमोक्षरो कारण ५, लोहवाणीयांपरे घणो झूरसी ६।

१५ त्रस जीवने साधू अनुकम्पा अरथे बांधै बंधावै बांधतानें भलो जाणै तो चौमासी प्रायश्चित कह्यो तथा बंधिया हुआ जीव ने अनुकम्पा आणी छोडै छुडावै छोडतां प्रते भलो जाणै तो चौमासी प्रायश्चित्त आवै सूत्र निशीथ उद्देशे १२ में कह्यो छै।

१६ चुलणी पिया श्रावक पोसामें ३ पुत्राने मारतो देखी बचाया नहीं माता ने छुड़ावण उठ्यो तो पोसो भागो, उपासगदसा सूत्र अध्ययन तीजै कह्यो छै तथा अरणक आदि श्रावक पण मोह अनुकम्पा नहीं करी।

१७ साधू मुनिराज ने लब्ध फोड़णी नहीं, सूत्र पन्नवणा पद ३६ में कह्यो छै तेजो लेश्या फोड्यां जघन्य ३ उत्कृष्टी ५ क्रिया लागै, इम बेक्रिय लब्धि आहारिक लब्धि फोड्यां क्रिया कही छै तथा भगवती शतक ३ उद्देशे ४ बेक्रिय लब्धि फोड़ै तिणमांहि कह्यो, विना आलोयां मरै तो विराधक कह्यो छै।

१८ असंजती ने दान देवा दीवावा का त्याग आगै पण बडा २ श्रावक किया सूत्रां में चाल्या छै उपासग दसा में आनन्दजी अन्यतीर्थी ते असंजती ने देवा दीवावा का त्याग भगवंत पासै किया छै धर्म होय तो त्याग किम करै।

१६ देवल प्रतिमा कारणे पृथ्वीकाय हणै तिण ने भगवान् आचारंग तथा प्रश्न व्याकरण सूत्र में अहित अबौध को कामी कह्यो, तथा धर्म हेत जीव हण्यां दोष नहीं इम प्ररूपै ते अनारज नो बचन छै आचारंग में कह्यो छै, एहवी अशुद्ध प्ररूपणा वालो मिथ्याती मन्द बुद्धि छै।

२० सर्व प्राण भूत जीव सत्व ने दुःख उपजावै नहीं, भय उपजावै नहीं, झुरावै नहीं, प्रतापना नहीं देवै, तो साता बेदनी नो बन्ध सूत्र भगवती शतक ७ उद्देशे ६ कह्यो छै परन्तु एकेन्द्री मार पंचेन्द्री पोष्यां धर्म किसी जगां नहीं कह्यो।

२१ साता बेदनी, मनुष्य देवता नो आयुष, शुभ नाम, ऊंच गोत्र ए ४ शुभ कर्म ते पुन्य छै, तेहनी करणी निर्वद्य जिन आज्ञा में छै, ए पुन्यनी करणी सूत्र भगवती शतक ८ में उद्देशे ६ में कही छै।

२२ साधू मुनिराज आहार उपधादिक भोगवै तेह

निरवद्य छै। दशवैकालिक अध्ययन ४ चौथै गाथा ८ मी में कह्या छै जयणा युत आहार करतां पाप नहीं तथा अध्ययन ५ में साधू नी गौचरी असावद्य मोक्ष साधवानो हेतु कही। सूत्र भगवती शतक १ उद्देशे ६ कह्यो छै साधू शुद्ध आहार भोगतां (७) सात कर्म ढीला पाड़ै तथा दशवैकालिक सूत्रमें शुद्ध गति कही छै।

२३ मिथ्याती उपवास बेलादिक तप करै अथवा साधू मुनिराज ने निर्दोष आहार पाणी बहिरावै तथा मन बचन काया का शुभ जोग बरतावै जेह निर्वद्य करणी जिन आज्ञा में छै, तेह थी पाप क्षय होय पुन्य बंधै, सूत्र भगवती शतक ८ में उद्देशे १० में ज्ञान बिना क्रिया करै तेह ने देश आराधक कह्यो छै, मेघकुमार हाथी रा भव में सुसला जानवर नी दया करी आपणो पग ऊंचो राख्यो घणो कष्ट सह्यो तिणसूं प्रति संसार करी मनुष्य नो आऊखो बांध्यो, उत्तराध्ययन ७ सात में मिथ्याती ने निर्जरा आसरी सुब्रती कह्यो छै भगवती शतक ६ में उद्देशे ३१ में असोचा केवली अधिकारे प्रथम गुणठाणारा धणीरा शुभ अध्यवसाय शुभ परिणाम विशुद्ध लेश्या कही छै।

२४ साधू मुनिराज अचित निर्दोष आहार भोगवै अनें ठंडा बासी आहार पाणी में बेन्द्री आदि जीव हुवै

ते नहीं भोगवै परन्तु वेइन्द्रियादि तथा फूलणादि नहीं होवे तो ठंडो बासी आहार भोगवतां दोष नहीं उत्तराध्ययन ८ में गाथा १२मी में सीतल पिन्ड आहार लेणो कह्यो तथा आचारंग श्रुतखंध १ अध्ययन ६ में उद्देशो ४ चौथे गाथा १३ में भगवान ठण्डो आहार ओल्यो लियो कह्यो छै तिहां टीकामें बासी भात कह्यो तथा प्रश्न व्याकरण अध्ययन १० में सीतल बासी कह्यो, विणठोरन एहवो आहार करी द्वेष नहीं करवो इम कह्यो छै।

२५ गृहस्थ ने सूत्र भणवा की जिन आज्ञा नहीं प्रश्न व्याकरण अध्ययन ७ में में महाऋषि ने हीं सूत्र भणवारी आज्ञा कही देवेन्द्र नरेन्द्र अरथे भणे तथा अन्यतिर्थी गृहस्थ ने बांचणी देवै देवावै देवता प्रते भलो जाणै तो चौमासी प्रायश्चित्त आवै निशाथ उद्देशो ६ में कह्यो छै, साधू ने भी कल्पआयां सूत्र भणवा सूत्र व्यवहार उद्देशो १० में कह्यो छै तिणरी विगत दीक्षा लियां ३ वर्ष हुयां निशीथ ४ वर्ष हुयां पछै सूयगडांग ५ वर्ष पछै वृहत कल्प व्यवहार दसाश्रुतखंध ८ वर्ष ठाणांग समवयांग. १० वर्ष दीक्षा लियां पछै भगवती कल्पै इम कह्यो छै तथा उववाई प्रश्न २० में श्रावकां ने अर्थरा जाणकार कह्या छै।

॥ इति ॥

अथ संजयारो थोकड़ो ।

सजया	पन्नवणाद्वार १	वेदद्वार २	रागद्वार	कल्पद्वार ४
सामायक चारित्र १	भेद २, इतर, आव । इतर पहले छेहले तीर्थङ्करांके वारे। तेहनी स्थिति ज० ७ दिन मझम ४ मास उ० ६ मास । आव २२ तीर्थङ्करांके वारें तथा महाविदेहमें, स्थिति जावजीव तांई ।	सवेदी वेद ३ पावे अवेदी उपशम खीण	सरागी	ठिई कल्पी अठिई कल्पी जिन कल्पी थिवर कल्पी कल्पातीत ।
छेदोस्थापनी चारित्र २	भेद २, अतिवार सहित, दोष लगावे १ अतिचार रहित, दोष न लगावे २ अतिचार रहित २३वां तीर्थङ्करना साधु २४वां में आवे तथा नव दीक्षित ।	सवेदी वेद ३ पावे अवेदी उपशम खीण	सरागी	ठिई कल्पी थिवर कल्पी जिन कल्पी ।
परिहारविशुद्ध चारित्र ३	भेद २, नियट्टमाण १ नियट्टकाय २। नियट्टमाण=तप करवा ने पेठो, नियट्टकाय=तप करी ने निकल्यो ।	सवेदी वेद २ पुरुष वेद, कृत नपुसक वेद	सारगी	ठिई कल्पी थिवर कल्पी जिनकल्पी ।
सूक्ष्म सम्प-राय-चारित्र ४	भेद २, सकलेसमाणं १ विशुद्धमाण २ सकलेसमाण=उप-शम श्रेणी सूं पड़तो, विशुद्धमाणं=क्षपक श्रेणी चढ़तो ।	अवेदी उपशम खीण	सरागी	ठिई कल्पी अठिई कल्पी कल्पातीत ।
यथाख्यात चारित्र ५	भेद २, छद्मस्थ १ केवली २ । छद्मस्थ ११, १२ गुणठाणे, केवली १३, १४ गुणठाणे ।	अवेदी उपशम खीण	वीतरागी उपशम खीण	ठिई कल्पी अठिई कल्पी कल्पातीत ।

संजया	नियठा द्वार ५	प्रतिसेवी द्वार ६	नाणद्वार ७	भणवो	तीर्थद्वार ८
सामायक चारित्र १	सामायक चारित्रका नियंठा ४ पुलाक, बुक्कस, पड़िसेसेवणा और कषाय कुशील।	सामायक चारित्र सपड़िसेवी हुवै तो मूल गुणमें दोष लगावे तथा उत्तरगुणमें दोष लगावे। अपड़िसेवी हुवै तो दोष न लगावे।	मति श्रुत ज्ञान। मति श्रुत अवधि। मति श्रुत मनपर्याय। मति श्रुत अवधि मनपर्याय।	जघन्य ८ प्रवचन उत्कृष्टो १४ पूर्व	तीर्थ। अन्यतीर्थी। प्रत्येक बुद्ध। तीर्थंकर।
छेदोस्थापनी चारित्र २	छेदोस्थापनीका नियठा ४ पुलाक, बुक्कस, पड़िसेवणा और कषाय कुशील।	एवं छेदोस्थापनी	एवं ४ ज्ञान	एवम्	तीर्थी
परिहारविशुद्ध चारित्र ३	पड़िहार विशुद्ध चारित्र को नियठो १ कषाय कुशील।	अपड़िसेवी पड़िवज्जती वेलां	एवं ४ ज्ञान	जघन्य ९ में पूर्वरो तीजो आचार वस्तु उत्कृष्टो देशूणो दश पूर्व	तीर्थी
सूक्ष्म सम्पराय चारित्र ४	सूक्ष्म सम्पराय को नियठो १ कषाय कुशील।	अपड़िसेवी	एवं ४ ज्ञान	जघन्य ८ प्रवचन उत्कृष्टो १४ पूर्व	तीर्थ। अन्यतीर्थी। प्रत्येक बुद्ध। तीर्थंकर।
यथाख्यात चारित्र ५	यथाख्यात का नियंठा २ सनातक, निग्रन्थ।	अपड़िसेवी	एवं ४ ज्ञान तथा केवल ज्ञान	ज० ८ प्रवचन उ० १४ पूर्व तथा सूत्र वितिरिक्त	तीर्थ। अन्यतीर्थी। प्रत्येक बुद्ध। तीर्थङ्कर।

सजया	लिंगद्वार ९	शरीरद्वार १०	क्षेत्रद्वार ११	कालद्वार १२	गतिद्वार तथा पदवी १३
सामायक चारित्र १	द्रव्यलिंगी १ सलिंगी २ अन्यलिंगी तापसादि ३ गृहलिंगी गृहस्थ के भेष ४ भावलिंगी ५	शरीर ५ पावै	जन्म १५ कर्मभूमि सारण अढाई द्वीप में	अवसर्पणी जन्म छता आश्री ३।४।५ आरै उत्सर्पणी जन्म आश्री २।३।४ छता आश्री ३।४ आरै	जघन्य पहलै देवलोक उ० ५ अनुत्तर विमाण। पदवी ५ इन्द्र, सामानिक, लोकपाल, ताय त्रिसक, अहमिन्द्र। स्थिति ज० २ पल्य उ० ३३ सागर।
छेदोस्थापनी चारित्र २	एवम् ५ पावै	शरीर ५ पावै	जन्म ५ भरत ५ इरवर्त। सारण अढ़ाई द्वीपमें	एवम्	एवं सामायक ज्यूं
परिहार विशुद्ध चारित्र ३	३ पावै द्रव्यलिंगी १ भावलिंगी २ सलिंगी ३	शरीर ३ पावै उदारिक, तेजस कारमाण	जन्म ५ भरत ५ इरवर्त। सारण नहीं।	अवसर्पणी जन्म आश्री ३।४ छता आसरी ३।४।५ उत्सर्पणी जन्म आसरी २।३।४ छताआश्री ३।४ आरै	जघन्य पहलै देवलोक उ० ८ देवलोक। पदवी ४ अहमिंद्र टाली। स्थिति ज० २ पल्य उत्कृष्टी १८ सागर।
सूक्ष्म सम्पराय चारित्र ४	सामायक ज्यूं ५ पावै	एवम् ३	जन्म १५ कर्मभूमि सारण नहीं पूर्व सारण अढ़ाई द्वीपमें	एवम्	जघन्य उत्कृष्टी ५ अनुत्तर विमाण। पदवी १ अहमिंद्र। स्थिति जघन्य उत्कृष्टी ३३ सागर।
यथाख्यात चारित्र ५	सामायक ज्यूं ५ पावै	एवम् ३	जन्म १५ कर्मभूमि। सारण नहीं पूर्वे सारण अढ़ाई द्वीपमें	एवम्	जघन्य ५ अनुत्तर विमाण उत्कृष्टी मोक्ष। पदवी २ अहमिंद्र तथा सिद्ध। स्थिति जघन्य ३३ सागर उत्कृष्टी मोक्ष।

मंजया	कर्म उदीरणा द्वार २३	उपशम पन्नवणा द्वार २४	संज्ञाद्वार २५	आहारिक द्वार २६	घणाभव द्वार २७	आकर्ष द्वार २८
सामायक चारित्र १	८ उदेरै तथा ७ उदेरै आउपो वर्जी ने तथा ६ उदेरै वेदनी आयु वर्जी	सामायक पणो छाडी ४ ठोड़ जाय। छेदोस्थापनी, सूक्ष्म सम्पराय, असंजम, संजमासजम।	सन्नी बोहोत्ता नो सन्नी बोहोत्ता	आहारिक	जघन्य १ भव करै उ० ७।८ भव करै	जघन्य १ वार उत्कृष्टा ९०० वार
छेदोस्थापनी चारित्र २	एवम् ८।७।६	छेदोस्थापनी छाड़ी ने ५ ठोड़ जाय। सामायक, पड़िहार विशुद्ध सूक्ष्म सम्पराय, असजम, संजमासजम	एवम्	आहारिक	एवम्	जघन्य १ वार उत्कृष्टा १२० वार
परिहार विशुद्ध ३	एवम्	पड़िहार विशुद्ध छाड़ी ने २ ठोड़ जाय। असजम, छेदोस्थापनी।	एवम्	आहारिक	जघन्य १ भव उ० ३ भव	जघन्य १ वार उत्कृष्टा ३ वार
सूक्ष्म सम्पराय चारित्र ४	५ उदेरै आउपो मोहनी वेदनी वर्जी तथा ६ उदेरै आयु वेदनी वर्जी ने	सूक्ष्म सम्पराय छोड़ी ने ४ ठोड़ जाय सामायक, छेदोस्थापनी, यथाख्यात, असजम।	नो सन्नी बोहोत्ता	आहारिक	ज० १ भव उ० ३ भव	जघन्य १ वार उत्कृष्टा ४ वार
यथाख्यात चारित्र ५	५ उदेरै ऊपर ज्यूं तथा २ उदेरै नाम गोत तथा अण-उदीरणा हुवे	यथाख्यात छोड़ी ने ३ ठोड़ जाय। मोक्ष, सूक्ष्म सम्पराय, असंजम।	नो सन्नी बोहोत्ता	आहारिक तथा अणाहारिक	ज० १ भव उ० ३ भव करै	जघन्य १ वार उत्कृष्टा २ वार

संजया	घणाभव आसरी	स्थितिद्वार २९	घणाभव आसरी	आंतराद्वार ३०	घणाभव आसरी	समुद्घात द्वार ३१	क्षेत्रद्वार ३२
सामायक चारित्र १	जघन्य २ वार उ० ७२०० वार	जघन्य १ समो उत्कृष्टो देशूणो कोड़ पूर्व	सदाकाल	जघन्य अंतर्मुहूर्त्त उ० देशूणो अर्द्ध पुद्गल	आंतरो पड़े नहीं	६ पावै	लोकरे असंख्यातमें भाग
छेदोपस्थापनी चारित्र २	जघन्य २ वार उ० ९६० वार	एवम्	जघन्य २५० वर्ष उत्कृष्टा ५० लाख कोड़ सागर	एवम्	ज० ६३ हजार वर्ष उ० १८ कोड़ाकोड़ सागर कांई ऊणो	६ पावै	एवम्
परिहार विशुद्ध ३	जघन्य २ वार उ० ७ वार	ज० १ समो उ० २९ वर्ष ऊणो कोड़ पूर्व	जघन्य देश ऊणा २०० वर्ष उत्कृष्टा देशूणा २ कोड़ पूर्व	एवम्	ज० ८४ हजार वर्ष उ० १८ कोडाकोड़ सागर कांई ऊणो	३ पावै वेदनी, मरण, कषाय,	एवम्
सूक्ष्म सम्पराय चारित्र ४	जघन्य २ वार उ० ९ वार	जघन्य १ समो उ० अन्तर्मुहूर्त्त	जघन्य १ समो ऊपर अन्तर्मुहूर्त्त	एवम्	जघन्य १ समो उत्कृष्टा ६ मास	नथी	एवम्
यथाख्यात चारित्र ५	जघन्य २ वार उ० ५ वार	जघन्य १ समो उ० देश ऊणो कोड़ पूर्व ८	सदाकाल	एवम्	आंतरो पड़े नहीं	केवल समुद्घात पावै तो	लोकरे असख्यातमें भाग तथा आखे लोकमें केवल समुद्घात करे जब

संजया	फर्शनाद्वार ३३	भावद्वार ३४	प्रवर्ज्या द्वार ३५	पूर्व प्रवर्ज्या	अल्पाबहुत्व ३६
सामायक चारित्र १	लोकरै असख्यातमें भाग	भाव २ क्षयोपशम, प्रणामिक	सीए अत्थी सीए नत्थी जे होवै तो जवन्य १।२।३ उत्कृष्टी प्रत्येक हजार	जवन्य उत्कृष्ट प्रत्येक १००० हजार कोड़	सख्याता ५
छेदोस्थापनी चारित्र २	एवम्	एवम्	सीए अत्थी सीए नत्थी जे होवे तो जघन्य १।२।३ उत्कृष्टा प्रत्येक १०००	जघन्य उत्कृष्टी प्रत्येक सौ कोड़	सख्याता ४
परिहार विशुद्ध ३	एवम्	एवम्	सीए अत्थी सीए नःथी जे होवे तो जवन्य १।२।३ उत्कृष्टा प्रत्येक १००	जघन्य १।२।३ उत्कृष्ट १००० प्रत्येक	सख्याता २
सूक्ष्म सम्पराय चारित्र ४	एवम्	एवम्	सीए अत्थी सीए नत्थी जघन्य १।२।३ उ० १६२ त्यांमें ५४ उपशम श्रेणीरा १०८ क्षपक श्रेणीरा	सीए अत्थी सीए नत्थी जो हुवै जघन्य १।२।३ उ० प्रत्येक १००	सख्याता १
यथाख्यात चारित्र ४	लोकरै असख्यात में भाग तथा आखो लोक फर्शे केवल समुद्घात करै जब	भाव ३ उपशम, क्षायक प्रणामी	सीए अत्थी सीए नत्थी जघन्य १।२।३ उ० १६२ त्यांमें ५४ उपशम श्रेणीरा १०८ क्षपक श्रेणीरा	जवन्य उत्कृष्टी प्रत्येक कोड़	संख्याता ३

अथ नियंठारो थोकड़ो ।

नियठा	पन्नवणा द्वार १	वेदद्वार २	रागद्वार ३	कल्पद्वार ४	चारित्र द्वार	प्रतिसेवी द्वार ६
पुलाक १	भेद ५ नाण पुलाक १ दर्शण पुलाक २ चारित पुलाक ३ लिंग पुलाक ४ यथासूक्ष्म पुलाक ५	सवेदी वेद २ पुरुष वेद, कृत नपुंसक वेद	सरागी	ठिईकल्पी पहलै छेहलै तीर्थंकर वारै, अठिईकल्पी २ २तीर्थंकरांके वारै, महाविदेहमें थिवरक० ३	२ सामायक, छेदोस्थापनी	मूल गुण उत्तर गुणमें दोष लगावै
वुक्कस २	भेद ५ जाणी अभोग १ अजाणी अणाभोग २ सवुडो छाने ३ असवुडा प्रगट ४ आहासुहुम किंचित ५	सवेदी वेद ३ पावै	सरागी	४ ठिईकल्पी, अठिईकल्पी, जिनकल्पी, थिवरकल्पी ४	२ सामायक, छेदोस्थापनी	उत्तर गुणमें दोष लगावै
पडिसेवणा ३	भेद ५ नाण १ दर्शन २ चारित्र ३ लिंग ४ आहासुहुम ५	सवेदी वेद ३ पावै	सरागी	४ ऊपर ज्यूं	२ सामायक, छेदोस्थापनी	मूल गुण उत्तरगुण दोनोमें दोष लगावै
कपाय कुशील ४	भेद ५ नाण १ दर्शन २ चारित्र ३ लिंग ४ आहासुहुम ५	सवेदी ३ तथा अवेदी उपसत खीण	सरागी	५	४ सामायक छेदोस्थापनी पड़िहार विशुद्ध सूक्ष्म सम्पराय	मूल गुण उत्तर गुण दोनो में दोष न लगावै पड़िवजती वेलां जठा पछै
निग्रथ ५	भेद ५ पढ़म समै निग्रथ १ अपढ़म समै निग्रथ २ चरम ३ अचरम ४ आहासुहुम निग्रथ ५	अवेदी उपसंत खीण	वीतरागी उपसंत खीण	३ ठिईकल्पी, अठिईकल्पी, कल्पातीत	१ यथाख्यात	अपड़िसेवी
सनातक ६	भेद ५ अछवी सूश्रुषा न करै १ असवले २ अकम्मे ३ निर्मल ज्ञान ४ अपड़िसेवी ५	अवेदी खीण	वीतराग खीण	३ ठिईकल्पी, अठिईकल्पी, कल्पातीत	१ क्षायिक	अपड़िसेवी

नियठा	नाणद्वार ७	भणवो	तीर्थद्वार ८	लिंगद्वार ९	शरीर द्वार १०	क्षेत्रद्वार ११
पुलाक १	मतश्रुत मतश्रुत अवध	जघन्य ९ में पूर्वरी३ वत्थु। उत्कृष्टो ९ पूर्व	तीर्थी	द्रव्यलिंग५ पावै। द्रव्य लिंगी। सलिंगी। अन्य लिंगी। गृहलिंगी। भाव लिंगी। भाःलिः१सःलि	३पावै। उदा-रिक। तेजस। कार्मण	जन्मछता आश्री १५कर्मभूमि साहारण नहीं
वुक्कंस २	मतश्रुत मतश्रुत अवध	ज० ८ प्रवचन उत्कृष्टा १० पूरव	तीर्थी	५ पावै	४ पावै उदा-रिक। वैक्रे। तेजस। कार्मण	जन्मछता आश्री १५कर्मभूमि साहारण अढाई द्वीप में
पडिसेवणां ३	मतश्रुत मतश्रुत अवध	ज० ८ प्रवचन उ० १० पूर्व	तीर्थी	५ पावै	४ पावै उदा-रिक। वैक्रे। तेजस। कार्मण	जन्मछता आश्री १५कर्मभूमि साहारण अढाई द्वीप में
कषाय कुशील ४	मतश्रुत मतश्रुत अवध। प्रतश्रुत मन पर्या। मत-श्रुत अवध मन पर्या।	ज० ८ प्रवचन उ० १४ पूर्व	४ तीर्थी। अन्य तीर्थी। प्रतेक बुद्ध। तीर्थंकर	५ पावै	५ पावै	जन्मछता आश्री १५कर्मभूमि साहारण अढाई द्वीप में
निग्रंथ५	ज्ञान ४ पावै	ज० ८ प्रवचन उ० १४ पूर्व	४ तीर्थ पावै ऊपरज्यों	५ पावै	३ पावै	जन्मछता आश्री १५कर्मभूमि सारन नहीं पूर्वे सारन अढाई द्वीप में
सनातक ६	केवल ज्ञान	सूत्र वितिरिक्त	४ तीर्थी पावै ऊपरज्यु	५ पावै	३ पावै	ऊपरज्यों

नियंठा	कालद्वार १२	गतिद्वार १३	पदवी	थिति	थानकद्वार १४
पुलाक १	अवसर्पणी कालमें जन्म ३जे चौथे आरे छता३।४।५आरे उत्सर्पणी जन्म२।३।४ आरे छता३।४।५आरे महाविदेहमें पिण	जघन्य१ देवलोक उत्कृष्टो ८ देवलोक	४ पदवी इन्द्र १सामानिक २ लोकपाल ३ त्रायत्रिंसक ४	जघन्य २ पल्य उत्कृष्टी १८ सागर	असख्याता २
बुकस २	अवसर्पणी कालमें जन्म छता३।४।५ आरे उत्सर्पणी कालमें जन्म २।३।४ आरे छता ३।४ आरे	जघन्य १ देवलोक उत्कृष्टो १२ देवलोक	४ पदवी ऊपरज्यूं	जघन्य २ पल्य उत्कृष्टी २२ सागर	असंख्याता ३
पड़िसेवणा३	अवसर्पणी कालमें जन्म छता३।४।५आरे उत्सर्पणी जन्म २।३।४ छता३।४आरे	जघन्य १ देवलोक उत्कृष्टो १२ देवलोक	४ पदवी उपरज्युं	जघन्य २ पल्य उत्कृष्टी २२ सागर	असंख्याता ४
कषाय कुशील ४	अवसर्पणी कालमें जन्म छता आश्री ३।४।५ आरे उत्सर्पणी काल में जन्म २।३।४ आरे छता ३।४ आरे	जघन्य १ देवलोक उत्कृष्टा५ अनुत्तर विमान	५ पदवी इन्द्र १सामानिक२ लोकपाल३ त्रायत्रिंसक४ अहमिंद्र५	जघन्य २ पल्य उत्कृष्टी-३३ सागर	असंख्याता ५
निग्रन्थ ५	पुलाक ज्यूं पूर्व सारण आश्री अढाई द्वीपमें	जघन्य उत्कृष्टो ५ अनुत्तर विमान	अहमिंदर १	जघन्य उत्कृष्टी ३३ सागर	१थानक सर्वसुं थोड़ा
सनातक ६	पुलाक ज्यु पूर्वे साहरण अढाई दीपमें	मोक्षगति	सिद्धपदवी	मोक्षगति	१थानक सर्वसुं थोड़ा

नियटा	निकासद्वार १५	जघन्य पजवा	जोगद्वार १६	उपयोग द्वार१७	सकषाय द्वार १८
पुलाक १	पुलाक पुलाक साथे छठाण वलिया । कषाय कुशील साथे छठाण बलिया। और ४ सू अनत गुणहीण	पुलाक कषाय कुशील ना जघन्य पजवा मांहोमांहि तुल्ला है। तेहथी पुलाकरा उत्कृष्टा पजवा अनत गुणा। वुक्कस पड़िसेवीरा जघन्य पजवा मांहोमांहि तुल्ला है पुलाक रा उत्कृष्टा पजवा सू अनन्त गुणा इधका। तेह थकी वुक्कस रा उत्कृष्टा पजवा अनत गुणा इधका तेह थको पड़िसेवीरा उत्कृष्टा पजवा अनत गुणा अधिका। तेह थकी कपाय कुशील रा उत्कृष्टा पजवा अनत गुणा अधिका तेह थकी निग्रथ सनातकरा पजवा अनत गुणा अधिका आपसरी में तुल्ला।	जोग ३ पावै मन वचन काया	२ सागार मणागार	सकषाय ४ सजलका पावै
वुक्कस २	वुक्कस वुक्कस पड़िसेवणा कषाय कुशील साथे छठाण बलिया। पुलाक सू अनंत गुणा अधिका। निग्रंथ सनातक सू अनत गुणहीणा		सजोगी ३ जोग पावै	२ पावै	सकषाय
पड़िसेवणां ३	पड़िसेवणां पड़िसेवणा वुक्कस कषाय कुशील साथे छठाण बलिया निग्रथ सनातक सू अनत गुणहीण। पुलाक सू अनत गुणा अधिका।		सजोगी ३ जोग पावै	२ पावै	सकपाय
कपाय कुशील ५	वुक्कस ज्यू पड़िसेवण पहला ४ सू तो छठाण बलिया निग्रथ सनातक सू अनत गुणहीण		जोग ३ पावै	२ पावै	४।३।२।१ लोभ १
निग्रथ ५	निग्रंथ माहोमाहिं तुल्ला है। सनातक सू तुल्ला है। और च्यारां सू अनत गुणां अधिका।		जोग ३ पावै	२ पावै	अकपाय उपसत खीण
सनातक ६	निग्रथ सनातक तुल्ला है मांहोमांहि तुल्ला है और च्यारांई सू अनत गुणा अधिक।		जोग ३ पावै अजोगी पिण हुवै	२ पावै	अकपाय खीण

नियठा	लेश्याद्वार १९	परणाम द्वार २०	थिति	कर्मबध द्वार२१	कर्मवेदैद्वार२२	कर्म उदीरणां द्वार २३
पुलाक १	लेश्या ३ भलो पावै	३ पावै वट्टमाण हायमाण अवुठिया	वट्टमान हायमानकी जघन्य थिति १ समो उ० अन्त-मुंहुर्त्त । अवुठियाकी ज० १ समो उ० ७ समा	७वांधै आउषो वर्जी ने	८ कर्म वेदै	६ कर्म उदैरै आयु वेदनी वर्जी
वुक्कस २	३ भली पावै	३ पावै	ऊपरज्युं	७।८ वांधै	८ वेदै	८।७।६ आयु वर्जी ७ उदैरै वेदनी आयु वर्जी ६ उदैरै
सपड़िसेवणां३	३ भली पावै	३ पावै	ऊपरज्युं	७।८ वांधै	८ वेदै	८।७।६
कषाय कुशील ४	६ लेश्या पावै	३ पावै	ऊपरज्युं	६।७।८आउषो मोहनी वर्जी ने	८ वेदै	८।७।६।५ वेदनी । मोहनी । आयु वर्जी ५ उदैरै
निग्रन्थ ५	१ शुक्ल लेश्या पावै	१ पावै वट्टमाण अवुठिया	वट्टमान की थिति ज० उ० अन्तर्मुहूर्त्त अवुठिया की ज० १ समो उ० अन्तर्मुहूर्त्त	साता वेदनी	७वेदै मोहनी टल्यो	२ उदैरै नाम नें गोत्र ५ उदैरै वेदनी मोहनी आयु वर्जी
सनातक ६	१ परम शुक्ल तथा अलेशी	२ पावै वट्टमाण अवुठिया	वट्टमान का ज० उ० अंत-र्मुहुर्त्त अवुठियाकी ज० अंत-र्मुहूर्त्त उ० देशूणीकोड़पूर्व	साता वेदनी तथा अबध	४ वेदै वेदनी आउषो नाम गोत	२ उदैरै नाम गोत्र तथा अण उदीरणां हुवै ।

नियंठा	उपशम पजवणां द्वार २४	संज्ञा द्वार २५	आहारिःद्वार२६	भवद्वार २७	आकर्षद्वार२८	घणां आश्री	स्थिति द्वार २९
पुलाक १	पुलाक पणो छोडीनं जावे तो २ठोड़ा कषाय कुशील। असंजम	नोसन्ना वहुत्ता	आहारिक	जघन्य १ भव उत्कृष्टा ३भव	जघन्य १ वार उ० ३।वार आवे	जघन्य २ वार उत्कृष्टा७वार	जघन्य अनें उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्त्त
वुक्कस २	वुक्कस छोडीने ४ ठोड़ जाय पड़िसेवणा। कषाय कुशील। असजम। संजमासजम।	२री भजनां सन्ना वहुत्ता नोसन्ना वहुत्ता	आहारिक	जघन्य १ भव उत्कृष्टा ८ भव	जघन्य १ वार उ० प्रत्येक १०० वार आवे	जघन्य २ वार उत्कृष्टा प्रत्येक १००० वार	जघन्य १ समो। उ० देशूणी कोड़ पूर्व
पडिसेवणा ३	पड़िसेवणां छांडीने ४ ठोड़ जाय। वुक्कस। कषाय कुशील। असंजम। सजमासंजम।	२री भजनां नो सन्ना वहुत्ता सन्ना वहुत्ता	आहारिक	एवम्	एवम्	एवम्	एवम्
कषाय कुशील ४	कपाय कुशील छांडीनें ६ ठोड़ जाय। पुलाक। पड़िसे०। वुक्कस। निग्रथ। असंजम। सजमासंजम	२री भजनां सन्ना वहुत्ता नोसन्ना वहुत्ता	आहारिक	एवम्	एवम्	एवम्	एवम्
निग्रंथ ५	निग्रथ छोडीनें ३ ठोड़ जाय कपाय कुशील। सनातक। असं:	नोसन्ना वहुत्ता	आहारिक	जघन्य १ भव उ० ३ भव	जघन्य १ वार उ० २ वार	ज० १ वार उ० ५ वार	जघन्य१ समो उ० अंतर्मुहूर्त्त
सनातक ६	मोक्ष जाय	नोसन्ना वहुत्ता	आहारिक अणाहारिक	मोक्ष	मोक्ष जाय	आवे नहीं	ज० अंतर्मुहूर्त्त उ० देशूणी कोड़ पूर्व

नियठा	घणां जीवां आश्री	आंतरा द्वार ३०	घणा आश्री	समुद्घातद्वार ३१	क्षेत्रद्वार ३२	फर्शना द्वार ३३
पुलाक १	जघन्य१ समो उत्कृष्टो अन्तर्मुहूर्त्त	जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उ० देशूणो अर्द्धपुद्गल	जघन्य १ समो उत्कृष्टा सख्यातावर्ष	३समुद्घात पावै। वेदनी। कषाय। मरण	लोकरै असख्यात में भाग	लोकरै असंख्यात में भाग फरशै
बुक्कस २	सदाकाल	अर्द्ध पुद्गल देशूणो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त	आंतरो नथी	५ पहला पावै	एवम्	ऊपरज्यूं
पड़िसेवणां ३	सदाकाल	अर्द्ध पुद्गल देशूणो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त	आंतरो नथी	५ पहला पावै	एवम्	ऊपरज्युं
कषाय कुशील ४	सदाकाल	एवम्	आंतरो नथी	६ पावै	एवम्	ऊपरज्युं
निग्रथ ५	जघन्य १ समो उ० अन्तर्मुहूर्त्त	एवम्	जघन्य१ समो उत्कृष्टो ६ मास	नथी	एवम्	ऊपरज्युं
सनातक ६	सदाकाल	आंतरो नहीं	आंतरो नथी	केवल समुद्घात।	लोकरै असख्यात भाग तथा आखे लोक में	लोकरै असख्यात में भाग तथा आखो लोक फर्शे।

नियंठा	भावद्वार ३४	प्रवर्ज्या द्वार ३५	पूर्व प्रवर्ज्या	अल्पाबहुत्व द्वार ३६
पुलाक १	२ क्षयोपशम प्रणामी	सिए अत्थी सिए नत्थी जे होवै तो जघन्य १।२।३ उत्कृष्टा प्रत्येक १००	जघन्य १।२।३ उत्कृष्टा प्रत्येक १०००	संख्याता २
बुक्कस २	२ क्षयोपशम प्रणामी	एवम् १००	जघन्य उत्कृष्टा प्रत्येक १०० कोड़	संख्याता ४
पड़िसेवणां ३	२ क्षयोपशम प्रणामी	एवम् १००	जघन्य उत्कृष्टा प्रत्येक १०० कोड़	संख्याता ५
कषाय कुशील ४	२ क्षयोपशम प्रणामी	सिए अत्थी सिए नत्थी जे होवै तो जघन्य १।२।३ उत्कृष्टा प्रत्येक १०००	जघन्य उत्कृष्टा प्रत्येक १००० कोड़	संख्याता ६
निग्रंथ५	३ उपशम १ क्षायक प्रणामी	सिए अत्थी सिए नत्थी जे होवै तो ज० १।२।३ उ० १६२ तेहमां क्षपक श्रेणीना १०८ उपशम श्रेणीना ५४	जघन्य १।२।३ उत्कृष्टा प्रत्येक १००	सर्वसुं थोड़ा १
सनातक ६	२ क्षापक प्रणामी	सिए अत्थी सिए नत्थी जे होवै तो १०८ क्षपक श्रेणीना	जघन्य उत्कृष्टो प्रत्येक १ कोड	संख्यात गुणा ३

॥ इति नियठारो थोकड़ो समाप्तम् ॥

॥ अथ लघुदण्डक ॥

पहलो शरीर द्वार ।

शरीर ५—औदारिक १ बैक्रिय २ आहारिक ३ तैजस ४ कार्मण ५ ।

सातों ही नारकी और सर्व देवताओं में शरीर पावै ३—बैक्रिय १ तेजस २ कार्मण ३ ।

च्यार थावर, तीन विकलेंद्री में, तथा असन्नी तिर्यञ्च, असन्नी मनुष्य, सर्वयुगलियां में शरीर पावै ३—औदारिक १ तेजस २ कार्मण ३ ।

वाउकाय, सन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री मनुष्यणी में शरीर पावै ४ औदारिक १ वैक्रिय २ तेजस ३ कार्मण ४ ।

गर्भज मनुष्यों में शरीर पावै पांचूंही ॥

सिद्धां में शरीर पावै नहीं ॥

॥ इति प्रथम शरीर द्वारम् ॥

दूजो अवगाहना द्वार ।

जघन्य अवगाहना आंगुल को असंख्यातमो भाग, उत्कृष्टी हजार जोजन जाझेरी ।

उत्तर वैक्रिय करै तो जघन्य तो आंगुल को संख्यातमो भाग, उत्कृष्टी लाख जोजन जाझेरी।

पहली नारकी की अवगाहना उत्कृष्टी ७॥ धनुष्य ६ आंगुल की।

दूजी नारकी की अवगाहना साढ़ी पन्द्राह १५॥ धनुष और १२ आंगुल की।

तीजी नारकी की अवगाहना ३१। धनुष की।

चौथी नारकी की अवगाहना ६२॥ धनुष की।

पांचवीं नारकी की अवगाहना १२५ धनुष की।

छट्ठी नारकी की अवगाहना २५० धनुष की।

सातवीं नारकी की अवगाहना ५०० धनुष की।

जघन्य सातूंही नारकीकी आंगुल को असंख्यातमो भाग, उत्तर वैक्रिय करै तो जघन्य आंगुल को संख्यातमो भाग उत्कृष्टी आप आपसूं दूणी।

देवतां की अवगाहना।

१५ परमाधामी १० भुवनपति, बाणव्यन्तर, त्रिभूमखा, ज्योतिषी, पहला तथा दूजा देवलोक, पहिला किल्विषी की अवगाहना ७ सात हाथ की।

तीसरा तथा चौथा देवलोक दूजा किल्विषी की ६ छव हाथ की।

नवलोकांतिक, पांचवां तथा छठा देवलोक, तीजा किल्विषी की अवगाहना ५ पांच हाथ की।

सातवां तथा आठवां देवलोक का देवतां की अवगाहना ४ च्यार हाथ की। नवमा, दशमा, इग्यारवां, तथा बारवां की ३ तीन हाथ की अवगाहना होय। ६ नव ग्रैवेयक का देवां की दोय हाथ की।

पांच अनुत्तर विमान का देवां की अवगाहना १ एक हाथ की।

देवता उत्तर वैक्रिय करै तो जघन्य तो आंगुल को संख्यातमो भाग, उत्कृष्टी लाख जोजन की अवगाहना जाणो।

बारवां देवलोक के ऊपर का देव वैक्रिय करै नहीं।

च्यार थावर तथा असन्नी मनुष्य की जघन्य, उत्कृष्टी आंगुल को असंख्यातवों भाग।

बनस्पतिकाय की अवगाहना जघन्य तो आंगुल को असंख्यातमो भाग, उत्कृष्टी हजार जोजन जाझेरी कमल फूल की अपेक्षा।

बेइन्द्री की अवगाहना १२ जोजन की, उत्कृष्टी।

तेइन्द्री की अवगाहना ३ कोस की, उत्कृष्टी।

चौरिन्द्री की अवगाहना ४ कोस की, उत्कृष्टी।

अनै जघन्य आंगल को असंख्यातवों भाग।

तिर्यञ्च पंचेन्द्री का ५ भेद—

१ जलचर सन्नी असन्नी की १००० जोजन की।

२ थलचर सन्नी की ६ कोस की असन्नी की प्रत्येक कोस की।

३ उरपुर सन्नी की १००० जोजन की, असन्नी की प्रत्येक जोजन की।

४ भुजपर सन्नी की प्रत्येक कोस की, असन्नी की प्रत्येक धनुष की।

५ खेचर सन्नी असन्नी की प्रत्येक धनुष की तिर्यञ्च पंचेन्द्री उत्तर वैक्रिय करे तो जघन्य आंगुल के संख्यात में भाग उत्कृष्टी ९०० जोजन की करे, मोटी अवगाहना वालो उत्तर वैक्रिय करै नहीं।

सन्नी मनुष्य की अवगाहना।

५ भरत ५ ऐरभरत का मनुष्यां की, अवसर्पणी के पहिले आरै लागतां ३ कोस की उतरतां २ कोस की, दूजै आरै लागतां २ कोस की उतरतां १ कोस की तीजै आरै लागतां १ कोस की उतरतां ५०० धनुष की, चौथे

आरै लागतां ५०० धनुष की उतरतां ७ हाथकी, पांचवें आरै लागतां ७ हाथ की उतरतां १ हाथ की, छट्ठे आरै लागतां १ हाथ की उतरतां १ हाथ मठेरी जाणवी।

इस तरह उत्सर्पणी में चढ़ती कहणी। वेके लाख जोजन की जाझेरी करे ५ हेमवय, ५ अरुणवयका युगलियां की १ कोस की, ५ हरिवास ५ रम्यक वासका की २ कोस की, ५ देवकुरू ५ उत्तर कुरूका की ३ कोस की, ५६ अन्तर द्वीपका की ८०० धनुष की ५ महा विदेह खेत्र का मनुष्यां की ५०० धनुष की।

सिद्धां की जघन्य १ हाथ ८ आंगुल की उत्कृष्टी ३३३ धनुष, १ हाथ ८ आंगुल की।

॥ इति अवगाहना द्वारम् ॥

तीसरा संघयन द्वार।

संघयन ६ तेहना नाम वज्र ऋषभनाराच १, ऋषभनाराच २, नाराच ३, अर्ध नाराच ४, केल को ५ छेवटो ६ एवं।

नारकी देवता में संघयण पावै नहीं।

५ थावर, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यञ्च में संघयण १ छेवटो, गर्भेज मनुष्य तिर्यञ्च में

संघयण पावै ६ छहुं ही, सर्व युगलिया त्रेसठशलाका पुरुषों में संघयण वज्र ऋषभ नाराच पावै।

॥ इति संघयण द्वारम् ॥

चौथो संठाण द्वार।

संस्थान ६—तेहना नाम—समचौरंस १ निग्रव-परिमंडल २, सादिज ३, बावन्य ४, कुब्ज ५, हुण्डक ६, ७ सात नारकी, ५ थावर, ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य तिर्यंच में संठाण हुण्डक।

तिणमें पांच थावर की विगत।

पृथ्वीकाय को चंद मसूर की दाल।

अप्पकाय को बुदबुदो।

तेउकाय को सूई को करनालो।

वाउकाय को ध्वजा पताका।

सर्व देवता, सर्व युगलिया, तथा त्रेसठशला का पुरुषां में समचौरंस संस्थान।

गर्भज मनुष्य तिर्यंच में ६ छहुं ही सिद्धां में पावै नहीं।

॥ इति संठाण द्वारम् ॥

पांचमूं कषाय द्वार।

कषाय ४—क्रोध, मान, माया, लोभ।

२४ दंडकां में कषाय ४ पावै, मनुष्य अकषाई पण होय सिद्धां में कषाय नहीं।

॥ इति कषाय द्वारम् ॥

छट्ठो संज्ञा द्वार।

संज्ञा ४—आहार संज्ञा १ भय संज्ञा २ मैथुन संज्ञा ३ परिग्रह संज्ञा ४। २४ दंडकां में संज्ञा ४ पावै, मनुष्य असंज्ञी बहुता पण होय, सिद्धां में संज्ञा नहीं।

॥ इति संज्ञा द्वारम् ॥

सातमूं लेश्या द्वार।

सात नारकी में पावै ३ माठी (द्रव्य लेश्या लेखवी) तेहनी विगत।

पहली दूसरी में पावै १ कापोत।

तीजी में कापोत वाला घणा, नील वाला थोड़ा।

चौथी में पावै १ नील।

पांचमी में नील वाला घणा, कृष्ण वाला थोड़ा।

छट्ठी में पावै १ कृष्ण।

सातमी में पावै १ महाकृष्ण।

भवनपति वाणव्यन्तर देवनां में लेश्या पावै ४ पद्म शुक्ल टली (द्रव्य लेखवी)

पृथ्वी अप्प वनस्पतिकाय में तथा सर्व युगलियां में लेश्या पावै ४ प्रथम।

तेउ वाउकाय, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, तिर्यंच में लेश्या पावै ३ माठी।

जोतिषी, पहला दूजा देवलोक तथा पहिला किल्विषी में लेश्या पावै १ तेजू।

तीजा चौथा पांचवां देवलोक तथा दूजा किल्विषी में पावै १ पद्म।

तीजा किल्विषी तथा छट्ठा देवलोक से सर्वार्थ सिद्ध तांई पावै १ शुक्ल। केतलाइक मनुष्य अलेशी पण होय सिद्धां में लेश्या नहीं।

सन्नी मनुष्य तिर्यंच में लेश्या पावै ६ छहुं ही।

॥ इति लेश्या द्वारम् ॥

आठमूं इन्द्रिय द्वार।

इन्द्री ५ श्रोत, चक्षु, घ्राण, रस, स्पर्श एवं ५, ७ नारकी, सर्व देवता, गर्भज मनुष्य, गर्भज तिर्यंच, असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री सर्व युगलियां में इन्द्री ५ पावै। ५ थावर में इन्द्री १ स्पर्श पावै, बेइन्द्री में २ इन्द्री होय,—स्पर्श रस, तेइन्द्री में ३ इन्द्री होय—स्पर्श रस घ्राण, चउरिन्द्री में ४ होय

श्रोतेन्द्री बिना । मनुष्य नो इन्द्रियां पण होय, सिद्धांके इन्द्रीय होय ही नहीं ।

॥ इति इन्द्रिय द्वारम् ॥

नवमूं समुद्घात द्वार ।

समुद्धात ७ वेदनी १ कषाय २ मरणान्त ३ वैक्रिय ४ तेजस ५ आहारिक ६ केवल ७ ।

सात नारकी वाउकाय में ४ पहिली समुद्धात पावै, भुवपनति वानव्यन्तर जोतषी बारवां देवलोक तांई का देवता गर्भज तिर्यञ्च में समुद्धात ५ आहारिक केवल टली, ४ थावर ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यंच सर्व युगलिया बारवां से ऊपर का देवता में समुद्धात ३ पावै, पहली । गर्भज मनुष्यां में समुद्धात ७ सातों ही पावै । केवल्यां में १ केवल समुद्धात पावै । तीर्थंङ्कर समुद्धात करै नहीं, सिद्धां के समुद्धात नहीं ।

॥ इति समुद्धात द्वारम् ॥

दशमूं सन्नी असन्नी द्वार ।

सन्नी के मन, असन्नी के मन होय नहीं । ७ नारकी सर्व देवता गर्भज मनुष्य, गर्भज तिर्यंच युगलिया सन्नी होय । ५ थावर, ३ विकलेन्द्री, छमुर्छिम मनुष्य, छमु-

छिंम तिर्यञ्च ये असन्नी होय। मनुष्य नो सन्नी नो असन्नी पण होय, सिद्ध सन्नी असन्नी नहीं होय।

॥ इति सन्नी असन्नी द्वारम् ॥

इग्यारमूं वेद द्वार।

३—वेद, स्त्री १ पुरुष २ नपुंसक ३। ७ नारकी, ५ थावर, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यञ्चमें वेद १ नपुन्सक होय। भुवनपति वानव्यन्तर, जोतिषी पहला दूजा देवलोक, पहला किल्विषी, सर्व युगलिया में वेद २ स्त्री तथा पुरुष होय। तीजा देवलोक सूं सर्वार्थ सिद्धतांई वेद १ पुरुष होय। मनुष्य अवेदी पण होय। सिद्धां के वेद नहीं।

॥ इति वेद द्वारम् ॥

बारमूं पर्याय द्वार।

पर्याय ६ आहार १, शरीर २, इन्द्रिय ३, श्वाशो-श्वाश ४, भाषा ५, मन ६, पर्याय एवं ६।

सर्व देवता में पावै ५ पर्याय। मन भाषा भेली लेखवी ५ थावर में पर्याय ४ होय पहली। असन्नी मनुष्य में पर्याय ३॥ तीन तो पहली आधी में श्वाश लेवै उश्वाश नहीं लेवै ३ विकलेन्द्री, छमुछिंम तिर्यञ्च

पंचेन्द्री में पर्याय ५ पावै मन टल्यो। सिद्धां में पर्याय पावै नहीं। सन्नी मनुष्य तिर्यञ्च सर्व युगलिया ७ नारकी में पावै छः ६।

॥ इति पर्याय द्वारम् ॥

तेरमूं दृष्टि द्वार।

दृष्टि ३ सम्यक् १ मिथ्यात २ समिथ्या दृष्टि ३ एवं ३ होय।

७ नारकी, १२ बारमां देवलोक तांई देवता, गर्भेज मनुष्य गर्भेज तिर्यंच में दृष्टि तीनूं ही होय। ५ थावर में, असन्नी मनुष्य में, ५६ अन्तरद्वीप का युगलिया में दृष्टि १ मिथ्या दृष्टि पावै। ९ ग्रैवेक का देवतां में, ३ विकलेन्द्री में, असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री में, ३० अकर्म भूमिका युगलिया में, दृष्टि २ सम्यक् १, मिथ्या २ पावै ५ अनुत्तर विमान का देवता, सिद्धां में दृष्टि १ सम्यक् पावै।

॥ इति दृष्टि द्वारम् ॥

चौदमूं दर्शन द्वार।

दर्शन ४—चक्षु १, अचक्षु २. अवधि ३, और केवल दर्शन एवं दर्शन ४ जाणवा।

७ नारकी, सर्व देवता में गर्भेज तिर्यंच में दर्शन चक्षु १, अचक्षु २, अवधि ३। गर्भेज मनुष्यांमें दर्शन

४ होय, ५ थावर बेइन्द्री, तेइन्द्री में, दर्शन १ अचक्षु पावै। चौइन्द्री छमुर्छिम तिर्यंच, मनुष्य, सर्व युगलियां में दर्शन २—चक्षु १, अचक्षु २ सिद्धां में १ केवल दर्शन ही पावै।

॥ इति दर्शन द्वारम् ॥

पंद्रमूं ज्ञान द्वार।

ज्ञान ५—मति १, श्रुति २, अवधि ३, मन पर्यव ४, केवल ज्ञान एवं ५।

७ नारकी, सर्व देवता, गर्भेज तिर्यंच में ज्ञान ३ पावै पहला। गर्भेज मनुष्यां में ज्ञान ५ पावै। ५ थावर असन्नी मनुष्य, ५६ अन्तर द्वीप का युगलियां में ज्ञान नहीं पावै। ३ विकलेन्द्री, असन्नी पंचेन्द्री तिर्यंच में ३० अकर्म भूमिका युगलियां में ज्ञान २ पावै, मति, श्रुति। सिद्धां में १ केवल ज्ञान ही पावै।

॥ इति ज्ञान द्वारम् ॥

सोलमूं अज्ञान द्वार।

अज्ञान ३—मति अज्ञान १, श्रुति अज्ञान २, विभङ्ग अज्ञान एवं ३।

७ नारकी, ९ ग्रैवेक तांई का देवता गर्भेज तिर्यंच, गर्भेज मनुष्यां में अज्ञान ३ ही पावै। ५ थावर, ३

विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री, सर्व युगलियां में अज्ञान २ ही पावै मति अज्ञान १, श्रुत अज्ञान २, ५ अनुत्तर का देवता में सिद्धां में अज्ञान पावै नहीं।

॥ इति अज्ञान द्वारम् ॥

सत्तरमूं योग द्वार।

योग १५-मन का ४, सत्य मन १ असत्य मन २ मिश्र मन ३ व्यवहार मन एवं ४। वचन का जोग ४— सत्य वचन १, असत्य वचन २, मिश्र वचन ३, व्यवहार वचन एवं ४। काया का जोग ७—औदारिक १ औदारिक को मिश्र २, वैक्रिय ३, वैक्रिय को मिश्र ४, आहारिक ५, आहारिक को मिश्र ६ कार्मण ७, एवं १५।

७ नारकी सर्व देवता में जोग पावै ११ मन का ४, वचन का ४, वैक्रिय ९ वैक्रिय को मिश्र १० कार्मण ११ सर्व युगलियां में योग पावै ११ मन का ४, वचन का ४.औदारिक ९, औदारिक को मिश्र १० कार्मण ११। बाउकाय बरजीने, ४ स्थावर, असन्नी मनुष्य में योग ३ औदारिक औदारिक को मिश्र कार्मण। तीन बिकलेन्द्री, असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री, में पावे ४ औदारिक १, औदारिक मिश्र २ व्यवहार भाषा ३ कार्मण ४। बायुकाय में योग पावै ५—औदारिक

१, औदारिक मिश्र २, वैक्रे ३, वैक्रे मिश्र ४, कार्मण ५, गर्भेज तिर्यञ्च, मनुष्यणी में योग पावै १३ आहारिक आहारिक को मिश्र टल्यो, गर्भेज मनुष्यों में पावे १५ ही, चौदमें गुणठाणें अजोगी होय। सिद्धा में जोग पावे नहीं।

॥ इति योग द्वारम् ॥

अठारमूं उपयोग द्वार।

७ नारकी, ९ नव ग्रैवेक तांई का देवता, गर्भेज तिर्यञ्च में उपयोग पावे ९ ज्ञान तो ३ मति श्रुति अवधि। अज्ञान ३ मति अज्ञान श्रुति अज्ञान विभंग अज्ञान, दर्शन ३ चक्षु अचक्षु अवधि।

५ थावर में पावै ३ मति श्रुति अज्ञान तथा अचक्षु दर्शन।

असन्नी मनुष्य, तथा ५६, अन्तरद्वीप का युगलिया में उपयोग पावै ४ मति श्रुति अज्ञान तथा चक्षु अचक्षु दर्शन।

बेइन्द्री तेइन्द्री में उपयोग पावै ५—मति श्रुति ज्ञान २, मति श्रुति अज्ञान २, तथा अचक्षु दर्शन।

चौरिन्द्री, असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री, ३० अकर्म भूमि का युगलिया में, उपयोग पावै ६—मति श्रुति ज्ञान २

अज्ञान २, चक्षु अचक्षु दर्शन एवं ६। पांच अणुत्तर में पावै ६ तीन ज्ञान, तीन दर्शन।

गर्भेज मनुष्यां में उपयोग पावै १२ सिद्धां में उपयोग पावै २ केवल ज्ञान १, केवल दर्शन १।

॥ इति उपयोग द्वारम् ॥

उगणीसमूं आहार द्वार।

उन्नीस दंडक का जीव तो छहुं ही दिशा को आहार लेवै।

पांच थावर तीन च्यार पांच छव दिशि को आहार लेवै।

केतला मनुष्य अणआहारी पण होय, सिद्ध भगवंत आहार लेवै नहीं।

॥ इति आहार द्वारम् ॥

बीसमूं उत्पत्ति द्वार।

७ नारकी, आठवां देवलोक तांई का देवता, तेउ, वाउ काय, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य तिर्यञ्च सर्व युगलियां में उत्पति पावै गति २ की, मनुष्य तिर्यञ्च।

नवमां देवलोक से सर्वार्थ सिद्ध तांई का देवता में उत्पत्ति पावै १ मनुष्य गति की।

पृथ्वी अप्प वनस्पतिकाय में उत्पत्ति पावै ३ गति की (नारकी टली)

गर्भज मनुष्य तिर्यञ्च में उत्पत्ति च्यारूं ही गति की।

सिद्धां में १ मनुष्य गति की।

॥ इति उत्पत्ति द्वारम् ॥

इक्कीसमूं स्थिति द्वार।

नारकी की स्थिति।

१ पहली नारकी की स्थिति जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टी १ सागर की।

२ दूसरी नारकी की जघन्य १ सागर की उत्कृष्टी ३ सागर की।

३ तीसरी नारकी की जघन्य ३ सागर की उत्कृष्टी सात ७ सागर की।

४ चौथी नारकी की जघन्य ७ सागर की उत्कृष्टी १० सागर की।

५ पांचमीकी जघन्य १० उत्कृष्टी १७ सागर की।

६ छट्ठी नारकी की जघन्य १७ उत्कृष्टी २२ सागर की।

७ सातमी नारकी की जघन्य २२ उत्कृष्टी ३३।

भवन पति देवतां की स्थिति—

दक्षिण दिशि का असुर कुमार की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी १ सागर की, यांकी देव्यां की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्टी ३॥ पल्योपम की।

दक्षिण दिशि का ६ नो निकाय का देवतां की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी १॥ पल्योपम की, यांकी देव्यां की जघन्य १० हजार वर्ष उत्कृष्टी ।।। पौण पल्योपम की।

उत्तर दिशि का असुर कुमारां की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी १ सागर जाझेरी यांकी देव्या की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्टी ४॥ साडा च्यार पल्योपम की।

उत्तर दिशि का ६ निकाय का देवतां की जघन्य १० हजार वर्ष की ऊत्कृष्टी देश ऊणीं दोय पल्योपम की, देव्यां की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी देश ऊणीं १ पल्योपम की।

वानव्यन्तर देवतां की स्थिति।

जघन्य १० हजार वर्ष की उ० १ पल्योपम की, यांकी देव्यां की जघन्य दश हजार वर्ष की उ०

॥ आधा पल्योपम की, त्रिभूमका देवां की भी इतनी ही।

जोतषी देवां की स्थिति।

चन्द्रमां की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्टी १ पल्योपम एक लाख वर्ष अधिक, यांकी देव्यां की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्टी आधा पल्य ५० हजार वर्ष की, सूर्य की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्टी १ पल्योपम १ हजार वर्ष अधिक, यांकी देव्यां की जघन्य पाव पल्य की उत्कृष्टी ॥ आधी पल्य पांच सौ वर्ष अधिक। ग्रहां की जघन्य पाव पल्य की उ० १ पल्य की, यांकी देव्यां की ज० पाव पल्य, उत्कृष्टी ॥ आधी पल्योपम की।

नक्षत्रां की ज० पाव पल्य उ० ॥ आधी पल्य की, यांकी देव्यां की ज० पाव पल्य, उ० पाव पल्य जाझेरी।

तारां की ज० पल्य को आठमूं भाग उ० पाव पल्य की, यांकी देव्यां की ज० अधपाव पल्य उ० अधपाव पल्य जाझेरी।

वैमानिक देवतां की स्थिति।

१ पहला देवलोक में जघन्य १ पल्योपम उत्कृष्टी

२ सागर की, यांकी परिग्रह देव्यां की ज० १ पल्य उ० ७ पल्य, अपरिग्रह देव्यां की ज० १ पल्य उ० ५० पल्योपम की।

२ दूसरा देवलोक में ज० १ पल्य जाझेरी उ० २ सागर जाझेरी, यांकी देव्यां की जघन्य १ पल्य जाझेरी उ० परिग्रही की ९ पल्य की, अपरिग्रही की ५५ पल्योपम की।

३ तीसरा देवलोक में ज० २ सागर उ० ७ सागरकी।

४ चौथा देवलोक की ज० २ सागर जाझेरी उ० ७ सागर जाझेरी।

५ पांचवां की ज० ७ सागर उ० १० सागर की।

६ छट्ठा देवलोक का देवतां की ज० १० सागर उ० १४ सागर की।

७ सातवां की ज० १४ उ० १७ सागर की।

८ आठमां की ज० १७ उ० १८ सागर की।

९ नवमां की ज० १८ उ० १९ सागर की।

१० दशमां की ज० १९ उ० २० सागर की।

११ इग्यारमां की ज० २० उ० २१ सागर की।

१२ बारमां की ज० २१ उ० २२ सागर की।

१३ पहिला ग्रैवेयक की ज० २२ उ० २३।

१४ दूसरा ग्रैवेयक की ज० २३ उ० २४।

१५ तीसरा ग्रैवेयक की जघन्य २४ उ० २५ ।

१६ चौथा ग्रैवेयक की जघन्य २५ उ० २६ ।

१७ पांचमां ग्रैवेयक की जघन्य २६ उ० २७ ।

१८ छट्ठा ग्रैवेयक की जघन्य २७ उ० २८ ।

१९ सातमां ग्रैवेयक की ज० २८ उ० २९ ।

२० आठमां ग्रैवेयक की जघन्य २९ उ० ३० ।

२१ नवमां ग्रैवेयक की जघन्य ३० उ० ३१ ।

२२ विजय १, विजयन्त २, जयन्त ३ ।
अपराजित, ४ ए च्यार अनुत्तर वैमान की जघन्य ३१ उत्कृष्टी ३३ सागर ।

२३ सरवार्थ सिद्धिका देवां की जघन्य ३३ उत्कृष्टी ३३ सागर ।

नव लोकान्तिक देवतां की स्थिति ८ सागर की, पहिला किल्विषी की ३ पल्य, दूजा की ३ सागर, तीजा की १३ सागर की ।

पांच स्थावर की स्थिति जघन्य अन्तर मुहूर्त्त की उत्कृष्टी पृथ्वीकाय की २२ हजार वर्ष की, अप्पकाय की ७ हजार वर्ष की, तेउकाय की ३ दिन रात की वायु काय की ३ हजार वर्ष की वनस्पति काय की १० हजार वर्ष की ।

तीन विकलेन्द्री की जघन्य अन्तर मुहूर्त्त की

उत्कृष्टी बेइन्द्री की १२ वर्ष की, तेइन्द्री की ४६ दिन रात की, चौइन्द्री की ६ महीना की। तिर्यञ्च पंचेन्द्री की जघन्य अन्तर मुहूर्त्त की उत्कृष्टी जलचर की १ कोड़ पूर्व की, थलचर सन्नी की ३ पल्योपम की, असन्नी की ८४ हजार वर्ष की, उरपुर सन्नी की कोड़ पूर्व की, असन्नी की ५३ हजार वर्ष की, भुजपर सन्नी की कोड़ पूर्व की, असन्नी की ४२ हजार वर्ष की, खेचर सन्नी की पल्योपम के असंख्यातमूं भाग, असन्नी की ७२ हजार वर्ष की। असन्नी मनुष्य की ज० उ० अन्तर मुहूर्त्त की।

सन्नी मनुष्य की स्थिति, ज० अन्तर मुहूर्त्त की उ० ५ भरत, ऐरभरत का मनुष्यां की अवसर्पिणी के पहिलो आरो लागतां ३ पल्य की, उतरतां २ पल्य की, दूसरो लागतां २ पल्य की, उतरतां १ पल्य की. तीसरो लागतां १ पल्य की, उतरतां कोड़ पूर्वकी, चौथो आरो लागतां कोड़ पूर्व की उतरतां १२५ वर्ष की, पांचमूं लागतां १२५ वर्ष की, उतरतां २० वर्ष की, छट्ठो लागतां २० वर्ष की, उतरतां १६ वर्ष की। उतसर्पिणी काल में इमहिज चढ़ती, कहणी पांच महाविदेह खेत्रां की १ कोड़ पूर्व की उत्कृष्टी स्थिति।

युगलियां की स्थितिः—

५ हेमवय, ५ अरुणवयकां की ज० देश ऊणी १ पल्य उ० १ पल्यं की।

५ हरिवास, ५ रम्यकवासकां की ज० देशऊणी २ पल्य उ० २ पल्य की।

५ देवकुरु, ५ उत्तरकुरुकां की ज० देशऊणी ३ पल्य उ० ३ पल्य की।

५६ अन्तर द्वीपकां की पल्योपम को असंख्यातमूं भाग की।

एक एक सिद्धां की आदि नहीं अन्त नहीं, एक एक की आदि छै पण अन्त नहीं।

॥ इति स्थिति द्वारम् ॥

॥ २२ मूं समोह्या असमोह्या द्वार ॥

समोह्या तो समुद्धात फोडी ताणावेजो करी मरै, असमोह्या बिना समुद्धाते गोलीका भड़ाका वत् मरै।

२४ दण्डकां का जीव दोनूं प्रकारका मरण करै।

॥ इति समोह्या असमोह्या द्वारम् ॥

॥ २३ मूं चवन द्वार ॥

६ नारकी, आठमां देवलोक तांई का देवता, पृथ्वी अप्प वनस्पति काय, ३ विकलेन्द्री, असन्नी, मनुष्य, में चवन दो गति की मनुष्य तिर्यञ्च।

नवमां देवलोक से सरवार्थ सिद्ध तांई का देवतां में चवन १ मनुष्य की, सातमी नारकीमें तथा तेउ वाउ में चवन १ तिर्यंच गति की ही ।

गर्भज मनुष्य तिर्यंच, असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री में चवन च्यारू ही गति की, युगलियां में चवन १ देव गति की । सिद्धां में चवन पावै नहीं ।

॥ इति चवन द्वारम् ॥

॥ २४ मूं गतागति द्वार ॥

पहिली से छट्ठी नारकी तांई गति २ दण्डक, आगति २ दण्डकां की मनुष्य, तिर्यंच पंचेन्द्री ।

सातमीं नारकी में आगति २ दण्डकां की, गति तिर्यञ्च पंचेन्द्री की, गत जाणवी ।

भवनपति, वानव्यन्तर, ज्योतिषी, पहिला दूजा देव लोक तथा पहिला किल्विषी देवतां की, आगत २ दण्डकां की (मनुष्य तिर्यञ्च की) गति ५ दण्डकां की (तिर्यञ्च मनुष्य पृथ्वी अप्प वनस्पति की)

तीजा देवलोकसे आठमां देवलोक तांई गता गत २ दण्डकां की (मनुष्य तिर्यञ्च) नवमां देवलोक से सरवार्थ सिद्धि तांई गतागत १ मनुष्य की ।

पृथ्वी अप्प वनस्पति काय की आगत २३ दण्डकां की (नारकी टली) गति १०—दण्डकां की ५

स्थावर, ३ बिकलेन्द्री ८, मनुष्य ६, तिर्यंञ्च एवं १० की।

तेउ वायुकाय में आगत १० दण्डकां की, गति ६ दण्डकां की, मनुष्य टल्यो, ३ बिकलेन्द्रीमें १० की आगत १० की गति ऊपर वत्।

असन्नी तिर्यञ्च प्रंचेन्द्रीमें आगति १० दण्डकांकी ऊपर वत् गति २२ दण्डकां की जोतिषी वैमानिक टल्यो।

सन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री में आगति २४ की गति २४ की।

असन्नी मनुष्य में आगत ८ दण्डकां की, पृथ्वी अप्प वनस्पति तीन बिकलेन्द्री मनुष्य तिर्यञ्च एवं ८, अनें गति १० दण्डकां की पूर्ववत्।

गर्भेज मनुष्य में आगति २२ दण्डकां की तेउ वाउ टल्यो, गति २४ दण्डकां की, ३० अकर्म भूमि का युगलियां में आगति २ दण्डकां की मनुष्य तिर्यञ्च गति १३ दण्डकां की १० तो भवनपतिका वानव्यन्तर ११ जोतिषी १२ वैमानिक १३ एवं।

५६ अन्तर द्वीप का युगलियां में आगति २ दण्डकां की ऊपरवत् गति ११ दण्डकां की १० तो भवनपति का १ वानव्यन्तर को ११।

सिद्धां में आगति मनुष्य की गति नहीं।

॥ इति गतागत द्वारम् ॥

॥ २५ मूं प्राण द्वार ॥

७ नारकी सर्व देवता गर्भज मनुष्य तिर्यञ्च सर्व युगलिया में प्राण १० दशूं ही पावै, ५ स्थावर में प्राण ४ पावै, स्पर्श इन्द्री बल १, काय २, श्वाशोश्वाश ३, आऊषो ४ एवं ।

बेइन्द्री में पावै ६, तेइन्द्री में पावै ७, चौइन्द्री में पावै ८ प्राण ।

असन्नी मनुष्य में पावै ७॥ श्वाश लेवै तो उश्वाश नहीं असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री में पावै ९ मन टल्यो ।

१३ में गुणठाणे पावै ५ पांच इन्द्रियां का टल्या ।

१४ में गुणठाणे पावै १ आऊषो बलप्राण, सिद्धां में प्राण पावै नहीं ।

॥ इति प्राण द्वारम् ॥

॥ २६ मूं योग द्वार ॥

नारकी देवता मनुष्य सन्नी तिर्यञ्च युगलियां में योग पावै ३ मन वचन काय का ।

पांच स्थावर असन्नी मनुष्य में १ काय को पावै ।

तीन बिकलेन्द्री असन्नी पंचेन्द्री में योग पावै २ वचन काया ।

केतला मनुष्य अयोगी होय, सिद्धांमें योग पावै नहीं ।

॥ इति लघुदण्डकम् ॥

॥ पच्चीस बोल की चरचा ॥

१ पहले बोले गति चार ४—

१ एक गति किण में पावे ? मनुष्य में पावे।

२ दोय गति किण में पावे ? श्रावक में—मनुष्य, तिर्यञ्च।

३ तीन गति किण में पावे ? नपुंसक वेद में (देवता टल्यो)।

४ चार गति किण में पावे ? समचै जीव में।

२ दूजे बोले जात पांच ५—

१ एक जात किण में पावे ? एकेन्द्री में।

२ दोय जात किण में पावे ? वैक्रिय शरीर में—एकेन्द्री, पंचेन्द्री।

३ तीन जात किण में पावे ? तीन विकलेन्द्री में।

४ चार जात किण में पावे ? त्रसकाय में (एकेन्द्री टली)।

५ पांच जात किण में पावे ? समचै जीव में।

३ तीजे बोले काय छव ६—

१ एक काय किण में पावे ? साधु में—त्रसकाय।

२ दोय काय किण में पावे ? वैक्रिय शरीर में—
वायुकाय, त्रसकाय ।

३ तीन काय किण में पावे ? तेजूलेश्या एकेन्द्री
में—पृथ्वी, पाणी, वनस्पति ।

४ चार काय किण में पावे ? तेजूलेश्या में पावे
(तेउ, वाउ, टली) ।

५ पांच काय किण में पावे ? एकेन्द्री में पावे
(त्रस टली) ।

६ छव काय किण में पावे ? समचै जीव में ।

४ चौथे बोले इन्द्री पांच ५—

१ एक इन्द्री किण में पावे ? पृथ्वीकाय में—स्पर्श ।

२ दोय इन्द्री किण में पावे ? लट, गिंडोला
में—रस, स्पर्श ।

३ तीन इन्द्री किण में पावे ? कीड़ी, मक्कोड़ा
में—घ्राण, रस, स्पर्श ।

४ चार इन्द्री किण में पावे ? माखी, मच्छर में
(श्रुत-इन्द्री टली) ।

५ पांच इन्द्री किण में पावे समचै जीव में ।

५ पांचवें बोले पर्याय छव ६—

१ एक पर्याय किण में पावे ? शरीर पर्यायरे
अलधिया में—आहारपर्याय ।

२ दो पर्याय किण में पावे ? इन्द्री पर्यायरे अलधिया में—आहार, शरीर।

३ तीन पर्याय किण में पावे ? एकेन्द्री अपर्याप्ता में—आहार, शरीर, इन्द्री।

४ चार पर्याय किण में पावे ? एकेन्द्री में (मन, भाषा टली)।

५ पांच पर्याय किण में पावे ? माखी में पावे (मन पर्याय टली)।

६ छव पर्याय किण में पावे ? समचै जीव में।

६ छट्ठे बोले प्राण दश १०—

१ एक प्राण किण में पावे ? चउदमें गुणस्थान में—आयुष बल प्राण।

२ दोय प्राण किण में पावे ? बाटे बहता जीवमें—काया, आयुष।

३ तीन प्राण किण में पावे ? एकेन्द्री अपर्याप्ता में—स्पर्श, काया, आयुष।

४ चार प्राण किण में पावे ? एकेन्द्री में—स्पर्श, काया, श्वाशोश्वाश, आयुष।

५ पांच प्राण किण में पावे ? तेरहवें गुणस्थान में (पांच इन्द्रियां का टल्या)।

६ छव प्राण किण में पावे ? बेइन्द्री में—

रस, स्पर्श, वचन, काया श्वाशोश्वाश, आयुष।

७ सात प्राण किण में पावे ? तेइन्द्री में (श्रुत चक्षु, मन टल्या)।

८ आठ प्राण किण में पावे ? चौइन्द्री में (श्रुत, मन टल्या)।

९ नव प्राण किण में पावे ? असन्नी पंचेन्द्री में (मन टल्यो)।

१० दश प्राण किण में पावे ? समचै जीव में।

७ सातवें बोले शरीर पांच ५—

१ एक शरीर किण में पावे ? एक शरीर किण ही में नहीं पावे।

२ दोय शरीर किण में पावे ? बाटे बहता जीव में—तेजस, कार्मण।

३ तीन शरीर किण में पावे ? पृथ्वीकाय में—औदारिक, तेजस, कार्मण।

४ चार शरीर किण में पावे ? वायुकाय में (आहारिक टल्यो)।

५ पांच शरीर किण में पावे ? समचै जीव में।

८ आठवें बोले योग पन्द्रह १५—

१ एक योग किण में पावे ? दीसता धान के दाणा में—औदारिक।

२ दोय योग किण में पावे ? उड़ती माखी में—औदारिक, व्यवहार भाषा।

३ तीन योग किण में पावे ? तेउकाय में—औदारिक, औदारिक मिश्र, व्यवहार भाषा, कार्मण।

४ चार योग किणमें पावे ? बेइन्द्री में—औदारिक औदारिक मिश्र, व्यवहार भाषा, कार्मण।

५ पांच योग किण में पावे ? वायुकाय में—औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, कार्मण।

६ छव योग किण में पावे ? असन्नी में--औदारिक औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, व्यवहार भाषा, कार्मण।

७ सात योग किण में पावे ? केवल्यां में—सत्यमन, व्यवहार मन, सत्यभाषा, व्यवहार भाषा, औदारिक, औदारिक मिश्र, कार्मण।

८ आठ योग किण में पावे ? तीजे गुणस्थान में—नियमा ४ मन, ४ वचन की।

९ नव योग किण में पावे ? परिहार विशुद्ध चारित्र में—४ मन का, ४ वचन का, १ औदारिक ।

१० दश योग किण में पावे ? तीजे गुणस्थानमें—४ मन का, ४ वचन का, औदारिक, वैक्रिय ।

११ इग्यारह योग किण में पावे ? नारकी में—४ मन का, ४ वचन का, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र कार्मण ।

१२ बारह योग किण में पावे ? श्रावक में (आहारिक, आहारिक मिश्र, कार्मण टल्यो) ।

१३ तेरह योग किण में पावे ? तिर्यंच में (आहारिक, आहारिक मिश्र, टल्या) ।

१४ चउदह योग किण में पावे ? मन योगी में (कार्मण टल्यो) ।

१५ पन्द्रह योग किण में पावे ? समचै जीव में ।

९ नवमें बोले उपयोग बारह १२—

१ एक उपयोग किण में पावे ? वाटे वहता सिद्धां में—केवल ज्ञान ।

२ दोय उपयोग किण में पावे ? सिद्धां में—केवल ज्ञान, केवल दर्शन ।

३ तीन उपयोग किण में पावे ? एकेन्द्री में—
मति, श्रुति, अज्ञान, अचक्षु दर्शन ।

४ चार उपयोग किण में पावे ? दशवें गुणस्थान
में—४ ज्ञान (केवल बरजीने) ।

५ पांच उपयोग किण में पावे ? बेइन्द्री में—
मति, श्रुति, ज्ञान, मति, श्रुति अज्ञान,
अचक्षु दर्शन ।

६ छव उपयोग किण में पावे ? मित्थ्याती में
—३ अज्ञान, ३ दर्शन (केवल बरजीने) ।

७ सात उपयोग किण में पावे ? छट्ठे गुणस्थान
में—केवल बरजी ने ४ ज्ञान ३ दर्शन ।

८ आठ उपयोग किण में पावे ? अचर्म में—
३ अज्ञान, ४ दर्शन, केवल ज्ञान ।

९ नव उपयोग किण में पावे ? देवता में (मन-
पर्यव, केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या) ।

१० दश उपयोग किण में पावे ? स्त्रीवेद में
(केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या) ।

११ इग्यारह उपयोग किण में पावे ? अभाषक
में (मन पर्यव टल्यो) ।

१२ बारह उपयोग किण में पावे ? समचै जीव
में ।

१० दशवें बोले कर्म आठ ८—

१, २, ३ कर्म किणमें पावे ? किण ही में नहीं।

४ चार कर्म किण में पावे ? केवल्यां में—
वेदनी, आयुष्य, नाम, गोत्र ।

५, ६ कर्म किण में पावे ? किण ही में नहीं पावे ।

७ कर्म किण में पावे ? बारवें गुणस्थान में
(मोहनी टल्यो) ।

८ कर्म किण में पावे ? समचै जीव में ।

११ इग्यारवें बोले गुणस्थान चउदह १४—

१ एक गुणस्थान किण में पावे ? एकेन्द्री में
—पहलो ।

२ दोय गुणस्थान किण में पावे ? बेइन्द्री में—
पहलो, दूजो ।

३ तीन गुणस्थान किण में पावे ? अपर्याप्ता में
—१, २, ४ ।

४ चार गुणस्थान किण में पावे ? देवता में—
४ प्रथम ।

५ पांच गुणस्थान किण में पावे ? तिर्यञ्च सन्नी
पंचेन्द्री में— ५ प्रथम ।

६ छव गुणस्थान किण में पावे ? कृष्ण लेश्या
में ६ प्रथम ।

७ सात गुणस्थान किण में पावै ? तेजू लेश्या में सात प्रथम ।

८ आठ गुणस्थान किंण में पावे ? अप्रमादी में —आठ छेहला ।

९ नव गुणस्थान किण में पावे ? स्त्रीवेद में— नव प्रथम ।

१० दश गुणस्थान किण में पावे ? लोभ कषाय में—दश प्रथम ।

११ इंग्यारह गुणस्थान किण में पावे ? चक्षु दर्शन में (१०, १३, १४ टल्या) ।

१२ गुणस्थान किंण में पावे ? सम्यक्ती में— (१, ३ टल्या) ।

१३ तेरह गुणस्थान किण में पावे ? संयोगी में (चउदमों टल्यो) ।

१४ चउदह गुणस्थान किण में पावे ? समचै जीव में ।

१२ बारहवे बोले पांच इन्द्री की २३ विषय—

८ विषय एकेन्द्री में—८ स्पर्श इन्द्री की ।

१३ विषय बेइन्द्री में—५ रस, ८ स्पर्श इन्द्रीकी ।

१५ विषय तेइन्द्री में—२ घ्राण, ५ रस, ८ स्पर्श इन्द्री की ।

२० विषय चौइन्द्री में—(श्रुत इन्द्री की तीन टली)।

२३ विषय पंचेन्द्री में।

१३ तेरहवें बोले १० प्रकार की मित्थ्यात किण में पावे ? मित्थ्याती में पावे।

१४ चउदहवें बोले नवतत्व ना ११५ भेद तिणमें जीवना १४—

१ एक भेद किण में पावे ? केवल ज्ञानी में पावे चउदमों।

२ दोय भेद किण में पावे ? देवतां में पावे —१३, १४।

३ तीन भेद किण में पावे ? मनुष्य में पावे —११, १३, १४।

४ चार भेद किण में पावे ? एकेन्द्री में पावे —४ प्रथम।

५ पांच भेद किण में पावे ? भाषक में पावे— ६, ८, १०, १२, १४।

६ छव भेद किण में पावे ? सम्यक्ती में पावे —५, ७, ६, ११, १३, १४।

७ सात भेद किण में पावे ? पर्यासा में पावे— ७ पर्यासा का।

८ आठ भेद किण में पावे ? अणाहारिक में पावे—७ अपर्याप्ता, १ चउदमों।

९ नव भेद किण में पावे ? औदारिक मिश्र में पावे—(२, ६, ८, १०, १२ टल्या)

१० दश भेद किण में पावे ? त्रसकाय में पावे (एकेन्द्री का ४ टल्या)।

११ इग्यारह भेद किण में पावे ? कोरा तिर्यंचरे भेदां में (११, १३, १४ टल्या)।

१२ बारह भेद किण में पावे ? असन्नी में पावे (१३, १४ टल्या)।

१३ तेरह भेद किण में पावे ? कोरा असंयती में पावे—(चउदमों टल्यो)।

१४ चउदह भेद किण में पावे ? समचै जीव में।

१५ पन्द्रवें बोले आत्मा आठ ८—

१ एक आत्मा किण में पावे ? द्रव्य जीव में पावे-द्रव्य आत्मा।

२ दोय आत्मा किण में पावे ? उपशम भाव में पावे-दर्शन चारित्र।

३ तीन आत्मा किण में पावे ? उदय भाव में पावे-कषाय, योग दर्शन।

४ चार आत्मा किण में पावे ? सिद्धां में पावे—
द्रव्य, उपयोग, ज्ञान, दर्शन ।

५ पांच आत्मा किण में पावे ? निर्जरा में पावे
(द्रव्य, कषाय, चारित्र, टली) ।

६ छव आत्मा किण में पावे ? मित्थ्याती में पावे
(ज्ञान, चारित्र, टली) ।

७ सात आत्मा किण में पावे ? श्रावक में पावे
(चारित्र टली) ।

८ आठ आत्मा किण में पावे ? साधु में पावे ।

१६ सोलहवों बोले दण्डक चौबीस २४—

१ एक दण्डक किण में पावे सात नारकी में पावे
१ प्रथम ।

२ दोय दण्डक किण में पावे ? श्रावक में पावे—
२०, २१,

३ तीन दण्डक किण में पावे ? शुक्ल लेश्या में
पावे—२०, २१, २४,

४ चार दण्डक किण में पावे ? तिर्यंच त्रसकाय
में पावे—१७, १८, १६, २०,

५ पांच दण्डक किण में पावे ? एकेन्द्री में पावे—
१२, १३, १४, १५, १६,

६ छव दण्डक किण में पावे ? त्रसकाय नपुंसक में पावे—१, १७, १८, १९, २०, २१,

७ सात दण्डक किण में पावे कोरा अचक्षु दर्शन में पावे—१२, १३, १४, १५, १६, १७, १८,

८ आठ दण्डक किण में पावे ? कोरा असन्नी में पावे--१२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९

९ नव दण्डक किण में पावे ? तिर्यञ्च में पावे--१२ से २० तांई।

१० दश दण्डक किण में पावे ? असन्नी में पावे--१२ से २१ तांई।

११ इग्यारह दण्डक किण में पावे ? नपुंसक वेद में पावे (१३ देवता का टल्या)।

१२ बारह दण्डक किण में पावे ? गर्भ बिना सन्नी कृष्ण लेश्या में पावे–१ से ११ तांई तथा बाईसमों।

१३ तेरह दण्डक किण में पावे ? सर्व देवतां में पावे--२ से ११ तांई, २२, २३, २४,

१४ चउदह दण्डक किण में पावे ? कोरा सन्नी में पावे--१३ देवतांरा १ नारकी रो।

१५ पन्द्रह दण्डक किण में पावे ? स्त्रीवेद में पावे--१३ देवतांरा, २०, २१,

१६ सोलह दण्डक किण में पावे ? सन्नी में पावे (५ थावर, ३ विकलेन्द्री टल्या)।

१७ सतरह दण्डक किण में पावे ? चक्षु दर्शन में पावे (५ थावर, बेइन्द्री तेइन्द्री का टल्या)

१८ अठारह दण्डक किण में पावे ? तेजू लेश्या में पावें (३ बिकलेन्द्री, नारकी, तेउ, वाउ का टल्या)।

१९ उगणीस दण्डक किण में पावे ? सम्यक्ती में पावे (५ थावर का टल्या)।

२० बीस दण्डक किण में पावें ? अढाई द्वीप बारे नीचा लोक में (२१, २२, २३, २४, टल्या)

२१ इकवीस दण्डक किण में पावें ? नीचा लोक में पावे (२२, २३, २४ टल्या)।

२२ बाईस दण्डक किण में पावे ? कृष्ण लेश्या में पावे (२३, २४ टल्या)।

२३ तेईस दण्डक किण में पावे ? एकेन्द्री की आगत में (नारकी रो एक दण्डक पहलो टल्यो)।

२४ चौबीस दण्डक किण में पावे ? असन्नी में पावे।

१७ सतरहवें बोले लेश्या छव—

१ एक लेश्या किण पावे ? तेरहवें गुणस्थान में पावे-१ शुक्ल ।

२ दोय लेश्या किण में पावे ? तीजी नारकी में पावे—कापोत, नील ।

३ तीन लेश्या किण में पावे ? तेउकाय में पावे-- कृष्ण, नील, कापोत ।

४ चार लेश्या किण में पावे ? पृथ्वी काय में पावे (पद्म, शुक्ल टली) ।

५ पांच लेश्या किण में पावे ? सन्यासी री गत देवता में पावे (शुक्ल टली) ।

६ छव लेश्या किण में पावे ? समचै जीव में ।

१८ अट्ठारवें बोले दृष्टि तीन ३—

१ एक दृष्टि किण में पावे ? चौथे गुणस्थान में पावे सम्यक दृष्टि ।

२ दोय दृष्टि किण में पावे ? बेइन्द्री में पावे- सम्यक, मित्थ्या ।

३ तीन दृष्टि किण में पावे ? समचै जीव में ।

१९ उगणीशसवें बोले ध्यान चार ४—

१ एक ध्यान किण में पावे ? केवल्यां में पावे— १ शुक्ल ।

२ दोय ध्यान किण में पावे ? सातवें गुणस्थान में पावे—धर्म, शुक्ल ।

३ तीन ध्यान किण में पावे ? श्रावक में पावे (शुक्ल टल्यो) ।

४ चार ध्यान किण में पावे ? समचै जीव में ।

२० बीसवें बोले ६ द्रव्य रा ३० बोल ।

१ एक द्रव्य अलोकमें पावे—आकाशास्तिकाय ।

६ छव द्रव्य लोक में पावे ।

२१ इकवीसवें बोले रास दोय २—

१ एक रास किणमें पावे ? जीवमें पावे—१ जीव रास ।

२ दोय रास किण में पावे ? लोक में पाव ।

२२ बाईसवें बोले श्रावकरा १२ व्रत—ते श्रावकमें पावे ।

२३ तेईसवें बोले साधुजी ना पांच महाव्रत—साधुजी में पावे ।

२४ चौवीसवें बोले भांगा ४९—श्रावक में पावे ।

२५ पचीसवें बोले चारित्र पांच ५—

१ एक चारित्र किण में पावे ? केवल्यांमें पावे—यथाख्यात ।

२ दोय चारित्र किण में पावे ? पुलाकनियंठा में पावे—सामायक, छेदोस्थापनीय ।

३ तीन चारित्र किण में पावे ? छट्ठे गुणस्थान में पावे—सामायक, छेदोस्थापनीय, परिहार विशुद्ध ।

४ चारित्र किण में पावे ? लोभकषाय में पावे (१ यथाख्यात टल्यो) ।

५ पांच चारित्र किण में पावे ? साधु में पावे ।

॥ अथ बावन बोल को थोकड़ो ॥

१ पहिले बोलै ८ आत्मा में कर्मारी करता किती ? रोकता किती ? तोड़ता किती आत्मा ? करता तो ३ तीन आत्मा—कषाय, जोग, दर्शण । रोकता २ दोय आत्मा—दर्शण, चारित्र । तोड़ता एक जोग आत्मा ।

२ दूजै बोलै ८ आत्मा में द्रव्य जीव केती ? भावजीव केती ?

१ द्रव्य जीव एक द्रव्य आत्मा ।

७ भाव जीव सात आत्मा ।

३ तीजै बोलै आठ आत्मा में उदय भाव केती ? यावत परिणामिक भाव केती आत्मा ?

३ उदय भाव तीन—कषाय, जोग, दर्शन।

२ उपशम भाव दोय—दर्शन, चरित्र।

६ क्षायक क्षयोपशम छव आत्मा द्रव्य, कषाय टली

८ परिणामिक भाव आठ आत्मा।

४ चौथे बोलै आठ आत्मा में शाश्वती केती? अशाश्वती केती?

१ शाश्वती तो एक द्रव्य आत्मा।

७ अशाश्वती सात आत्मा।

५ पांच में बोलै आठ आत्मा में सावद्य केती? निर्वद्य केती?

१ द्रव्य आत्मा तो सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं,

१ कषाय आत्मा सावद्य छै।

२ जोग तथा दर्शन आत्मा सावद्य निर्वद्य दोनूं छै।

४ ज्ञान, चरित्र, वीर्य, उपयोग, ए च्यार आत्मा निर्वद्य छै।

६ छठै बोलै आठ आत्मा में जाणे किसी? देखै किसी? सरधै किसी आत्मा?

जाणें तो ज्ञान तथा उपयोग आत्मा, देखै उपयोग आत्मा, सरधै दर्शन आत्मा, कला जाणै उपयोग आत्मा, करै जोग आत्मा, कर्म रोकै चारित्र आत्मा, तोड़ै जोग आत्मा, शक्ति वीर्य आत्मा की।

७ सात में बोलै उदय का ३३ (तेतीस) बोलां में सावद्य केता ? निर्वद्य केता ?

१६ सोलै बोल तो सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं, ते कहै छै च्यार गति ४, छव काय १०, असन्नी ११, अन्नाणी १२, संसारता १३, असिद्ध १४, अकेवली १५, छद्मस्थ १६।

३ तीन भली लेश्या निर्वद्य छै।

१२ बारे सावद्य छै, तीन माठी लेश्या ३, च्यार कषाय ७ तीन वेद १०, मित्थ्याती ११, अव्रती १२।

२ आहारता, संजोगी, ए दोय सावद्य निर्वद्य दोनूं ही छै।

८ आठ में बोलै जीव पदार्थ किसे भाव ? यावत मोक्ष पदार्थ किसे भाव ?

१ जीव पदार्थ भाव पांचो ही पावै।

४ अजीव, पुन्य, पाप बन्ध ए च्यार पदार्थ भाव १ एक परिणामिक।

१ आस्रव पदार्थ भाव दोय उदय, परिणामिक।

१ संवर पदार्थ भाव च्यार उदय वरजी ने।

१ निर्जरा पदार्थ भाव तीन—क्षायक, क्षयोपशम, परिणामिक।

१ मोक्ष भाव दोय—क्षायक, परिणामिक ।

६ नव में बोलै उदय का ३३ (तेतीस) बोल किसे किसे, कर्म के उदय से तथा किसी आत्मा ?

१३ तेरा बोल तो नाम कर्म के उदय से, तिणमें च्यार गति ४, छव काय १०, तीन भली लेश्या १३ ।

१२ बारे बोल मोहनीय कर्म के उदय से, च्यार कषाय ४, तीन वेद ७, तीन माठी लेश्या १०, मित्थ्याती ११, अव्रती १२, एवं

२ दोय बोल ज्ञानावरणी कर्म के उदय से— असन्नी अन्नाणी ।

२ आहारता, संजोगी, ए दोय बोल मोहनीय, नाम, कर्म ना उदय से ।

२ छद्मस्थ, अकेवली, ए दोय बोल ज्ञानाबरणी, दर्शणाबरणी, अन्तराय, यां तीन कर्म के उदय से ।

२ संसारता, असिद्धता, ए दोय बोल, च्यार अघातिक कर्म के उदय से, हिवे आत्मा कहै छै ।

१७ सतरे बोल तो अनेरी आत्मा —

च्यार गति ४, छव काय १०, अव्रती ११,

असन्नी १२, अन्नाणी १३, संसारता १४, असिद्ध १५, अकेवली १६, छद्मस्थ १७।

८ आठ बोल जोग आत्मा —

छव लेश्या ६, आहारता ७, संयोगी ८।

४ च्यार कषाय कषाय आत्मा।

३ तीन वेद कोई कषाय कहै कोई अनेरी कहै।

१ मिथ्यातो दर्शन आत्मा।

१० दशमें बोलै जीव ने जीव जाणै यावत मोक्ष ने मोक्ष जाणै ते किसे भाव ? क्षायक, क्षयोपशम, परिणामिक, ए तीन भाव।

११ इग्यार में बोलै जीव ने जीव जाणै, यावत मोक्ष ने मोक्ष जाणै, ते किसी आत्मा ? उपयाग अने ज्ञान आत्मा।

१२ बारमें बोलै जीव पदार्थ केती आत्मा ? यावत मोक्ष पदार्थ केती आत्मा ? जीव में आत्मा पावै आठों ही अजीव, पुन्य, पाप, बंध, आत्मा नहीं। आस्रव ३ (तीन) आत्मा-कषाय जोग दर्शन। संवर २ (दोय) आत्मा-दर्शन तथा चारित्र। निर्जरा ५ (पांच) आत्मा द्रव्य, कषाय, चारित्र टली। मोक्ष पदार्थ अनेरी आत्मा।

१३ तेरमें बोलै छव में नव में कोण ? उदय छव में

कोण, नव में कोण ?—छव में पुद्गल, नव में च्यार—अजीव, पुन्य, पाप, बंध।

उपशम छव में कोण, नव में कोण ?—छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव, पाप, बन्ध।

क्षायक छव में कोण, नव में कोण ?—छव में पुद्गल, नव में च्यार—अजीव पुन्य, पाप, बन्ध।

क्षयोपशम छव में कोण, नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव, पाप, बंध।

परिणामिक छव में कोण, नव में कोण ?—छव में छव, नव में नव।

१४ चौदमें बोलै उदय निपन्न छव में कोण, नव में कोण ?—यावत परिणामिक निपन्न छव में नव में कोण—

उदय निपन्न छव में कोण, नव में कोण ?—छव में जीव, नव में जीव, आस्रव। उपशम निपन्न छव में कोण ? नव में कोण ?—छव में जीव, नव में जीव, संबर। क्षायक निपन्न, छव में कोण ? नव में कोण—छवमें जीव, नव में ४ जीव, संबर, निर्जरा मोक्ष। क्षयोपशम निपन्न छव में कोण ? नव में कोण—छव में जीव, नव में ३ जीव, संबर, निर्जरा।

परिणामिक निपन्न छव में कोण ? नवमें कोण ?—
छव में छव, नव में नव ।

१५ पंद्रमें बोलै आठ कर्म नों उदय, छव में, नव में कोण ? ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय, ए च्यार कर्म नों उदय तो छवमें पुद्गल, नव में तीन,—अजीव, पाप, बंध ।

बेद्नी, नाम, गोत, आयु, ए च्यार कर्म नों उदय छव में पुद्गल, नव में च्यार, अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध ।

१६ सोलमें बोलै मोहनीय कर्म नों उपशम, छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में तीन, अजीव, पाप, बन्ध । बाकी सात कर्म नों उपशम होवै नहीं ।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय अन्तराय, ए च्यार कर्म नो क्षायक, छवमें कोण नवमें कोण ?—
छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव, पाप, बन्ध ।
बेद्नी नाम गोत ए तीन कर्म नों क्षायक, छव में कोण ? नव में कोण ?—छव में पुद्गल, नव में च्यार—अजीव. पुन्य, पाप, बंध ।

आयुष को क्षायक छव में कोण ?—नव में कोण ?
छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव, पुन्य, बन्ध ।

ज्ञानबरणी, दर्शनाबरणी, मोहनीय, अन्तराय ए च्यार कर्म नो क्षयोपशम, छब में कोण ? नव में कोण ? छब में पुद्गल, नव में तीन— अजीव, पाप, बन्ध। बाकी च्यार कर्म रो क्षयोपशम, होवे नहीं।

१७ सतरमें बोलै आठ कर्म ना निपन्न नीं विगत। छव कर्म नों उद्य निपन्न, छव में कोण ? नव में कोण ?—छव में जीव, नव में जीव।

मोहनीय, नाम, ए दोय कर्म नो उद्य निपन्न, छव में जीव नव में जीव, आस्रव।

सात कर्म नों तो उपशम निपन्न होवे, नहीं, एक मोहनीय कर्म नों उपशम निपन्न होवे, ते छव में जीव, नव में जीव, संवर।

ज्ञानाबरणी, दर्शनाबरणी, अन्तराय, यां तीन कर्म रो क्षायक निपन्न छव में जीव, नव में जीव निर्जरा। एक मोहनीय कर्म रो क्षायक निपन्न छव में जीव, नव में जीव, संबर निर्जरा। बाकी च्यार अघातिक कर्म को छव में जीव, नव में जीव, मोक्ष। च्यार अघातिक कर्म रो तो क्षयोपशम निपन्न होवे नहीं। ज्ञानाबरणी दर्शनाबरणी, अन्तराय, यां तीन कर्म को क्षयो-

पशम निपन्न तो छव में जीव, नव में जीव, निर्जरा। मोहनीय कर्म को क्षयोपशम निपन्न छव में जीव, नव में जीव, संबर, निर्जरा।

१८ अठार में बोलै आठ कर्म नों बन्ध आदिसत्ता किसे किसे गुण ठाणै—

ज्ञानाबरणी, दर्शनाबरणी, अन्तराय, नाम, गोत ए पांच कर्म नों बन्ध पहिला गुण ठाणां से दशमां गुण ठाणां ताई।

मोहनीय कर्म नों बन्ध पहिला गुण ठाणां से नवमां गुण ठाणां तांई।

आयु कर्म नों बन्ध पहिला गुण ठाणांसे सातमां तांई। तीजो गुण ठाणों टाली।

बेदनी कर्म नों बंध तेरमां गुण ठाणां तांई

ज्ञानाबरणी, दर्शनाबरणी, अन्तराय, ए तीन कर्म नो उदय अने उदय निपन्नी सत्ता बारमा गुण ठाणां तांई।

बेदनी, नाम, गोत्र, आयुष, ए च्यार कर्म नों उदय अने उदय निपन्नी सत्ता चौदमा गुणठाणां तांई।

मोहनीय कर्म नों उदय निपन्न पहिला गुण ठाणां से दशमा गुणठाणां तांई। अने सत्ता इग्यारमा गुण ठाणां तांई।

१६ उगणीस में बोलै चौदे गुणठाणां को उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम निपन्न कहै छै, ज्ञानाबरणी, दर्शनाबरणी, अन्तराय ए तीन कर्म नों उदय निपन्न तो पहिला से बारमां तांई।

दर्शन मोहनीय नों उदय निपन्न पहिला से सातमा तांई।

चारित्र मोहनीय नों उदय निपन्न पहिला से दशमा तांई।

बेदनी, नाम, गोत्र, आयुष ए च्यार कर्म नों उदय निपन्न पहिला से चौदमा तांई।

सात कर्म नों तो उपशम निपन्न होवे नहीं, एक मोहनीय कर्म नों होय तिण में दर्शन मोहनीय नों उपशम निपन्न तो चौथा से इग्यारमा तांई। चारित्र मोहनीय को इग्यारमें गुण ठाणै हीं। ज्ञानाबरणी, दर्शनाबरणी. अन्तराय ए तीन कर्म नों क्षायक निपन्न तेरमें चौदमें गुण ठाणै तथा श्री सिद्ध भगवान में। दर्शन मोहनीय को क्षायक निपन्न चौथा गुण ठाणां से चौदमा तांई। अनें चारित्र मोहनी को बारमा से चौदमा तांई तथा श्री सिद्ध भगवान मांहि।

बेदनी, नाम, गोत्र आयु ए च्यार कर्म नों क्षायक

निपन्न गुण ठाणां में पावे नहीं, श्री सिद्ध भगवान में पावै।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय ए तीन कर्म नों क्षयोपशम निपन्न तो पहिला से बारमा गुण ठाणां तांई।

दर्शन मोहनीय को क्षयोपशम निपन्न पहिला से सातमा गुण ठाणां तांई।

चारित्र मोहनीय नों क्षयोपशम निपन्न पहिला से दशमा गुण ठाणां तांई।

च्यार अघाति कर्म नो क्षयोपशम निपन्न होवे नहीं।

२० बीस में बोलै आठ कर्मां में पुन्य कितना पाप कितना तथा पुन्य कितना से लागै पाप कितना से लागै?—

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय अन्तराय ए च्यार कर्म तो एकान्त पाप छै।

वेदनी, नाम, गोत्र, आयु ए च्यार कर्म पुन्य पाप दोनूं ही छै।

मोहनीय कर्म से तो पाप लागै अने नाम कर्म से पुन्य लागे बाकी छव कर्म से पुन्य पाप दोनूं नहीं लागै।

२१ इक्कीस में बोलै आस्रवना बीस भेद तथा संबर ना बीस भेद किसे किसे गुणठाणें कितना कितना पावै ?

आस्रव के २० बीस भेदों की बिगत।

पहिले तथा तीजे गुणठाणे तो बीस पावै, दूजै चौथे पांचमें गुणठाणे १६ उगणीस पावै मित्थ्यात टल्यो। छठै गुणठाणे १८ अठारै पावै, मित्थ्यात्व तथा अव्रत आस्रव टल्यो। सातमा से दशमा गुणठाणां तांई ५ पांच आस्रव पावे कपाय, जोग, मन, वचन, काया, ए पांच जाणवा। इग्यारमें बारमें तेरमें च्यार पावे कषाय टली। चौदमें आस्रव पावे नहीं। हिवे संवर के बीस बोलां की बिगत—पहिलासे चउथा गुणठाणां तांई तो संबर पावै नहीं, पांच में गुणठाणे एक समकिते संबर पावै, सम्पूर्ण व्रत ते संबर पावै नहीं। देश व्रत पावै ते लेखव्यो नहीं।

छट्ठै गुणठाणै २ (दोय) पावै समकिते व्रतते, सातमा से दशमा गुणठाणां तांई १५ (पंद्रह) संबर पावै। अकषाय, अजोग, मन, बचन, काया, ए पांच टल्या।

इग्यारमें से तेरमें गुणठाणां तांई १६ सोलह संबर पावै, अजोग, मन, बचन, काया, ए च्यार टल्या ।

चौदह गुणठाणे २० बीसूंही संबर पावै ।

२२ बाईस में बोलै चौदा गुणठाणां किस्यो भाव किसी आत्मा ?

पहिलो दूजो तीजो गुणठाणों तो भाव दोय— क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा दर्शन । चौथो गुणठाणो भाव च्यार—उदय, बरजीनें, आत्मा दर्शन ।

पाचमूं गुणठाणो भाव दोय—क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा देशचारित्र ।

छट्ठा से दशमा गुणठाणां तांई भाव दोय— क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा चारित्र । इग्यारमूं गुणठाणो भाव दोय—उपशम परिणामिक, आत्मा उपशम चारित्र ।

बारमूं गुणठाणो भाव दोय—क्षायक परिणामिक आत्मा क्षायक चारित्र ।

तेरमूं गुणठाणो भाव दोय—क्षायक परिणामिक आत्मा उपयोग ।

चउदमों गुणठाणो भाव परिणामिक आत्मा अनेरी ।

२३ तेबीसमें बोले धर्म अधर्म किस्यो भाव किसी आत्मा ?

धर्म भाव ४ (च्यार) उदय टाली, आत्मा तीन, दर्शन, चारित्र, जोग। अधर्म भाव दोय उदय परिणामिक, आत्मा ३ तीन, कषाय, जोग, दर्शन।

२४ चौबीसमें बोले दया हिन्सा किस्यो भाव किसी आत्मा।

दया भाव ४ (च्यार) उदय बरजी ने, आत्मा २ (दोय) चारित्र, जोग।

हिन्सा भाव २ (दोय) उदय परिणामी आत्मा जोग, छव में नवमें का बोल कहणा।

२५ पचीसमें बोले शुभ जोग अशुभ जोग किस्यो भाव, किसी आत्मा ?

शुभ जोग तो भाव च्यार—उपशम, बरजी ने, आत्मा जोग।

अशुभ जोग भाव दोय—उदय परिणामी, आत्मा जोग। छव में नव में का बोल कहणा।

२६ छवबीसमें बोलै ब्रत अब्रत किस्यो भाव किसी आत्मा ?

ब्रत भाव ४ (च्यार) उदय, बरजी ने आत्मा,

चारित्र । अव्रत भाव २ (दोय) उदय परिणामी आत्मा अनेरी ।

२७ सत्तावीसमें बोलै पञ्च महाव्रत पञ्च सुमति तीन गुप्त किसो भाव किसी आत्मा ?

पञ्च महाव्रत तीन गुप्त तो भाव ४ (च्यार) उदय वरजी, आत्मा, चारित्र ।

पांच सुमति भाव तीन—क्षायक क्षयोपशम, परिणामिक, आत्मा जोग ।

२८ अठावीसमें बोलै १२ (बारै) व्रत किसो भाव किसी आत्मा ?

भाव, क्षयोपशम परिणामी, आत्मा, देश चारित्र ।

२६ उगणतीसमें बोलै समकित मित्थ्यात्व किसो भाव किसी आत्मा ? समकित भाव च्यार—उदय, बरजी ने, आत्मा, दर्शन । मिथ्यात्व भाव उदय परिणामी, आत्मा दर्शन ।

३० तीसमें बोलै ज्ञान अज्ञान किसो भाव किसी आत्मा ?

ज्ञान भाव ३ (तीन) क्षायक क्षयोपशम परिणामी, आत्मा, उपयोग, ज्ञान । अज्ञान भाव २ (दोय) क्षयोपशम परिणामिक आत्मा उपयोग ।

३१ इकतीसमें बोलै द्रव्य जीव, भाव जीव, किसे भाव किसी आत्मा ?

द्रव्य जीव भाव एक परिणामिक, आत्मा द्रव्य भाव जीव भाव पांचों ही, आत्मा द्रव्य बरजी ने सात। छव में नव में का बोल कहणा।

३२ बत्तीसमें बोलै अठारे पाप ठाणा रो उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम छव में कोण नव में कोण ?

छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव; पाप, बन्ध।

३३ तेतीसमें बोलै अठारे पाप ठाणा रो उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम निपन्न छव में कोण नव में कोण ?

उदय निपन्न छव में जीव नव में जीव आस्रव।

उपशम निपन्न छव में जीव नव में जीव संबर।

सतरा (१७) को तो क्षायक निपन्न छव में जीव नव में जीव संबर, एक मिथ्या दर्शन शल्य को छव जीव नव में जीव संबर निर्जरा क्षयोपशम निपन्न छव में जीव नव में जीव संबर निर्जरा।

३४ चौतीसमें बोलै बारह व्रत को द्रव्य क्षेत्र काल भाव राखै तेहनी विगत।

पहिला व्रत से आठमा व्रत तांई तो द्रव्य थकी

आधार राखै ते द्रव्य उपरान्त त्याग, खेत्र थी सर्व खेत्रां में, काल थकी जाव जीव, भाव थकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा। नव में व्रत द्रव्य खेत्र ऊपर परिमाणे काल थकी एक मुहूर्त्त भाव थी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा। दशमूं व्रत द्रव्य खेत्र भाव गुण तो ऊपर परिमाणे, काल थकी राखै जितनो काल। इग्यारमों व्रत को द्रव्य खेत्र भाव गुण तो ऊपर परिमाणे काल थकी अहोरात्रि परिमाण।

बारमूं व्रत को द्रव्य थकी साधूजी नें कल्पे ते चौदह प्रकार नो द्रव्य, खेत्र थकी कल्पै ते खेत्रमें काल थकी कल्पै ते काल में, भाव थकी रागद्वेष रहित, गुण थकी संबर निर्जरा।

३५ पैंतीस में बोलै नव पदार्थ में निजगुण कितना परगुण कितना?

निजगुण तो पांच। जीव, आस्रव, संबर निर्जरा, मोक्ष।

परगुण ४ (च्यार)। अजीव, पुन्य, पाप, बंध।

३६ छत्तीसमें बोलै दर्शन मोहनीय कर्म को उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम कितना गुण ठाणां

पावै। दर्शन मोहनीय को उदय निपन्न पहिला गुणठांणा से सातमां तांई, चारित्र मोहनीय को उदय निपन्न पहिलासे दशमा तांई।

चारित्र मोहनीय को उपशम निपन्न एक इग्यारमें ही गुणठाणे॥

दर्शन मोहनीय को उपशम निपन्न चौथा से इग्यार में गुणठाणा तांई।

दर्शन मोहनीय को क्षायक निपन्न चौथा से चौदमें गुणठाणे तथा सिद्धां में।

चारित्र मोहनीय को क्षायक निपन्न बारमें तेरमें चौदमें गुणठाणे।

दर्शन मोहनीय को क्षयोपशम निपन्न पहिला से सातमां गुणठाणे तांई।

चारित्र मोहनीय को क्षयोपशम निपन्न पहिला से दशमां गुणठाणां तांई।

३७ सेंतीसमें बोलै आठ आतमां में मूल गुण कितनी उत्तर गुण कितनी—

मूल गुण एक चारित्र आत्मा, उत्तर गुण एक जोग आत्मा। बाकी दोनूं नहीं।

३८ अड़तीस में बोलै आठ आत्मा किसे भाव किसी आत्मा—आत्मा तो आप आपरी, द्रव्य आत्मा

तो भाव एक परिणामी, कषाय आत्मा भाव दोय उदय परिणामी, जोग आत्मा भाव च्यार उपशम बरजी ने उपयोग ज्ञान वीर्य ए तीन आत्मा भाव तीन क्षायक क्षयोपशम परिणामिक दर्शन आत्मा भाव पांचों ही।

चारित्र आतमां भाव च्यार उदय बरजी।

३६ गुण चालीस में बोलै आठ आत्मा छव में कोण नवमें कोण।

द्रव्य आत्मा छव में जीव नवमें जीव, कषाय आत्मा छव में जीव, नवमें जीव आस्रव। योग आत्मा छव में जीव नवमें जींव आस्रव निर्जरा। उपयोग, ज्ञान, वीर्य ये तीन आत्मा छव में जीव नव में जीव निर्जरा।

दर्शन आत्मा छव में जीव नव में जीव आस्रव संवर निर्जरा।

चारित्र, आत्मा, छव में जीव नव में जीव संवर।

४० चालीस में बोलै आस्रव का (बीस) २० बोल किसे भाव किसी आत्मा ?

भाव तो उदय परिणामिक बीसूं ही बोल। मिथ्याती दर्शन आत्मा, अव्रत प्रमाद अनेरीआत्मा। कषाय कषाय आत्मा बाकी सोलै आस्रव योग आत्मा।

४१ एकचालीसमें बोलै संबर ना २० (बीस) बोल किसे भाव किसी आत्मा।

अकषाय संबर भाव तीन उपशम क्षायक परिणामिक, आत्मा अनेरी।

अजोग, मन बचन काया ए च्यार संबर भाव एक परिणामिक आत्मा अनेरी। सम्यक ते संबर भाव ४ (च्यार) उदय बरजी ने, आत्मा दर्शन। अप्रमादी संबर भाव च्यार उदय-बरजी आत्मा अनेरी। बाकी १३ (तेरा) संबर का बोल भाव ४ (च्यार) उदय बरजीनें आत्मा चारित्र।

४२ बयालीस में बोलै पंदरह जोग किसे भाव किसी आत्मा, जीव, अजीव तथा रूपी अरूपी की बिगत।

भाव की विगत।

सत्यमन जोग सत्य भाषा व्यवहार मन व्यवहार भाषा, औदारिक ए पांच जोग भाव च्यार उपशम बरजीनें।

औदारिक को मिश्र, कार्मण ए दोय जोग भाव तीन उदय क्षायक परिणामिक।

असत्यमनजोग, मिश्र मन जोग, असत्य भाषा

मिश्र भाषा वैक्रियनोमिश्र. आहारिकनूं मिश्र ए छव जोग भाव दोय उदय परिणामिक, आहारिक बेक्रै ए दोय जोग भाव ३ उदय क्षयोपशम परिणामी।

सावद्य निर्वद्य कितना।

असत्य मन योग असत्य भाषा मिश्र मन योग मिश्र भाषा, आहारिक नूं मिश्र, बैक्रिय नूं मिश्र ए छव योग तो सावद्य छै वाकी नव योग सावद्य निर्वद्य दोनूं छै।

पन्द्रह योग जीव के अजीव द्रव्ये अजीव भावे जीव। पन्द्रह योग रूपी के अरूपी द्रव्ये रूपी भावे अरूपी।

४३ तयांलीस में बोलै पांच इन्द्रियां की पूछा पांच इन्द्री जीव के अजीव?

द्रव्ये अजीव भावे जीव। पांच इन्द्री रूपी के अरूपी? द्रव्ये रूपी भावे अरूपी। पांच इन्द्रियां में कामी कितनी भोगी कितनी? कामी तो दोय श्रुत इन्द्री, चक्षु इन्द्री अने भोगी बाकी तीन इन्द्रियां। पांच इन्द्रिया में क्षेत्री कितनी अक्षेत्र कितनी? एक स्पर्श इन्द्री तो क्षेत्री बाकी च्यार इन्द्रियां अक्षेत्री

द्रव्य थी इन्द्री कितनी भाव थी कितनी ? द्रव्य थी तो आठ ते कहै छै दोय कान, दोय आंख, नाक, जीह्वा, स्पर्श। भाव थी पांच श्रुत चक्षु घ्राण रस स्पर्श एवं छव में कोण नव में कोण ? भाव इन्द्री छव में जीव नव में जीव निर्जरा, ते किणन्याय दर्शनावरणी कर्म क्षय उपशम थयां थी जीव इन्द्रिय पणो पाम्यो इणन्याय।

४४ चमालीस में बोलै जीव परिणामी रा १० बोल किसे भाव किसी आत्मा ?

गति परिणामी भाव दोय, उदय परिणामी, आत्मा अनेरी। कषाय परिणामी भाव दोय उदय परिणामिक, आत्मा, कषाय। वेद परिणामी भाव उदय परिणामी आत्मा कषाय तथा अनेरी। योग परिणामी लेश परिणामी भाव च्यार उपशम बरजी ने आत्मा योग। इन्द्रिय परिणामिक भाव दोय, क्षयोपशम परिणामी, आत्मा उपयोग। ज्ञान परिणामिक उपयोग परिणामिक भाव तीन क्षायक क्षयोपशम परिणामी आत्मा आप आपरी। दर्शन परिणामी भाव पांचों ही, आत्मा दर्शन। चारित्र परिणामी भाव च्यार उदय बरजी ने आत्मा, चारित्र।

४५ पैंतालीसमें बोलै जीव परिणामी रा १० (दश) बोल छव में कोण नव में कोण ?

गति परिणामी छव में जीव नव में जीव जाणवो वेद परिणामी कषाय परिणामी छव में जीव नवमें जीव आस्रव। योग लेश परिणामी छव में जीव नव में जीव आस्रव निर्जरा। दर्शन परिणामी छव में जीव नव में जीव आस्रव संवर निर्जरा। इन्द्रिय उपयोग ज्ञान परिणामी छव में जीव नव में जीव निर्जरा। चारित्र परिणामी छव में जीव नव में जीव संवर।

४६ छयालीसमें बोले चौदह गुणठाणा वाला में शरीर कितना पावै ?

पहिला से पांच गुणठाणा तांई तो शरीर ४ च्यार पावै आहारिक टल्यो, छठै गुणठाणे शरीर पावै पांचों ही, सातमा गुणठाणा से चौदमा गुणठाणा तांई शरीर पावै ३ (तीन) औदारिक तेजस कार्मण। पांच शरीर चौ स्पर्शी के आठ स्पर्शी ? च्यार शरीर तो आंठ स्पर्शी छै कार्मण चौ स्पर्शी छै। पांच शरीर जीव के अजीव ? अजीव छै।

४७ सातचालीसमें बोलै २४ (चौबीस) दण्डक में लेश्या कितनी पावै ?

सात नारकी १ तेउ २ वायु ३ बेइन्द्री ४ तेइन्द्री ५ चौइन्द्री ६ असन्नी मनुष्य ७ असन्नी तिर्यञ्च ८ यां में तो ३ माठी लेश्या पावै।

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय १ बनस्पतिकाय १ भवन पतिका १० बानव्यन्तर १ यां चौदह दण्डकां में लेश्या पावै ४ पद्म शुक्ल बरजी ने। जोतषी अने पहिला दूजा देवलोक का देवता में लेश्या पावै १ तेजू। तीजा से पांचमां तांई पद्म। छट्ठा देवलोक से सरवार्थ सिद्ध तांई पावै १ शुक्ल। सन्नी मनुष्य सन्नी तिर्यञ्च में लेश्या पावै छव। सर्व जुगलिया में ४ च्यार पद्म शुक्ल टली।

४८ अड़चालीसमें बोलै अजीव ना चौदह भेद ऊंचा नीचा तिरछा लोक में कितना? ऊंचो लोक अने अढ़ी द्वीप बारै १० पावै। धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्ति को खन्ध अने काल ए च्यार टल्या। नीचो लोक अढ़ाई द्वीप में ११ (इग्यारे) पावै काल और बध्यो। ऊंची दिशि में ११ (इग्यारे) पावै नीची दिशि में १० पावै।

४९ उणपचास में बोलै च्यार गति ४ पांच जाति ९, छव काय १५, चौदह भेद जीव का २९ चौबीस दण्डक एवं ५३ सूक्ष्म ५४ बादर ५५ त्रस

५६ स्थावर ५७ पर्यासो ५८ अपर्यासो ५९ ए गुण-सठ बोल किसो भाव किसी आत्मा ? भाव उदय परिणामी, आत्मा अनेरी, छव में कोण नव में कोण ? छव में जीव नव में जीव । तथा सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं ।

५० पचासमें बोलै २२ (बाईस) परीषह किसे किसे कर्म के उदय तथा छव में नव में कोण ?

११ इग्यारे परीषह तो बेदनी कर्म ना उदय से ।

२ दोय ज्ञानाबरणी कर्म ना उदय से ।

८ आठ मोहनीय कर्म ना उदय से ।

१ अन्तराय कर्म का उदय से ।

५१ इक्यावन में बोलै तेबीस पदवी किस्यो भाव किसी आत्मा ?

१९ उगणीस पदवी तो भाव २ (दोय) उदय परिणामिक, आत्मा अनेरी ।

१ केवली महाराज की पदवी भाव दोय क्षायक परिणामिक आत्मा उपयोग ।

१ साधूजी महाराज की पदवी भाव ४ (च्यार) उदय बरजी आत्मा चारित्र ।

१ श्रावक की पदवी भाव २ (दोय) क्षयोपशम परिणामी, आत्मा, देश चारित्र ।

१ समदृष्टि की पद्वी भाव ४ (च्यार) उदय बरजी आत्मा, दर्शन।

उगणीस पद्वी तो छव में जीव नव में जीव समदृष्टि की अने केवली की पद्वी छव में जीव नव में जीव निर्जरा। साधू श्रावक की पद्वी छव में जीव नव में जीव संबर।

५२ बावनमें बोलै नव तत्व का ११५ (एकसह पंद्रह) बोल की।

जीव कितना—जीव तो ७० सत्तर तेहनी विगत जीव का १४, आस्रव का २०, संबर का २०, निर्जरा का १२, मोक्ष का ४, एवं ७०।

अजीव ४५ तेहमें अजीव का १४, पुन्य का ६, (नव) पाप का १८ (अठारा) बंध का ४ (च्यार) एवं ४५।

सावद्य कितना निर्वद्य कितना ?

निर्वद्य तो ३६, तिणमें निर्जरा का १२, संबर का २०, मोक्ष का ४, ए ३६ छवतीस।

सावद्य १६ तिणमें आस्रव का १६ (मन वचन काया योग ए च्यार टल्या)।

दोनूं नहीं ५६ तिणमें ४५ अजीव का चौदह जीव का ए सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं।

च्यार आस्रव मन बचन काया जोग ए सावद्य निर्वद्य दोनूं छै।

आज्ञा मांही कितना—१६ ऊपर परमाणे।

आज्ञा बाहर कितना—१६ आस्रव का।

आज्ञा मांही बाहर कितना—४ (च्यार) मन बचन काया योग ए च्यार आस्रव का।

५६ बोल आज्ञा मांही बाहर दोनूं नहीं।

रूपी कितना अरूपी कितना ?

अरूपी तो ८० (अस्सी) तिणमें ७० (सत्तर) तो जीव का १०, अजीव का (पुद्गल का च्यार टल्या) ६ (नव) पुन्य का, १८ (अठारा) पाप का, ४ (च्यार) बंध का ४ पुद्गलका। यह ३५ रूपी छै।

एकसह पंद्रह बोलां में छांडवा आदरवा जाणवा योग कितना ?

जाणवा योग तो ११५ एकसह पंद्रह, आदरवा योग ३६ (छवतीस) निर्वद्य कह्या सो अने छांडवा योग ७६ तिणमें अजीव का ४५, जीव का १४, आस्रव का २० एवं ७६ थया।

॥ किसे भाव ॥

४५ अजीव का तो भाव एक परिणामिक १४

जीव का २० आस्रव का ए चौतीस बोल भाव दोय उदय परिणामिक।

संबर का २० (बीस) बोलां में से १५ पंदरह तो भाव च्यार उदय बरजी ने, अने अकषाय संबर भाव ३ (तीन) उपशम क्षायक. परिणामिक, अयोग मन बचन काया ए च्यार भाव एक परिणामिक।

निर्जरा का १२ बोल भाव ३ तीन क्षायक क्षयोपशम परिणामिक।

४ मोक्ष का यामें से ज्ञान तप ए दोय तो भाव तीन क्षायक क्षयोपशम परिणामी, अने दर्शन चारित्र ए दोय भाव च्यार उदय बरजी ने।

॥ इति सम्पूर्ण ॥



॥ अथ अल्पा बोहत ॥

१ सर्व थोड़ा गर्भेज मनुष्य
२ तेहथी मनुष्यणी २७ गुणी ।
३ ,, बादर तेऊकाय का पर्याप्ता असंख्यात गुणा।
४ ,, पांच अनुत्तर का देवता असंख्यात गुणा ।
५ ,, ऊपरला ग्रैवेयक का देवता संख्यात गुणा ।
६ ,, बीचला ग्रैवेयक का देवता संख्यात गुणा।
७ ,, नीचला त्रिक का संख्यात गुणा ।
८ ,, १२ मां देवलोक का संख्यात गुणा ।
९ ,, ११ मां देवलोक का संख्यात गुणा ।
१० ,, १० मां का संख्यात गुणा ।
११ ,, ९ मां का संख्यात गुणा ।
१२ ,, सातमी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।
१३ ,, छट्ठी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।
१४ ,, आठमां देवलोक का देवता असंख्यात गुणा ।
१५ ,, सातमां देवलोक का देवता असंख्यात गुणा ।
१६ ,, पांचमीं नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।
१७ ,, छट्ठा देवलोक का देवता असंख्यात गुणा ।

१८ तेहथी चौथी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।

१६ „ पांचवां देवलोक का देवता असंख्यात गुणा ।

२० „ तीजी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।

२१ „ चौथा देवलोक का देवता असंख्यात गुणा ।

२२ „ तीजा देवलोक का देवता असंख्यात गुणा ।

२३ „ दूजी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।

२४ „ छमूर्छम मनुष्य असंख्यात गुणा ।

२५ „ दूजा देवलोक का देवता असंख्यात गुणा ।

२६ „ दूजा की देव्यां संख्यात गुणी ।

२७ „ पहला देवलोक का देवता संख्यात गुणा ।

२८ „ पहला की देव्यां संख्यात गुणी ।

२६ „ भवनपति देवता असंख्यात गुणा ।

३० „ भवनपति की देव्यां संख्यात गुणी ।

३१ „ पहली नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।

३२ „ खेचर पुरुष असंख्यात गुणा ।

३३ „ खेचरणी संख्यात गुणी ।

३४ „ थलचर पुरुष संख्यात गुणा ।

३५ „ थलचरणी संख्यात गुणी ।

३६ „ जलचर पुरुष संख्यात गुणा ।

३७ „ जलचरण संख्यात गुणी ।

३८ „ वानव्यन्तर देवता संख्यात गुणा ।

३९ तेहथी वानव्यन्तर देवी संख्यात गुणी।

४० ,, जोतिषी देवता संख्यात गुणा।

४१ ,, जोतिषीणी देवी संख्यात गुणी।

४२ ,, खेचर नपुन्सक संख्यात गुणा।

४३ ,, थलचर नपुन्सक संख्यात गुणा।

४४ ,, जलचर नपुन्सक संख्यात गुणा।

४५ ,, चौइन्द्री का पर्यासा संख्यात गुणा।

४६ ,, पंचेन्द्री का पर्यासा विशेषाईया।

४७ ,, बेन्द्री पर्यासा विशेषाईया।

४८ ,, तेन्द्री पर्यासा विशेषाईया।

४९ ,, पंचेन्द्री अपर्यासा असंख्यात गुणा।

५० ,, चौइन्द्री अपर्यासा विशेषाईया।

५१ ,, तेन्द्री अपर्यासा विशेषाईया।

५२ ,, बेन्द्री अपर्यासा विशेषाईया।

५३ ,, बादर प्रत्येक बनस्पति पर्यासा असंख्यात गुणा।

५४ ,, बादर निगोद पर्यासा असंख्यात गुणा।

५५ ,, बादर पृथ्वी का पर्यासा असंख्यात गुणा।

५६ ,, बादर अप्पकाय पर्यासा असंख्यात गुणा।

५७ ,, बादर वायुकाय पर्यासा असंख्यात गुणा।

५८ ,, बादर तेऊकाय अपर्यासा असंख्यात गुणा।

५९ तेहथी बादर प्रत्येक शरीरी बनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणा।

६० „ बादर निगोद अपर्याप्ता असंख्यात गुणा।

६१ „ बादर पृथ्वीकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणा।

६२ „ बादर अप्पकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणा।

६३ „ बादर वायुकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणा।

६४ „ सूक्ष्म तेऊकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणा।

६५ „ सूक्ष्म पृथ्वी अपर्याप्ता विशेषाईया।

६६ „ सूक्ष्म अप्प अपर्याप्ता विशेषाईया।

६७ „ सूक्ष्म वायु अपर्याप्ता विशेषाईया।

६८ „ सूक्ष्म तेऊ पर्याप्ता संख्यात गुणा।

६९ „ सूक्ष्म पृथ्वी पर्याप्ता विशेषाई।

७० „ सूक्ष्म अप्प पर्याप्ता विशेषाईया।

७१ „ सूक्ष्म वायु पर्याप्ता विशेषाईया।

७२ „ सूक्ष्म निगोद अपर्याप्ता असंख्यात गुणा।

७३ „ सूक्ष्म निगोद पर्याप्ता संख्यात गुणा।

७४ „ अभव्य जीव अनन्त गुणा।

७५ „ पड़वाई समदृष्टि अनन्त गुणा।

७६ „ सिद्ध भगवन्त अनन्त गुणा।

७७ „ बादर बनस्पति पर्याप्ता अनन्त गुणा।

७८ „ बादर पर्याप्ता विशेषाईया।

७९ तेहथी बादर वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणा।
८० " बादर अपर्याप्ता विशेषाईया।
८१ " सर्व बादर विशेषाईया।
८२ " सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणा।
८३ " सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाईया।
८४ " सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्ता संख्यात गुणा।
८५ " सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाईया।
८६ " सर्व सूक्ष्म विशेषाईया।
८७ " भव्य जीव विशेषाईया।
८८ " निगोदिया विशेषाईया।
८९ " वनस्पति विशेषाईया।
९० " एकेन्द्री विशेषाईया।
९१ " तिर्यञ्च विशेषाईया।
९२ " मिथ्याती विशेषाईया।
९३ " अव्रती विशेषाईया।
९४ " सकषाई विशेषाईया।
९५ " छद्मस्थ विशेषाईया।
९६ " संयोगी विशेषाईया।
९७ " संसारी जीव विशेषाईया।
९८ " सर्व जीव विशेषाईया।

॥ अथ श्रावक प्रतिक्रमण ॥

अर्थ सहित ।

णमो अरिहंताणं	**णमो सिद्धाणं**	**णमो**
नमस्कार थावो अरि-हन्त भगवन्त नें	नमस्कार थावो श्रीसिद्ध भगवान नें	नमस्कार थावो
आयरियाणं	**णमो उवज्झायाणं**	**णमो लोए**
श्रीआचारज महाराज ने	नमस्कार थावो श्री उपाध्याय महाराज वे	नमस्कार थावो लोक के विषे
सव्वं साहूणं ।		
सर्व साधू मुनिराजों नें		

॥ अथ तिक्खुत्ता की पाटी ॥

अर्थ सहित

तिक्खुत्तो	**आयाहिणं**	**पयाहिणं**	**वंदामि**	**नमं**
तीन वार	दाहिणापासाथी	प्रदक्षिणा देई	वंदना करूं	नमस्कार
सामी	**सक्कारेमि**	**समाणेमि**	**कल्लाणं**	**मंगलं**
करूं	सत्कार करूं	सम्मान करूं	कल्याणकारी	मङ्गलकारी
देवयं	**चेइयं**	**पज्जुवासामी**	**मत्थएण**	**वंदामि**
धर्म देव	चित्त प्रसन्नकारी ज्ञानवंत	सेवना करूं	मस्तकेकरी	वंदना नमस्कार करूं

॥ इच्छामि पडिक्कमिउ ॥

इच्छामि पडिक्कमिउ इरिया वहीयाये
इच्छूं, वांछू प्रतिक्रमवोते मार्गमें विषे चलतां
निवर्त्तवो

विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे
विराधनां हुई होय जातांआतां प्राणी बेइन्द्रियादिनो
आक्रमण करणूं दावणूं

बीयक्कमणे हरियक्कमणे उसा उत्तिङ्ग पणग
बीज जीव दाबणूं हरि लीलीको ओसको कीड़ाका नीलण
दाबणूं बिल फूलण

दग मट्टी मक्कडासंताणा संकमणे
पाणीका माट्टीका जीव मकड़ीका जाला मद्दवो संक्रमवो

जेमे जीवा विराहिया एगेंदिया बेइन्दिया
मैं ज्यो जीव विराध्या होय एकेन्द्री जीव बेइन्द्री जीव

तेइंदिया चउरिन्दिया पंचेंदिया अभि
तेइन्द्री जीव चौइन्द्री जीव पंचइन्द्री जीव सनमुख

हया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टीया
आता हण्यां धूलसे ढक्या रगड्या घात कला संघटैकरी

परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणा
परिताप्या किलामना उपजाई उपद्रव किया एक स्थान से

उट्ठाणा संकामिया जीवियाउ ववरोवियां
दूसरे स्थान पटक्या जीवत से नाश किया

तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥
तेहनो मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ अथ तस्सुत्तरी ॥

तस्सुत्तरी	करणेणं	पायच्छित	करणेणं
तेहना उत्तर प्रधान	करवा	प्रायश्चित	करवो
विसोही	करणेणं	विसल्ली	करणेणं
विशुद्धि	करवो	सल्य रहित	करवो
पावाणं	कम्माणं	निग्घाय	णट्ठाए
पाप	कर्म का	नाश करवा	निमित्त
ठामि	करेमि	काउस्सग्गं	अनत्थ
स्थिर हुई	करूं छूं	काय उत्सर्ग ध्यान	इण मुजब आगार
ऊससिएणं	नीससिएणं	खासिएणं	छीएणं
ऊंचा श्वास	नीचा श्वास	खांसी	छींक
जंभाइएणं	उड्डुएणं	वायनिसग्गेणं	भमलीए
उबासी	डकार	अधोवायु	भँवल
पित्त मुच्छाए	सुहुमेहिं	अङ्ग संचालेहिं	
पित्तकर मूर्च्छा	सूक्ष्मपणे	शरीर को हालवो	
सुहुमेहिं	खेल संचालेहिं	सुहुमेहिं	दिट्ठिसंचालेहिं
सूक्ष्मपणे	श्लेष्मको संचार	सूक्ष्म	दृष्टि चलावो
एवमाइएहिं	आगारेहिं	अभग्गो	अविराहीउ
इत्यादिक एह म्हारे	आगार से	ध्यान भागे नहीं	विराधना नहीं
हुज्ज	में	काउसग्गो	जाव	अरिहं
होज्यो	मने	काउसग्ग ते ध्यान	जिहां तक	अरि

ताणं भगवन्ताणं नमुक्कारेणं नपारेमि
हन्त भगवन्त ने नमस्कार करी ने नहीं पारूं

ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं
तठातांई शरीर से स्थान से मौन करी ध्यान करी

अप्पाणं वोसरामि ॥ इति ॥
आत्मा ने पापथकी वोसराऊं

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोयगरे धम्म तित्थयरेजिणे
लोक के विषै उद्योतकारी धर्म तीर्थ करता जिण

अरिहन्ते कित्तइस्सं चउवीसंपि केवली ॥१॥
अरिहन्तां की कीरति करूं चौवीस पे केवली

उसभ मजीयं च वंदे संभवमभिनन्दणं च
ऋषभ अजित पुनः वंदू संभवनाथ अभिनन्दनजी पुनः

सुमइं च पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं
सुमति पुनः पद्म प्रभः सुपार्श्व जिन पुनः चंदा प्रभू

वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं सीयल सिज्जंस
वंदू सुविधनाथ पुनः दूसरो नाम शीतल श्रेयांस
पुष्पदंत

वासुपुज्जं च विमल मणंत च जिणं धम्मं
वासुपुज्य पुनः विमलनाथ अनन्तनाथ पुनः जिन धर्मनाथ

शांतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथु अरं च मल्लिं
शान्ति पुनः वंदू कुंथु अर पुनः मल्लिनाथ
नाथ नाथ

वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च वंदामि
वंदू मुनिसुव्रत नमि जिन पुनः वंदू

रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं
अरिष्टनेमि पार्श्वनाथ तथारूप वर्द्धमान वंदू पुनः यह

मये अभिथुया विहूयरयमला पहीण जर
मैं स्तुति करी दूर किया कर्मरूप क्षीण भया जनम
रज मैल

मरणा चऊविसंपि जिणवरा तित्थयरा मे
मरण जिन्होंका ये चौवीस जिनराज तिर्थंकर म्हारे ऊपर

पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिए महिया जे ये
प्रसन्न थावो कीर्त्ति करी वंदू मोटा प्रते मे ये
पूज्या थाय

लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग बोहिलाभं
लोक के विषै उत्तम सिद्ध छे रोग रहित समकित
बोध लाभ

समाहि वर मुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मल
समाधि प्रधान उत्तम देवो चन्द्रमां थी निर्मल

यरा आइच्चेसु अहियं पयासयारा सागर वर
कारी सूर्य थी अधिक प्रकाशकारी समुद्र समान

गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥
गंभीर एहया सिद्ध सिद्धि मने देवो

॥ अथ नमुत्थुणं ॥

नमोत्थुणं	अरिहंताणं	भगवंताणं	आइगराणं
नमस्कार थात्रो	अरिहन्त	भगवन्त ने	धर्म की आदि करता ने
तित्थयराणं	सयंसंबुद्धाणं	पुरिसोत्तमाणं	
तीर्थ करता	बिना गुरू पोते प्रति बोध पाम्या	पुरुषां में उत्तम	
पुरिस	सिंहाणं	पुरिसवरपुण्डरीयाणं	पुरिस
पुरुषां में	सिंह समान	पुरुषांमें पुण्डरीक कमल समान	पुरुषां में
वर गंध	हत्थीणं	लोगुत्तमाणं	लोगनाहाणं
गन्ध	हाथी समान	लोक में उत्तम	लोक का नाथ
लोगहियाणं	लोगपईवाणं	लोगपज्जोय	गराणं
लोक में हितकारी	लोक में प्रदीप समान		लोक में उद्योतकारी
अभयदयाणं	चक्खुदयाणं	मग्गदयाणं	सरणदयाणं
अभय दानदाता	ज्ञान चक्षुदायक	सुमार्गदायक	शरणदायक
जीवदयाणं	बोहिदयाणं	धम्मदयाणं	धम्मदेश
संयम जीवदायक	बोधदायक	धर्मदायक	धर्म देशना
याणं	धम्मनायगाणं	धम्मसारहीणं	धम्मवर
दायक	धर्मका नायक	धर्म का सारथी	उत्तम धर्म कर
चाउरंत	चक्कवट्टीणं	दीवोत्ताणं	सरणगईपइट्ठा
च्यार गति का अन्तकारी	चक्रवर्त समान	द्वीपा समान	शरणागत

अप्पडिहय वरनाणं दंसण धराणं विअट्टछउ
अप्रतिहत प्रधान ज्ञान दर्शन धारक निवर्त्यो

माणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं
छद्मस्थपणो पोते जीत्या अने दूजाने जीतावें पोते तिरया दूसराने तारे

बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं
पोते प्रति दूजा ने प्रति कर्म थीं दूजा ने सर्वज्ञ
बोध पाम्या बोधे मुकाव्या मुकावे

सव्वदरिसीणं सिवमयल मरुअ मणंत
सर्व दरशी कल्याणकारी अचल अरुज अनन्त

मक्खय मव्वाबाह मप्पुणराविति सिद्धिगइ
अक्षय अव्याव्याधि फेरू आवे नहीं इसी सिद्धगति

नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं । इति ॥
नामवाला स्थान प्राप्त हुवा जिनेश्वरा ने नमस्कार थावो

॥ प्रतिक्रमण ॥

आवस्सही इच्छामिणं भंते तुंभेहिं अब्भणु
अवश्य इच्छूं छूं मैं हे भगवन्त तुम्हारी आज्ञा से

नायेसमाणे देवसी पडिक्कमणं ठाएमि देवसी
दिवस प्रतिक्रमण ठाऊं करूं मैं दिवस
सम्बन्धी सम्बन्धी

ज्ञान दर्शण चारित्र तप अतिचार चिंतवनार्थ
ज्ञान दर्शन चारित्र तप अतिचार चिन्तवना के अर्थे

करेमि काउस्सग्गं ॥१॥
करूं छूं मैं काउसग्ग ते ध्यान

॥ इच्छामि ठामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिओ अइ
इच्छूं छूं ठाऊं काउसग ज्यो मैं दिवस में अति

यारो कओ काईओ वाईओ माणसिओ उस्सुत्तो
चार कीनों शरीर से बचन से मन से भूंडा सूत्र

उमग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्वि
उन मार्ग अकल्पनीक नही करवा जोग दुर ध्यान खोटी

चिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो
चिन्तवना अणाचार नहीं इछवा जोग

असावगपाउग्गो नाणे तहदंसणे चरित्ताचरित्ते
श्रावक के नहीं करवा ज्ञान दर्शन देशव्रत
जोग पाप ते व्रत भंगादि

सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं
श्रुत सामायक तीन गुप्ति च्यार कषाय

पंचण्हं मणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं
पांच अणुव्रत तीन गुणव्रत च्यार

सिक्खावयाणं बारस विहस्स सावग धम्मस्स
शिक्षा व्रत बारै विध श्रावक धर्म को

जं खंडिअं जं विराहिअं तस्समिच्छामि
ज्यो खण्डना करी ज्यो विराधना करी तेहनो मिच्छामि

दुक्कडं ॥ २ ॥
दुकडं

॥ अथ क्षमावंत श्रमणोको वंदना ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए
इच्छूं छूं हे क्षमावन्त साधू वंदवा सचित्तादि छांड़ी निपाप
आपने शरीर पणे हुई निर्जराअथ

निसीहिआए अणु जाणह मे मिउग्गहं निस्सीहि
शरीर करी आज्ञा देवो मुझे मर्यादा अशुभ जोग
मांही निवर्तवो

अहो कायं । कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो
चर्ण स्पर्शवाकी म्हारी कायासे खमज्यो हे भगवान् किलामना
आज्ञा देवो तुमारा चर्ण फरसतां

अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसोवईक्कंतो
थोड़ी किलामना बहुत समाधि भावकर दिवस वीत्यो
हुई हुवे वो । तुमारो

जत्ता भे जवणिज्जंचभे । खामेमि खमासमणो
संयम रूप यात्रा इन्द्री नो इन्द्री आपकूं खमाऊं हे क्षमावंत
की विषय उपशमावी ते जपणी छूं साधू

देवसिअं वइक्कमं आवस्सिआए पडिक्कमामि ।
दिवस सम्बन्धी व्यतिक्रम अवश्य करणी नां पड़िकमूं छूं ।
अतिचार थकी

खमासमणाणं देवसिआए आसायणाये
हे क्षमावन्त श्रमण दिवस सम्बन्धी असातना

तित्तीसन्नयराए जं किंचिमिच्छाए मणदुक्कडाए
तेतीस मांहेली ज्यो कोई किञ्चित् मिथ्या मनसे दुष्कृत
क्रिया करी किया

वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए
वचन से दुकृत काया से दुकृत किया, क्रोध थी मान थी
मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए
माया कपट लोभ करी सर्व काल में सर्व मिथ्या उपचार किया
सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ
सर्व धर्म क्रिया का उलंघन पहवी ज्यो मैं दिवस ने
किया असातना विषैं
अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि
अतिचार किया तेहनो हे क्षमा श्रमण निवर्तूं छूं
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥इति ॥
निन्दूं छूं गरहूं छूं आतमां थी वोसराऊं छूं।

॥ ज्ञानातिचार आलोवा की पाटी ॥

आगमे तिविहे पन्नते तंजहा सुत्तागमे
आगम तीन प्रकारे प्ररूप्या ते कहै छै सूत्र आगम
अत्थागमे तदुभयागमे ॥ एहवा श्री ज्ञान ने
अर्थ आगम सूत्र अर्थ दोनूं आगम
विषै अतिचार दोष लाग्या होय ते आलोऊं—
जंवाइधं १ वच्चामेलियं २ हिनक्खरं ३ अच्चक्खरं ४ पयहीणं ५
जे कोई वचन मिलाया हीण अक्षर अधिक पदहीण ५
अधिक १ होय २ कह्या ३ अक्षर ४
विणयहीणं ६ जोगहीणं ७ घोसहीणं ८ सुट्ठु दिन्नं
विनय हीण ते संयोग हीण ७ उच्चारण श्रेष्ठ सूत्र ते दीनो
अविनय ६ हीण ८ अवनीत नें ६

दुट्ठुपडिच्छियं १० अकालेकऊ सिज्झाए ११ काले ण
खोटा सूत्र की इच्छा करी १० बिनाकाले सिझाय करी ११ सिझायनां

कऊ सिज्झाऊ १२ असिज्झाये सिज्झाए १३ सिज्झाए
कालमें सिझाय न करी १२ असिज्झाय में सिज्झाय करी १३ सिज्झाय में सिज्झाय न करी १४

न सिज्झाय १४ भणतां गुणतां चितारतां चोखतां ज्ञानकी ज्ञानवन्त की आसातना करी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ सम्यक्त्व के अतिचार ॥

दंसण श्रीसमकित अर्हंतो महद्देवो जावज्जीवं
सुध सरधना ते समकित दर्शन ते अरिहन्त मांहरे देव जाव जीव लग

सुसाहुणो गुरुणो जिणपन्नतं तत्तं इयसम्मत्तं
शुद्ध साधू गुरू जिन प्ररूप्यो ते धर्म तत्वं यह समकित

मए गहियं
मैं ग्रहण कियो।

एहवा समकित ने विषै जे कोई अतिचार लाग्या होय ते आलोऊं, जिन वचन सांचा न सरध्या होय १, न प्रतीत्या होय २, न रुच्या होय ३, पर पाखण्डी की प्रशंसा करी होय ४, संस्तवो (परिचय) कीधो होय ५, समकित रूपी रत्न ऊपरे मित्थ्यात्व रूप रज मैल खेह लागी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

॥ अथ बारह व्रत ॥

पढमे अणुव्वए थूलाउ पाणाइवायाउ
प्रथम देशथी व्रत मोट को प्राणातिपात को
वेरमणं व्रत पांच बोलै करी ओलखीजे, द्रव्यथकी
निवर्त्तवो।

त्रस जीव बेइन्द्री तेइन्द्री चउरिन्द्री पंचेन्द्री विन अपराधे आकुटी हणवानी विधि करी ने सउपयोग हणूं नहीं हणाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा। द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, खेत्रथकी सर्व खेत्रां मांहि काल थकी जाव जीवलग, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुण थकी संबर निर्जरा एहवा म्हांरे पहला व्रत ने विषै जे कोई अतिचार दोष लागो होय ते आलोऊं।

त्रस जीव ने गाढ़े बंधन बांध्या होय १ गाढा घाव घाल्या होय २ चामड़ी छेदन किया होय ३ अति भार घाल्यो होय ४ भात पाणीनां बिच्छोहा कीनां होय ५। तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

बीए अणुव्वए थुलाउ मूसावायाउ विरमणं
बीजो अणुव्रत स्थूल थी झूंठ बोलवा निवतवो
पांचे बोले करी ओलखीजे द्रव्य थकी कनालिक १
कन्या के तांई झूंठ

गोवालिक २	भौमालिक ४	थापण मोसो ४
गाय भैंसादि	भूमि निमित्त	लेकर नटयों ते
कारण झूंठ	झूंठ	अमानत में खयानत

कूडीसाख ५
झूंठी साक्षी

इत्यादि मोटको झूंठ मर्यादा उपरान्त बोलूं नहीं बोलाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्य थकी एहिज द्रव्य खेत्र थकी सर्व खेत्रां में, काल थकी जाव जीव लगे, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संबर निर्जरा, एहवा म्हारे दूजा व्रत विषै अतिचार दोष लागा होय ते आलोऊं।

किणी प्रते कूड़ो आल दियो होय १
रहस्य छानी बात प्रकट करी होय २
स्त्री पुरुष ना मरम प्रकाश कीधा होय ३
मृषा उपदेश दीधो होय ४

कूड़ो लेख लिख्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं तइये अणुव्वए थूलाउ अदिन्ना दाणाउ विरमणं पांचे बोले करी ओलखीजे द्रव्य थकी खेत्र खणी। गांठ खोली तालो पडकुञ्ची करी बाट पाड़ी पड़ी वस्तु मोटकी सधणियां सहित जाणी इत्यादि मोटकी चोरी मर्यादा उपरान्त करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा वायसा

कायसा, द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, खेत्र थकी सर्व खेत्रां में, काल थकी जाव जीव लगे, भाव थकी राग द्वेष, रहित, उपयोग सहित, गुण थकी संबर निर्जरा एहवा म्हारै तीजा व्रत में ज्यो कोई अतिचार लागो होय ते आलोऊं।

चोर की चुराई वस्तु लीधी होय ५ चोर ने सहाय दीधो होय २ राज विरुद्ध व्योपार कीधो होय ३ कूड़ा तोला कूड़ा मापा कीधा होय ४ वस्तु में भेल सभेल कीधो होय ५ सखरी दिखाय नखरी आपी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

॥ इति ॥

चउत्थे	अणुव्वए	थूलाउ	मेहुणावो	विरमणं
चौथो	अणुव्रत	स्थूलथकी	मैथुनथकी	निवर्त्तवो

पांच बोलां करी ओलखीजे द्रव्य थकी तो देवता देवांगनां सम्बन्धिया मैथुन सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं तिर्यंच तिर्यंचणी सम्बन्धी मैथुन सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं, मनुष्य सम्बन्धी मैथुन सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं, मनुष्यणी सम्बन्धी मैथुन सेवा की मर्यादा कीधी छै तिण उपरान्त सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, खेत्र थकी सर्व खेत्रां में, काल थकी जावज्जीव, भाव थकी राग द्वेष रहित

उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे चौथा व्रत में ज्यो अतिचार दोष लागो होय ते आलोऊं।

थोड़ा कालकी राखी परिग्रहीसूं गमन कीधो होय १ अपरिगृहीता सूं गमन कीधो होय २ अनेक क्रीड़ा कीधी होय ३ पराया नाता विवाह जोड्या होय ४ काम भोग तीव्र अभिलाषा से सेया होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

॥ इति ॥

पंचमें अणुव्वए थूलाउ परिग्गहाउ विरमणं
पंचमूं अणुव्रत स्थूलथकी· परिग्रहते धनको ·निवर्त्तवो
पांचां बोलां करी ओलखीजे द्रव्यथकी खेत्तु
उघाड़ी जमीन
वत्थु यथा प्रमाण, हिरण सुवन्न यथा प्रमाण
ढकी जमीन जेह प्रमाण कीधो, चांदी सोनाका जे प्रमाण कीधो
धन धान यथा प्रमाण द्विपद चउप्पद यथा प्रमाण।
द्रव्य नाज जेह प्रमाण कीधो दासदासी हाथी घोड़ादिक चौपद
जे प्रमाण कीधो।
कुम्भी धातु यथा प्रमाण,
तांबो पीतल लोहादिनो जेह प्रमाण कीधो,

द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, खेत्र थकी सर्व खेत्रों में, काल थकी जावज्जीव लगे, भाव थकी राग द्वेष रहित

उपयोग सहित, गुण थकी संबर निर्जरा एहवा म्हारा पांचवां अणु व्रत में ज्यो अतिचार लागा होय ते आलोऊं, खेत्तु वत्थुरो प्रमाण अतिक्रम्यु होय १, हिरण्य सुवर्ण रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय २, धन धान्य रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय ३, द्विपद चउपद रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय ४, कुम्भी धातु रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय ५, तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।

॥ इति ॥

छट्ठो दिशि व्रत पांचां बोला ओलखिजे द्रव्य थकी तो ऊंची दिशारो यथा प्रमाण, नीची दिशा रो यथा प्रमाण तिरछी दिशा रो यथा प्रमाण, यां दिशा रो प्रमाण कीधो तेह उपरान्त जाय कर पंच आस्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्य थकी तो एहिज द्रव्य, खेत्र थी सर्व खेत्रां में, काल थकी जाव जीव लग, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संबर निर्जरा एहवा मांहरे छट्ठा व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे तो आलोऊं।

ऊंची दिशा रो प्रमाण अतिक्रम्यो होय १
नीची दिशा रो प्रमाण अतिक्रम्यो होय २
तिरछी दिशा रो प्रमाण अतिक्रम्यो होय ३
एक दिशा घटाई होय एक दिशा बधाई होय ४

पंथ में सन्देह सहित अधिक चाल्यो चलायो होय ५
तस्स मिच्छामि दुक्कडं

॥ इति ॥

सातमूं उपभोग परिभोग व्रत पांचां बोलां ओलखिजे, द्रव्य थकी छब्बीस बोलांकी मर्याद ते कहै छे

उलणिया विहं १	दंतण विहं २	फल विहं ३
अङ्ग पूछणादि विधि	दाँतण विधि	फल विधि
अभिंगण विहं ४	उवट्टण विहं ५	मंजण विहं ६
तैलभिंगादि विधि ते तेल मालिस	उवटणादि की विधि	स्नान की विधि
वत्थ विहं ७	बिलेवण विहं ८	पुप्फ विहं ९
वस्त्र विधि	विलेपण विधि	पुष्प विधि
आभरण विहं १०	धूप विहं ११	पेज विहं १२
पहरवाका गहणाँ विधि	धूप की विधि	दूध आदि पीवा की विधि
भक्खण विहं १३	उदन विहं १४	सूप विहं १५
सूखड़ी आदि भक्षण की विधि	चावल की विधि	दाल की विधि
बिगय विहं १६	साग विहं १७	महुर विहं १८
बिगय की विधि	साग की विधि	मधुर की विधि
जीमण विहं १९	पाणी विहं २०	मुखवास विहं २१
जीमण की विधि	पाणी की विधि	मुखवास ताँबूलादि की विधि

बाहण विहं २२ सयण विहं २३ पन्नी विहं २४
गाड़ी प्रमुख की बैठवा सोवा की विधि पगरखी की
विधि पाटा कुरसी बिछौनादि पर विधि

सचित्त विहं २५ द्रव्य विहं २६
सचित की विधि द्रव्य की विधि

ए छाबीस बोलां की मर्याद करी, जिण उपरान्त भोगऊं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्य थकी एहिज द्रव्य खेत्र थकी सर्व खेत्रां में काल थकी जाव जीव लग, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुण थकी संवर निर्जरा. एहवा मांहरा सातमां व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोऊं ॥

पच्क्खाणां उपरान्त सचित रो आहार कीनो होय ॥१॥
पच्क्खाणां उपरान्त द्रव्य रो आहार कीनो होय ॥२॥
पच्क्खाणां उपरान्त गहिणां अधिक पहन्या होय ॥३॥
पच्क्खाणां उपरान्त कपड़ा अधिक पहन्या होय ॥४॥
पच्क्खाणां उपरान्त उपभोग परिभोग अधिका भोग्या होय। तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

पंदरह करमां दान जाणवा जोग छै पण आदरवा जोग नहीं ते कहै छै।

इंगालकम्मे १ वणकम्मे २ साड़ी कम्मे ३
अग्निकारी लुहा- बन कर्म ते बनमें घास सकट कर्म ते
रादि कर्म दरखतादि काटवो गाड़ी प्रमुखनो कर्म

भाड़ी कम्मे ४ फोड़ी कम्मे ५ दंतवाणिज्जे ६
भाड़े ते किराया लूपादि कर्म दांतको विणज
देवाका कर्म ते नारेल सुपारी ते व्योपार
पत्थर आदि फोड़वो

लक्खवाणिज्जे ७ रस वाणिज्जे ८ केस वाणिज्जे ९
लाखको वाणिज्य रस व्यापार ते बाल चमरादि
घी, तेल सहतादि व्योपार

विषवाणिज्जे १० जन्तु पिलण्या कम्मे ११
जहरको व्यापार कल घाणी प्रमुख कर्म

निलच्छणिया कम्मे १२ दवगिदावणियां कम्मे १३
कसी वधियादि कर्म दावानलदेवो कर्म ते
ज्यानवरोंने बाधी कर्म वन प्रमुखमें लायलगायवो

सर द्रह तालाव सोसणियां कम्मे १४ असई
सरोवर द्रह तालाव आदिने सोषावो ते कर्म असती ते असंजती जननें
पोषणिया कम्मे १५ इति ॥
पोषवा नों कर्म

ए पंदरह कर्मादान आगार उपरान्त सेया सेवाया होय तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ॥ इति ॥

आठमूं अनर्थ दंड विरमण व्रत पांच बोलां ओलखिजे,
द्रव्य थकी अवज्भाणचरियं १ पम्मायचरियं २
भूंडा ध्यानno आचरवो प्रमाद करवो
हंसपयाणं ३ पाव कम्मोवएसं ४
प्राण हिसा पाप कर्म को उपदेश

ए च्यार प्रकारे अनरथ दंड आठ प्रकार का आगार उपरान्त सेऊं नहीं ते कहै छै।

आएहिउवा १	नाएहिउवा २	आघारिहिउवा ३
आपणें हित	न्यातीला के हित	घर के हित
परिवारे हिउवा ४	मित्तहिउवा ५	नागहिउवा ६
परिवार के हित	मित्र के हित	नाग देवता निमित्त
भूत हिउवा ७	जक्ख हिउवा ८	
भूत देवता निमित्त	जक्ष देवता निमित्त	

द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, खेत्र थकी सर्व खेत्रां में, काल थकी जाव जीव लग, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारां आठमां व्रत के विषै जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोऊं।

कन्दर्प्पनी कथा कीधी होय १			भंड कुचेष्टा कीधी होय २		
काम क्रीड़ाकी कथा को करवो			भांडनीपरै कुचेष्टा करि होय		
मुखसे	अरि	वचन	बोल्या	होय ३	अधिकरण
मुखसे	खोटा	वचन	बोल्या	होय	नाता जोड़ कर
जोड़ा मुकाया होय ४			उपभोग		परिभोग
तुडाया तथा स्त्री भरतार नो विरह कियो			एक वार भोग में आवै ते		वार वार भोग में आवै ते

अधिका भोग्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं

मर्यादा उपरांन्त अधिक भोग्या होय ते तो मिच्छामि दुक्कड़ं

॥ इति ॥

नवमो सामायक व्रत पांचां बोला ओलखिजें

करेमि भन्ते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि

करूं छूं मैं हे भगवन्त सामायक सावद्य जोग पच्चखाण

जाव नियमं (मुहूर्त्त एक) पज्जुवासामि दुविहेणं

यावत नियम एक मुहूर्त्त ते दोय घड़ी सेऊं छूं दोय कर्ण से

तिविहेणं नकरेमि नकारवेमि मनसा वायसा-

तीन योगसे, सावद्य नहीं करूं नहीं कराऊं मनसे वचन से

कायसा तस्सभंते पड़िक्कमामि निन्दामि गरिहामि

शरीर से तिणसूं हे भगवान पडिकमूं छूं निन्दू छूं गर्हणा ते निषेधूं छूं

अप्पाणं वोसरामि ॥

पाप से आत्मां ने वोसराऊं छूं

द्रव्य थकी सामायक द्रव्य, क्षेत्र थकी सर्व क्षेत्रां में काल थकी एक मुहूर्त्त तांई, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा नवमा व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोऊं ।

॥ इति ॥

मन वचन कायका माठा जोग प्रवर्तीया होय १ पाड़वा ध्यान प्रवर्तीया होय २ सामायक में समता नहीं करी हुवे ३ अण पूगी पारी होय ४ पारवो विसार्‌यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं ॥

दशमो देशावगासो व्रत पांचां बोलां ओलखिजे द्रव्य थकी दिन प्रते प्रभात थी प्रारंभीनें पूर्वादि छव दिसिरी मर्याद करी तिण उपरान्त जाई पांच आस्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं तथा जेतली भूमिका आगार राख्या तिण में द्रव्यादिक री मर्याद करी जिस उपरान्त सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं मनसा बायसा कायसा द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, खेत्र थी सर्व खेत्रां में, काल थकी जेतलो काल राख्यो, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संबर निर्जरा, एहवा म्हारै दशमा व्रतके विषे जे कोई अतिचार दोष लागो ते आलोऊं ।

नवीं भूमिका बारली वस्तु अणाई होवे १ मुकलाई होवे २ शब्द करी आपो जणायो होय ३ रूप करी आपो जणायो होय ४ पुद्गल न्हांखी आपो जणायो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं । इति

इग्यारमूं पौषध व्रत पांचां बोलां करि ओलखिजे द्रव्य थकी ।

असण पाण खादिमं खादिमं नां पच्चक्खाण
आहार पाणी मेवादिक पान सुपारीदिक को पचखाण

अबम्भना पच्चक्खाण उमकमणी सुवन्नना पच्चक्खाण
मैथुन सेवाका त्याग बोसराया हुआ रत्न सोना का त्याग

माला वणगं विलेवनं ना पच्चक्खाण
पुष्पमाला गुलाल रंगादि चन्दनादिनो विलेपन का त्याग

सस्थमुसलादि सावज्झ जोगरा पच्चक्खाण
शस्त्र मुसलादि सावद्य जोगका पचखाण

इत्यादि पच्चक्खाण करी ने कने द्रव्य राख्या जिणा उपरान्त पंच आस्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्य थी एहिज द्रव्य, क्षेत्र थी सर्व खेत्रां में, काल थकी (दिवस) अहो रात्रि प्रमाण, भाव थकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे इग्यारमा व्रतके विषे जे कोई अतिचार दोष लागो होवे ते आलोऊं।

सेज्जा संथारो अपड़िलेह्यो होय दुप्पडिलेह्या
सोवाकी जगां विस्तर पड़िलेहा नहीं होय आछीतरह नहीं

होय १ अप्रमार्ज्या होय दुप्रमार्ज्या होय २
पड़लेहना करी नहीं प्रमार्ज्या आछीतरह नहीं प्रमार्ज्या

उच्चारपासवण भूमिका अपडिलेही होय दुपडि
छोटी बड़ी नितकी जमीन पडिलेही न होय अथवा

लेही होय ३ अप्रमार्जी होय दुप्रमार्जी होय ४

आछी तरें नहीं पूंज्या नहीं तथा रीत प्रमाणे नहीं पूंज्या होय पड़िलेही होय

पोषह में निन्दा विकथा कषाय प्रमाद करी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

बारमूं अतिथि संविभाग व्रत पांचां बोलां ओलखिजे द्रव्य थकी ।

समणे निगंथे फासू एषणीज्जेणं असणं १
श्रमण निर्ग्रंथ ने प्रासूक निर्दोष आहार
अचित

पाणं २ खादिमं ३ सादिमं ४ वत्थ ५ पढग्गह ६
पाणी मेवो लोंग सुपारी आदि वस्त्र पात्रो

कंबलं ७ पाय पुच्छणं ८ पाडियारा ९ पीढ
कांबलो पगपूछणों जाचीने पाछा पाट
सोलावे ते अमानत

फलग १० सेज्या ११ संथारो १२ ओषद १३
बाजोटादि जमीन जग्यां तृणादिक १ दवाई

भेषद १४ पडिलाभमाणे विहरामि ॥
चूर्णादि प्रतिलाभतोथको विचरूं

इत्यादिक चौदह प्रकारनूं दान शुद्ध साधुनें देऊं देवाऊं देवता प्रते भलो जाणूं मनसा वायसा कायसा, द्रव्य थकी एहिज कलपतो द्रव्य, खेत्र थकी कलपै जिण खेत्रां में, काल थकी कलपै जिण काल में, भाव थकी राग

द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारा बारमां व्रत के विषैं जे कोई अतिचार दोष लागो होवे ते आलोऊं सूजती वस्तु सचित्त पर मेली होय १ सचित्त थी ढांकी होय २ काल अतिक्रम्यो होय ३ आपणी वस्तु पारकी पारकी वस्तु आपणी कीधी होय ४ भाणैं बैठ साधू साध्वियां की भावनां नहीं भाई होय तेहनूं मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

॥ अथ संलेखणा की पाटो ॥

इह लोगा संसह प्पउगो १ परलोगासंसह
यह लोककी जशकी तथा द्रव्यादि की इच्छा — परलोक में सुखकी

प्पउगो २ जीविया संसह प्पउगो ३ मरणा संसह
वांछा — जीवित की इच्छा — मरण की

प्पउगो ४ काम भोगा संसह प्पउगो ५ मा मुज्झ
इच्छा — काम भोग की इच्छा — उपरोक्त ए विचार मुझनें

हुज्ज मरणन्ते ।
मर्णान्त तक मत होज्यो । ॥ इति ॥

अठारे पाप :—

प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १०

द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैशुन्य १४ पर परिवाद १५ रति अरति १६ माया मोसो १७ मिथ्या दर्शन सल्य १८ ॥ इति ॥

तस्स सव्वस्स की पाटी ।

तस्स सव्वस्स देवसी अस्स आयारस्स दुच्चिंतियं दुब्भासियं
ते सर्वं अतिचार खोटी चिन्तवना खोटी
दुच्चिट्ठियं आलोयं तं पडिक्कमामि
भाषा खोटी चेष्टा काया की आलोऊं तेह पडिक्कमण में
निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥
निन्दू ग्रहणा करूं पाप कर्म थी आतमांने बोसराऊं

॥ इति ॥

तस्स धम्मस्स को पाटो ।

तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिओमि
तेह धर्म केवलीपरूप्यो तेहने विषे उठ्यो छूं
आराहणाए विरओमि विराहणाए सव्वेतिविहेणं
अराधना निमित्त निवर्तू छूं विराधनाथी अतिचार सर्वं
विविध करी
पडिक्कन्तो, वंदामि जिन चउव्वीसं
पडिकमूं छूं, वांदूं छूं जिन राजने चौबीसनें
आलोयना करिके

॥ इति ॥

॥ अथ मंगलीक की पाटी ॥

चतारि मङ्गलं अरिहन्ता मङ्गलं सिद्धा मङ्गलं
च्यार मंगलीक अरिहन्त मङ्गल छै सिद्ध मङ्गलकारी छै
साहू मङ्गलं केवली पन्नत्तो धम्मो मङ्गलं ॥
साधू मंगलीक केवली प्ररूप्यो धर्म ते मंगलीक
चत्तारिलोगुत्तमा अरिहन्तालोगुत्तमा
ए च्यार लोक में उत्तम जाणवा अरिहन्त लोक में उत्तम
सिद्धा लोगुत्तमा साहूलोगुत्तमा केवली
सिद्ध लोकमें उत्तम साधू लोक में उत्तम केवली
पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमा ॥ चत्तारि सरणं
प्ररूप्यो धर्म ते लोकमें उत्तम च्यार शरणा
पवज्जामि अरिहन्ता सरणं पवज्जामि सिद्धा
ग्रहण करूं अरिहन्तों का शरणा ग्रहण करता हूं सिद्धांका
सरणं पवज्जामि साहू सरणं पवज्जामि केवली
शरणा लेता हूं साधूका शरण है केवली
पन्नत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि ॥ च्यारों शरणा
प्ररूपित धर्मका शरण ग्रहण करता हूं
ए सगा अवर न सगो कोय जे भवप्राणी आदरै अक्षय
अमर पद होय ।

॥ देवसी प्रायश्चित की पाटी ॥

देवसी प्रायश्चित विसोद्धनार्थं करेमि काउस्सगं ।

॥ इति प्रतिक्रमणं ॥

॥ अथ पडिकमणो करने की विधि ॥

प्रथम चौबीसत्थो करणो जिणा में

इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी। तस्सोत्तरी की पाटी २। ध्यान में इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी मन में चितारकर एक नवकार गुणनों ३॥ लोगस्सउज्जोगरे की पाटी ३। नमोत्थुणं की पाटी ४।

१ प्रथम आवसग्ग सामाइक में।

१ आवस्सई इच्छामिणं भन्ते।

२ नवकार एक।

३ करेमि भंते सामाइयं।

४ इच्छामिठामि काउस्सग्गं।

५ तस्सोत्तरी की पाटी।

ध्यानमें ९९ निन्नाणवे अतिचार—

आगमें तिविहे पन्नन्ते की पाटी तिणमें ज्ञान का चवदह अतिचार।

दंसण श्रीसमत्ते की पाटी तिण में समकित का ५ अतिचार।

बारे व्रतांका अतिचार ६० तथा १५ कर्मादान। इह लोगा संसह प्पउगे की पाटी। (तिण में) अतिचार ५ सलेखणांका। यह सर्व ९९ अतिचार। अठारह पाप स्थानक कहणा।

इच्छामि ठामि आलोऊं जो में देवसी अइयारोकउ
ए पाटी कहणी ।

एक नवकार कह पारलेणो ।

॥ इति प्रथम आवसग्ग समाप्त ॥

॥ दूसरा आवसग्गकी आज्ञा ॥

एक लोगस्स की पाटी ।

॥ इति दूजो आवस्सग समाप्त ॥

॥ तोजा आवसग्ग की आज्ञा ॥

दोय खमा समणां कहणा

॥ इति तीजा आवसग्ग समाप्त ॥

॥ चौथा आवसग्ग की आज्ञा ॥

ऊभाथकां ध्यानमें कह्या सो प्रगट कहणा
८ आठ पाटी बैठा थकां कहणी जिणां की विगत ।

१ तस्स सव्वस की पाटी

२ एक नवकार ।

३ करेमि भंते सामाइयं की पाटी ।

४ चत्तारि मंगलं की पाटी ।

५ इच्छामि ठामि पडिकमेउ जो मैं देवस्सी ।

६ इच्छामि पड़िकमेउ की पाटी ।

७ आगमें तिबिहे की पाटी ।

८ दंसण श्री समत्ते की पाटी ।

ए आठ पाटी कहकर बारह व्रत अतिचार सहित कहणा

पांच संलेखणा का अतिचार कहणा ।

अठारे पाप स्थानक कहणा ।

इच्छामि ठामि पड़िकमेउ जो मैं देवसी की पाटी कहणी ।

तस्स धम्मस्स केवली पन्नत्तस्स की पाटी ।

दोय खमासमणां कहणां ।

पांच पदां की वन्दना कहणी ।

सात लाख पृथ्वीकाय सातलाख अप्पकाय इत्यादि
खमत खामणां की पाटी ।

॥ इति चौथो आवसग्ग समाप्त ॥

॥ पंचमा आवसग्ग की आज्ञा लेई कहे ॥

१ देवसी प्रायच्छित बिसोद्धनार्थं करेमि काउसग्गं।

२ एक नवकार ।

३ करेमि भन्ते सामाइयं की पाटी ।

४ इच्छामि ठामि काउसग्गं की पाटी ।

५ तस्सोत्तरी की पाटी ।

ध्यान में लोगस्स कहणां की परम्पराय रीति—

प्रभातें तथा सांझ वक्त ४ च्यार लोगस्स को ध्यान

पक्खी ने १२ बारै लोगस्स को ध्यान।

चौमासी पक्खी ने २० लोगस्स को ध्यान।

छमछरी ने चालीस लोगस्स को ध्यान।

ध्यान पारी लोगस्स की पाटी प्रगट कहणी।

२ दोय खमासमणां कहणा।

॥ इति पंचमूं आवसग्ग समात ॥

छठ्ठा आवसग्ग की आज्ञा लेई कहणां तेहनी विगत।

गयेकालनूं पडिक्कमणो, वर्त्तमान कालमें समता, आगामियां कालका पचखाण यथाशक्ति करणा।

सामाई १ चौवीस्थो २ वंदना ३ पडिक्कमणो ४ काउसग्ग ५ पचखाण ६ यां छऊं आवसग्गां में ऊंची नीची हींणी अधिक पाटी कही होय तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।

दोय नमोत्थुणं कहणां जिण में पहिला में तो सिद्ध गई नाम धेइयं ठाणं संपताणं नमो जिणाणं।

दूजा नमोत्थुणं में सिद्ध गई नाम धेइयं ठाणं संपं- वेकामी नमो जिणाणं।

॥ इति ॥

अथ बासठिया को थोकड़ो।

इकबीस द्वार का १०२ बोल।

जीव गई इन्द्रिय काए जोगे वेए कसाय लेस्साय॥
सम्मत णाण दंसण संजय उवओग आहारे ॥१॥
भासग परित्त पज्जत्त सुहुम सण्णी भवित्थि चरिमेय॥

(१) जीव १, (२) गति ८, (३) इन्द्रीय ७, (४) काय ८, (५) योग ५, (६) वेद ५, (७) कषाय ६, (८) लेश्या ८, (९) सम्यक्त्व ८, (१०) ज्ञान १०, (११) दर्शन ४, (१२) संयति ९, (१३) उपयोग २, (१४) आहार २, (१५) भाषक २, (१६) परित ३, (१७) पर्याप्ता ३, (१८) सूक्ष्म ३, (१९) सन्नी ३, (२०) भवि ३, (२१) चर्म २,।

इण थोकड़े ने बासठियो कांई कारण कह्यो ते लिखे छे—१४ जीव, १४ गुणस्थान, १५ योग १२ उपयोग, ६ लेश्या, १ अल्पाबोहत सर्व मिल बासठ हुवा इण कारण इण ने बासठियो कह्यो, तिण पीछे इण थोकड़े माहें बोल बढ़ाया छे।

भवि और चर्म के बीच में अस्तिकायरो द्वार छे ते द्वार इन थोकड़ा माहें दियो नहीं।

अंक	बोल	जीवना भेद १४	गुण स्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
१-१	सर्व जीव में	१४	१४	१५	१२	६
२-१	नारकी मे	२ (१३, १४)	४ प्रथम	११ औदारिक, औदारिक मिश्र, आहारिक, आहारिक मिश्र टल्या	९ मन पर्यव, केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या	३ प्रथम
२	तिर्यंच में	१४	५ प्रथम	१३ आहारिक आहारिक मिश्र टल्या	९ ऊपर प्रमाणे	६
३	तिर्यंचणी में	२ (१३, १४)	५ प्रथम	१३ ऊपर प्रमाणे	९ ऊपर प्रमाणे	६
४	मनुष्य में	२ (११, १३, १४)	१४	१५	१२	६
५	मनुष्यणीमें	२ (१३, १४)	१४	१३ आहारिक, आहारिक मिश्र टल्या	१२	६
६	देवता में	२ १३, १४	४ प्रथम	११ औदारिक, औदारिक मिश्र, आहारिक, आहारिक मिश्र टल्या	९ मन पर्यव, केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या	६
७	देवांगणा में	२ (१३, १४	४ प्रथम	११ ऊपर प्रमाणे	९ ऊपर प्रमाणे	४ प्रथम
८	सिद्धां में	०	०	०	२ केवलज्ञान, केवल दर्शन,	०

भाव	आत्मा	लब्धि	वीर्य	दृष्टि	भवि	दण्डक	पक्ष	अल्पा
५	८	५	३	३	अभवि २	२४	२	बहुत १
५	८	५	३	३	२	२४	२	
५	७ चारित्र टली	५	१ बाल,	३	२	१ प्रथम	२	३ असंख्यात गुणी
५	७ चारित्र टली	५	२ पंडित टली	३	२	६ पांच थावर, ३ विकलेन्द्री बीसमों	२	८ अनन्त गुणी
५	७ चारित्र टली	५	२ पंडित टली	३	२	१ बीसमों	२	४ असं० गुणी
५	८	५	३	३	२	१ इकवीसमों	२	२ असंख्यात गुणी
५	८	५	३	३	२	१ इकवीसमो	२	१ सर्व सूं थोड़ी
५	७ चारित्र टली	५	१ बाल	३	२	१३ दश भवनपतिका (२सूं ११तांई) २२, २३, २४	२	५ असंख्यात गुणी
५	७ चारित्र टली	५	१ बाल	३	२	१३ ऊपर प्रमाणे	२	६ संख्यात गुणी
२ क्षायक परिणा०	४ द्रव्य, उपयोग, ज्ञान, दर्शन	०	०	१ समदृष्टि	०	०	०	७ अनन्त गुणी

अंक	बोल	जीवना भेद १४	गुण स्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
३-१	सइ-न्द्रया मे	१४	१२ प्रथम	१५	१०केवलज्ञान, केवल दर्शनटल्या।	६
२	एकेन्द्री में	४ प्रथम	१ प्रथम	५ औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय वैक्रियमिश्र, कार्मण	३ मति, श्रुति अज्ञान अचक्षु दर्शन	४ प्रथम
३	बेइन्द्री मे	२ (५, ६)	२ (१, २)	४ औदारिक, औदारिक मिश्र, व्यवहार भाषा, कार्मण	५ मति, श्रुति ज्ञान, मति, श्रुति अज्ञान, अचक्षु दर्शन	३ प्रथम
४	तेइन्द्री में	२ (७, ८)	२ (१, २)	४ ऊपर प्रमाणे	५ ऊपर प्रमाणे	३ प्रथम
५	चौइन्द्री में	२ (९, १०)	२ (१, २)	४ ऊपर प्रमाणे	६ मति, श्रुति ज्ञान, मति श्रुति अज्ञान, चक्षु, अचक्षु दर्शन	३ प्रथम
६	पंचेन्द्री में	४ छेहला	१२ प्रथम	१५	१०केवलज्ञान, केवल दर्शन टल्या	६
७	अनेन्द्री में	१ चउदमो	२ (१३, १४)	७ सत्यमन, व्यवहार मन, सत्य भाषा, व्यवहार भाषा औदारिक, औदारिक मिश्र कार्मण	२ केवलज्ञान, केवल दर्शन	१ शुक्ल
४-१	सकाया मे	१४	१४	१५	१२	६
२	पृथ्वी काया में	४ प्रथम	१ प्रथम	३ औदारिक, औदारिक मिश्र कार्मण	३ मति, श्रुति अज्ञान, अचक्षु दर्शन	४ प्रथम

भाव ५	आत्मा ८	लब्धि ५	वीर्य ३	दृष्टि ३	भवि-अभवि २	दण्डक २४	पक्ष २	अल्पा बहुत १
५	८	५	३	३	२	२४	२	७ विशेषाधिक
३ उदय क्षयोपशम परिणामिक	६, ज्ञान चारित्र टली	५	१ बाल	१ मिथ्या	२	५ थावर का १२, १३, १४, १५, १६	२	६ अनन्त गुणा
३ ऊपर प्रमाणे	७, चारित्र टली	५	१ बाल	२ सम, मिथ्या	२	१ सतरमों	२	४ विशेषाधिक
३ ऊपर प्रमाणे	७ चारित्र टली	५	१ बाल	२ सम, मिथ्या	२	१ अठारमो	२	३ विशेषाधिक
३ ऊपर प्रमाणे	७ चारित्र टली	५	१ बाल	२ सम, मिथ्या	२	१ उगणीसमों	२	२ विशेषाधिक
५	८	५	३	३	२	१६ पांच थावर तीन विकलेन्द्रो का टल्या	२	१ सर्व सूं थोड़ा
३ उदय क्षायक, परिणामिक	७ कषाय टली	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकवीसमों	१ शुक्ल	८ अनन्त गुणा
५	८	५	३	३	२	२४	२	८ विशेषाधिक
३ उदय क्षयोपशम, परिणामिक	६, ज्ञान चारित्र टली	५	१ बाल,	१ मिथ्या	२	१ बारमों	२	३ विशेषाधिक

अंक	बोल	जीवना भेद १४	गुणस्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
३	अप्पकायामे	४ प्रथम	१ प्रथम	३ औदारिक, औदारिक मिश्र, कार्मण	३ मति, श्रुति अज्ञान अचक्षु दर्शन	४ प्रथम
४	तेउकायामे	४ प्रथम	१ प्रथम	ऊपर प्रमाण	३ ऊपर प्रमाणे	३ प्रथम
५	वायुकायामें	४ प्रथम	१ प्रथम	५ औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, कार्मण	३ ऊपर प्रमाणे	३ प्रथम
६	वनस्पति कायामें	४ प्रथम	१ प्रथम	३ औदारिक, औदारिक मिश्र, कार्मण	३ ऊपर प्रमाणे	४ प्रथम
७	त्रसकायामें	१० छेहला	१४	१५	१२	६
८	अकायामें	०	०	०	२ केवल ज्ञान, केवल दर्शन	०
५-१	संयोगीमें	१४	१३ प्रथम	१५	१२	६
२	मनयोगीमें	१ चउदमो	१३ प्रथम	१४ कार्मण टल्यो	१२	६
३	वचनयोगीमें	५ त्रसका पर्याप्ता	१३ प्रथम	१४ कार्मण टल्यो	१२	६
४	काया योगी में	१४	१३ प्रथम	१५	१२	६

भाव ५	आत्मा ८	लब्धि ५	वीर्य ३	दृष्टि ३	भवि अभवि २	दण्डक २४	पक्ष २	अल्पा बहुत १
३ उदय, क्षयोप-शम परि-णामिक	६ ज्ञान चारित्र टली	५	१ बाल	१ मिथ्या	२	१ तेरमों	२	४ विशे-षाधिक
३ ऊपर प्रमाणे	६ ऊपर प्रमाणे	५	१ बाल	१ मिथ्या	२	१ चउदमों	२	२ असं० गुणो
३ ऊपर प्रमाणे	६ ऊपर प्रमाणे	५	१ बाल	१ मिथ्या	२	१ पन्द्रहमों	२	५ विशे-षाधिक
३ ऊपर प्रमाणे	६ ऊपर प्रमाणे	५	१ बाल	१ मिथ्या	२	१ सोलमों	२	७ अनन्त गुणो
५	८	५	३	३	२	१९ पांच थावर, का टल्या	२	१ सर्व सूं थोड़ी.
२ क्षायक, परिणा-मिक	४ द्रव्य, उपयोग, ज्ञान, दर्शन	०	०	१ सम,	०	०	०	६ अनन्त गुणो
५	८	५	३	३	२	२४	२	५ विशे-षाधिक
५	८	५	३	३	२	१६ पाच थावर तीन विकलेन्द्री का टल्या	२	१ सर्व सूं थोड़ी
५	८	५	३	३	२	१९ पांच थावर का टल्या	२	२ असं० गुणी
५	८	५	३	३	२	२४	२	४ अनन्त गुणी

अंक	बोल	जीवना भेद १४	गुणस्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
५	अयोगी में	१ चउदमों	१ चउदमों	०	२ केवल ज्ञान, केवल दर्शन	०
६-१	सवेदी में	१४	९ प्रथम	१५	१० केवलज्ञान, केवल दर्शन टल्या।	६
२	स्त्री वेदी में	२ छेहला	९ प्रथम	१३ आहारिक ने आहारिक मिश्र टल्या	१० ऊपर प्रमाणे	६
३	पुरुषवेदी मे	२ छेहला	९ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	६
४	नपुंसक वेदी में	१४	९ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	६
५	अवेदी में	१ चउदमों	६ छेहला	७ अनेन्द्रीय जिम	९ तीन अज्ञान टल्या	१ शुक्ल
७-१	सकषायीमें	१४	१० प्रथम	१५	१० केवलज्ञान, केवल दर्शन टल्या	६
२	क्रोध कषायी में	१४	९ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	६
३	मान कषायीमे	१४	९ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	६
४	माया कषायी में	१४	९ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	६
५	लोभकषायी में	१४	१० प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	६
६	अकषायी में	१ चउदमों	४ छेहला	७ अनेन्द्रीय जिम	९ ३ अज्ञान टल्या	१ शुक्ल

भाव ५	आत्मा ८	लब्धि ५	वीर्य ३	दृष्टि ३	भवि अभवि २	दण्डक २४	पक्ष २	अल्पा बहुत १
३ उदय, क्षायक परिणा०	६ कषाय योग टली	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकवीसमों	१ शुक्ल	३ अनन्त गुणा
५	८	५	३	३	२	२४	२	५ विशे-षाधिक
५	८	५	३	३	२	१५ पांच थावर ३ विकलेन्द्री, नारकी का टल्या	२	२ सं० गुणा
५	८	५	३	३	२	१५ ऊपर प्रमाणे	२	१ सर्व सूं थोड़ा
५	८	५	३	३	२	११ तेरह देवता का टल्या	२	४ अनन्त गुणा
५	८	५	१ पंडित	१ सम,	१ भवि	१ इकवीसमों	१ शुक्ल	३ अनन्त गुणा
५	८	५	३	३	२	२४	२	६ विशे-षाधिक
५	८	५	३	३	२	२४	२	३ विशे-षाधिक
५	८	५	३	३	२	२४	२	२ असं० गुणा
५	८	५	३	३	२	२४	२	४ विशे-षाधिक
५	८	५	३	३	२	२४	२	५ विशे-षाधिक
५	७ कषाय टली	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकवीसमों	१ शुक्ल	१ सर्व सूं थोड़ा

अंक	बोल	जीवना भेद १४	गुण स्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
८-१	सलेश्यी में	१४	१३ प्रथम	१५	१२	६
२	कृष्णलेश्यीमें	१४	६ प्रथम	१५	१०केवलज्ञान, केवल दर्शन टल्या।	१ कृष्ण
३	नीललेश्यी मे	१४	६ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	१ नील
४	कापोत लेश्यी में	१४	६ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	१ कापो.
५	तेजूलेश्यी में	३ (३, १३, १४)	७ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	१ तेजू
६	पद्मलेश्यी में	२ छेहला	७ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	१ पद्म
७	शुक्लेश्यी मे	२ छेहला	१३ प्रथम	१५	१२	१ शुक्ल
८	अलेश्यी मे	१ चउदमों	१ चउदमों	०	२ केवल ज्ञान, केवल दर्शन	०
९-१	सम्यक्त्वी मे	६, ५ त्रसका अपयाप्ता, १चउदमो	१२ टल्या १, ३	१५	९ तीन अज्ञान टल्या	६
२	सास्वदान सम्यक्त्वी में	६ ऊपर प्रमाणे	१ दूजो	१३ आहारिक आहारिक मिश्र टल्या	६ प्रथम तीन ज्ञान, तीन दर्शन	६
३	उपशम सम्यक्त्वी मे	२ छेहला	८ (४ सू ११ तांई)	१५	७ प्रथम चार ज्ञान; तीन दर्शन	६

भाव	आत्मा	लब्धि	वीर्य	दृष्टि	भवि	दण्डक	पक्ष	अल्पा
५	८	५	३	३	अभवि २	२४	२	बहुत १
५	८	५	३	३	२	२४	२	८ विशे०
५	८	५	३	३	२	२२ टल्या २३, २४	२	७ विशे०
५	८	५	३	३	२	२२ ऊपर प्रमाणे	२	६ विशे०
५	८	५	३	३	२	२२ ऊपर प्रमाणे	२	५ अनन्त गुणा
५	८	५	३	३	२	१८, टल्या १, १४, १५, १७, १८, १९	२	३ संख्यात गुणा
५	८	५	३	३	२	३ (२०, २१, २४)	२	२ संख्यात गुणा
५	८	५	३	३	२	३ (२०, २१, २४)	२	१ सर्व सूं थाड़ा
३ उदय क्षायक, परिणा०	६ कषाय, योग टली	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकबीसमों	१ शुक्ल	४ अनन्त गुणा
५	८	५	३	१ सम	१ भवि	१९ पांच थावर का टल्या	१ शुक्ल	७ विशे०
३ उदय क्षयोप० परिणा०	७ चारित्र टलो	५	१ बाल	१ सम	१ भवि	१९ ऊपर प्रमाणे	१ शुक्ल	१ सर्व सूं थोड़ा
४ क्षायक टल्यो	८	५	३	१ सम	१ भवि	१६ पांच थावर, ३ विकलेन्द्री का टल्या	१ शुक्ल	२ संख्यात गुणा

अंक	बोल	जीवना भेद १४	गुण स्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
४	वेदक सम्यक्त्वो में	२ (१३, १४)	४ (४ सूं ७ तांई)	१५	७ प्रथम चार ज्ञान, तीन दर्शन	६
५	क्षयोपशम सम्यक्त्वी में	२ (१३, १४)	४ (४ सूं ७ ताई)	१५	७ ऊपर प्रमाणे	६
६	क्षायक सम्यक्त्वी में	२ (१३, १४)	११ ४ सूं १४ तांई	१५	६ तीन अज्ञान टल्या	६
७	मिथ्यात्वी में	१४	१ प्रथम	१३ आहारिक आहारिक मिश्र टल्या	६ तीन अज्ञान प्रथम ३ दर्शन	६
८	सम मिथ्यात्वो मे	१ चउदमो	१ तीजो	१० ४ मन, ४ वचन औदारिक, वैक्रिय	६ ऊपर प्रमाणे	६
१०-१	सज्ञानी में	६, ५ त्रस का अपर्याप्ता, १ चउदमो	१२ टल्या १, ३	१५	९ तीन अज्ञान टल्या	६
२ ३	मतिज्ञानी में श्रुतिज्ञानी में	६ ऊपर प्रमाणे	१० टल्या १, ३, १३, १४	१५	७ प्रथम ज्ञान ४, दर्शन ३	६
४	अवधि ज्ञानी मे	२ १३, १४	१० ऊपर प्रमाणे	१५	७ ऊपर प्रमाणे	६
५	मन पर्यव ज्ञानी मे	१ चउदमों	७ (६ सूं १२ तांई)	१४ कार्मण टल्यो	७ ऊपर प्रमाणे	६
६	केवलज्ञानी मे	१ चउदमो	२ (१३. १४)	७ अनेन्द्री जिम	२ केवलज्ञान, केवल दर्शन.	१ शुक्ल

भाव	आत्मा	लब्धि	वीर्य	दृष्टि	भवि अभवि	दण्डक	पक्ष	अल्पा बहुत
५	८	५	३	३	२	२४	२	१
३ उदय क्षयोप० परिणा०	८	५	३	१ सम	१ भवि	१६ पांच थावर, ३ विकलेन्द्री का टल्या	१ शुक्ल	४ असंख्यात गुणा
३ ऊपर प्रमाणे	८	५	३	१ सम	१ भवि	१६ ऊपर प्रमाणे	१ शुक्ल	५ विशेषाधिक
५	८	५	३	१ सम	१ भवि	१८ ऊपर प्रमाणे	१ शुक्ल	६ अनन्त गुणा
३ उदय क्षयोप० परिणा०	६ ज्ञान चारित्र टली	५	१ बाल	१ मिथ्या	२	२४	२	८ अनन्त गुणा
३ ऊपर प्रमाणे	६ ऊपर प्रमाणे	५	१ बाल	१ सम-मिथ्या	१ भवि	१६ पांच थावर, ३ विकलेन्द्री का टल्या	१ शुक्ल	३ असं० गुणा
५	८	५	३	१ सम	१ भवि	१६ पांच थावर का टल्या	१ शुक्ल	७ विशेषाधिक
५	८	५	३	१ सम	१ भवि	१६ ऊपर प्रमाण	१ शुक्ल	३, ४ तुल्य विशे०
५	८	५	३	१ सम	१ भवि	१६ पांच थावर, ३ विकलेन्द्री का टल्या	१ शुक्ल	२ असंख्यात गुणा
५	८	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकबीसमो	१ शुक्ल	१ सर्व सूं थोड़ा
३ उदय, क्षायक, परिणा०	७ कषाय टली	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकबीसमों	१ शुक्ल	६ अनन्त गुणा

अंक	बोल	जीवना भेद् १४	गुण स्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
७	अज्ञानी में	१४	२ (१, ३)	१३ आहारिक आ-हारिक मिश्र टल्या	६ तीन अज्ञान प्रथम ३ दर्शन	६
८ ९	मतिअज्ञानी में श्रुतिअज्ञानी में	१४	२ (१, ३)	१३ ऊपर प्रमाणे	६ ऊपर प्रमाणे	६
१०	विभङ्ग अज्ञानी में	२ (१३, १४)	२ (१, ३)	१३ ऊपर प्रमाणे	६ ऊपर प्रमाणे	६
११-१	चक्षुदर्शनी में	६ (९ सूं १४ तांई)	११ टल्या १० १३, १४	१४ कार्मन टल्यो	१० केवलज्ञान, केवल दर्शन टल्या	६
२	अचक्षु दर्शनी में	१४	११ ऊपर प्रमाणे	१५	१० ऊपर प्रमाणे	६
३	अवधि दर्शनी में	२ (१३, १४)	११ ऊपर प्रमाणे	१५	१० ऊपर प्रमाणे	६
४	केवल दर्शनी में	१ चउदमों	२ १३, १४	७ अनेन्द्रीय जिम	२ केवलज्ञान, केवल दर्शन,	१ शुक्ल
१२-१	संयती मे	१ चउदमों	९ (६ सूं १४ तांई)	१५	९ तीन अज्ञान टल्या	६
२	सामायक संयती में	१ चउदमो	४ (६ सूं ९ तांई)	१४ कार्मण टल्यो	७ प्रथम-ज्ञान ४, दर्शन ३	६
३	छेदोपस्थाप-नीय संयती मे	१ चउदमों	४ (६ सूं ९ तांई)	१४ ऊपर प्रमाणे	७ ऊपर प्रमाणे	६

भाव ५	आत्मा ८	लब्धि ५	वीर्य ३	दृष्टि ३	भवि अभवि २	दण्डक २४	पक्ष २	अल्पा बहुत १
३ उदय क्षयोप० परिणा०	६ ज्ञान चारित्र टली	५	१ बाल	२ सम टली	२	२४	२	१० विशे-षाधिक
३ ऊपर प्रमाणे	६ ऊपर प्रमाणे	५	१ बाल	२ सम टली	२	२४	२	८ ६ तुल्य विशे०
३ ऊपर प्रमाणे	६ ऊपर प्रमाणे	५	१ बाल	२ सम टलो	२	१६ पांच थावर, ३ विकलेन्द्री का टल्या	२	५ असं० गुणा
५	८	५	३	३	२	१७ पांच थावर, बेन्द्री, तेन्द्री का टल्या	२	२ असंख्यात गुणा
५	८	५	३	३	२	२४	२	४ अनन्त गुणा
५	८	५	३	३	२	१६ पांच थावर, ३ विकलेन्द्री का टल्या	२	१ सर्व सूं थोडा
३ उदय, क्षायक, परिणा०	७ कषाय टली	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकबीसमों	१ शुक्ल	३ अनन्त गुणा
५	८	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकबीसमों	१ शुक्ल	६ विशे-षाधिक
५	८	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकबीसमों	१ शुक्ल	५ संख्यात गुणा
५	८	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकबीसमों	१ शुक्ल	४ संख्यात गुणा

अंक	बोल	जीवना भेद १४	गुणस्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
४	परिहार विशुद्ध संयतां में	१ चउदमों	२ (६, ७)	९ चार मन, चार वचन, औदारिक	७ प्रथम-ज्ञान ४, दर्शन ३	३ भली
५	सूक्ष्म संपराय संयती मे	१ चउदमों	१ दशमों	५ सत्यमन, व्यवहार मन, सत्य भाषा, व्यवहार भाषा औदारिक	४ प्रथम चार ज्ञान	१ शुक्ल
६	यथाख्यात सयती में	१ चउदमों	४ छेहला	७ अनेन्द्रीय जिम	९ तीन अज्ञान टल्या	१ शुक्ल
७	संयता संयतांमें	१ चउदमों	१ पांचमों	१२ आहारिक, अहारिक मिश्र, कार्मण टल्या	६ प्रथम ज्ञान ३, दर्शन ३	६
८	असंयती में	१४	४ (१ सूं ४ तांई)	१३ आहारिक, आहारिक मिश्र टल्या	९ केवल ज्ञान, केवलदर्शन, मन पर्यव ज्ञान टल्या	६
९	नोसंयती नो असंयती में	०	०	०	२ केवल ज्ञान, केवल दर्शन	०
१३-१	सागरो वउत्ता में	१४	१४	१५	१२	६
२	अणगारो वउत्ता में	१४	१२ दशमों ट०	१५	१२	६
१४-१	आहारिक मे	१४	१३ चउदमों टल्यो	१४ कार्मण टल्यो	१२	६
२	अणाहारिक में	८ (७ अपर्याप्ता, १ चउदमो	५ (१,२,४, १३, १४)	१ कार्मण	१० मन पर्यव ज्ञान चक्षु दर्शन टल्या	६

भाव ५	आत्मा ८	लब्धि ५	वीर्य ३	दृष्टि ३	भवि अभवि २	दण्डक २४	पक्ष २	अल्पा बहुत १
५	८	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकवीसमों	१ शुक्ल	२ संख्यात गुणा
५	८	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकवीसमों	१ शुक्ल	१ सर्वसूं थोड़ा
५	७, कषाय टली	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकवीसमों	१ शुक्ल	३ संख्यात गुणा
५	७ चारित्र टली	५	१ बाल पंडित	१ सम	१ भवि	२ बीसमों इकवीसमों	१ शुक्ल	७ असं० गुणा
५	७ चारित्र टली	५	१ बाल	३	२	२४	२	६ अनन्त गुणा
२ क्षायक, परिणा०	४ द्रव्य, उपयोग, ज्ञान, दर्शन	०	०	१ सम	०	०	०	८ अनन्त गुणा
५	८	५	३	३	२	२४	२	२ सं० गुणा
५	८	५	३	३	२	२४	२	१ सर्व सूं थोड़ा
५	८	५	३	३	२	२४	२	२ असं० गुणा
५	८	५	२ बाल, पंडित	२ सम, मिथ्या	२	२४	२	१ सर्व सूं थोड़ा

अंक	बोल	जीवना भेद १४	गुण स्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
१५-१	भाषक मे	५ (६,८,१० १२,१४)	१३ चउदमो टल्यो	१४ कार्मण टल्यो	१२	६
२	अभाषक में	१० (७ अपर्याप्ता, २,४,१४)	५ (१,२,४, १३,१४	५ औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय वैक्रिय मिश्र, कार्मण	११ मन पर्यव ज्ञान टल्यो	६
१६-१	परित मे	१४	१४	१५	१२	६
२	अपरित मे	१४	१ प्रथम	१३ आहारिक, आहारिक मिश्र टल्या	६ तीन अज्ञान प्रथम ३ दर्शन	६
३	नो परित नो अपरित	०	०	०	२ केवलज्ञान, केवल दर्शन	०
१७-१	पर्याप्ता मे	७ पर्याप्ता	१४	१५	१२	६
२	अपर्याप्त मे	७ अपर्याप्ता	३ (१,२,४)	५ औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, कार्मण	९ केवल ज्ञान, मनपर्यव ज्ञान, केवल दर्शन टल्या	६
३	नो पर्याप्ता नो अपर्याप्त में	०	०	०	२ केवलज्ञान केवल दर्शन	०
१८-१	सूक्ष्म में	२ प्रथम	१ प्रथम	३ औदारिक, औदारिक मिश्र कार्मण	३ मति, श्रुति अज्ञान, अचक्षु दर्शन	३ प्रथम

भाव	आत्मा	लब्धि	वीर्य	दृष्टि	भवि अभवि	दण्डक	पक्ष	अल्पा बहुत
५	८	५	३	३	२	२४	२	१
५	८	५	३	३	२	१६ पाच थावर टल्या	२	१ सर्व सूं थोड़ा
५	८	५	२ बाल, पंडित	२ सम मिथ्या	२	२४	२	२ अनन्त गुणा
५	८	५	३	३	२	२४	२	१ सर्व सूं थोड़ा
३ उदय क्षयोप० परिणा०	६ ज्ञान, चारित्र टल्या	५	१ बाल	१ मिथ्या	२	२४	२	३ अनन्त गुणा
२ क्षायक, परिणा०	४ द्रव्य, उपयोग, ज्ञान, दर्शन	०	०	१ सम	०	०	०	२ अनन्त गुणा
५	८	५	३	३	२	२४	२	३ संख्यात गुणा
५	७ चारित्र टली	५	१ बाल	२ सम मिथ्या,	२	२४	२	२ अनन्त गुणा
२ क्षायक परिणा०	४ द्रव्य, उपयोग, ज्ञान, दर्शन	०	०	१ सम	०	०	०	१ सर्व सूं थोड़ा
३ उदय, क्षयोप० परिणा०	६ ज्ञान, चारित्र टली	५	१ बाल	१ मिथ्या	२	५ पांच थावर,	२	३ असंख्यात गुणा

अंक	बोल	जीवना भेद १४	गुण स्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
२	बादर में	१२ छेहला	१४	१५	१२	६
३	नो सूक्ष्म नो बादर में	०	०	०	२ केवल ज्ञान, केवल दर्शन	०
१६-१	सन्नी में	२ छेहला	१२ प्रथम	१५	१० केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या	६
२	असन्नी में	१२ प्रथम	२ प्रथम	६ औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, व्यवहार भाषा, कार्मण	६ प्रथम ज्ञान २, अज्ञान २, दर्शन २,	४ प्रथम
३	नो सन्नी नो असन्नी में	१ चउदमो	२ छेहला	७ अनेन्द्रिय जिम	२ केवलज्ञान, केवल दर्शन,	१ शुक्ल
२०-१	भवि में	१४	१४	१५	१२	६
२	अभवि में	१४	१ प्रथम	१३ आहारिक ने आहारिक मिश्र टल्या	६ तीन अज्ञान प्रथम ३ दर्शन	६
३	नो भवि नो अभवि	०	०	०	२ केवल ज्ञान, केवल दर्शन	०
२१-१	चर्म में	१४	१४	१५	१२	६
२	अचर्म में	१४	१ प्रथम	१३ आहारिक, आहारिक मिश्र टल्या	८ प्रथम चार ज्ञान टल्या	६

भाव	आत्मा	लब्धि	वीर्य	दृष्टि	भवि अभवि	दण्डक	पक्ष	अल्पा बहुत
५	८	५	३	३	२	२४	२	१
५	८	५	३	३	२	२४	२	१ अनन्त गुणा
२ क्षायक, परिणा०	४ द्रव्य, उपयोग ज्ञान, दर्शन	०	०	१ सम	०	०	०	१ सर्व सूं थोड़ा
५	८	५	३	३	२	१६ पांच थावर, तीन विकलेन्द्री का टल्या	२	१ सर्व सूं थोडा
३ उदय, क्षयोप०, परिणा०	७ चारित्र टली	५	१ बाल	२ सम, मिथ्या	२	१० पांच थावर, तीन विकलेन्द्री २०, २१	२	३ अनन्त गुणा
३ उदय, क्षायक परिणा०	७ कषाय टली	५	१ पंडत	१ सम	१ भवि	१ इकवीसमों	१ शुक्ल	२ अनन्त गुणा
५	८	५	३	३	१ भवि	२४	२	३ अनन्त गुणा
३ उदय, क्षयोप० परिणा०	६ ज्ञान, चारित्र टली	५	१ बाल	१ मिथ्या	१ अभवि	२४	१ कृष्ण	१ सर्व सूं थोड़ा
२ क्षायक, परिणा०	४ द्रव्य, उपयोग, ज्ञान, दर्शन	०	०	१ सम	०	०	०	२ अनन्त गुणा
५	८	५	३	३	१ भवि	२४	२	२ अनन्त गुणा
४ उपशम टल्यो	७ चारित्र टली	५	१ बाल	२ सम, मिथ्या	१ अभवि	२४	१ कृष्ण	१ सर्व सूं थोडा

॥ अथ गतागत का थोकड़ा ॥

जीवका ५६३ भेद की विगत—

१४ सात नारकी का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४८ तिर्यंच का।

४ सूक्ष्म वादर पृथ्वीकाय का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४ सूक्ष्म वादर अप्पकाय का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४ सूक्ष्म वादर वाउकाय का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४ सूक्ष्म वादर तेउकाय का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

६ सूक्ष्म (वादर) प्रत्येक साधारण वनस्पतिका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

६ तीन विकलेन्द्री का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

२० जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर ए पांच प्रकार का तिर्यञ्च सन्नी असन्नी का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

३०३ मनुष्य का—

२०२ सन्नी मनुष्य १५ कर्म भूमि, ३० अकर्म भूमि, ५६ अन्तरद्वीप ए १०१ का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

१०१ असन्नी मनुष्य ते सन्नी मनुष्य का मल मूत्रादि चउवह स्थानक में उपजै ते अपर्याप्ता, अपर्याप्ता अवस्था में मरे।

१९८ देवता का—

भुवनपति १०, परमाधर्मी १५, वाणव्यन्तर १६, त्रिजृम्भका १०, जोतषी १०, किल्विषी ३, लोकान्तिक ९, देवलोक १२, ग्रैवेयक ९, देवलोक १२, ग्रैवेयक ९, अनुत्तर विमान ५, एवं ९९ जाति का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

भरत क्षेत्रमें ५१ पावै—

तिर्यञ्च ४८ मनुष्य का ३

जम्बुद्वीप में ७५ पावै—

२७ भरत क्षेत्र १, ऐरभरत १, देवकुरु १, उत्तरकुरु १, हरिवास १ रम्यकवास १, हेमवय १, अरुणवय १, महाविदेह १, यह नव क्षेत्रका सन्नी मनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ता १८, तथा असन्नी मनुष्य ६ ४८ तिर्यञ्च का।

लवण समुद्रमें २१६ पावै—

अन्तरद्वीप ५६ का तो १६८, तथा ४८ तिर्यञ्च का।

धातकी खंड में १०२ पावै—

५४ मनुष्य का अठारह क्षेत्रों का त्रिगुणा ४८ तिर्यञ्च का।

कालोदधि में ४६ पावै—

तिर्यञ्च का ४८ में से बादर तेउ का २ टल्या।

अर्ध पुष्कर वर द्वीप में १०२ पावै—

धात की खण्डवत् जाणवो।

ऊंचा लोक में १२२ पावै—

७६ देवता का ४६ तिर्यञ्च का।

नीचा लोक में ११५ पावै—

भवनपति २० पर्माधामी ३० नारकी १४ तिर्यञ्च का ४८ मनुष्य का ३ सर्व ११५।

तिर्छा लोक में ४२३ पावै—

३०३ मनुष्य का ४८ तिर्यञ्च का ३२ वाणव्यन्तर का २० त्रिझूमका २० जोतिष्यां का।

१	पहली नारकी में	आगति २५	१५ कर्म भूमि मनुष्य, तिर्यञ्च पंचेन्द्री ५ सन्नी ५ असन्नी पर्याप्ता
		गति ४०	१५ कर्म भूमि मनुष्य, तिर्यञ्च पंचेन्द्री ५ सन्नी का पर्याप्ता अपर्याप्ता ४०
२	दूजी नारकी में	आगति २०	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यञ्च का पर्याप्ता
		गति ४०	ऊपरवत्
३	तीजी नारकी में	आगति १९	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ४ सन्नी तिर्यञ्चका पर्याप्ता भुजपर टल्यो
		गति ४०	ऊपरवत्
४	चौथी नारकी में	आगति १८	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ३ सन्नी तिर्यञ्च पर्याप्ता (भुजपर १ खेचर २ टल्या
		गति ४०	ऊपरवत्
५	पांचवीं नारकी में	आगति १७	१५ कर्म भूमि मनुष्य, १ जलचर, १ उरपुर का पर्याप्ता
		गति ४०	ऊपरवत्
६	छठी नारकी में	आगति १६	१५ कर्म भूमि १ जलचर सन्नी को पर्याप्तो
		गति ४०	ऊपरवत्

७	सातमी नारकी में	आगति १६	१५ कर्म भूमि, १ जलचर सन्नी तिर्यञ्च का पर्याप्ता स्त्री विना
		गति १०	५ सन्नी तिर्यञ्च का पर्याप्ता अपर्याप्ता १०
८	१० भवनपति १५ पर्माधामी १६ बानव्यंतर १० त्रिम्भूमका ५१ जातिकामें	आगति १११	१०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी, ५ असन्नी तिर्यञ्च का पर्याप्ता १११
		गति ४६	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यंच पृथ्वी १ अप्प १ वनस्पति का पर्याप्ता अपर्याप्ता सूक्ष्म साधारण विना
९	जोतषी पहिला देवलोक में	आगति ५०	१५ कर्म भूमि, ३० अकर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता
		गति ४६	ऊपरवत्
१०	दूजा देवलोक में	आगति ४०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच, अकर्म भूमि का पर्याप्ता २० (५ हेमवय, अरुण-वय, टल्या)
		गति ४६	ऊपरवत्
११	पहिला कल्विपिक में	आगति ३०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच, ५ देव-कुरु ५ उत्तर कुरु का पर्याप्ता
		गति ४६	ऊपरवत्
१२	दूजा तीजा कल्विषिकतीजा से आठवाँ तांई का देवता में	आगति २०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच अपर्याप्ता
		गति ४०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यञ्च पर्याप्ता अपर्याप्ता

१३	नवमांसे सर्वार्थ सिद्धि ताँई	आगति १५	१५ कर्म भूमि, मनुष्य का पर्याप्ता
		गति ३०	१५ कर्म भूमि का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१४	पृथ्वी पाणी वनस्पति में	आगति २४३	१०१ असन्नी मनुष्य, ४८ तिर्यंच, १५ कर्म भूमि का, पर्याप्ता अपर्याप्ता ३० एवं १७९ लड़ी का और ६४ जातिका देवता एवं सर्व २४३ थया
		गति १७९	लड़ी का
१५	तेऊ वाउकाय में	आगति १७९	लड़ी का
		गति ४८	तिर्यञ्च का
१६	तीन विकलेन्द्री में	आगति १७९	लड़ी का
		गति १७९	लड़ी का
१७	असन्नी तिर्यञ्च पचेन्द्री में	आगति १७९	लड़ी का
		गति ३९५	१७९ तो लड़ीका, ५६ अंतरद्वीप ५१ जातिका देवता, १ पहलो नारको १०८ का पर्याप्ता अपर्याप्ता २१६ सर्व मिलो ३९५
१८	सन्नी तिर्यंच में	आगति २६७	१७९ तो लड़ी का, ८१ देवता ७ नारकी पर्याप्ता (नवमांसे सर्वार्थ सिद्ध तांई टल्या)
		गति ५२७	(नवमां से सर्वार्थ सिद्ध तांई का टल्या)

१६	असन्नी मनुष्य में	आगति १७१	लड़ीका मे से तेउ वाउ का ८ टल्या
		गति १७६	लड़ी का
२०	सन्नी मनुष्य में	आगति २७६	१७१ तो .लड़ीका में से, ६६ देवता ६ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२१	देवकुरु उत्तर कुरु का युगलिया में	आगति २०	१५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंच
		गति १२८	१० भवनपति, १५ पर्माधामी १६ वाण-व्यन्तर, १० त्रिझूमका, १० जोतषी २ पहिलो दूजोदेवलोक, १ पहिलो कल्वि-षिक एवं ६४ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
२२	हरीवास रम्यकवासका युगलिया में	आगति २०	ऊपरवत्
		गति १२६	६४ जातिका देवताँ में से १ पहिलो कल्विषिक टल्यो
२३	हेमवय अरुणवय का युगलिया में	आगति २०	ऊपरवत्
		गति १२४	६४ जातिका देवतां में कल्विषिक १ और दूजो देवलोक टल्यो
२४	५६ अन्तरद्वीप युगलिया में	आगति २५	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी ५ असन्नी तिर्यञ्च
		गति १०२	५१ जाति का देवांका पर्याप्ता अपर्याप्ता

२५	केवल्याँ में	आगति १०८	८१ देवता (पर्मा धर्म १५ कल्विषिक ३ टल्या) १५ कर्म भूमि ४ पहली से चौथी नर्क, ५ सन्नी तिर्यञ्च १ पृथ्वी १ अप्प बनस्पति
		गति ०	मोक्ष की
२६	तीर्थंकरा में	आगति १११	३५ देवता बैमानिक ३ नरक पहली से
		गति ४६	मोक्ष की
२७	चक्रवर्त में	आगति ८२	८१ जाति का देवता ऊपरवत् १ पहली नरक
		गति १४	७ सात नारकी में जाय पदवी में मरे तो
२८	वासुदेव में	आगति ३२	१२ देवलोक, ६ नव ग्रैवेयक, ६ लोका-न्तिक तथा २ नारकी पहली दूजी
		गति १४	७ नारकीमें जाय
२६	बलदेव में	आगति ८३	८१ जातिका देवता ऊपरवत् नारकी पहली दूजी
		गति ०	पदवी अमर छै
३०	सम्यक दृष्टिमें	आगति ३६३	१७१ लड़ी का (तेउ वाउ का टल्या) ६६ देवता, ८६ युगलिया, ७ नारकी
		गति २५८	६६ देवता, १५ कर्मभूमि, ६ नारकी ५ सन्नी तिर्यञ्च का पर्याप्ता अपर्याप्ता, ५ असन्नी ३ बिकलेन्द्री का अपर्याप्ता एवं २५८

३१	मिथ्यादृष्टि में	आगति ३७१	१७१ लड़ी का, ११ देवता, ८६ युगलिया नारकी ७ एवं
		गति ५५३	५ अनुत्तर का पर्याप्ता अपर्याप्ता टल्या
३२	समिमिथ्या दृष्टि में	आगति ३६३	समदृष्टि जिम
		गति ०	तीजे गुणठाणे मरे नहीं
३३	साधु में	आगति २७०	१७१ लड़ी का ११ देवता, ५ नारकी
		गति ७०	१२ देवलोक, ९ लोकान्तिक, ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर का पर्याप्ता अपर्याप्ता
३४	श्रावक में	आगति २७६	१७१ लड़ी का ११ देवता ६ नारकी एवं
		गति ४२	१२ देवलोक, ९ लोकान्तिक, पर्याप्ता अपर्याप्ता
३५	पुरुष वेद में	आगति ३७१	मिथ्याती जिम जाणवो
		गति ५६३	सर्व
३६	स्त्री वेद में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६१	सातमी नरक में नहीं जाय
३७	नपुंसक वेद में	आगति २८५	११ देवता, १७१ लड़ी का, ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व

१	शुक्लपक्षी	आगति ३७१	१७१ तो लड़ी का, ९९ देवता ८६ युगलिया, ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२	कृष्णपक्षी मे	आगति ३६६	३७१ में ५ अनुत्तर टल्या
		गति ५५३	५ अनुत्तर का अपर्याप्ता टल्या
३	अचर्म में	आगति ३६६	ऊपरवत्
		गति ५५३	ऊपरवत्
४	चर्म में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६३	सर्व
५	वाल वीर्य में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५५३	५ अनुत्तर का टल्या
६	पंडित वीर्य में	आगति २७५	१७१ लड़ी का में से, ९९ देवता का, ५ नारकी पहली से
		गति ७०	१२ देवलोक, लोकान्तिक, ९ नवग्रेवेयक ५ अनुत्तर वैमान का पर्याप्ता अपर्याप्ता

७	बाल पण्डित वीर्य में	आगति २७६	१७१ लड़ीका में से ९९ देवता, नारकी ६ पहली से
		गति ४२	१२ देवलोक, ९ लोकान्तिक, का पर्याप्ता अपर्याप्ता
८	मति श्रुति ज्ञान में	आगति ३६३	१७१ तो लड़ीका में से, ९९ देवता, ८६ युगलियाँ, ७ नारकी एवं ३६३
		गति २५८	९९ देवता, १५ कर्मभूमि, ५ सन्नी तिर्यञ्च ६ नारकी एवं १२५ का पर्याप्ता अपर्याप्ता २५० और ५ असन्नी तिर्यञ्च ३ विकलेन्द्री का पर्याप्ता ८ सर्व २५८
९	अवधि ज्ञान में	आगति ३६३	ऊपरवत्
		गति २५०	९९ देवता, १५ कर्मभूमि, ५ सन्नी तिर्यञ्च ६ नारकी एवं १२५ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१०	मति श्रुति अज्ञान में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५५३	५ अनुत्तर का पर्याप्ता अपर्याप्ता टल्या
११	विभङ्ग अज्ञान में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति २४२	९४ देवता (अनुत्तर टल्या) १५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यञ्च ७ नारकी पर्याप्ता अपर्याप्ता
१२	चक्षु दर्शन में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६३	सर्व

१३	निकेवल अचक्षु दर्शन में	आगति २४३	१७९ लड़ी का, ६४ जाति का देवता का पर्याप्ता
		गति १७९	लड़ी का
१४	समुचे अचक्षु दर्शन में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६३	सर्व
१५	अवधि दर्शन में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति २५२	९९ देवता, १५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच ७ नारकी एवं १२६ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१६	सूक्ष्म एकेन्द्री में	आगति १७९	लड़ी का
		गति १७९	लड़ी का
१७	बादर एकेन्द्री में	आगति २४३	१७९ लड़ीका ६४ देवता
		गति १७९	लड़ी का
१८	संयोगी अणाहारिक	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ०	

१९	तेजस कारमाण में	आगति ३७१	ऊपरवत्.
		गति ५६३	सर्व
२०	वैक्रे शरीर मूलका में	आगति १११	१०१ सन्नी मनुष्य. ५ सन्नी ५ असन्नी
		गति ४६	१५ कर्मभूमि. ५ सन्नी, पृथ्वी १ पाणी २ वनस्पति ३ ए २३ का पर्याप्ता अपर्याप्ता सूक्ष्म साधारण विना
२१	समुचै वैक्रे शरीर में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६३	सर्व
२२	औदारिक शरीर में	आगति २८५	१७९ लड़ी का ९९ देवता ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२३	कृष्ण लेश्याको कृष्ण लेश्यामें जावे तो	आगति ३१९	१७९ लड़ीका ५१ जाति का देवता ८६ युगलिया ३ नारकी पांचवीं छठी सातवीं
		गति ४५९	५१ जातिका देवता. ८६ युगलियाँ, ३ नारकी. इनका पर्याप्ता अपर्याप्ता २८० लड़ीका १७९ सर्व ४५९
२४	नील लेश्या को नील में जावे तो	आगति ३१९	१७९ लड़ी का. ५१ देवता. ८६ युगलियां ३ नारकी तीजी चौथी पाँचवीं
		गति ४५९	ऊपरवत् (नारकी तीजी चौथी पाँचवीं)

२५	कापोत लेश्या को कापोत में जावे तो	आगति ३१६	ऊपरवत् पण नारको पहली दूजी तीजी जाणो
		गति ४५६	ऊपरवत् (नारकी पहली से तीजी)
२६	तेजू लेश्या को तेजू में जावे तो	आगति १६०	६४ जातिका देवता ८६ युगलिया का पर्याप्ता और १५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता
		गति ३४३	१०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी, तिर्यंच ६४ जाति देवता का पर्याप्ता अपर्याप्ता पृथ्वी, अप्प, वनस्पति का अपर्याप्ता
२७	पद्म को पद्म लेश्या में जावे तो	आगति ५३	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता, नवग्रैवेयक १ दूजो किल्विषि ३ देवलोक (पहिला से) का पर्याप्ता
		गति ६६	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच नव लोकान्तिक, ४ देवलोक (तीजे से) का पर्याप्ता अपर्याप्ता
२८	शुक्ल लेश्या को शुक्ल मे जावे तो	आगति ६२	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता ४० और २१ देवलोक (छट्ठा से सर्वार्थ सिद्धताई) १ कल्विषिक का पर्याप्ता
		गति ८४	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच, २१ देवलोक ऊपरवत् १ तीजा किल्वेषी का पर्याप्ता अपर्याप्ता

इति दूजो गतागत को थोकड़ो

आठ कर्मां की १५८ प्रकृति को थोकड़ो

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद तेवीस में कर्मबंध पद चाल्यो ते अनुसारे कर्म प्रकृति कहे छे।

ज्ञानावरणीय की ५ दर्शनावरणीय की ६, वेदनीय की २, मोहनीय की २८, आयुष्य की ४, नाम की १०३, गोत्र की २, अन्तराय की ५, सर्व १५८ प्रकृति थयी।

प्रथम—ज्ञानावरणीय कर्म।

ज्ञानवरणीय कर्म की ५, प्रकृति—१ मति ज्ञानावरणीय, २, श्रुति ज्ञानावरणीय, ३ अवधि ज्ञानावरणीय, ४ मनपर्यव ज्ञानावरणीय, ५ केवल ज्ञानावरणीय।

जीवरे छव बोलां करी ज्ञानावरणीय कर्म किम बंधे ते कहे छै—१ ज्ञान नो तथा ज्ञानवन्त नो प्रत्यनीक होवे, २ ज्ञान ने तथा ज्ञानवन्त ने निन्हवे, गोपवे तथा हेलना करे, ३ ज्ञान नी तथा ज्ञानवन्त नी अन्तराय पाड़े, ४ ज्ञान ऊपरे तथा बहुश्रुति साधां ऊपरे द्वेष करे, ५ ज्ञान नी तथा ज्ञानवन्त नी आशातना करे, ६ ज्ञान नो तथा ज्ञानवन्त नो विसमवाद योग ते व्यभिचार

दिखावे। ए छव बोलां करी जीव के ज्ञानावरणीय कर्म बंधे। ए कर्म नी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्टी ३० कोडाकोड़ सागरोपम। ए कर्म थकी जीव संसार मांहि रुले। ए कर्म पाटी नी दृष्टान्त जाणवो। जिम आंख्यां आड़ी कपड़ा नी पाटी बांध्यां थी दीसे नहीं, तिम ज्ञानावरणीय कर्म करी जीवने ज्ञान उपजे नहीं।

द्वितीय—दर्शनावरणीय कर्म।

दर्शनावरणीय कर्म की ९ प्रकृति—१ निद्रा, २ निद्रा-निद्रा, ३ प्रचला, ४ प्रचलाप्रचला, ५ थीणोद्धी, ६ चक्षु दर्शनावरणीय, ७ अचक्षु दर्शनावरणीय, ८ अवधि दर्शनावरणीय, ९ केवल दर्शनावरणीय।

सुख सूं आवे सुख सूं जागृत होवे ते निद्रा, दुःख सूं आवे दुःख सूं जागृत होवे ते निद्रानिद्रा, ऊभा बैठा निद्रा आवे ते प्रचला, चालतां निद्रा आवे ते प्रचला-प्रचला, थीणोद्धी निद्रा बलदेव सरीषो बल जागता मन में चिन्तवे ते निद्रा में करे, हाथी का दांत निद्रा मांहि उपाड़ कर ले आवे तेहने थीणोद्धी निद्रा कहीजे, ए निद्रा नो धणी मरी ने उत्कृष्टो सातवीं नारकी तेतीस सागर ने आयुष्ये जाय ने ऊपजे।

जीवरे छव बोलां करी दर्शनावरणीय कर्म किम बंधे ते कहे छे—१ दर्शन नो तथा दर्शनवन्त नो प्रत्य-

नीक होवे, २ दर्शन ने तथा दर्शनवन्त ने निन्दवे, गोपवे तथा हेलना करे, ३ दर्शन नी तथा दर्शनवन्त नी अन्तराय पाडे, ४ दर्शननी तथा दर्शनवन्तनी आशातना करे, ५ दर्शन नी तथा दर्शनवन्त नी विसमवाद योगते व्यभिचार दिखावे ६ दर्शन तथा दर्शनवन्त ऊपरे द्वेष करे। ए छव बोलां करी जीव दर्शनावरणीय कर्म बांधे। ए कर्म नी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्टी ३० कोड़ाकोड़ सागरोपम। ये कर्म थकी जीव संसार मांही रूले। जीव जिहां जावे तिहां केड़ै लाग्यो आवे। ए कर्म मोक्ष जाता जीवने प्रतिहार (पोलियो) समान छै। जिम राजा सूं भेंटवा जातां प्रतिहार जावा न देवे तिम ए कर्म थकी जीव ने दर्शन ऊपजे नहीं, मोक्ष पावे नहीं।

तृतीय—वेदनीय कर्म।

वेदनीय कर्म की दोय प्रकृति—१ शाता वेदनीय २ अशाता वेदनीय। शाता वेदनीय-तिणसूं सुख भोगवे। अशातावेदनीय-तिणसूं दुःख भोगवे।

पहले जीवरे शातावेदनीय कर्म किम बंधे ते कहे छे।

प्राण, भूत, जीव, सत्व नी अनुकम्पा करे। अनुकम्पा किम करे ते ओलखावा भणी छव बोल कहे छै।

घणा प्राण, भूत, जीव, सत्व ने दुःख उपजावे नहीं १, शोग उपजावे नहीं २, झुरावे नहीं ३, आंसूं नखावे

नहीं, लाठी प्रमुख सूं प्रहार करे नहीं ५, परितापना उपजावे नहीं ६, ए छव बोलां करी जीव शातावेदनीय कर्म बांधे संसार ना सुख भोगवे।

शातावेदनीय कर्म ना दोय भेद छे-१ इर्यावही, २

२ सम्पराय।

इर्यावही नी स्थिति, जघन्य ने उत्कृष्टी २ समा नी।

सम्पराय नी स्थिति जघन्य १२ मुहूर्त्त उत्कृष्टी १५ कोड़ाकोड़ सागरोपम।

जीवरे अशातावेदनीय कर्म किम बंधे ते कहे छै।

प्राण, भूत, जीव, सत्व नी अनुकम्पा न करे। अनुकम्पा किम न करे ते ओलखावा भणी छव बोल कहे छे-—

पर जीवां ने दुःख उपजावे १, शोग उपजावे २, झुरावे ३, आंसू नखावे ४, लाठी प्रमुख सूं प्रहार करे ५, परितापना उपजावे ६, ए छव बोलां करी जीव अशातावेदनीय कर्म बांधे।

ए कर्म नी स्थिति जघन्य एक सागरा रा सातिया तीन भाग तिण मांहे एक पल्य रो असंख्यातवों भाग ऊणो, उत्कुष्टो ३० कोड़ाकोड़ सागरोपम तांई जीव ने रुलावे। ए कर्म मधु खरड्या खड्ग नी धारा सरीपा जाणवो। धारा चाटतां मधु ना स्वाद आवे ते शाता-

वेदनीय कर्म, जीभ कट जावे ते अशातावेदनीय कर्म जाणवो।

चतुर्थ—मोहनीय कर्म।

मोहनीय कर्म की २८ प्रकृति—संजल नो क्रोध, मान, माया, लोभ ४, प्रत्याक्षानी क्रोध. मान, माया, लोभ ४, अप्रत्याक्षानी क्रोध, मान, माया, लोभ ४, अनन्तानु बंधीय क्रोध, मान, माया, लोभ ४, ए १६ कषाय कही छै।

हिवे नव नोकषाय कहे छै—हास्य १७, रति १८, अरति १६, भय २०, शोग २१, दुर्गच्छा २२, पुरुष वेद २३, स्त्री वेद २४, नपुंसक वेद २५, ए पचीस प्रकृति चारित्र मोहनीय नी जाणवी। हिवे तीन प्रकृति दर्शनमोहनीय नी कहे छै—सम्यत्व मोहनीय २६, मिश्रमोहनीय २७, मित्थ्यात मोहनीय २८, ए अट्ठाईस मोहनीय कर्म नी जाणवी।

हास्य कहतां हंसे ते, रति कहतां असंथम में राजीपणो, अरति कहतां संयम में विराजीपणो असुख पावे, भय कहतां जीव जिहां तिहां डरपावे, शोग कहतां जे मुवा गया नो जीव घणो दुःख बिसरे नहीं, दुर्गच्छा कहतां जीव माठी वस्तु देखीने निन्दा दुर्गच्छा करे, पुरुष वेद स्त्री ऊपरे अभिलाषा उपजे, स्त्री वेद ते पुरुष

ऊपरे अभिलाषा उपजे, नपुंसक वेद ते स्त्री पुरुष दोनूं ऊपरे अभिलाषा उपजे। पुरुष नी अभिलाषा घास ना पूला नी अग्नि समान जाणवी। स्त्री नी अभिलाषा छाली ना मींगणा की उन्ही अग्नि समान जाणवी। नपुंसक नी अभिलाषा नगर नी दाह नी अग्नि समान जाणवी।

मोहनीय कर्म किम बंधे ते कहे छै—तीव्र क्रोध करी १, तीव्र मान करी २, तीव्र माया करी ३, तीव्र लोभ करी ४ (ए तीव्र चौकडी कषाय रूप चारित्र मोहनीय की कही)। नव नोकषाय रूप तीव्र चारित्र मोहनीय करी ५, तीन तीव्र दर्शन मोहनीय करी ६, ए छव प्रकारे जीव मोहनीय कर्म बांधे। चारित्र मोहनीय कर्म नी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्टी ४० कोड़ाकोड़ सागरोपम। दर्शन मोहनीय कर्म नी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्टी ७० कोड़ाकोड़ सागरोपम तांई जीव ने संसार मांही रुलावे।

ए कर्म मदिरापान समान जाणवो, जिम मदिरा पियां थी जीव ने भली भूंडी वस्तु नो विवेक विचार न होवे तिम मोहनीय कर्म ने उदय थी जीव म्हारो म्हारो करतो जग मांहीं फिरे, घणि ऊंधो सरधे।

पंचम—आयुष्य कर्म ।

आयुष्य कर्म नी ४ प्रकृति—नरकायु १, तिर्यंचायु २, मनुष्यायु ३, देवायु ४,

नरकायु ४ प्रकारे बंधे ते कहे छै—महाआरम्भ १, महापरिग्रह २ पंचेन्द्री जीवां री घात ३, मांस नो आहार ४

तिर्यंचायु ४ प्रकारे बंधे ते कहे छै—माया कपटाई करे १, माया ढांकवा ने माया ले गूढ़ माया करे २, झूठा बचन बोले ३, कूड़ा तोला कूड़ा मापा करे ४

मनुष्यायु ४ प्रकारे बंधे ते कहे छै—प्रकृति स्वभाव भद्रिक होवे १, प्रकृति स्वभाव विनीत होवे २, सानु-क्रोशाते दया रा परिणाम राखे ३, अमच्छर भाव जे दूसरां रो गुण सहन करे ४ ।

देवायु ४ प्रकारे बंधे ते कहे छै—सराग संयम पाले १, श्रावक पणो पाले २, बाल तप करे ३, अकाम निर्जरा करे ४ ।

ए कर्म नी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्टो ३३ सागर कोड़ पूर्वरे तीजे भाग अधिक नो जाणवो । ए कर्म खोड़ा सरीषा जाणवो, जिम खोड़ा मांही घाल्यो मनुष्य निकल सके नहीं तिम आयुष्य कर्म बिन भोग्यां मरे नहीं, खपायां बिन संसार छूटे नहीं ।

अष्टम्—नाम कर्म।

नाम कर्म की मूल प्रकृति ४२, भेदान्तरे ६७, भेदान्तरे ९३, भेदान्तरे १०३।

प्रथम मूल प्रकृति ४२ कहै छै—१४ पिण्ड, ८ प्रत्येक, १० त्रस, १० थावर एवं सर्व ४२ प्रकृति।

तिण में १४ पिण्ड प्रकृति कही, पिण्ड कहतां एक प्रकृतिमें घणा भेद थाय ते पिण्ड कहीजे ते कहे छे—(१) गति नाम ४, (२) जाति नाम ५, (३) शरीर नाम ५, (४) शरीर के अङ्गोपांग नाम ३, (५) शरीर का बन्धन ५, (६) शरीर संघातन नाम ५, (७) संघयन नाम ६, (८) संठाण नाम ६, (९) वर्ण नाम ५, (१०) गंध नाम २, (११) रस नाम ५, (१२) स्पर्श नाम ८, (१३) अनुपूर्वि नाम ४, (१४) विहायगति नाम २, हिवे आठ प्रत्येक प्रकृति कही, प्रत्येक कहतां एक प्रकृति में एक भेद थाय ते प्रत्येक प्रकृति ते कहे छै—१५ पराघात नाम (आप जीते पेलो घात पावे), १६ उश्वास नाम (श्वासोश्वास सुख से लेवे), १७ आताप नाम (आप शीतल स्वभावी होवे दूसरो आपने देखने तपायमान होवे) १८ उद्योत नाम (शरीर की कान्ति ज्योति उज्ज्वल होवे), १९ अगुरु लघु नाम (अधिक हलको वा अधिक भारी नहीं होवे, २० तीर्थंकर नाम (तीर्थंकर

पद् ने प्राप्त करने वालो), २१ निर्माण नाम (शरीर फोड़ा फुणगला रहित होवे), २२ अपघात नाम (आप हार पावे दूसरो जीते), ए आठ प्रत्येक प्रकृति कही। हिवे त्रस दशक ना दश नाम कहे छै—२३ त्रस नाम (हालन चालन होवे ते) २४ बादर नाम (नेत्रद्वारा देखने में आवे), २५ प्रत्येक नाम (एक शरीर में एक जीव होवे), २६ पर्याप्त नाम (पूरी प्रजा पावे ते), २७ स्थिर नाम (शरीर ना अवयव दृढ़ होवे), २८ शुभ नाम (सुन्दर शरीर होवे). २९ सौभाग्य नाम (सर्व ने वल्लभ-कारी), ३० सुस्वर नाम (मधुर स्वर होवे), ३१ आदेय नाम (बचन प्रिय और प्रमाणिक होवे), ३१ यशोकीर्ति नाम (जग में यश कीर्ति होवे)। थावरदशक ना दश नाम कहे छै—३३ स्थावर नाम (हालन चालन की शक्ति नहीं होवे), ३४ सूक्ष्म नाम छोटो शरीर होवे चक्षु इन्द्री के दृष्टिगोचर नहीं होवे), ३५ साधारण नाम (एक शरीर में अनन्ता जीव होवे), ३६ अपर्याप्त नाम (अपूर्ण पर्याय नो धारक), ३७ अस्थिर नाम (ढीलो शरीर होवे), ३८ अशुभ नाम (खराब शरीर होवे), ३९ दुर्भाग्य नाम (अप्रियकारी), ४० दुस्वर नाम (खराब स्वर होवे), ४१ अनादेय नाम (उस बचन ने कोई माने नहीं), ४२ अयशोकीर्ति नाम (जग में अजश अकीर्ति

होवे भलो काम करे तो भी अपजश होवे), ए ४२ मूल प्रकृति कही।

हिवे नाम कर्म नी ९३ प्रकृति कहे छै।

पूर्वें १४ पिण्ड प्रकृति कही तिणरा ६५ भेद थया ते कहे छै—गति नाम चार—नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देवता ४, जाति नाम पांच—एकेन्द्री, बेन्द्री, तेन्द्री, चौरेन्द्री, पंचेन्द्री ९, शरीर नाम पांच—औदारिक, बैक्रिय, आहारिक, तैजस, कार्मण १४, अङ्गोपांग नाम तोन–औदारिक, बैक्रिय, आहारिक (तैजस, कार्मण शरीर सूक्ष्म छै तिण कारण से अङ्गोपांग होवे नहीं), शरीर का बंधन नाम पांच—औदारिक, बैक्रिय, आहारिक तैजस, कार्मण २२, संघातन नाम पांच—औदारिक, बैक्रिय, आहारिक, तैजस कार्मण (जैसे बुहारी सुं बिखरोड़ा घास ना तृणा ने एकत्र करे ते संघातन) २७, संठाण नाम छव—समचतुरस संठाण (सर्वांगोपांग पूर्ण प्रमाणोपेत शरीर), न्यग्रोध परिमण्डल संठाण (बड़ के समान नाभी ऊपर अच्छो और नीचे खराब शरीर होवे), सादि संठाण (प्रथम नीचे को शरीर अच्छो ऊपर को शरीर खराब), बामन संठाण (ठिंगन शरीर), कुब्ज संठाण कुबडो), हूण्डक संठाण (आधे जले मुरदे जैसा शरीर) ३३, संघयण नाम छव—वज्र ऋषभ नाराच

संघयन (वज्र खीली ऋषभ पाटियो नाराच बंधन इसो शरीर नो बंधन होवे तो वज्र ऋषभ नाराच संघयन) ऋषभ नाराच संघयन (जिन में खोली नहीं होवे), नाराच संघयन (जिन में पाटियो नहीं होवे), अर्धनाराच संघयन (आधो मरकट बंध), केलको संघयन (फक्त कीली रूप अटको होवे), ३६ छेवटो संघयन (अलग अलग हड्डियां होवे) ३६, वर्ण नाम पांच—कालो, पीलो नीलो, रातो, धोलो, ४४, गंध नाम दोय—सुगंध, दुर्गंध ४६, रस नाम पांच—खट्टो मीठो, कड़वो, कषायलो, तीखो ५१, स्पर्श नाम आठ—हलको, भारी, खरदरो, सुहालो, लूखो, चोपड्यो, ठण्डो, ऊन्हो ५६, अनुपूर्वि नाम चार—नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देवता ६३ विहाय गति (आकाश में गति करने योग्य शरीरवालो) नाम दोय—प्रशस्त विहाय गति, अप्रशस्त विहाय गति ६५,

पूर्वे २८ प्रकृति कही—१० त्रस की, १० थावर की, ८ प्रत्येक एवं सर्व ६३,

हिवे नाम कर्म नी १०३ प्रकृति ना भेद कहे छै—

ग्रन्थान्तरे ५ बन्धनरे ठिकाणे बन्धन १५ कह्या छै तिण रा नाम (१) औदारिक बन्धन, (२) औदारिक तैजस बन्धन, (३) औदारिक कार्मण बन्धन, (४)

औदारिक तैजस कार्मण बंधन, (५) वैक्रिय वैक्रिय बन्धन, (६) वैक्रिय तैजस बन्धन, (७) वैक्रिय कार्मण बन्धन, (८) वैक्रिय तैजस कार्मण बन्धन, (६) आहा-रिक आहारिक बन्धन, (१०) आहारिक तैजस बन्धन, (११) आहारिक कार्मण बन्धन, (१२) आहारिक तैजस कार्मण बन्धन, (१३) तैजस तैजस बन्धन, (१४) तैजस कार्मण बन्धन, (१५) कार्मण कार्मण बन्धन। ए १५ बन्धन रा भेद कह्या तिवारे १० प्रकृति बधी, पूर्वे ९३ कही, सर्व मिल १०३ हुई।

हिवे ६७ प्रकृति ना भेद कहे छै—

चार गति नाम ४, पांच जाति नाम ९, पांच शरीर नाम १४, तीन शरीर अङ्गोपांग नाम १७, छव संघयण नाम २३, छव संठाण नाम २९, वर्ण नाम ३०, गंध नाम ३१, रस नाम ३२, स्पर्श नाम ३३, चार अनुपूर्वि नाम ३७, दोय विहाय गति नाम ३९, आठ प्रत्येक प्रकृति ४७, दश त्रस की ५७, दश थावर की ६७, उदय उदेरणा ने विषे सामान्य थी वर्ण १, गंध १, रस १, स्पर्श १, वर्णादिक ना २० प्रकृति नी ४ प्रकृति कही, बंधन ना १५, संघातन ना ५, ए वीस वोल पांच शरीर मुद्धे गिणिया, ६७ प्रकृति हुई ऊपर प्रमाणे।

नाम कर्म ८ प्रकारे किम बंधे ते कहे छै—

नाम कर्म ना दोय भेद—१ शुभ नाम, अशुभ नाम। शुभ नाम कर्म ४ प्रकारे बंधे—१ काया नो सरल [काया करि दूसरां ने बंचै (ठगै) नहीं,] २ भाव सरल ३ भाषा नो सरल, ४ अविसमवाद योग करि (ते जेहवो करे तेहवो बोले विपरीत पणो न करे)।

अशुभ नाम कर्म ४ प्रकारे बंधे—१ काया नो असरल (काया करि बीजा ने बंचै), २ भावनो असरल, ३ भाषा नो असरल, ४ विसमवाद योग करि (ते जेहवो करे तेहवो नहीं बोले विपरीत पणो करे)।

ए कर्म नी स्थिति जघन्य ८ मुहूर्त उत्कृष्टी २० कोड़ाकोड़ सागरोपम तांई जीव ने रुलावे, ए कर्म चितारा सरीषा जाणवो जिम चितारो अनेक प्रकार ना चित्राम करे तिम नाम कर्म ने उदय थी नया नया रूप करे ।

सप्तम—गोत्र कर्म।

गोत्र कर्म नी दोय प्रकृति—१ ऊंच गोत्र, २ नीच गोत्र। जीवरे ८ प्रकारे ऊंच गोत्र किम बंधे ते कहे छै-

१ जाति, २ कुल, ३ बल, ४ रूप, ५ तप, ६ सूत्र, ७ लाभ, ८ ठकुरई, ए आठ बोलां नो मद अहंकार नहीं करे तो जीवरे ऊंच गोत्र बंधे।

जीवरे ८ प्रकारे नीच गोत्र कर्म किम बंधे ते कहे छै—

१ जाति, २ कुल, ३ बल, ४ रूप, ६ तप, ६ सूत्र, ७ लाभ, ८ ठकुराई, ए आठ बोलां नो मद अहंकार, करे तो जीवरे नीच गोत्र कर्म बंधे।

ए कर्म नी स्थिति जघन्य ८ मुहूर्त उत्कृष्टी २० कोड़ाकोड़ सागरोपम, ए कर्म कुम्हार सरीषा जाणवो जिम कुम्हार मट्टीना पिण्ड थकी नाना प्रकार ना जिसा चिन्तवे तिसा भाजन करे, तिम ए जीव चारूं गति मांहे नया नया भव (ऊंच नीच गोत्र) करे।

अष्टम—अन्तराय कर्म।

अन्तराय कर्म नी ५ प्रकृति—१ दानान्तराय, २ लाभान्तराय ३ भोगान्तराय, ४ उप भोगान्तराय; ५ वीर्यान्तराय।

जीवरे ५ प्रकारे अन्तराय कर्म किम बंधे ते कहे छै—

१ दाननी, २ लाभनी, ३ भोगनी, ४ उपभोगनी, ५ वीर्यनी ए पांच बोलां नी जीव अन्तराय देवे तो अन्तराय कर्म बंधे ए कर्म नी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्टी ३० कोड़ाकोड़ सागरोपम, ए कर्म राजाना भण्डारी सरीषा जाणवो जिम राजा भण्डारी ने आदेश देवे, अमुक वस्तु दो, तिवारे भण्डारी देवे तो राजा पामें, तिम अन्तराय कर्म गाढो विषम जाणवो। ए

अन्तराय कर्म ना उदय थी सर्व भली वस्तु नी प्राप्ति नहीं होवे ।

ए आठों कर्म नी १५८ प्रकृति जाणवी। प्रकृति सर्व खपायां सूं जीव मुक्ति पहुंचे। एहवो आपना कर्म ना विपाक कड़ुवा, कठोर, भारी जाणी ने सदाई चिंतवना मुक्ति पन्थ पहुंचवा भणी बारह भावना भावे, पंच महाव्रत, बारह व्रत, दया पाले, दान देवे, देव गुरुनी सेवा भक्ति करे, तो जीव थोड़ा काल मांहि घणा भवस्थिति खपाय ने निर्मल सम्यक्त्व चारित्रादि अराधी केवल ज्ञान उपजावी मुक्ति गति पहुंचे। ते भणी रे जीव सदा काल धर्म ने विषै उद्यम करवो।

॥ इति ॥



आठ कर्म कितनी प्रकारे भोगवे।

(१) ज्ञानावरणीय कर्म १० प्रकारे भोगवे—१ श्रुत इन्द्री को आवरण (कानां सूं शब्द सुणीजे नहीं), २ श्रुत विज्ञानवरण (शब्दमें समझ सके नहीं), ३ चक्षु इन्द्री को आवरण (आंखा सूं रूप देख सके नहीं), ४ चक्षु विज्ञानावरण (रूप में समझ सके नहीं), ५ घ्राण इन्द्री को आवरण (गंध ग्रहण कर सके नहीं), ६ घ्राण विज्ञानावरण (गंध में समझ सके नहीं), ७ रस इन्द्री को आवरण (रस ग्रहण कर सके नहीं), ८ रस विज्ञानावरण (रस में समझ सके नहीं), ९ स्पर्श इन्द्री को आवरण (स्पर्श ग्रहण कर सके नहीं), १० स्पर्श विज्ञानावरण (स्पर्श का भेद शीतोष्णादि में समझ सके नहीं)।

(२) दर्शनावरणीय कर्म ९ प्रकारे भोगवे-१ निद्रा २ निद्रानिद्रा, ३ प्रचला, प्रचलाप्रचला, ४ थीणोद्धी, ६ चक्षु दर्शनावरणीय (आंखां सूं अच्छी तरह देखे नहीं), ७ अचक्षु दर्शनावरणीय (आंखां विना चारों इन्द्रिय मन सूं सम्यक प्रकार देख सके नहीं), ८ अवधि दर्शनावरणीय (अवधि दर्शन उपजे नहीं), ९ केवल दर्शनावरणीय (केवल दर्शन उपजे नहीं)।

(३) वेदनीय कर्म १६ प्रकारे भोगवें--वेदनीय कर्म का दोय भेद—१ शाता वेदनीय, २ अशाता वेदनीय।

शाता वेदनीय ८ प्रकारे भोगवे—१ मन गमता शब्द, २ मन गमता रूप, ३ मन गमता गंध, ४ मन गमता रस, ५ मन गमता स्पर्श, ६ मन रो सुख, ७ भलो वचन, ८ कायारो सुख।

अशाता वेदनीय ८ प्रकारे भोगवे—१ अमनोज्ञ शब्द, २ अमनोज्ञ रूप, ३ अमनोज्ञ गंध, ४ अमनोज्ञ रस, ५ अमनोज्ञ स्पर्श, ६ मन रो दुःख, ७ खोटा बचन, ८ काया रो दुःख।

(४) मोहनीय कर्म २८ प्रकारे भोगवें, मोहनीय कर्म का दोय भेद—१ दर्शन मोहनीय, २ चारित्र मोहनीय।

दर्शन मोहनीय का ३ भेद—१ सम्यक्त्व मोहनीय, २ मित्थ्यात्व मोहनीय, ३ मिश्र मोहनीय।

चारित्र मोहनीय का दोय भेद--१ कषाय, २ नो कषाय।

कषाय का १६ भेद—

अनन्तानु बंधीय को चौक—१ क्रोध, २ मान, ३ माया, ४ लोभ।

क्रोध को स्वभाव=पत्थर की तेड़, २ मान को स्वभाव=पत्थर को थांभो, ३ माया को स्वभाव=वांस की जड़, ४ लोभ को स्वभाव=किरमची रेशम को रङ्ग, इन चारों की गति नरक की, स्थिति जाव जीव की, घात करे सम्यक्त्व की।

अप्रत्याख्यानी चौक—१ क्रोध, २ मान, ३ माया, ४ लोभ।

१ क्रोध को स्वभाव=तलाव की तेड़, २ मान को स्वभाव=हाथी दांत को थांभो, ३ माया को स्वभाव= मिढें को सींग, ४ लोभ को स्वभाव=नगर को कीच, इन चारों की गति तिर्यंच की, स्थिति एक वर्ष की, घात करे श्रावक का बारा व्रत की।

प्रत्याख्यानी चौक—१ क्रोध, २ मान, ३ माया, ४ लोभ।

१ क्रोध को स्वभाव=रेत में लकीर, २ मान को स्वभाव=बेंत को थांभो, ३ माया को स्वभाव=चालता बैल को मात्रो, ४ लोभ को स्वभाव=गाडा को खञ्जन, इन चारों की गति मनुष्य की, स्थिति चार महीना की, घात करे साधपणे की।

संजल को चौक—१ क्रोध, २ मान, ३ माया, ४ लोभ।

१ क्रोध को स्वभाव=पानी में लकीर, २ मान को स्वभाव=घास को थांभो, ३ माया को स्वभाव=बांस की छाल, ४ लोभ को स्वभाव=हल्दी पतंग को रङ्ग, इन चारों की गति देवता की, स्थिति पन्द्रह दिन की, घात करे यथाख्यात चारित्र की।

नोकषाय का ९ भेद—१ हास्य, २ रति, ३ अरति, ४ भय, ५ शोग, ६ दुर्गच्छा, ७ स्त्री वेद, ८ पुरुष वेद, ९ नपुंसक वेद।

(५) आयुष्य कर्म ४ प्रकारे भोगवे—१ नारकी रो नारकी पणे, २ तिर्यंच रो तिर्यञ्च पणे, ३ मनुष्य रो मनुष्य पणे, ४ देवता रो देवता पणे।

(६) नाम कर्म २८ प्रकारे भोगवे, नाम कर्म का दोय भेद—१ शुभ नाम कर्म, २ अशुभ नाम कर्म।

शुभ नाम कर्म १४ प्रकारे भोगवे—१ इष्टकारी शब्द, २ इष्टकारी रूप, ३ इष्टकारी गंध, ४ इष्टकारी रस, ५ इष्टकारी स्पर्श, ६ इष्टकारी गति, (चलने की), ७ इष्टकारी स्थिति (आयुष्य), ८ इष्टकारी लावण्यता, ९ इष्टकारी यशोकीर्ति, १० इष्टकारी उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषाकार, पराक्रम, ११ इष्टकारी स्वर, (बोली) १२ कान्तकारी स्वर, १३ प्रियकारी स्वर, १४ मनोज्ञ स्वर।

अशुभ नाम कर्म १४ प्रकारे भोगवे—१ अनिष्ट-कारी शब्द, २ अनिष्टकारी रूप, ३ अनिष्टकारी गंध, ४ अनिष्टकारी रस, ५ अनिष्टकारी स्पर्श, ६ अनिष्ट-कारी गति, ७ अनिष्टकारी स्थिति, ८ अनिष्टकारी लाव-ण्यता, ९ अनिष्टकारी कीर्ति, १० अनिष्टकारी उत्थान कर्म, बल, वीर्य, पुरुषाकार,पराक्रम, ११ हीन स्वर, १२ दीन स्वर, १३ अनिष्ट स्वर, १४ अकन्त स्वर।

(७) गोत्र कर्म १६ प्रकारे भोगवे, गोत्र कर्म का दोय भेद्—१ ऊंच गोत्र २ नीच गोत्र।

ऊंच गोत्र ८ प्रकारे भोगवे—१ जाति. २ कुल, ३ बल, ४ रूप, ५ तप, ६ सूत्र, ७ लाभ, ८ ठकुराई (बड़ा-पन) ए आठ बोलां को मद् नहीं करे तो ऊंच गोत्र भोगवे।

नीच गोत्र ८ प्रकारे भोगवे—१ जाति, २ कुल, ३ बल, ४ रूप, ५ तप, ६ सूत्र, ७ लाभ, ८ ठकुराई, ए आठ बोलां को मद् करे तो नीच भोगवे।

(८) अन्तराय कर्म ५ प्रकारे भोगवे—१ दान, २ लाभ, ३ भोग, ४ उपभोग, ५ वीर्य, ए पांच बोलां की अन्तराय देवै तो अन्तराय पावे, अन्तराय नहीं देवे तो नहीं पावे।

आठ कर्मरो १५८ प्रकृति ऊपरे लिखी छै, तिणमें नाम कर्म नी ९३ प्रकृति लेखव्यां १४८ प्रकृति थाय छै, ए १४८ प्रकृति ना जघन्य उत्कृष्टी स्थिति ने अबाधा काल नो यन्त्र लिखिये छै।

ज्ञानावरणीय कर्म की ५ तथा अन्तराय कर्म की ५

अंक		प्रकृति का नाम	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी स्थिति	अबाधाकाल (इतने काल उदय नहीं आवे
१०	१०	ज्ञानावरणीय कर्म की ५ अन्तराय कर्म की ५	अन्तर्मुहूर्त	३० कोड़ाकोड़ सागर	३००० वर्ष

दर्शनावरणीय कर्म की ९

१४	४	चक्षु दर्शनावरणोय १, अचक्षु दर्शनावरणीय २ अवधि दर्शनावरणीय ३, केवल दर्शनावरणीय ४	ऊपरवत्	ऊपरवत्	ऊपरवत्
१९	५	निद्रा १, निद्रानिद्रा २ प्रचला ३ प्रचलाप्रचला ४, थीणोद्धि ५	एक सागर ना सातिया तीन भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग ऊणो	ऊपरवत्	ऊपरवत्

वेदनीय कर्म की २

२०	१	अशातावेदनीय १	उपरवत्	उपरवत्	उपरवत्
२१	१	शातावेदनीय का २ भेद— (१) इर्यावही	दोय समानी	दोय समानी	....
		(२ सम्पराय	१२ मुहूर्त	१५ कोड़ाकोड़ सागर	१५०० वर्ष

मोहनीय कर्म की २८

२२	१	सम्यक्त्व मोहनीय	अन्तर्मुहूर्त	६६ सागर जाझेरो	....
२३	१	मिथ्यात्व मोहनीय	एक सागर तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग उणो	७०कोड़ाकोड सागर	७००० वर्ष
२४	१	मिश्र मोहनीय	अन्तर्मुहूर्त	अन्तर्मुहूर्त	...
३६	१२	प्रत्याक्षानी—क्रोध, मान, माया, लोभ; अप्रत्याक्षानी—क्रोध, मान माया, लोभ; अनन्तानुबंधीय—क्रोध, मान, माया लोभ	एक सागरा सातिया चार भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग उणो	४०कोड़ाकोड़ सागर	४००० वर्ष

अङ्क		प्रकृति मा नाम	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी स्थिति	अबाधाकाल (इतने काल उदय नहीं आवे)
४०	४	संज्वलनो क्रोध, मान, माया, लोभ,	क्रोधरी २ मास, मानरी १ मास, मायारी ॥ मास, लोभरी अंतर्मुहूर्त	४० कोड़ाकोड़ सागर	४००० वर्ष
४१	१	स्त्री वेद	एक सागररा सातिया डोढ भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग उणो	१५ कोड़ाकोड़ सागर	१५०० वर्ष
४२	१	पुरुष वेद	आठ वर्ष	१० कोड़ाकोड़ सागर	१००० वर्ष
४७	५	नपुंसक वेद, अरति, भय, शोक दुगंछा	एक सागररा सातिया दोय भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग उणो	२० कोड़ाकोड़ सागर	२००० वर्ष
४९	२	हास्य, रति	एक सागररो सातियो एक भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग उणो	१० कोड़ाकोड़ सागर	१००० वर्ष

आयुष्य कर्म की ४

५१	२	नरकायु, देवायु	दश हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त अधिक	३३ सागर कोड़ पूर्वरो तीजो भाग अधिक (लारलो भव आश्रिय)	...

५३	२	तिर्यंचायु मनुष्यायु	अन्तर्मुहूर्त	३ पल्य क्रोड़ पूर्वरो तीजो भाग अधिक	

नाम कर्म की ९३

५९	६	नरकगति, नरकानुपूर्वि, वैक्रिय नो चौक (शरीर, अङ्गोपाङ्ग, बंधन, संघातन)	एक हजार सागररा सातिया दोय भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग उणो	२० क्रोड़ाक्रोड़ सागर	२००० वर्ष
६१	२	तिर्यचगति तिर्यचानुपूर्वि	सर्व	नपुंसक वेद जिम जाणवो	
६३	२	मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वि	सर्व	स्त्री वेद जिम जाणवो	
६५	२	देवगति, देवानुपूर्वि	एक हजार सागररो सातियो एक भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग उणो	१० क्रोड़ाक्रोड़ सागर	१००० वर्ष
७७	१२	एकेन्द्री जात, पंचेन्द्री जात, औदारिक नो चौक (शरीर, अङ्गोपाङ्ग, बंधन, संघातन) तैजस, कार्मण दोनां नो तृक (शरीर, बंधन, संघातन)	सर्व	नपुंसक वेद जिम जाणवो	
८०	३	बेइन्द्री जात, तेइन्द्री जात, चौइन्द्री जात	एक सागररा पैंतीसा नव भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग उणो	१८ क्रोड़ाक्रोड़ सागर	१८०० वर्ष

अङ्क		प्रकृति ना नाम	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी स्थिति	अबाधा काल (इतने काल उदय नहीं आवे)
८५	५	आहारिक नो चोक (शरीर, अंगोपांग, बंधन, संघातन), तीर्थंकर नाम	अन्तो कोड़ाकोड़ सागर	अन्तो कोड़ाकोड़ सागर	...
८७	२	वज्रऋषभ नाराच संघयन, समचतुरंस संठाण	सर्व	हास्य जिम जाणवो	
८६	२	ऋषभ नाराच संघयन न्यग्रोध परिमण्डल संठाण	एक सागररा पैंतीसा छव भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग उणो	१२ कोड़ाकोड़ सागर	१२०० वर्ष
९१	२	नाराच संघयन, सादिज्य संठाण	एक सागररा पैंतीसा सात भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग उणो	१४ कोड़ाकोड़ सागर	१४०० वर्ष
९३	२	अर्ध नाराच संघयन, वामन संठाण	एक सागररा पैंतीसा आठ भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग उणो	१६ कोड़ाकोड़ सागर	१६०० वर्ष
९५	२	किलक संघयन कुब्ज संठाण	सर्व तीन	विकलेन्द्री जिम जाणवो	
९७	२	छेवटो संघयन हुण्डक संठाण	सर्व	नपुंसक वेद जिम जाणवो	

९९	२	शुक्ल वर्ण, मधु रस	सर्व	हास्य जिम जाणवो	
१०१	२	पीलो वर्ण, खाटो रस	एक सागरना अठाइसा पांच भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग उणो	१२॥ कोड़ाकोड़ सागर	१२५० वर्ष
१०३	२	लाल वर्ण, कषायलो रस	एक सागररा अठाइसा छव भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग उणो	१५ कोड़ाकोड़ सागर	१५०० वर्ष
१०५	२	नीलो वर्ण, कड़वो रस	एक सागररा अठाइसा सात भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग उणो	१७॥ कोड़ाकोड़ सागर	१७५० वर्ष
१०७	२	कालो वर्ण, तीखो रस	सर्व	नपुंसक वेद जिम जाणवो	
१०९	२	सुगन्ध, प्रशस्त विहाय गति	सर्व	हास्य जिम जाणवो	
१११	२	दुर्गन्ध, अप्रशस्त विहाय गति	सर्व	नपुंसक वेद जिम जाणवो	
११५	४	खरदरो, भारी, ठण्डो, लूखो	सर्व	नपुंसक वेद जिम जाणवो	
११९	४	सुंहालो, हलको, उन्हो चोपड्यो	सर्व	हास्य जिम जाणवो	
१२६	७	पराघात, उस्वास, आतप, उद्योत, अगुरुलघु, निर्मान, उपघात	सर्व	नपुंसक वेद जिम जाणवो	

अङ्क		प्रकृति ना नाम	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी स्थिति	अबाधाकाल* (इतने काल उदय नहीं आवे)
१२९	३	सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्ता	सर्व तीन	विकलेन्द्री जिम जा	णवो
१४०	११	त्रस, बादर, प्रत्येक पर्याप्ता स्थावर, अस्थिर, अशुभ दुर्भाग्य दुःस्वर, अनादेय, अयशःकीर्ति	सर्व	नपुंसक वेद जिम जा	णवो
१४५	५	स्थिर, शुभ, शौभाग्य, सुस्वर, आदेय	सर्व	हास्य जिम जाणवो	
१४६	१	यशःकीर्ति	८ मुहूर्त	१० क्रोड़ाक्रोड़ सागर	१००० वर्ष

गोत्र कर्म को २

१४७	१	उच्च गोत्र	ऊपरवत्	ऊपरवत्	ऊपरवत्
१४८	१	नीच गोत्र	सर्व	नपुंसक वेद जिम जा	णवो

नोट—ऊपरे यन्त्र दियो तिकेमें सर्व स्थिति समुच्चय जीव आश्री छे। कर्म प्रकृति के थोकडे के ऊपर में लिख्यो छे कि "श्री पन्नवणाजी पद २३में के अनुसारे कहे छे" ते कितनोक बातां दूसरा सूत्र तथा ग्रन्थांसे सग्रह करने लिखी छे।

* यह उत्कृष्टो अबाधाकाल छे। कर्म बन्ध कियां बाद उदय में आवे तिकेरे बिचला काल ने अबाधाकाल कह्यो।

अथ काय स्थिति।

न०	काय स्थिति	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी काय स्थिति	जघन्य अन्तरा	उत्कृष्ट अन्तरा
१	जीवको जीव रहै तो	सदाकाल रहै	सदाकाल रहै	०	०
२	नारकी को नारकी रहै तो	१० हजार वर्ष	३३ सागर	अन्तर्मुहूर्त्त	अनन्तो काल
३	तिर्यंच को तिर्यंच रहै तो	अतर्मुहूर्त्त	अनन्तो काल	एवम्	प्रत्येक सागर जाझेरो
४	तिर्यंचणी को तिर्यंचणी रहै तो	एवम्	३ पल्य प्रत्येक पूर्व कोड़	एवम्	अनन्तो काल
५	मनुष्यरो मनुष्य रहै तो	एवम्	३ पल्य प्रत्येक पूर्व कोड़	एवम्	अनन्तो काल
६	मनुष्यणी री मनुष्यणी रहै तो	एवम्	३ पल्य प्रत्येक पूर्व कोड़	एवम्	अनन्तो काल
७	देवता को देवता रहै तो	१० हजार वर्ष	३३ सागर	एवम्	अनन्तो काल
८	देवीरी देवी रहै तो	१० हजार वर्ष	५५ पल्य	एवम्	अनन्तो काल
९	सिद्धां को सिद्धा रहै तो	साइया	अपज्जवसिया	०	०

नारकी सूं लगाय ने देव्यां तांई ए ७ बोल अपर्याप्ता रहै तो ज० उ० अन्तर्मुहूर्त्त। नारकी देवता रो पर्याप्ता रहै तो ज० १० हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त ऊणो उ० ३३ सागर अन्तर्मुहूर्त्त ऊणो।

देव्यां को पर्याप्तो रहै तो ज० १० हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त ऊणो उ० ५५ पल्य अन्तर्मुहूर्त्त ऊणो।

तिर्यञ्च तिर्यञ्चणी मनुष्य मनुष्यणी को पर्याप्तो रहै तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्टो ३ पल्य अन्तर्मुहूर्त्त ऊणो।

नं०	काय स्थिति	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी कायस्थिति	जघन्य अंतरो	उत्कृष्ट अन्तरो
१०	सइन्द्रिये को सइन्द्रियो रहै तो	अणाइअप-जवसिया	अणाइया सपज्जवसिया	०	०
११	एकेन्द्री रो एकेन्द्री रहै तो	अन्तर्मुहूर्त्त	असंख्याता पुद्गल परावर्त्तन	अन्तर्मुहूर्त्त	२ हजार सागर जाझेरो
१४	बेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री ए ३	एवम्	संख्यातो काल	एवम्	अनन्तो काल
१५	पंचेन्द्री को पंचेन्द्री रहै तो	एवम्	१हजार सागर जाझेरो	एवम्	अनन्तो काल
१६	अणेन्द्री को अणेन्द्री रहै तो	साइया	अपज्जवसिया	०	०

स इन्द्रि जाव पंचेन्द्रिया तांई अपर्यात्तो रहै तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्टो अन्तर्मुहूर्त्त ।

स इन्द्रिया पंचेन्द्रिया को पर्यात्तो रहै तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उ० प्रत्येक एक सौ सागर जाझो ।

एकेन्द्रिया को पर्यात्तो रहै तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्टा संख्याता हजार वर्ष ।

बेइन्द्रिया को पर्यात्तो रहै तो ज० अन्तर्मुहूर्त्त उ० संख्याता वर्ष ।

तेइन्द्रिया को पर्यात्तो रहै तो ज० अन्तर्मुहूर्त्त उ० संख्याता दिन रात

चौइन्द्री को पर्यात्तो रहै तो ज० अन्तर्मुहूर्त्त उ० संख्याता मास ।

नं०	काय स्थिति	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी कायस्थिति	जघन्य आंतरो	उत्कृष्ट अन्तरो
१७	सकायी रो सकायी रहै तो	अणाइया अपज्जवसिया	अणाइया सपज्जवसिया	०	०

२१	पृथ्वी। अप्प। तेउ। वाउ ए४	अन्तर्मुहूर्त्त	असख्यातो काल	अंतर्मुहूर्त्त	अनतो काल
२२	वनस्पति को वनस्पति रहैं तो	एवम्	अनन्तो काल	एवम्	असख्यातो काल
२३	तस को तस रहै तो	एवम्	२हजार सागर जाभेरो	एवम्	अनतो काल
२४	अकायी रो अकायी रहैं तो	आद छै	अंत नहीं	०	०

सकाई जाव तसकाय तांई अपर्याप्तो रहै तो ज० उ० अन्तर्मुहूर्त्त।

सकाय तसकाय को पर्याप्तो रहै तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्टो प्रत्येक-सौ सागर जाभो।

पृथ्वी अप्प वायु वनस्पति को पर्याप्तो रहै तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्टो संख्याता हजार वर्ष।

तेउ काय को पर्याप्तो रहै तो ज० अंतर्मुहूर्त्त उ० संख्याता दिन रात।

२६	समचै सूक्ष्म १ सूक्ष्मवनस्पति२	अन्तर्मुहूर्त्त	असख्यातो काल	अतर्मुहूर्त्त	असंख्यातो काल
३०	सूक्ष्म पृथ्वी। सूक्ष्म अप्प। सूक्ष्म तेउ। सूक्ष्म वायु ए४	एवम्	असख्यातो काल	एवम्	अनन्तो काल

ऊपर सूक्ष्म रा ६ बोल कह्या तैह नो पर्याप्तो अपर्याप्तो रहै तो जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्त।

३२	समचै वादर १ बादर वनस्पति २	अंतर्मुहूर्त्त	असख्यातो काल	अन्तर्मुहूर्त्त	असख्यातो काल
३७	वादर पृथ्वी। वादर अप्प। वादर तेउ। वादर वाउ। प्रत्येक शरीरी वनस्पति ए५	एवम्	७०कोड़ाकोड़ सागर	एवम्	अनन्तो काल

३८	वादर निगोद	अन्तर्मुहूर्त्त	७० कोड़ाकोड़ सागर	अन्तर्मुहूर्त्त	असख्यातो काल
३६	समचै निगोद	एवम्	१॥ पुद्गल परावर्त्तन	एवम्	असख्यात काल
४०	वादर तस	एवम्	२हजार सागर जाभेरा	एवम्	अनन्तो काल

यहनां पर्याप्ता में अपर्याप्ता पूर्वे कह्या छै तिम जाणवा।

न०	काय थिति	जघन्य थिति	उत्कृष्टी काय थिति	जघन्य आंतरा	उत्कृष्ट आंतरा
४१	सजोगी रो सजोगी रहै तो	अणाइया अपजवसिया	अणाइया सपजवसिया	०	०
४२	मन जोगी १ वचन जोगी २	१ समो	अन्तर्मुहूर्त्त	अंतर्मुहूर्त्त	अनतो काल
४४	काय जोगी	अन्तर्मुहूर्त्त	अनन्तो काल	१ समो	अतन्र्मुहूर्त्त
४५	अजोगी रो अजोगी रहै तो	साइया अपजवसिया		०	०
४६	सवेदी रो सवेदी रहै तो	अणाइया अपजवसिया अणाइया सपजवसिया साइया सपजवसिया तेहनी थित जघन्य तो अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट देशूणो अर्द्धपुद्गल परावर्त्तन			
४७	स्त्री वेदी को स्त्री वेदी रहै तो	१ समो	११०।१००।१८।१४ प्रत्येक पल्य प्रत्येक पूर्व कोड़	अतर्मुहूर्त्त	अनतो काल
४८	पुरुष वेद को पुरुष वेद रहै तो	अन्तर्मुहूर्त्त	प्रत्येक सौ सागर जाभेरो	१ समो	अनतो काल

न०	काय स्थिति	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी काय स्थिति	जघन्य अन्तरा	उत्कृष्ट अन्तरा
४६	नपुसक वेद	१ समो	अनंतो काल	अन्तर्मुहूर्त्त	प्रत्येक सौ सागर
५०	उपशम अवेदी	१ समो	अन्तर्मुहूर्त्त	एवम्	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
५१	क्षीण अवेदो	साइया अपज्जवसिया		०	०
५२	सकषाई रो सकषाई	३ भेद सवेदोनी परे		०	०
५५	क्रोध। मान मा या कषाई ए३	अंतर्मुहूर्त्त	अन्तर्मुहूर्त्त	१ समो	अन्तर्मुहूर्त्त
५६	लोभ कषाई रो लोभ कषाई	१ समो	एवम्	अन्तर्मुहूर्त्त	एवम्
५७	उपशम अकषाई	१ समो	एवम्	एवम्	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
५८	क्षीण अकषाई	साइया सपज्जवसिया		०	०
५६	सलेशी रो सलेशी	२ भेद सजोगीनी परे		०	०
६०	किशन लेशी रा किशन लेशी	अन्तर्मुहूर्त्त	३३सागर अन्तर्मुहूर्त्त अधिक	अन्तर्मुहूर्त्त	३३ सागर अंतर्मुहूर्त्त अधिक
६१	नील रो नील	एवम्	१० सागर पल्य रो १ असंख्यातमो भाग	एवम्	एवम्
६२	कापोत रो कापोत	एवम्	३ सागर पल्यरो असंख्यात भाग	एवम्	एवम्
६३	तेजु रो तेजु	एवम्	२ सागर पल्य रो असंख्यातमो भाग	एवम्	अनन्तो काल
६४	पदम रो पदम	एवम्	१०सागर अंत०अधिक	एवम्	अनन्तो काल

नं०	काय थिति	जघन्य थिति	उत्कृष्टी काय थिति	जघन्य आंतरा	उत्कृष्ट आंतरा
६५	शुक्ल रो शुक्ल	अन्तर्मुहूर्त्त	३३ सागर अन्तर्मुहूर्त्त अधिक	अन्तर्मुहूर्त्त	अनतो काल
६६	अलेशी रो अलेशी	साइया अपज्जवसिया		०	०
६७	समदृष्टि रो समदृष्टि रहै तो	साइया अपज्जवसिया साइया सपज्जवसिया तेहनी थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उ० ६६ सागर जाझेरी		अन्तर्मुहूर्त्त	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
६८	सास्वादन समकिती	६ आवलि	६ आवलिका	एवम्	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
६९	उपशम समकिती	१ समो	अन्तर्मुहूर्त्त	एवम्	एवम्
७०	वेदक समकिती	१ समो	१ समो	०	०
७१	क्षायक समकिती	साइया अपज्जवसिया		०	०
७२	क्षयोपशम समकिती	अन्तर्मुहूर्त्त	६६ सागर जाझेरी	अन्तर्मुहूर्त्त	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
७३	मिथ्याती को मिथ्याती	३ भेद सवेनीनी परै		एवम्	६६ सागर जाझेरो
७४	समिथ्याती	अन्तर्मुहूर्त्त	अन्तर्मुहूर्त्त	एवम्	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
७५	सज्ञानी रो सज्ञानी	२ भेद समदृष्टि ज्यूं		एवम्	एवम्
७७	मतज्ञानी श्रुतज्ञानी	अन्तर्मुहूर्त्त	६६ सागर जाझेरो	एवम्	एवम्
७८	अवधज्ञानी	१ समो	६६ सागर जाझेरो	एवम्	एवम्

नं०	काय थिति	जघन्य थिति	उत्कृष्टी काय थिति	जघन्य आंतरा	उत्कृष्ट आंतरा
७९	मनपर्य्यवज्ञानी	१ समो	कोड़ पूर्व देशूणो	अंतर्मुहूर्त्त	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
८१	केवलज्ञान १ केवल दर्शन२	साइया अपज्जवसिया		०	०
८४	सअज्ञानी। मत अ० श्रुतअ० ए३	३ भेद सवेदी नी परै		अंतर्मुहूर्त्त	६६ सागर जाझेरो
८५	विभग अज्ञानी रो विभग०	१ समो	३३ सागर कोड़ पूर्व	एवम्	अनंतो काल
८६	चक्षु दर्शन	अन्तर्मुहूर्त्त	हजार सागर जाझेरो	एवम्	अनंतो काल
८७	अचक्षु दर्शन	२ भेद सइन्द्रियानी परै		०	०
८८	अवधि दर्शन	१ समो	२ छासठ सागर जाझो	अंतर्मुहूर्त्त	अनंतो काल
९१	सजती सामायक छेदोस्थापनी चारित्र ३	१ समो	कोड़ पूर्व देश ऊणो	एवम्	अर्द्ध पुद्गल परावर्त्त देश ऊणो
९२	पड़िहार विशुद्धि चारित्र	१ समो	२९वर्ष ऊणो कोड़ पूर्व	एवम्	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
९३	सूक्ष्म सपराय चारित्र	१ समो	अन्तर्मुहूर्त्त	एवम्	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
९४	यथाख्यात चारित्र	१ समो	देशूणो कोड़ पूर्व	एवम्	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
९५	सजता सजती	अन्तर्मुहूर्त्त	देशूणो कोड़ पूर्व	एवम्	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
९६	असजती रो असजती	३ भेद सवेदी ज्यू कहणां		१ समो	देशूणो कोड़ पूर्व
९७	नो सजती नो असजती	साइया अपज्जवसिया		०	०

न०	काय स्थिति	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी कायस्थिति	जघन्य अंतरो	उत्कृष्ट अन्तरो
९९	सागार बहुत्ता १ अणागार बहुत्त २	अंतर्मुहूर्त्त	अंतर्मुहूर्त्त	अन्तर्मुहूर्त्त	अन्तर्मुहूर्त्त
१००	छद्मस्थ आहारिक	२समाऊणो खुलक भव	असंख्यातो काल	१ समो	२ समा
१०१	केवली आहारिक	अन्तर्मुहूर्त्त	कोड़ पूर्व देशूणो	३ समा	३ समा
१०२	छद्मस्थ अणाहारिक	१ समो	२ समा	२ समानो खुड़ागभव	असंख्यातो काल
१०३	सजोगी केवली अणाहारिक	३ समा	३ समा	०	०
१०४	अजोगी केवली अणाहारिक	अन्तर्मुहूर्त्त	अन्तर्मुहूर्त्त	०	०
१०५	सिद्ध अणाहारी	साइया अपजवसिया		०	०
१०६	भासक रो भासक	१ समो	अन्तर्मुहूर्त्त	अस्तर्मुहूर्त्त	अनन्तो काल
१०७	ससारी अभासक	अन्तर्मुहूर्त्त	अनन्तो काल	१ समो	अन्तर्मुहूर्त्त
१०८	सिद्ध अभासक	साइया अपज्जवसिया		०	०
१०९	संसार परत	अन्तर्मुहूर्त्त	अर्द्ध पुद्गल देशूणो	०	०

नं०	काय स्थिति	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी कार्यस्थिति	जघन्य आंतरो	उत्कृष्ट अन्तरो
११०	ससार अपरत	दो भेद सजोगी नी परै		०	०
१११	काय परत	अन्तर्मुहूर्त्त	असख्यातो काल	अंतर्मुहूर्त	अनन्तो काल
११२	काय अपरत	एवम्	अनन्तो काल	एवम्	असख्यातो काल
११३	पर्यासो रो पर्यासो	एवम्	प्रत्येक सौ सागर जाभो	एवम्	अंतर्मुहूर्त्त
११४	अपर्यासो	एवम्	अन्तर्मुहूर्त्त	एवम्	प्रत्येक सौ सागर जाभेरो
११५	नो पर्यासो नो अपर्यासो	साइया अपजवसिया		०	०
११६	सूक्ष्म रो सूक्ष्म	अन्तर्मुहूर्त्त	असख्या काल	अंतर्मुहूर्त	असख्यातो काल
११७	वादर रो वादर	एवम्	असख्या काल	एवम्	असख्यातो काल
११८	नो सूक्ष्म नो वादर	साइया अपजवसिया		०	०
११९	सन्नी रो सन्नी	अन्तर्मुहूर्त्त	प्रत्येक सौ सागर जाभो	अंतर्मुहूर्त्त	अनन्तो काल
१२०	असन्नी रो असन्नी रहै तो	अन्तर्मुहूर्त्त	अनन्तो काल	एवम्	प्रत्येक सौ सागर जाभो
१२१	नोसन्नी नो असन्नी	साइया अपजवसिया		०	०

नं०	काय थिति	जघन्य थिति उत्कृष्टी काय थिति	जघन्य आंतरा	उत्कृष्ट अन्तरा
१२२	भोई रो भोई रहै तो	आद नहीं अन्त छै	०	०
१२३	अभोई रो अभोई रहै तो	आद नहीं अन्त नहीं	०	०
१२४	नो भोई नो अभोई	आंद छै अन्त नहीं	०	०
१२५	चरम रो चरम रहै तो	आद नहीं अन्त छै	०	०
१२६	अचरम रो अचरम रहै तो	आद नहीं अन्त नहीं ते अभोई आद तो छै अन्त नहीं ते सिद्ध		

इति कायस्थिति रो थोकड़ो -पन्नवणा पद १८ मां थी

आंतरा जीवाभिगम थी समाप्तम् ॥

श्री जयाचार्य कृत—

भ्रम विध्वंसन की हुण्डी।

मिथ्यात्वि क्रियाऽधिकारः।

१ बाल तपस्वी ने सुपात्र दान, दया, शीलादि करी मोक्ष मार्ग नो देश थकी आराधक कह्यो।

(साख सूत्र भगवती श० ८ उ० १०)

२ प्रथम गुणठाणा नो धणी सुमुख नामे गाथापति, सुदत्त नामा अणगार ने सुपात्र दान देई परित संसार करी मनुष्य नो आउषो बांध्यो।

(साख सूत्र सुखविपाक अ० १)

३ मेघकुमार को जीव मिथ्याती थको हाथी के भव में सुसला री दया पाली परित संसार कीधो।

(साख सूत्र ज्ञाता अ० १)

४ गोशाला नो श्रावक सकडालपुत्र, भगवान ने त्रिण प्रदक्षिणा देई वंदना कीधी।

(उपाशक दशांग अ० ७)

५ मिथ्याती भली करणी लेखै सुव्रती कह्यो छै।

(साख सूत्र उत्तराध्ययन अ० ७ गा० २०)

६ क्रियावादी सम्यग्दृष्टि (मनुष्य तिर्यंच) एक वैमाणिक टाल और आऊषो न बांधै।

(साख सूत्र भगवती श० ३० उ० १)

७ मिथ्याती मास २ खमण तप करै तथा सुई नी अग्र पै आवै तेतलाज अन्न नो पारणो करे, पिण सम्यग्दृष्टि ना चारित्र धर्म नी सोलमी कला पिण नावै तेहनो न्याय।

(उत्तराध्ययन अ० ६ गा० ४४)

८ मिथ्याती मास २ खमण तप करै, पिण माया थी अनन्त संसार रुलै।

(सूयगडांग श्रुतस्कन्ध १ अ० २ उ० १ गा० ६)

६ जीव अजीव जाणै नहीं तेहना पचखाण दुपचखाण कह्या तेहनो न्याय।

[भगवती श० ७ उ० २]

१० भगवत दीक्षा लियां पहली, २ वर्ष झाझा (अधिका) :घर में विरक्त पणै रह्या तथा काचो पाणी न भोगव्यो।

[प्रथम आचाराङ्ग अ० ६ उ० १ गा० ११]

११ जे तत्त्व ना अजाण मिथ्याती, त्यांरो अशुद्ध प्राक्रम छै ते संसार नो कारण छै। पिण निर्जरा नो

कारण नथी। (पिण शुद्ध प्राक्रम तो निर्जरा नोहिज कारण छै, संसार नो कारण नथी।

[सूयगडांग श्रु० १ अ० ८ गा० २३]

(क) सम्यग्दृष्टि नो शुद्ध प्राक्रम छै, ते सब निर्जरा नो कारण पिण संसार नो कारण नथी (पिण-अशुद्ध प्राक्रम तो संसार नोहिज कारण, निर्जरा नो कारण नथी।

[सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ८ गा० २४]

१२ भगवत दीक्षा लेतां इम कह्यो—आज थी सर्वथा प्रकारे मोने (मुझ ने) पाप करवो कल्पै नहीं। इम कही सामायक चारित्र आदर्यो।

[अचाराङ्ग श्रु० २ अ० १५]

१३ एक बेला रा कर्म बाकी रह्यां अनुतर विमाण में जाई उपजै।

[भगवती श० १४ उ० ७]

१४ प्रथम गुणस्थान नी शुद्ध करणी छै, ते आज्ञा मांय छै। तेहनो न्याय।

१५ प्रथम गुणस्थान ने निर्वद्य कर्म नो क्षयोपशम कह्यो।

[समवायांग समवाय १४]

१६ अप्रमादी साधु ने अणारम्भी कह्या।

[भगवती श० १ उ० १]

१७ असोचाकेवली अधिकारे इम कह्यो—तपस्यादिक थी समदृष्टि पामै ।

[भगवती श० ६ उ० ३१]

१८ सूरयाभ ना अभियोगिया देवता भगवान ने वांद्या तिवारे भगवान कह्यो—ए वन्दना रूप तुम्हारो पूराणो आचार छै १ ए तुम्हारो जीत आचार छै २ ए तुम्हारो कार्य छै ३ ए वंदना करवा योग्य छै ४ ए तुम्हारो आचरण छै ५ ए वंदना नी म्हारी आज्ञा छै ६ ।

[रायप्रसेणी देवताधिकार]

१९ खन्धक सन्यासी, गौतम ने पूछ्यो, हे गौतम ! तुम्हारा धर्माचार्य महावीर ने वांदां यावत् सेवा करां । तिवारे गौतम कह्यो, हे देवानुप्रिय ! जिम सुख होवे तिम करो पिण विलम्ब मत करो ।

[भगवती श० २ उ० १]

(क) दीक्षा नी आज्ञा पर भगवत पार्श्वनाथ 'अहं सुहं' पाठ कह्यो ।

[पुप्फ चूलया]

२० भगवत श्री महावीर, खन्धक ने पड़िमा वहवानी आज्ञा दीधी ।

[भगवती श० २ उ० १]

२१ तामली तापसनो अनित्य चिन्तवना।

[भगवती श० ३ उ० १]

२२ सोमल ऋषिनी शुद्ध चिन्तवना।

[पुष्फयोपांग अ०३]

२३ छद्मस्थ भगवान श्रीमहावीर नी अनित्य चिन्तवना।

[भगवती श० १५]

२४ अनित्य चिन्तवना ने धर्म ध्यान को भेद कह्यो।

[उववाई]

२५ च्यार प्रकारे देवायु बंधै—सराग सञ्जम पाली १ श्रावक पणो पाली २ बाल तप करी ३ अकाम निर्जरा करी ४ तथा च्यार प्रकारे मनुष्यायु बांधै-- प्रकृति भद्रिक १ प्रकृति बिनीत २ दया परिणाम ३ अमत्सर भाव।

[भगवती श० ८ उ० ६]

२६ गोशाले के शिष्यां के च्यार प्रकार नो तप कह्यो- उग्र तप १ घोर तप २ रस परित्याग ३ जीभ्या इन्द्री वश कीधी ४।

[ठाणांगठाणे ४ उ० २]

२७ अन्य दर्शणी पिण सत्य बचन ने आदस्यो।

[प्रश्न व्याकरण संवरद्वार २]

२८ वाणव्यन्तर ना देवता देवी बनखण्ड ने विषै बैसे,

सूवै जाव क्रीड़ा करै । पूर्व भवे भला प्राक्रम फोडव्या तेहना फल भोगवै ।

[जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति]

२९ मिथ्याती प्रकृति भद्रादि गुण थी वाणव्यन्तर देवता थाय ।

[उववाई प्रश्न ७]

दानाऽधिकारः ।

---

१ असंयती ने दीधां पुन्य पाप को न्याय ।

२ आणन्द श्रावक इह बिधि अभिग्रह लीधो—जे हूं आज थकी अन्य तीर्थी ने अन्य तीर्थी ना देव ने तथा अन्य तीर्थी ना ग्रह्या अरिहन्त ना चैत्य साधु भ्रष्ट थया । ए तीनां प्रति वांदूं नहीं, नमस्कार करूं नहीं, अशनादिक देऊं नहीं, देवाऊं नहीं, बिना बतलायां एक बार तथा घणी वार बोलाऊं नहीं, तथा अशनादिक च्यार आहार देऊं नहीं । अनेरा पास थी दिराऊं नहीं । पिण एतलो आगार—राजा ने आदेशे आगार १ घणा कुटुम्ब नें समुदाय ना आदेशे आगार २ कोई एक बलवन्त ने परवश पणे आगार ३ देवता ने परवश

पणे आगार ४ कुटुम्ब में बडेरो ते' गुरु कहिये तेहने आदेशे आगार ५ अटवी कन्तार ने विषै आगार ६ ए छव छण्डी आगार राख्या तो पोता री कचाई जाणी ने राख्या ।

[उपाशक दशांग अ० १]

३ तथा रूप जे असंयती ने फासू अफासू सूझतो असूझतो अशनादिक दीधां एकान्त पाप निर्जरा नथी ।

[भगवती श० ८ उ० ६]

४ जे साधु कष्ट उपना एम विचारै । जे अरिहन्त भगवन्त निरोगी काया ना धणी, पोता ना कर्म खपावा ने उदेरी ने तप करै । तो हूं लोच ब्रह्म-चर्यादिक अनेक रोगादिक नी वेदना, किम न सहूं । एतले मुझ ने वेदना सम भावे न सहतां, एकान्त पाप कर्म हुवै तो वेदना समभावे सहतां निर्जरा हुवै।

[ठाणांगठाणे ४ उ० ३]

५ साधु नी वेला निन्दा करतो अशनादि देवै तिहां "पड़िलभित्ता" पाठ कह्यो ।

[भगवती श० ५ उ० ६]

(क) तथा साधु ने वंदना नमस्कार करतो थको

अशनादिक देवै तिहां पिण "पड़िलाभित्ता" पाठ कह्यो।

[भगवती श० ५ उ० ६]

६ पोट्टिला आर्या महासतीने अशनादिक दीधा तिहां "पडिलाभे" पाठ कह्यो। ते माटे "पडिलाभेइ" नाम देवा नों छै पिण साधु असाधु जाणवा रो नहीं।

(ज्ञाता अध्ययन १४)

७ साधु ने अशनादिक बहिरावै तिहां "दलएज्जा" पाठ कह्यो छै। ते माटे "दलएज्जा" कहो भावे "पडिलाभेज्जा" कहो दोनों एक अर्थ छै।

(आचारांग श्रु० २ अ० १ उ० ७)

८ सुदर्शन सेठ शुकदेव सन्यासी ने अशनादिक आप्यो तिहां "पडिलाभमाणे" पाठ कह्यो।

(ज्ञाता अ० ५)

६ 'पडिलाभ' नाम देवानोहिज छै।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ५ गा० ३३)

१० आर्द्र मुनि ने विप्रां कह्यो—जो वे हजार कहतां दो हजार ब्राह्मण जिमावै ते महा पुन्य स्कन्ध उपार्जी देवता हुइं। एहवो हमारे वेद में कह्यो छै। तिवारै आर्द्र मुनि वोल्या, हे विप्रों! जे

मांस ना गृद्धी घर घर ने विषै मार्जार नी परै भ्रमण करणहार एहवा बे हजार कुपात्र ब्राह्मणां ने नित्य जिमाड़ै ते जिमाड़नहार पुरुष ते ब्राह्मणां सहित बहु वेदना छै जेहने विषै एहवी महा असह्य वेदना युक्त नरक ने विषै जाइं। अने दया रूप प्रधान धर्म नी निन्दाना करणहार हिंसादिक पञ्च आस्रव नी प्रशंसाना करणहार एहवो जो एक पिण दुःशीलवन्त निर्व्रती ब्राह्मण जिमाड़ै ते महाअन्धकारयुक्त नरक में जाइं। तो जे एहवा घणा कुपात्र ब्राह्मणा ने जिमाड़े तेहनो स्युं कहिवो। अने तमे कहो छो जे जिमाड़णहार देवता हुइं तो हमें कहां छां जे एहवा दातार ने असुरादिक अधम देवता नी पिण प्राप्ति नहीं, तो जे उत्तम वैमाणिक देवता नी गति नी आशा एकान्त निराशा छै।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ६ गा० ४३, ४४, ४५)

११ भग्गु ने पुत्रां कह्यो, वेद भण्यां त्राण शरण न हुवै तथा ब्राह्मण जिमायां तमतमा जाय। (तमतमा ते अंधारा में अंधारो) एहवी नर्क।

(उत्तराध्ययन अ० १४ गा० १२)

१२ श्रावक पिण विप्र जिमाड़ै तेहनो न्याय च्यार प्रकारे नर्कायु बांधे तिणेंकरी ओलखायो।

(भगवती शतक ८ उ० ९)

(क) वलि श्रावक पिण विप्र जिमाड़ै तिण ऊपर बालमर्ण थी अनन्ता नर्क ना भाव। तेह्नो न्याय ।

(भगवती शतक २ उ० १)

१३ जे सावद्य दान प्रशंसै तेह्ने छःकाय नो बध नो वंछणहार कह्यो। अने वर्तमान काले निषेधे त्यांने अन्तराय नो पाड़णहार कह्यो। ते माटे साधु ने वर्त्तमान में मौन राखिवे कही।

(सूयगडाँग श्रु० १ अ० ११ गा० २०, २१)

१४ दान देवै लेवै, इसो वर्त्तमान देखी गुण दूषण कह्णो नहीं।

(सूयगडाँग श्रु० २ अ० ५ गा० ३३)

१५ नन्दण मणिहारो दानशालादिक नो घणो आरम्भ करी मरीने पोतारी बावड़ी मेंज डेडको थयो।

(ज्ञाता अ० १३)

१६ भगवान दश प्रकार ना दान प्ररूप्या। (सावद्य निर्वद्य ओलखणा)

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

१७ दश प्रकार नो धर्म कह्यो (सावद्य निरवद्य ओलखणा) अने दश प्रकार ना स्थविर कह्या लौकिक लोकोत्तर विहुं जाणवा।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

१८ नव विधि पुण्य कह्यो (सावद्य निर्वद्य ओलखणा)

(ठाणाङ्ग ठाणे ६)

१६ च्यार प्रकार ना मेह तिमहिज च्यार प्रकार ना पुरुष, कुपात्र ने कुक्षेत्र जिसा कह्या ।

(ठाणाङ्ग ठाणे ४ उ० ४)

२० शकडालपुत्र गोशाला प्रते कह्यो—हे गोशाला ! तूं मांहरा धर्माचार्य श्री महावीर ना गुण कीर्तन कर्या । ते माटे देऊं छूं तुमने पीढ, फलग, सेज्यादि । पिण धर्म तप ने अर्थे नहीं ।

(उपाशकदशा अ० ७)

२१ मृगालोढा प्रति देखने गौतम, भगवान ने पूछ्यो— हे भगवन्त ! इण पूर्व भवे कांई कुपात्र दान दीधा ? कांई कुशीलादि सेव्या ? अने कांई मांसादि भोगव्या ? तेहना फल ए नर्क समान दुःख भोगवै छै। तो जोवोनी कुपात्र दान ने चौड़े भारी कुकर्म कह्यो ।

(दुःखविपाक अ० १)

२२ ब्राह्मणां ने पापकारी क्षेत्र कह्या ।

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० १४)

२३ पन्द्रह कर्मादान ने व्यापार कह्या ।

(उपाशकदशा अ० १)

२४ भात पाणी थी पोष्यां धर्माधर्म नो न्याय।

(उपाशकदशा अ० १)

२५ तुंगिया नगरी ना श्रावकां ना उघाड़ा वारणा रो न्याय।

(भगवती श० २ उ० ५ टीका में)

२६ श्रावक ना त्याग ते व्रत अने आगार ते अव्रत।

(उववाई प्रश्न २० तथा सूयगडाँग श्रु० २ अ० २)

२७ दश प्रकार ना शस्त्र कह्या तिणमें अव्रत ने भाव शस्त्र कह्यो।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

२८ जे श्रावक देशथकी निवर्त्यो अने देशथकी पच्चखाण कीधा तिणे करी देवता थाय। पिण अव्रत थी देवता न हुवै।

(भगवती श० १ उ० ८)

२६ साधु ने सामायक में वहिरायां सामायक न भांगै तेहनो न्याय।

(भगवती श० ८ उ० ५)

३० श्रावक जिमावै तिण ऊपर महावीर पार्श्वनाथ ना साधु नो न्याय मिलै नहीं।

(उत्तराध्ययन अ० २३ गा० १७)

३१ असोचा केवली, अन्यलिङ्गी थकां पोते तो दीख्या

न देवै। पिण अनेरा पासे दीख्या लेवा नो उपदेश करै।

(भगवती श० ६ उ० ३१)

३२ अभिग्रहधारी अने परिहार विशुद्ध चारित्रियो कारण पड्यां अनेरा साधु ने अशनादि देवै।

(बृहत्कल्प उ० ४ बोल २७)

३३ गृहस्थादिक ने देवो साधु संसार भ्रमण नो हेतु जाणी छोड्यो।

(सूयगडाँग श्रु० १ अ० ६ गा० २३)

३४ गृहस्थी ने दान दियां अने देतां ने अनुमोद्यां चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो।

(निशीथ उ० १५ बोल ७४-७५)

३५ आणन्द ने संथारा में पिण गृहस्थ कह्यो।

(उपाशकदशांग अ० १)

३६ गृहस्थी नी व्यावच कियां, करायां, बलि अनुमोद्यां २८ मो अणाचार कह्यो।

(दशवैकालिक अ० ३ गा० ६)

३७ इग्यारमी पड़िमा में पिण प्रेम बंधण तूट्यो नथी।

(दशा श्रुतस्कन्ध अ० ६)

३८ पड़िमाधारी रे कल्प ऊपर अम्बड़ सन्यासी ना कल्प नो न्याय

(उववाई प्रश्न १४)

३९ अनेरा सन्यासी नो कल्प।

(उववाई-प्रश्न १२)

४० वर्ण नाग नतुओ संग्राम में गयो तिहां एहवो अभिग्रह धार्यो—कल्पै मुझने जे पूर्वे हणै तेहने हणवो। जे न हणै तेहने न हणवो।

(भगवती श० ७ उ० ६)

४१ जे एकेक अन्य तीर्थी थकी गृहस्थ श्रावक देश व्रते करी प्रधान अने सर्व श्रावक थकी साधु सर्व व्रते करी प्रधान।

(उत्तराध्ययन अ० ५ गा० २०)

४२ श्रावक नी आत्मा अधिकरण कही छै। अधिकरण ते छवकाय नो शस्त्र जाणवो।

(भगवती श० ७ उ० १)

(क) भरतजी के घोड़े ने ऋषि की उपमा दीधी। तिमहिज श्रावक ने 'समण भुया' कह्यो पिण ते देशथकी उपमा जाणवी।

(जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ति)

४३ च्यार व्यापार कह्या—मन, वचन, काया और उपकरण। ए च्यारूं व्यापार सन्नी पंचेन्द्रियरे कह्या। ए च्यारूं भूंडा व्यापार पिण १६ दण्डक सन्नी पंचेन्द्रियरे कह्या। अने ए च्यारूं भला व्यापार तो संयती मनुष्यांरेइज कह्या।

(ठाणाङ्ग ठाणे ४ उ० १)

अनुकम्पाऽधिकारः ।

१. असंयती जीवां रो जीवणो बांछणो घणे ठामे वर्ज्यो ते साख रूप बोल ।

२ पोताना कर्म खपावा तथा अनेरा (आर्य क्षेत्र ना मनुष्य) तारिवा निमित्त भगवान धर्म कहै। पिण असंयती जीवां ने बचावा अर्थे नहीं ।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ६ गा० १७-१८)

३ पोताना पाप टालवा भणी नेमनाथ भगवान पाछा फिख्या ।

(उत्तराध्ययन अ० २२ गा० १८-१६)

४ मेघकुमार नो जीव हाथी ने भवे सुसलानी अनुकम्पा कीधी, सुसला ने च्यार नाम करी बोलायो ।

(ज्ञाता अ० १)

(क) तथा मेढाई निग्रन्थ ने छः नामे करी बोलायो।

(भगवती श० २ उ० १)

५ पड़िमाधारी नो कल्प 'बहाय गहाय' पाठ नो अर्थ ।

(दशाश्रुतस्कन्ध अ० ७)

६ राग द्वेष आणी 'मार तथा मत मार' इम कहिवो वर्ज्यो ।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ५ गा० ३०)

७ गृहस्थां ने मांहो मांही लड़ता देखी—एहने हणे

तथा एहने मत हण एहवो मन में पिण विचार न करै।

(आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० १)

८ गृहस्थी ने, साधु 'अग्नि प्रज्वाल तथा बुझाव' इम न कहै।

(आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० १)

९ दश प्रकार नी बांछा कही।

(ठाणांग ठाणै १०)

१० असंयम जीवतव्य बांछणो बर्ज्यो।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १० गा० २४)

११ असंयम जीवणो मरणो बांछणो बर्ज्यो।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १३ गा० २३)

१२ साधु असंयम जीवितव्य ने पूठ देई विचरै।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० १५ गा० १०)

१३ असंयम जीवणो बांछणो बर्ज्यो।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ३ उ० ४ गा० १५)

१४ असंयम जीवणो बांछै तिणने बाल अज्ञानी कह्यो।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ५ उ० १ गा० ३)

१५ साधु आपणी आत्मा ने असंयम जीवितव्य को अर्थी न करै।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० १० गा० ३)

१६ असंयम जीवणो बांछणो बर्ज्यो।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १६)

१७ संयम जीवितव्य बधारवो कह्यो ।

[उत्तराध्ययन अ० ४ उ० ७]

१८ संयम जीवितव्य दुर्लभ कह्यो ।

[सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १]

१९ मिथिला नगरी बलती देखी, नमिराजर्षि साहमों न जोयो । बलि कह्यो म्हारै राग द्वेष करवा माटै वाह्लो दुवाह्लो एक पिण नहीं । ए मिथिलापुरी बलतां थकां मांहरो किञ्चितमात्र पिण बलै नथी । मैं तो (संयम में सुख से जीऊं अने सुख से बसूं छूं) ।

[उत्तराध्ययन अ० ९ गा० १२-१३-१४-१५]

२० देवता, मनुष्य, तिर्यंच ए तीनां नूं माहों मांही विग्रह देखी अमुक नी जय होवो अने अमुक नी अजय होवो एहवो बचन साधु ने बोलणो नहीं ।

[दशवैकालिक अ० ७ गा० ५०]

२१ वायरो, वर्षा, सीत, तावड़ो, राज विरोध रहित, सुभिक्ष पणो, उपद्रव रहित पणो, ए सात बोल हुवो इम साधु ने कहिवो नहीं ।

[दशवैकालिक अ० ७ गा० ५१]

२२ समुद्रपाली चोर ने मरतो देखी वैराग्य पामी चारित्र लीधो पिण चोरनी अनुकम्पा करि छोड़ायो नथी ।

[उत्तराध्ययन अ० २१ गा० ९]

२३ जे साधु पोतानी अनुकम्पा करै पिण अनेरा नी अनुकम्पा न करै।

[ठाणांग ठाणे ४ उ० ४]

२४ अन्यतीर्थी तथा गृहस्थ मार्ग भूलाने साधु मार्ग बतावै तो चौमासी प्रायश्चित्त आवै।

[निशीथ उ० १३ बोल २५]

२५ हिंसादिक अकार्य करता देखी, धर्म उपदेश देई समझावणो तथा अणबोल्यो रहे तथा उठी एकान्त जावणो कह्यो।

[ठाणाङ्ग ठा० ३ उ० ३]

२६ साधु अनेरा जीवां ने भय उपजावै, तो प्रायश्चित कह्यो।

[निशीथ उ० ११ बोल ६४]

२७ गृहस्थ नी रक्षा निमित्ते मन्त्रादिक कियां वलि-अनुमोद्यां चौमासी प्रायश्चित कह्यो।

[निशीथ उ० १३ बोल १४]

२८ चुलणी पिंया, पोषा में माता ने बचायिवा उठ्यो तो ब्रत नियम भाग्या कह्या।

[उपाशक दशा अ० ३]

२९ नावा में पाणी आवतो देखी साधु ने गृहस्थ प्रते बतावणो नहीं।

[अचाराङ्ग श्रु० २ अ० ३ उ० १]

३० साधु अनुकम्पा आणी त्रस जीव ने बांधै बंधावै तथा बांधते प्रते भलो जाणै तथा बंधिया जीवां ने अनुकम्पा आणी छोड़ै, छुड़ावै छोड़ते ने भलो जाणै तो प्रायश्चित कह्यो।

[निशीथ उ० १२ बोल १-२]

३१ साधु कुतूहल निमित्त त्रस जीव ने बांधै बंधावै अने छोड़ै छुड़ावै तो प्रायश्चित कह्यो।

[निशीथ उ० १७ बोल १-२]

३२ जे साधु पच्चखाण भांगै अने भांगता ने अनुमोदे तो दण्ड कह्यो।

[निशीथ उ० १२ बोल ३-४]

३३ गृहस्थ साधु नी अनुकम्पा आणी तैलादि मर्दन करै तिहां 'कोलुण वडियाए' पाठ कह्यो।

[आचाराङ्ग श्रु० २ अ० २ उ० १]

३४ हरिणगवेषी सुलसां नी अनुकम्पा कीधी।

[अन्तगढ़ वर्ग अ० ३ ८]

३५ कृष्णजी डोकरानी अनुकम्पा करी ईंट उपाड़ी।

[अन्तगढ़ वर्ग ३ अ० ८]

३६ हरिकेशी नी अनुकम्पा आणी यक्षे विप्रां ने ऊंधा पाड्या।

[उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ८ से २५ तांई]

३७ धारणी राणी गर्भनी अनुकम्पा आणी मन गमता अशनादिक खाया ।

[ज्ञाता अ० १]

३८ अभयकुमार नी अनुकम्पा आणी देवता मेह वरसायो ।

[ज्ञाता अ० १]

३९ जिन ऋषि करुणा आणी रयणादेवी रे साहमो जोयो ।

[ज्ञाता अ० ९]

४० प्रथम आस्रव द्वार ने करुणा रहित कह्यो ।

[प्रश्न व्याकरण अ० १]

४१ करुणा सहित जिन ऋषि ने रयणा देवी दया रहित परिणामे करि हण्यो ।

[ज्ञाता अ० ९]

४२ सूर्याभ देवतारी नाटक रूप भक्ति कही ।

[राय प्रसेणी]

४३ यक्षे छात्रां ने ऊंधा पाड्या ते हरिकेशीनी व्यावच कही ।

[उत्तराध्ययने अ० १२ गा० ३२]

४४ भगवान शीतल तेजू लब्धि करी गोशाले ने बचायो तिहां 'अणुकम्पणट्ठाए' पाठ कह्यो ।

[भगवती श० १५]

लब्धि अधिकारः ।

१ वैक्रिय तथा तेजस लब्धि फोड़्यां जघन्य ३ उत्कृष्टी ५ क्रिया कही ।

[पन्नवणा पद ३६]

२ आहारिक लब्धि फोड़्यां जघन्य ३ उत्कृष्टी ५ क्रिया कही ।

[पन्नवणा पद ३६]

३ आहारिक लब्धि फोड़ै तिणने प्रमाद आश्री अधिकरण कह्यो ।

[भगवती श० १६ उ० १]

४ जंघाचारण अथवा विद्याचारण लब्धि फोड़ी बिना आलोयां मरै, तो विराधक कह्यो ।

[भगवती श० २० उ० ६]

५ वैक्रिय लब्धि फोड़ै तिणने मायी कह्यो अने आलोयां बिना मरै, तो विराधक कह्यो ।

[भगवती श० ३ उ० ४]

६ सात प्रकारे छद्मस्थ तथा सात प्रकारे केवली जाणीजै ।

[ठाणांग ठाणें ७]

७ अम्बड सन्यासी वैक्रिय लब्धि फोड़ी, सौ घरां

पारणो कीधो ते लोकां ने विस्मय उपजायवा भणी।

[उववाई प्रश्न १४]

८ साधु अनेरा ने विस्मय उपजावै तो चौमासी प्रायश्चित कह्यो।

[निशीथ उ० ११]

प्रायश्चिताऽधिकारः।

१ सीहो अणगार मोटे मोटे शब्दे रोयो।

[भगवती श० १५]

२ अइमुत्त साधु पाणी में पात्री तराई।

[भगवती श० ५ उ० ४]

३ रहनेमी, राजमती ने विषय रूप वचन बोल्यो।

[उत्तराध्ययन अ० २२ गा० ३८]

४ धर्मघोषना साधां नागश्री ब्राह्मणी ने बाजार में हेली निन्दी।

[ज्ञाता अ० १६]

५ सेलक ऋषि ने उसन्नो पासत्थो कह्यो।

[ज्ञाता अ० ५]

६ गोशाला नो जीव विमलवाहन राजा ने सुमङ्गल नामे अणगार, तेजू लब्धिइं करी हणस्ये।

[भगवती श० १५]

७ खंधक नामे अणगार संथारो कीधो तिहां 'आलो-इय पडिक्कन्ते' पाठ कह्यो।

[भगवती श० २ उ० १]

८ तिस्सक मुनि ने छेहड़े तिहां 'आलोइय पडिक्कन्ते' पाठ कह्यो।

[भगवती श० ३ उ० १]

९ कार्तिक सेठ ने छेहड़े तिहां 'आलोइय पडिक्कन्ते' पाठ कह्यो।

भगवती श० १८ उ० २]

१० कषाय कुशील नियण्ठा नो वर्णन।

[भगवती श० २५ उ० ६]

११ दृष्टिवाद नो भणी पिण वचन खलावे।

[दशवैकालिक अ० ८ गा० ५०]

१२ अनुत्तर विमाण ना देवता उदीर्ण मोह नथी, अने क्षीण मोह नथी, उपशांत मोह छै।

[भगवती श० ५ उ० ४]

१३ हाथी अने कुंथुआ के अपचक्खाण की क्रिया समान कही।

[भगवती श० ७ उ० ८]

१४ सर्वे भवी जीव मोक्ष जास्ये ।

[भगवती श० १२ उ० २]

१५ पुद्गलास्तिकाय में ८ स्पर्श कह्या ।

[भगवती श० १२ उ० ५]

गोशालाऽधिकारः ।

१ भगवन्त गौतम ने कह्यो—हे गौतम ! गोशालै मोने कह्यो तुम्हें मांहरा धर्माचार्य अने हूं आपरो धर्मान्तेवासी शिष्य । तिवारे में अङ्गीकार कीधुं ।

[भगवती श० १५]

२ सर्वानुभूति, सुनक्षत्र मुनि गोशाला ने कह्यो—हे गोशाला ! तोने भगवान मूंड्यो । तोने भगवान प्रवर्या दीधी । तोने शिष्य कियो । तोने सिखायो अने तोने बहुश्रुति कियो । तूं भगवान सूंइज मिथ्यात्व पडिवज्जै छै ?

[भगवती श० १५]

३ भगवान पिण कह्यो—हे गोशाला ! मैं तोने प्रवर्या दीधी ।

[भगवती श० १५]

४ गोशाला ने कुशिष्य कह्यो ।

[भगवती श० १५]

गुणवर्णनाऽधिकारः ।

१ गणधरां भगवान ना गुण किया ।

(आचारांग श्रु० १ अ० ६ उ० ४ गा० ८)

२ भगवान, साधां ना अनेक गुण किया ।

(उववाई प्रश्न २१)

३ कौणक ने माता पिता नो विनीत कह्यो ।

(उववाई)

४ श्रावकां ने धर्म ना करणहार कह्या ।

(उववाई प्रश्न २०)

५ गौतम ना गुण कह्या ।

(भगवती शतक १ उ० १)

लेश्याऽधिकारः ।

१ छद्मस्थ तीर्थंकर में कषाय कुशील नियण्ठो कह्यो ।

(भगवती श० २५ उ० ६)

२ कषाय कुशील नियण्ठा में छः लेश्या कही ।

(भगवती श० २५ उ० ६)

३ सामायक चारित्र छेदोस्थापनीय चारित्र में छः लेश्या पावै ।

(भगवती श० २५ उ० ७)

४ छः लेश्या ना लक्षण।

(आवश्यक अ० ४)

५ च्यार ज्ञानवाला साधु में पिण कृष्ण लेश्या कही छै।

(पन्नवणा पद १७ उ० ३)

६ कृष्ण, नील अने कापोत लेश्या में च्यार ज्ञान नी भजना कही।

(भगवती श० ८ उ० २)

७ कृष्णादिक तीन लेश्या प्रमादी साधु में हुवै।

(भगवती श० १ उ० १)

८ तेजू पद्म लेश्या सरागी में हुवै।

(भगवती श० १ उ० २)

९ संयती में पिण कृष्ण लेश्या हुवै।

(पन्नवणा पद १७ उ० १)

वैयावृत्ति अधिकारः।

१ यक्षे छात्रां ने ऊंधा पाड्या ते हरकेशी नी व्यावच कही।

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ३२)

२ सूर्याभ देव नी नाटक रूप भक्ति कही।

(राय प्रसेणी)

३ भगवान ना अङ्गोपाङ्ग ना हाड भक्तिइं करी देवता ग्रहण करै।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

४ बीस बोल करी तीर्थंकर गौत्र बंधै।

(ज्ञाता अ० ८)

५ साता दियां साता हुवै इम कहै ते आर्य मार्ग थी अलगो। समाधि मार्ग थी न्यारो। जिन धर्म री हेलणा रो करणहार। अल्प सुखां रे अर्थे घणा सुखां रो हारणहार। ए असत्य पक्ष अण छांडवे करी मोक्ष नहीं। लोह बाणिया नी परै घणो झूरसी।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ३ उ० ४ गा० ६-७)

६ पांच स्थान के करी श्रमण निग्रंथ ने महा निर्जरा हुवै। तिहां कुल गण संघ साधर्मी साधु ने कह्या।

(ठाणाङ्ग ठाणे ५ उ० १)

७ दश प्रकार नी व्यावच साधुरैइज कही।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

८ पुनः दश प्रकार नी व्यावच साधुरैइज कही।

(उववाई)

९ साधु ना समुदाय ने गण संघ कह्यो।

(भगवती श० ८ उ० ८)

१० सावद्य व्यावच पर भिक्षुगणिराज कृत वार्तिका कहै छै।

११ साधु नी अर्श छेदै तिण वैद्य ने क्रिया कही।

(भगवती शतक १६ उ० ३)

१२ साधु अन्य तीर्थी तथा गृहस्थ पासे अर्श छेदावै तथा कोई अनेरा साधुनी अर्श छेदतां अनुमोदै तो मासिक प्रायश्चित आवै।

(निशीथ उ० १५ बोल ३१)

१३ साधु रो गूमड़ो गृहस्थ छेदै तो साधु ने मने करी अनुमोदनो नहीं तथा वचन अने काया करी करावै नहीं।

(आचारांग श्रु० २ अ० १३)

विनयाऽधिकारः।

१ दोय प्रकार नो विनय मूल धर्म कह्यो साधु ना पञ्च महाव्रत ते साधु नो विनयमूल धर्म अने श्रावक ना १२ व्रत तथा ११ पड़िमा ते श्रावक नो विनयमूल धर्म।

(ज्ञाता अ० ५)

२ पांडुराजा अने पांच पांडव माता कुन्तां सहित नारद् से त्रिप्रदक्षिणा देई वन्दना नमस्कार कियो। घणो विनय कियो।

(ज्ञाता अ० १६)

३ जिन पांडु नारद् नो विनय कियो तिमहिज कृष्ण पिण नारद् नो विनय कियो।

(ज्ञाता अ० १६)

४ साधु गृहस्थादिक ने वांदतो थको अशनादिक जाचै नहीं।

(दशवैकालिक अ० ५ उ० २ गा० २६)

५ अम्बड़ ने चेला धर्माचार्य कही नमोत्थुणं गुण्यो।

(उववाई अ० १३)

६ धर्माचार्य साधु ने कह्या।

(राय प्रसेणी)

७ भरत चक्रवर्ती चक्र रत्न ने नमस्कार कियो।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

८ तीर्थंकर जन्म्या ते द्रव्य तीर्थंकर ने इन्द्र नमोत्थुणं गुण नमस्कार करै।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

६ इन्द्र एहवूं कह्यो जे तीर्थंकर नी जन्म महिमा करूं ते म्हारो जीत आचार छै पिण ए महिमा धर्म हेतु करूं इम नथी कह्यो।

[जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति]

१० तीर्थंकर नी माता ने इन्द्र प्रदक्षिणा देई नमस्कार करै ।

[जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति]

११ अरिहन्तादिक पांच पदांनेज नमस्कार करवो कह्यो ।

[चन्द्र प्रज्ञप्ति गा० २]

१२ सर्वानुभूति अणगार गोशाले ने श्रमण माहण नो हिज विनय करवा कह्यो ।

(भगवती श० १५)

१३ अठारह पाप सूं निवर्त्तै तेहने माहण कह्यो ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १६)

१४ माहण नाम साधुरोहिज कह्यो ।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० १)

१५ त्रस स्थावर त्रिविधे २ न हणै तेहने माहण कह्यो तथा और भी अनेक लक्षण माहणना बताया ।

(उत्तराध्ययन अ० २५ गा० १६ से २६ तांई)

१६ समण माहण सर्व्व अतिथि नो नाम कह्यो ।

(अनुयोग द्वार)

१७ श्रावक ने एतला नामे करी बोलाणो कह्यो— हे श्रावक ! हे उपासक ! हे धार्मिक ! हे धर्मप्रिय ! एहवा नामा करी बोलावणो कह्यो ।

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० ४ उ० १)

आस्रवाऽधिकारः ।

---

१ पञ्च आस्रव द्वार कह्या ।

(ठाणाङ्ग ठा० ५ तथा समवायाङ्ग स० ५)

(क) तथा मिथ्यादृष्टि ने अरूपी कहो ।

(भगवती श० १२ उ० ५)

२ पञ्च आस्रव ने कृष्ण लेश्या ना लक्षण कह्या ।

(उत्तराध्ययन अ० ३४ गा० २१-२२)

३ सम्यक् अने मित्थ्यात्व ने जीव क्रिया कही ।

(ठाणांग ठा० २ उ० १)

४ दश प्रकार नो मित्थ्यात्व कह्यो ।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

५ अठारह पाप में वर्तें तेहिज जीव अने तेहिज जीवात्मा कही ।

(भगवती श० १७ उ० २)

६ जीव अजीव परिणामी रा दश २ भेद कह्या ।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

७ कषाय, जोग, दर्शन ए आत्मा कही ।

(भगवती श० १२ उ० १०)

८ उदय निष्पन्न रा तेतीस बोलां ने जीव कह्या ।

(अनुयोग द्वार)

९ उत्थानादिक ने अरूपी कह्या ।

(भगवती श० १२ उ० ५)

१० क्रोधादिक ने भाव संयोगी कह्या ।

[अनुयोग द्वार]

११ क्रोधादिक ने भाव लाभ कह्यो ।

[अनुयोग द्वार]

१२ अकुशल मनने रूंधवो कह्यो ।

[उववाई]

१३ माठा भाव थी ज्ञानादिक खपै ।

[अनुयोग द्वार]

१४ आस्रव ने, मिथ्या दर्शनादिक ने जीवरा परिणाम कह्या ।

[ठाणाँग ठाणा ६]

सम्वराऽधिकारः ।

१ पंच सम्बर द्वार प्ररूप्या ।

[ठाणाङ्ग ठा० ५ उ० २ तथा समवायाङ्ग स० ५]

२ जीव रा ज्ञानादिक छव लक्षण कह्या ।

[उत्तराध्ययन अ० २८ गा० ११-१२]

३ चारित्र ने जीव गुण परिणाम कह्या ।

[अनुयोग द्वार]

४ सम्बर ने आत्मा कही ।

[भगवती श० १ उ० ६]

५ अठारह पाप ना विरमण ने अरूपी कह्यो ।

[भगवती श० १२ उ० ५]

६ अठारह पाप ना विरमण ने जीव द्रव्य कह्यो ।

[भगवती श० १८ उ० ४]

जीव भेदाऽधिकारः ।

१ विशिष्ट अवधि रहित ने असंज्ञीभूत कह्यो ।

[पन्नवणा पद १५ उ० १]

२ नन्हा बालक तथा बालिका ने असंज्ञीभूत कह्या ।

[पन्नवणा पद ११]

३ आठ सूक्ष्म कह्या ।

[दशवैकालिक अ० ८ गा० १५]

४ तेउ वाउ ने त्रस कह्या ।

[जीवाभिगम प्रश्न १]

५ सम्मूर्च्छिम मनुष्य ने पर्याप्ता अपर्याप्ता बिहुं नामे करी बोलाव्यो ।

[अनुयोग द्वार]

६ असुर कुमार ने उपजती वेलां बे वेद कह्या ।

[भगवती श० १३ उ० २]

—:—

आज्ञाऽधिकारः ।

१ वीतराग ना पग थकी जीव मुवां ईर्यावहि क्रिया कही ।

[भगवती श० १८ उ० ८]

२ सम्यक् मानता ने असम्यक् पिण सम्यक् हुइं ।

[आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ उ० ५]

(क) तीन उदक ना लेप लगावै तिणने सबलो दोष कह्यो ।

[दशाश्रुतस्कन्ध अ० २]

३ पांच मोटी नदी एक मास में बे वार अथवा तीन वार उतरवो कल्पे नहीं ।

[वृहत्कल्प उ० ४]

४ साधु ने नदी उतरवो कह्यो ।

[अचाराङ्ग श्रु० २ अ० ३ उ० २]

५ पाणी में डूबती थकी साध्वी ने साधु बाहिर काढे तो आज्ञा उलंघे नहीं ।

[वृहत्कल्प उ० ६]

६ रात्रि में सिझायदिक ने अर्थे बाहिर जावणो कल्पै ।

[वृहत्कल्प उ० १]

—:—

शीतल आहाराऽधिकारः ।

१ ठण्डो आहार भोगवणो कह्यो ।

[उत्तराध्ययन अ० ८ गा० १२]

२ भगवन्त ठण्डो आहार लीधो कह्यो ।

[आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ६ उ० ४]

३ धन्ने अणगार न्हाखितमे आहार लियो ।

[अनुत्तर उववाई]

४ अरस निरस तथा शीतलादिक आहार भोगवो । साधु ने द्वेष न करिवो ।

[प्रश्न व्याकरण अ० १०]

सूत्र पठनाऽधिकारः ।

१ साधुनेइज सूत्र भणवा री आज्ञा दीधी ।

[प्रश्न व्याकरण अ० ७]

२ साधु सूत्र भणे तिण री मर्यादा कही ।

[व्यवहार उ० १०]

३ अन्य तीर्थी ने तथा गृहस्थी ने साधु सूत्र रूप बांचणी देवे तथा देता ने अनुमोदै तो प्रायश्चित कह्यो ।

[निशीथ उ० १६]

४ आचार्य उपाध्याय नी अणदीधी बांचणी ग्रहै तो प्रायश्चित कह्यो ।

[निशीथ उ० १६]

५ तीन जणा बांचणी देवा अयोग्य कह्या ।

(ठाणांग ठा० ३ उ० ४)

६ श्रावकां ने अर्थ रा जाण कह्या ।

[उववाई प्रश्न २०]

७ निर्ग्रंथ ना प्रवचन ने सिद्धान्त कह्या ।

[सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० २]

८ साधुनेइज शुद्ध धर्म ना प्ररूपणहार कह्या ।

[सूयगडांग श्रु० १ अ० ११ गा० २४]

९ अभाजन ने सूत्र सिखावै त्यांने अरिहन्त नी आज्ञा ना उलंघनहार कह्या ।

[सूर्य प्रज्ञप्ति पाहु० २०]

१० अर्थ ने पिण 'सूय धर्म्म' कह्यो ।

[ठाणांग ठा० २ उ० १]

११ सूत्र आश्री तीन प्रत्यनीक कह्या ।

[भगवती श० ८ उ० ८]

१२ पंचेन्द्रिय ना उपयोग ने श्रुत कह्यो ।

[पन्नवणा पद २३ उ० २]

१३ भावश्रुत ना १० नाम पर्यायवाची कह्या ।

(अनुयोग द्वार)

—:—

निरवद्य क्रियाऽधिकारः ।

१ अठारह पाप सूं निवर्त्यां कल्याणकारी कर्म बंधै ।

[भगवती श० ७ उ० १०]

२ वन्दना करतां नीचा गोत्र खपावै ।

[उत्तराध्ययन अ० २६ बोल १०]

३ धर्मकथा सूं शुभ कर्म बंधे ।

[उत्तराध्ययन अ० २६ बोल २३]

४ व्यावच कियां तीर्थंकर गोत्र बंधै ।

[उत्तराध्ययन अ० २६ बोल ४३]

५ तीन प्रकार शुभ दीर्घायु बंधै ।

[भगवती श० ५ उ० ६]

६ दश प्रकार कल्याणकारी कर्म बंधै ।

[ठाणांग ठाणै १०]

७ अठारह पाप सेयां कर्कश वेदनीय कर्म बंधै अने १८ पाप सूं निवर्त्यां अकर्कश वेदनीय कर्म बंधै ।

[भगवती श० ७ उ० ६]

८ बीस बोलां करी तीर्थंकर गोत्र बंधै ।

[ज्ञाता अ० ८]

९ प्राण, भूत, जीव, सत्व ने दुःख न दियां साता वेदनी कर्म बन्धै ।

[भगवती श० ७ उ० ६]

१० आठ कर्म निपजावा नी करणी जुदी २ कही।

[भगवती श० ८ उ० ६]

११ धर्म रुचि अणगार ने तुम्बो परठवा नी आज्ञा दीधी।

[ज्ञाता अ० १६]

१२ भगवान साधां ने गोशाले सूं चर्चा करने की आज्ञा दीधी तथा सर्वानुभूति ने विनीत कह्यो।

[भगवती श० १५]

१३ गुरु नी आज्ञा आराधै तिण ने विनीत कह्यो।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० २)

—:—

निर्ग्रन्थाहाराऽधिकारः।

१ साधु प्राशुक आहार भोगवै तो ७ कर्म ढीला पाड़ै।

[भगवती श० १ उ० ६]

२ ज्ञान दर्शन चारित्र वहवा ने अर्थे साधु आहार करै।

[ज्ञाता अ० २]

३ साधु मोक्ष ने अर्थे आहार करै।

[ज्ञाता अ० १८]

४ साधु जयणा सूं आहार करै तो पाप कर्म बंधै नहीं।

[दशवैकालिक अ० ४ गा० ८]

५ साधु ना आहार नी बृत्ति असावद्य कही।

[दशवैकालिक अ० ५ उ० १ गा० ९२]

६ निर्दोष आहार ना लेवणहार तथा देवणहार दोनों शुद्ध गति में जावै।

(दशवैकालिक अ० ५ उ० १ गा० १००)

७ छव स्थानके करी साधु आहार करे तो आज्ञा उलंघै नहीं।

[ठाणांग ठा० ६)

—:—

निर्ग्रन्थ निद्राऽधिकारः।

१ साधु रै यत्नाई करी सोवतां पाप बन्धै नहीं।

(दशवैकालिक अ० ४ गा० ८)

२ 'सुत्ते' नाम निद्रावन्त नो छै।

(दशवैकालिक अ० ४)

३ कांइक सुतो कांइक जागतो स्वप्न देखै।

(भगवती श० १६ उ० ६)

४ अभिग्रह धारी साधु तीजी पौरसी में निद्रा मूकै।

(उत्तराध्ययन अ० २६ गा० १८)

५ पाणी ने किनारै निद्रादिक कार्य करना कल्पै नहीं।

(वृहत्कल्प उ० १ बोल १६)

६ अन्तर घर में निद्रा लेणी कल्पै नहीं।

[वृहत्कल्प उ० ३ बोल २१]

७ साधु ने भाव निद्राइं करी जागतो कह्यो।

(आचारांग श्रु० १ अ० ३ उ० १)

एकाकि साधु-अधिकारः।

१ ग्रामादिक का घणा निकाल पैसार हुवै तिहां घणा आगमना जाण बहुश्रुति ने पिण एकाकि पणे न कल्पै।

(व्यवहार उ० ६)

२ ग्रामादिक तथा सरायादिक ने विषै घणा निकाल पैसार हुवै तिहां अगडसुया ते निशीथ ना अजाण स्यांने एकाकि पणै न कल्पै।

(व्यवहार उ० ६)

३ ग्रामादिक ना जूदा २ निकाल हुवै तिहां साधु साध्वी ने भेलो रहिवो कल्पै।

[वृहत्कल्प उ० १ बोल ११]

४ एकलो रहै तिण में आठ दोष कह्या।

(अचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ उ० १)

५ सूत्र अने वय करी अव्यक्त तेह ने एकाकि पणो कल्पै नहीं। तथा सूत्र अने वय करी व्यक्त छै तिण ने पिंण गुरु नीं आज्ञा सूं एकाकि पणो कल्पै पिंण आज्ञा बिना कल्पै नहीं।

(आचारांग श्रु० १ अ० ५ उ० ४)

६ आठ गुणसहित ने एकल पड़िमा योग्य कह्यो। श्रद्धा में सेंठो १ देव डिगायो डिगै नहीं २ सत्य-वादी ३ मेधावी (मर्यादावान) ४ बहुस्सुये (नवमा पूर्वनी तीन वत्थु नो जाण) ५ शक्तिवान ६ कलह-कारी नहीं ७ धैर्यवन्त ८ उत्साह वीर्यवन्त।

(ठाणाङ्ग ठाणे० ८)

७ साधु अने श्रावक विहुं ने धर्मना करणहार कह्या वलि साधु अने श्रावक ने 'सुव्वया' कह्या।

(उववाई प्रश्न २०-२१)

८ घणा साधा में पिण विकाले तथा रात्रि में एकला ने दिशा न जाणो।

(बृहत्कल्प उ० १ बोल ४७)

९ जे ज्ञानादिक ने अर्थे गुरुवादिक नी सेवा करै तो गच्छ मध्यवर्ती साधु निपुण सखाइयो वांछै।

(उत्तराध्ययन अ० ३२)

१० राग द्वेष ने अभावे एकलो ऊभो रहै पिण भिख्यार्यां ने उल्लंघी न जाय।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० ३३)

११ राग द्वेष ने अभावे एकलो कह्यो।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० १०)

१२ जे हूं राग द्वेष ने अभावे ज्ञानादि सहित एकलो विचरस्यूं इम विचारी दीक्षा लेवै।

(सूयगडाँग श्रु० १ अ० ४ उ० १ गा० १)

१३ घर छांडी राग द्वेष ने अभावे एकलो विचरै।

(उत्तराध्ययन अ० १५ गा० १६)

१४ तीन मनोरथ में चिन्तवै जे किंवारे हूं एकलो थई दशविधि यति धर्मधारी विचरस्यूं तेह नो न्याय।

१५ गुरु कह्यो—हे शिष्य ! तोने एकलपणो म होज्यो।

(आचारांग श्रु० १ अ० ५ उ० ४)

उच्चार पासवणाऽधिकारः ।

१ बड़ी नीति या लघु नीति परठी ने वस्त्रे करी पूंछै नहीं तथा पूंछता ने अनुमोदै नहीं, तो प्रायश्चित कह्यो।

(निशीथ उ० ४ बोल ३७)

अल्पपाप बहु निर्जराऽधिकारः ।

१ जे श्रावक साधु ने सचित अने असूझतो देवै तो अल्प पाप बहु निर्जरा हुवै तेह नो न्याय ।

(भगवती श० ८ उ० ६)

२ साधु ने अप्राशुक अणेषणीक आहार दीधां अल्पायुष बान्धै ।

(भगवती श० ५ उ० ६)

३ साधु रै अशुद्ध आहार अभक्ष कह्यो ।

(भगवती श० १८ उ० १०)

४ श्रावक ने प्राशुक एषणीक ना देवणहार कह्या ।

(उववाई प्रश्न २०)

५ आनन्द श्रावक कह्यो कल्पै मुझ ने श्रमण निग्रंथ ने प्राशुक एषणीक अशनादिक देवो ।

(उपाशक दशा अ० १)

(क) आधा कर्मी अने असूझतो आहार ए निर्वद्य छै एहवो मन में धारै तथा प्ररूपै ते विना आलोयां मरे तो विराधक कह्यो ।

(भगवती श० ५ उ० ६)

(ख) जे श्रावक प्राशुक एषणीक अशनादिक साधु ने देई समाधि उपजावे, तो पाछो समाधि पावै ।

(भगवती श० ७ उ० १)

६ शुद्ध व्यवहार करी ने आधाकर्मी लियो निर्दोष जाणी ने तो पाप न लागै।

(सूयगडांग श्रु० २ उ० ५ गा० ८-६)

(क) वीतराग जोयर चाले तेहथी कुकुटादिक ना अण्डादिक जीव हणीजै तेह ने पिण पाप न लागै। पुण्य नी क्रिया लागै शुद्ध उपयोग माटै।

(भगवती श० १८ उ० ८)

(ख) साधु ईर्याइं करी चालतां जीव हणीजै तो तेह ने पिण पाप न लागै। हणवारो कामी नहीं ते माटै।

(आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ४ उ० ५)

७ अल्प (नहीं) वर्षा में भगवान विहार कीधो।

(भगवती श० १५)

८ अल्प प्राणी बीज छै तिहां ते स्थान के साधु ने आहार करवो।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० ३५)

९ अल्प प्राण बीजादिक होवै तिण स्थान के शुद्ध करी आहार करवो।

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० १ उ० १)

१० साधु रे अर्थे कियो उपाश्रयो भोगवै तो महा-सावद्य क्रिया लागै। दोय पक्ष रो सेवणहार कह्यो

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

लोंकेजी की हुण्डी।

॥ दोहा ॥

ॐ नमः परमेष्टि पद, पांचूं महा सुखकार ॥
दुरित विघ्न दूरा टले, वर्त्ते जय जयकार ॥१॥
हुण्डी जेह लोंका तणी, अच्छे पुरातन तेह।
तिणमें आगम साक्षि थी, बोल उनहत्तर जेह ॥२॥
सकल सुगुण शिर सेहरा, श्री कालू गणि राय।
तासु पसाये गुलाब कहे, दोहा रूप बनाय ॥३॥

॥ सद्गुरु विनती ॥

(खम्माच दादरा)

सद्गुरु सद्बुद्धि बढ़ाना मुझे, मेरे स्वामीन् चरणों लगाना मुझे ॥ टेक ॥ महाव्रत पञ्च पञ्च समिति वर, तीन गुप्ति धर चाहना मुझे ॥ स० ॥१॥ आज्ञा में धर्म अधर्म आण बिन, यही पाठ पढ़ाना मुझे ॥ स० ॥२॥ आत्म ऋद्धि सिद्धि सुख पावे, सोही मारग बताना मुझे ॥ स० ॥३॥ अनादि से भ्रमण कियो भवारयें, अब शिवराह दिखाना मुझे ॥ स० ॥४॥ जिन वाणी सुन

जान लियो अब, सब पापों से छुड़ाना मुझे ॥ स० ॥५॥ भाव दया यही स्वपरकी, सुध निज घर की लगाना मुझे ॥ स० ॥६॥ उलझ रह्यो मोह कर्म जाल में, सुमति दे सुलझाना मुझे ॥ स० ॥७॥ समकित व्रत पायो हुलासायो, आयो शरण निभाना मुझे ॥ स० ॥ ८ ॥ गुलाबचन्द आनन्द भयो अति, सुख में सुख अब पाना मुझे ॥ स० ॥९॥

॥ सोरठा ॥

शहर जैतारण मांहिरे, लोंका गुजराती बली।
सरूप रूपचन्द ताहिरे, तेहना उपाश्रय थकी ॥१॥
विक्रम संवत् जान रे, अठारह शत गुणतीस में।
शुद्ध प्ररूपण मान रे, देखी पूर्व तिहां तिम लिखी ॥२॥
तिण अनुसारे देख रे, सूत्र तणा जेह पाठ युत।
न्याय सहित सुविशेष रे, कहूं जिज्ञासु कारणे ॥ ३ ॥

॥ अथ हुण्डो का बोल ॥

तीनूं ही काल रा भाव केवल ज्ञानी दीठा, कोई जीव ने नव तत्त्व रा जाण पणा बिना संसार समुद्र सूं तिरतो दीठो नहीं। साख सूत्र सूयगडांग अध्ययन १२ गाथा १६ वीं।

॥ दोहा ॥

तीन काल रा भावना, जाणक केवली सोय।
नव तत्व जाण्यां विना, तिखा न देखा कोय ॥१॥
यथा अवस्थित वस्तु ना, ज्ञाता नेता तन्त।
ते बुद्धा पर तार कर, करै कर्म नो अन्त ॥२॥
धुर सूयगडांगे कह्यो, अध्ययन बारमा मांहि।
तत्व यथा तथ्य जानिये, सोलमी गाथा ताहि ॥३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

तेतीय उपन्न मणा गयाइ, लोगस्स जाणन्ति तहा गयाइं।
णेतारो अन्नेसि अणन्न णेया, बुद्धा हु ते अन्तकडा भवंति ॥

प्र० श्रुतस्कंध सूत्र कृताङ्ग अ० १२ गाथा १६

॥ भावार्थ ॥

भूत, भविष्यत् और वर्त्तमान इन तीनों काल के भाव को जानने वाले, यथा अवस्थित वस्तुओं के और नव तत्वों के ज्ञाता नेता हों, स्वयं तरे और दूसरों को तारे वे बुद्ध स्वतः तत्वों को जानते हुए कर्मों के अन्त करता बनते है। अर्थात् तत्वों को जानने से मुक्ति होती है।

॥ बोल दूसरा ॥

राशि दो कही १ जीव राशि २ अजीव राशि। तीसरी राशि कहै जिण ने सात निन्हवां में छट्ठो निन्हव कह्यो। सा० सू० उववाई प्रश्न १६ वें।

को देख के कहै साधूपना है या नहीं [अपाढ़ाचार्य के शिष्यवत्] ४ नरकादि चारों गति का क्षण २ में विनाश होता है [अश्व मित्रवत्] ५ एक समय में दो किरिया लगती है ऐसा मानने वाला [गर्गाचार्यवत्] ६ जीव राशि १ अजीव राशि २ जीवाजीव राशि ३ यों तीन राशि मानने वाला [गोष्ट महिलावत्] ७ जैसे सर्प के कंचुकी है वैसे जीव के कर्म लगते हैं ऐसा मानने वाला [ ] इस प्रकार जिन मत के छिपाने वाले प्रवचनों के निन्हव होते हैं।

॥ बोल तीसरा ॥

जीव अजीव त्रस स्थावर जाणे नहीं तिण रा पच्चक्खाण दुःपच्चक्खाण कह्या, साख सूत्र भगवती शतक ७ वां उद्देश्य २ रा।

॥ दोहा ॥

जीव अजीव जाणे नहीं, त्रस स्थावर नहीं जाण।
त्याग कहै मारण तणा, तेहना छै दुःपच्चक्खाण ॥१०॥
सप्तम शतके भगवती द्वितीय उद्देशे पेख।
जाण्यां बिन व्रत किम हुवै संवर आश्रयी लेख ॥११॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जस्सणं सव्व पाणेहिं, जाव सव्व सत्तेहिं, पच्चक्खायं मितिवदमाणस्स न एवं, अभी समणगा गयं भवइ, इमे जीवा इमे अजीवा इमे तरस इमे थावरा, तस्सणं सव्व पाणेहिं जाव सव्व सत्तेहिं पच्चक्खायं मितिवदमाणस्स णो सुपच्चक्खायं, दुपच्चक्खायं भवइ ॥

सूत्र श्री भगवती शतक ७ वाँ उद्देश्य २ रा।

॥ भावार्थ ॥

जो सर्व प्राणी यावत् सर्व सत्वों के मारने का प्रत्याख्यान कहे, किन्तु ऐसा नहीं जाने कि यह जीव है, यह अजीव है, यह त्रस है, यह स्थावर है, ऐसा अज्ञानी सर्व प्राण भूत जीव सत्व मारने के त्याग किये कहें तो उसके दुःपच्चक्खाण है, किन्तु सुप्रत्याख्यान नही।

॥ बोल चौथा ॥

जीव अजीव ने जाणै नहीं, जीव अजीव दोनां ने जाणै नहीं तिण ने संयम री ओलखणा नहीं। साख सू० दशवैकालिक अध्ययन ४ गा० १२ वीं।

॥ दोहा ॥

दशवैकालिक में कह्यो, तूर्य अध्ययने ताहि।
जीव अजीव जाणै नहीं, बारवीं गाथा मांहि ॥१२॥
जीव अजीव अजाणतो, तसु संयम किम होय।
जाणी त्याग कियां थकां, चारित्र गुण अवलोय ॥१३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जो जीवे वि न याणाइ, अजीवे वि न याणाइ।
जीवा जीवो अयाणंतो, कहं सो नाहीय संयमं ॥१२॥

दशवैकालिक अ० ४ गाथा १२

॥ भावार्थ ॥

जो जीव को भी नही जाने, अजीव को भी नहीं जाने। जीवो अजीवो को ही नहीं जाने उसके संयम कहाँ है। अर्थात् जीवाजीव जाने विना संयम नहीं है।

॥ बोल पांचवां ॥

सम्यक्त्व बिना चारित्र नहीं समकित बिना व्रत नहीं। सा० सू० उत्तराध्ययन २८ वें गा० २९ वीं।

॥ दोहा ॥

मसकित बिन चारित्र नहीं, नहीं समकित बिन व्रत।
उत्तराध्ययन अठबीसमें, गुणतीसमी गाथा सत्त ॥१४॥
दर्शन ज्ञान थकी हुवै, समकित चारित्र धर्म।
तिण सूं पूर्व समकित लह्यां, पामें चारित्र पर्म ॥१५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

नत्थि चरितं सम्मत्त विहुणं दंसणे उभयव्वं।
सम्मत्त चरित्ताइं जुगवं, पुव्वं च सम्मत्तं ॥२९॥

सूत्र उत्तराध्ययन अ० २८ गा० २९

॥ भावार्थ ॥

सम्यक्त्व अर्थात् शुद्ध श्रद्धा बिना चारित्र नहीं होता है। ज्ञान से यथार्थ जान के शुद्ध श्रद्धने से सम्यक्त्वी होता है और सम्यक्त्वी होने से चारित्र गुण उत्पन्न होता है। इसलिये सम्यक्त्व चारित्र में पहिले सम्यक्त्व मुख्य है।

॥ बोल छट्ठा ॥

ज्ञान बिना दया नहीं दया चारित्र एक ही कह्यो। सा० सू० दशवैकालिक अ० ४ गा० १० वीं।

॥ दोहा ॥

दया नहीं है ज्ञान बिन, चारित्र दयाज एक।
ज्ञान सहित संयम हुवै समझो आण विवेक ॥१६॥
प्रथम ज्ञान पाछे दया, इम सर्व संयती होय।
अज्ञानी जाणै किस्यूं, पाप छेदै किम जोय ॥१७॥
चौथे अध्ययने कह्यो, दशवैकालिक वाय।
दशमी गाथा ने विषै, भाख्यो श्री जिनराय ॥ १८ ॥

॥ सूत्र पाठ ॥

पढमं नाणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सव्व संजए।
अन्नाणी किं काही, किंवा नाहीय छेय पावगं ॥१०॥

॥ भावार्थ ॥

प्रथम ज्ञान और पीछे दया, अर्थात् ज्ञान द्वारा जीव अजीवादि को जानने से षट् जीव निकायों को मारने का त्याग करेगा तब दया होगी। इसी तरह सर्व संयती होते है। अज्ञानी को जब यथार्थ ज्ञान ही नहीं तब वह दया किसकी करेगा और कैसे पाप कर्म छेदेगा।

॥ बोल सातवां ॥

असंयती अव्रती अपच्चक्खाणी ने सूझतो असूझतो, प्राशुक, अप्राशुक देवै तिण ने एकान्त पाप कह्यो। सा० सू० भगवती श० ८ उ० ६

॥ दोहा ॥

तथारूप जे असंयती वलि अविरति जेह।
च्यार प्रकारे आहार तसु, श्रावक प्रति लाभेह ॥१६॥
सचित अचित प्राशुक बली, अप्राशुक अवधार।
देवै दोष सहित वा, दोष रहित निरधार ॥२०॥
दियां हे प्रभु! शुं करइ, इम गौतम पूछन्त।
जिन कहै एकान्त पाप करै, नहीं कांई निर्जरा हुन्त।२१।
अष्टम शतके भगवती, षष्ठम उदेशा मांहि।
एकान्त पाप कह्यो प्रभु, निर्जरा किञ्चित नांहि ॥२२॥

॥ सूत्र पाठ ॥

समणो वासगरसणं भन्ते तहारूवं असंजय अविरय अपडिहय पच्चक्खाय पाव कम्मे, फासु एणवा अफासु एणवा एसणिज्जेण वा अणेसणिज्जेणवा असण पाण खाइम साइमेणं, पडिलाभे माणस्स किं कज्जइ, गोयमा! एगन्त सोसे पावे कम्मे कज्जइ णत्थि से काइ निज्जरा कज्जइ।

सा० सू० भगवती श० ८ उ० ६

॥ भावार्थ ॥

श्रावक हे भगवान तथा रूप असंयतो, अव्रती और जिसके पाप-कर्म के त्याग नहीं ऐसे अप्रत्याख्यानी को प्राशुक, अप्राशुक सदोष वा निर्दोष आहार पाणी खादिम स्वादिम प्रतिलाभता हुआ क्या करता है। तब भगवान ने कहा हे गौतम! एकान्त पाप कर्मोपार्जन करता है वह किञ्चित निर्जरा नहीं करता है।

॥ सोरठा ॥

एह पाठ नूं अर्थ रे, केई जन इहां इम करैं ।
जो देखे मोक्षार्थ रे, तो तसु एकान्त पाप हुवै ॥२३॥
अथवा तसु गुरु जान रे, दियां मिथ्यात्व नूं पाप है ।
यदि अनुकम्पा आन रे, देवै तो तसु पाप नहीं ॥२४॥
इम निज मत अनुसार रे, सूत्र विरुद्ध जे को कहै ।
पिण तसु उत्तर सार रे, बुद्धिवन्त न्याय विचारिये ॥२५॥
न कह्यो सूत्रे एम रे, मोक्षार्थी वा गुरु समझ ।
तो निज मन थी कहो केम रे, भावार्थ समझ्यां बिना ।२६।
तथा रूप छै जेह रे, असंयती नां भेषयुत ।
तसु गुरु किम जाणेह रे, श्रावक जेह भगवान रा ।२७।
बलि दोष सहित किम देय रे, श्रावक गुरु जाणी करी ।
न्याय विचारि लेय रे, पक्षपात चित्त छांड़ करि ॥२८॥
अल्प आयु बन्धाय रे, असूझतो दियां साधु ने ।
तीजा ठाणा मांय रे, बलि ठाम २ सिद्धान्त में ॥२९॥
दोष सहित दियां ताहि रे, पाप हुवै पिण धर्म नहीं ।
देखो आगम मांहि रे, असूझता थी पुण्य नहीं । ॥३०॥
जो गुरु जाणी तास रे, कदा निर्दोष देवै तसु ।
तो पाप एकान्त विमास रे, इहां कहो किण कारणें ।३१।
न देऊं अण तीर्थी प्रतेह रे, बलि देवाऊं नहीं ।

इम सप्तम अंगेह रे, आनन्द श्रावक अभिग्रह लियो ।३३।
पुनः सम्यक् दृष्टि जेह रे, असंयती नां दान ने ।
मोक्ष अर्थ श्रद्धेह रे, जो कहा देवै जान करि ॥३४॥
तो पिण पाप ही लाग रे, तुम लेखे मिथ्यात्व नूं ।
नहीं मुक्ति रो माग रे, सांसारिक जे दान छै ॥३५॥
मोक्ष अर्थ दियां तेह रे, तेहने एकान्त पाप कह्यो ।
तो अनुकम्पा एह रे. मुक्ति काज नहीं जाणवी ॥३६॥
अनुकम्पा संसार रे, स्नेह राग युत जे हुवै ।
आख्या पाप अठार रे, तिण में राग नवमूं कह्यो ॥३७॥
असंयती नूं जोय रे, अथवा अविरति तणो ।
पुद्गलीक सुख वंछे सोय रे, ते जिन आज्ञा बाहिरै ॥३८॥
करणी जे करै कोय रे, पुण्य पुद्गल सुख कारणै ।
तिण में धर्म न होय रे, पुण्य बन्ध पिण हुवै नहीं ।३९।
भगवती वृत्ति मझार रे, अर्थ कियो इण पाठ नूं ।
मुक्ति अभिलाषा धार रे, दीधां पाप एकान्त हुवै ॥४०॥
तिण लेखै पिण तंत रे, असंयती वा अविरति नूं ।
दान पाप एकान्त रे, मोक्ष मार्ग नहीं जाणवो ॥४१॥
एकान्त पाप नूं अर्थ रे, अष्टादशमूं जो करे ।
तो ठाम २ सूत्रार्थ रे. एकान्त पाठ कह्या बहु ॥४२॥
सुख शय्या कही च्यार रे, ठाणांगे चौथा स्थान में ।
एकान्त निरजरा धार रे, मुनि सम भावे वेदन सहै ।४३।

जो सम भावे न सद्देह रे, तो पाप एकान्ते हुवै ।
इहां मुनि रे किस्यूं गिणेह रे, एकान्त पाप मिथ्यात्व नूं ।४४
वलि धुर शतक निहाल रे, अष्टम उद्देशे कह्यूं ।
अव्रती ने एकान्त बाल रे, एकान्त पण्डित साधु ने ।४५
अष्टम शतक रे मांहि रे, छठे उद्देशो भगवती ।
तथा रूप संयती ताहि रे, दियां एकान्त निर्जरा हुवै ।४६।
जो एकान्तक नूं जेह रे, छेहलो भेद एक ही कहै ।
तो ठाम २ सूत्रेह रे, एकान्त अर्थ छेहलूं किस्यूं ॥४७॥
तिण सूं एकान्त पाप रे, असंयती अविरति ने ।
दीधां जिन कह्यो आप रे, पाठ मांहि प्रकट पणै ॥४८॥
एक अन्त दो शब्द रे, तेहना अर्थ छै जुजूआ ।
एक तेह केवल लब्ध रे, अन्त तेह निश्चय जाणवो ॥४९॥
छट्ठा काण्ड मझार रे, नवम श्लोके देखलो ।
अन्त तेह निश्चय धार रे, हेम नाम माला विषे ॥५०॥
तिणसूं भगवती मांहि रे, दियां असंयती अविरति ने ।
एकान्त पाप हिज थाय रे, प्रभु आख्यो तेह सत्य है ।५१।

॥ बोल आठवां ॥

शाश्वता अशाश्वता री खबर नहीं, तिणने बोध रहित कह्यो । सा० सू० सूयगडांग अ० १ उ० २ गाथा ४ थी ।

॥ दोहा ॥

शाश्वत अने अशाश्वता, तेहनी खबर न कांय।
बोध रहित तिण ने कह्यो, प्रथम सूयगडांग मांय ॥५२॥
बाल थकां पंडित पणो, माने तेह अयाण।
नियत अनियत जाणै नहीं, द्वितीयाध्ययने चौथी जाण ।५३।

सूत्र पाठ ॥

एव मेयाणि जयन्ता, बाल पंडिय माणिणो। नियया नियर्य संतं, अयाणंता अबुद्धिया ॥४॥

प्र० सू० कृतांग अ० १ उ० २ गा० ४

॥ भावार्थ ॥

बाल अर्थात् मूर्ख अपने को पण्डित मान रहे हैं। परंतु उन्हें नियत अनियत यानी शाश्वत अशाश्वत की खबर नहीं है वे अजान बोध रहित है।

बोल नवमां ॥

साधू थोड़ा असाध घणां। सा० सू० दशवैकालिक अ० ७ गा० ४८ वीं।

॥ दोहा ॥

साधु थोड़ा लोक में, घणा असाधू जान।
ते असाधु थका बहु इम कहे, अमे साधु गुणखान ।५४।
दशवैकालिक सात में, अड़तालीसवीं गाथा ताहि।
असाधुने साधु कहणो नहीं, साधुने साधु कहाहि ॥५५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

बहवे इमे असाहु, लोयें वुचन्ति साहुणो ।

न लवे असाहु साहुत्ति, साहु साहुत्ति आलवे ॥४८॥

दशवैकालिक अ० ७ गा० ४८

॥ भावार्थ ॥

बहुत से ऐसे असाधु लोक में है जो कहते हैं हम साधु है। परंतु विज्ञजनों को असाधुओ को साधु नही कहना चाहिये।

॥ बोल दशमां ॥

साधु रे सर्व थकी प्राणातिपात रा त्याग छे तिण रे अपच्चक्खाण री अपरिग्रह री किरिया नहीं। सा० सू० पन्नवणा पद २२ वें।

॥ दोहा ॥

सर्व प्रकारे साधु रे, प्राणातिपात रा त्याग।
अपच्चक्खाण ने परिग्रह तणी, तसु किरिया नहीं लाग ॥५६॥
बावीसम पद आखियो, पन्नवणा रे मांहि।
प्राणातिपात निवृत्ति ने, अव्रत परिग्रह नांहि ॥५७॥

॥ सूत्र पाठ ॥

प्राणातिपात विरयस्सणं भन्ते जीवस्स परिग्गहिया किरिया कज्जति? गोयमा णो इणट्ठे समट्ठे, प्राणातिपात विरयस्सणं भन्ते जीवस्स अपच्चक्खाण वत्तिया किरिया कज्जति? गोयमा णो इणट्ठे समट्ठे।

पन्नवणा पद २२ वाँ।

प्ररूपणा करे तिण ने किञ्चित् मात्र जाणपणो नहीं। सा० सू० सुयगडांग अ० १ उ० २ गाथा १४ वीं ।

॥ दोहा ॥

केवली प्ररूप्या धर्म बिन, अपनी मति अनुसार ।
करै प्ररूपण जेहने, जाण पणो न लिगार ॥६२॥
इक २ माहण श्रमण बलि, कहै म्हे छां सर्व जाण ॥
पिण प्राणी सहु लोक में, तेहना जेह अजाण ॥६३॥
ते किंचित नहीं जाणता, धुर सूयगडांग मांहि ।
प्रथम अध्ययने जाणिये, द्वितीय उद्देशे ताहि ॥६४॥

॥ सूत्र पाठ ॥

माहणा समणा एगे, सव्वे नाणं सयं वए ।
सव्व लोगे वि जे पाणा, न ते जाणं किंचणो ॥१४॥

॥ भावार्थ ॥

जगत में एक २ श्रमण ब्राह्मण ऐसे हैं सो कहते हैं हम सर्व जानकार हैं परन्तु लोक में सर्व प्राणो हैं उन्हें वे किञ्चित् मात्र नहीं जानते हैं। अर्थात् निज मतानुसार एक २ श्रमण ब्राह्मण कहते हैं हम सर्व जान हैं परन्तु उन्हें किञ्चित् मात्र जाणपना नहीं है।

॥ बोल चौदमां ॥

श्रावक ने केवल ज्ञानी प्ररूप्या धर्म बिना दूजो धर्म मानणो नहीं। सा० सू० उववाई प्र० २० वां ।

॥ दोहा ॥

श्रावक सत्य करि जानता, केवली भाषित धर्म ।
दूजो धर्म न मानणो, एह जिन शासन मर्म ॥६५॥
निर्ग्रन्थ बचनज अर्थ है, निर्ग्रन्थ प्रवचन परमार्थ ।
अन्य जन ने पिण इम कहे, प्रवचन बिना अनर्थ ॥६६॥
लाध्या ग्रह्या अर्थ पूछ कर, धार्या विनय सहित्त ।
अस्थि अस्थि मज्जा तसु, प्रेम राग रङ्ग रत्त ॥६७॥
सूत्र उववाई में कह्यो, प्रश्न बीसवें ठीक ।
शंक रहित जिन बचन में, त्यांने मुक्ति नजीक ॥६८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

निग्गन्थे पावयणे निस्संकिया, णिकंक्खिया, निव्वितिगिच्छा, लद्धट्ठा, गहियट्ठा, पुच्छियट्ठा, अभिगट्ठा, विणिच्छियट्ठा, अट्ठि मिज पेमाणु राग रत्ता, अयमाउसो णिग्गन्थे पावय णो अट्ठे अयं परमट्ठे, सेसे अणट्ठे ।

सू० उववाई प्र० २० वाँ

॥ भावार्थ ॥

वै श्रावक निर्ग्रन्थ प्रवचन में निःशङ्क है अर्थात् शङ्का रहित हैं आकाँक्षा रहित है अर्थात् पाखण्डियों का ढोंक देख के उनकी वांछा नहीं करते । विचिकिच्छा रहित है यानी स्वयं जो जिनाज्ञा माँहि की करणी करते हैं उसके फल में सन्देह नही रखते । वे सूत्रों का अर्थ पाये है, ग्रहण किये है, अर्थ पूछे हैं, प्रवचनो के अर्थो के सन्मुख हुए हैं, और विनय सहित ग्रहण किये है, जिनकी अस्थि और अस्थि की मज्जा जिन

बचनों से रंगी हुई हैं, अर्थात् निग्रन्थ प्रवचनों में लवलीन हो रहे हैं, और दूसरों को भी ऐसा ही कहते हैं कि "आयुष्मानों" निग्रन्थ वचन है सो ही अर्थ है, सो ही परमार्थ है। इनके अतिरिक्त शेष सब अनर्थ हैं।

उत्तराध्ययन अ० २८ गा० ३१।

॥ बोल पन्द्रवां ॥

समकिती ने निसङ्क निकङ्ख विदगंछा रहित रहणो कह्यो सा० सू० उत्तराध्ययन अ० २८ वां गा० ३१ वीं।

॥ दोहा ॥

शंक नहीं जिन बचन में, कंखा अनमत नांहि।
करणी फल संदेह नहीं, ते नि विदगंछ कहांहि ॥६९॥
अमूढ दिट्ठी परमत तणी, देख प्रशंसा आदि।
अन्य मत दृष्टि करे नहीं, चित में धरे समाधि ॥७०॥
उववूह गुणी ना गुण करै, स्थिरि कारण स्थिर होय।
वत्सल भाव सहु थकी, धर्म प्रभाव न जोय ॥७१॥
उत्तराध्ययन अठवीस में, समकित ना आचार।
आराधे तेह समकिती, इकतीसवीं गाथा धार ॥७२॥

॥ सूत्र पाठ ॥

निसंक्खिय निकंखिय निव्वितिगिच्छा अमूढ दिट्ठिय उववूह थिरी करणे वच्छल पभावणे अट्ठ।

उत्तराध्ययन अ० २८ गा० ३१

॥ भावार्थ ॥

१ जिन वचनों में शङ्का नहीं करे अर्थात् भगवान ने एक शरीर में अनन्ते जीव आदि अनेक बातें कही है सो सत्य हैं।

२ निकंखिय अर्थात् जो अन्य मत वाले कहते हैं वह भी ठीक होगा ऐसी वांछा न करे।

३ निव्वितिगिच्छा यानी जो तप नियमादि करणी करता हूं सो फलदायक होगी या नहीं ऐसी विचारणा नहीं करे।

४ अमूढ दिट्ठीय अर्थात् अन्य मत वालों की अनेक प्रकार प्ररूपणा को देखके उनकी तरफ खयाल न करे।

५ उववूह यानी गुणवन्त पुरुषों के गुणगान करे।

६ थिरि करणे अर्थात् सम्यक्त्व में स्थिर रहै।

७ वत्सल यानी षट् कायों के जीवों पै वात्सल्य भाव रक्खें।

८ प्रभावना अर्थात् जैन धर्म की प्रभावना करे। यह सम्यक्त्व के आठ आचार कहे हैं।

॥ बोल सोलमां ॥

केवल ज्ञानी रा बचनां री खबर नहीं जिकां रे घणो बाल मरण अकाम मरण होसी। सा० सू० उत्तराध्ययन अ० ३६ गा० २६० वीं।

॥ दोहा ॥

जे जिन बचन जाणे नहीं, बाल मरण तसु जाण।
घणा अकाम मरणे मरे, उत्तराध्ययने छत्तिसमें पिछाण ।७३।

॥ सूत्र पाठ ॥

बाल मरणाणि बहुसो, अकाम मरणाणि चेवय बहुसो।
मरिहिं ति ते वराया, जिन वयण जे न याणंति ॥२६०॥

॥ भावार्थ ॥

बहुत बाल मरण और बहुत से अकाम मरण मरै जो जिन वचनों को नहीं जानता है।

॥ बोल सतरहवां ॥

प्रवचन सोही अर्थ, प्रवचन सोही परम अर्थ, सा० सू० उववाई प्र० २० वां।

॥ दोहा ॥

प्रवचन सोही अर्थ है. प्रवचन सो परमार्थ।
उववाई प्रश्न बीसवें बाकी सर्व अनर्थ ॥ ७४॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अयमाउसो णिग्गंथे पावयणे अट्ठे, अयं परमट्ठें, सेसे अणट्ठे।

[उववाई प्र० २० वें]

॥ भावार्थ ॥

हे आयुष्मानों निर्ग्रन्थ प्रवचन ही अर्थ है यही परमार्थ है। इनके सिवाय सर्व अनर्थ है।

॥ बोल अठारहवां ॥

केवलियां रो आचार सोही छद्मस्थ रो आचार, केवलियां रो अनाचार सोही छद्मस्थ रो अनाचार। साख सूत्र आचारांग प्र० २ उ० ६ ठो।

॥ दोहा ॥

केवलियां रो आचार सो, छद्मस्थ रो आचार ।
केवलियां रो अनाचार ते, छद्मस्थ रो अनाचार ॥७५॥
कुशल पुरुष जे केवली, नहीं बन्धाय मूकाय ।
जे आरम्भ्यो तिम आरम्भे, ते बुद्धिवन्त कहाय ॥७६॥
प्रथम आचाराङ्ग कह्यो, दूजे अध्ययन उदार ।
छट्ठा उद्देशा विषे, निपुण न्याय अवधार ॥७७॥

॥ सूत्र पाठ ॥

कुसले पुण णो वद्धे णो मुक्के से जं च आरम्भे जे च अणारम्भे अणा रद्धं च ण आरम्भे छणं छणं परिन्नाय लोग सन्नं च सव्वसो ।

[आचाराङ्ग अ० २ उ० ६ ठा०]

॥ भावार्थ ॥

केवली भगवान बन्धे हुवे नहीं, छूटे हुवे नहीं, जैसे वे वर्त्ते होय वैसे ही करना और जैसा उनका आचरण नही है वैसा नहीं आचरे । अर्थात् संयम क्रिया जैसी केवलियों की है वैसी ही अकेवलियों की है । हिंसा तथा लोक संज्ञा को जान कर उनका परिहार करना ।

॥ बोल उन्नीसमां ॥

वत्तव्वया २ कही १ स्व समय वत्तव्वया, २ पर समय वत्तव्वया । स्व समय वत्तव्वया की तो साधु आज्ञा दे तथा मानण योग छै, पर समय वत्तव्वया में सात अवगुण कह्या—१ अनर्थ, २ अहित, ३

असंयम, ४ अक्रिया, ५ उन्मार्ग, ६ उपयोग रहित, ७ मिथ्यात्व सहित। सा० सू० अनुयोग द्वार सात नयां को समास पूरो हुवो जठै।

॥ दोहा ॥

दोय वक्तृता जांणवी, स्वपर समय विचार।
उभय मिल्यां तीजी हुवे, आखी अनुयोग द्वार ॥७८॥
वक्तृता स्व समय जे, श्री जिन आगम सार।
पाखण्ड रचिता पर समय, तेह नी बात असार ॥७९॥
मुनि आज्ञा स्व समय नी, पर समय अवगुण सात।
अहित अनर्थ असद्भाव बलि, अक्रिया उन्मार्गे जात ॥८०॥
ते उपदेशवा योग्य नहीं, दरशन जे मिथ्यात।
यह सातों अवगुण कह्या, नहीं गुण छै तिलमात ॥८१॥
कांइक जिन सिद्धान्त नी, कांइक पर सिद्धान्त।
बिहु मिल तीजी पिण हुवे, वत्तव्वया आख्यात ॥८२॥
स्व तेह स्व मां प्रक्षेपवो, पर तेह पर मां जोय।
तिण सूं दोय वत्तव्वया, न्याय हिये अवलोय ॥८३॥
जिन प्रणीत सिद्धान्त ते, संक्षेपें आख्यात।
बलि विस्तार प्ररूपणा, कहै दृष्टांत विख्यात ॥८४॥
विशेष करि दर्शावतां, परिषध में उपदेश।
मुनि स्व समय दृढ़ावता, जिनोक्त बचन हमेश ॥८५॥

आगम वच ते स्व समय, तेहिज मानण योग ।
वक्तृता पर शास्त्र नी, जाणो तास अयोग ॥८६॥
नैगम संग्रह व्यवहार जे, इच्छै वक्तृता तीन ।
स्व पर मिश्र इम त्रण हुवें, ऋजु सूत्र दोय लीन ॥८७॥
शब्दादिक त्रण नयतिका, इच्छे वक्तृता एक ।
स्व समय तेहिज सत्य है, पर ते सहु अविवेक ॥८८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

से किं तं वत्तव्वया ? वत्तव्वया तिविहा पन्नता, तंजहा—१ ससमय वत्तव्वया, २ पर समय वत्तव्वया, ३ ससमय पर समय वत्तव्वया, से किं तं ससमय वत्तव्वया ? ससमय वत्तव्वया—जत्थणं ससमय आघ विज्जंति पन्नव विज्जंति परूविज्जंति दंसइ नि दंसिज्जइ उवदंसिज्जइ से तं ससमय वत्तव्वया । से किं तं पर समय वत्तव्वया ? जत्थणं पर समय आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति से तं पर समय वत्तव्वया । से किं ते ससमय पर समय वत्तव्वया ? जत्थाणं ससमय पर समय आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जति से तं ससमय पर समय वत्तव्वया इयाणिको न ओ कं वत्तव्वयं इच्छन्ति ? तत्थ णेगम संगह ववहारो तिविहं वत्तव्वयं इच्छन्ति तंजहा—ससमय वत्तव्वयं पर समय वत्तव्वयं ससमय पर समय वत्तव्वयं । उज्जु सुओ दुविहं वत्तव्वयं इच्छई तंजहा—ससमय वत्तव्वयं पर समय वत्तव्वयं तत्थणं जासा ससमय वत्तव्वया सा ससमय परिट्ठाजा, सा परसमय वत्तव्वया सा पर समय पारिट्ठाजा, तम्हा दुविहा वत्तव्वया णत्थि तिविहा वत्तव्वया ।

तिथि सद्दा नया राग ससमय वत्तव्वयं इच्छन्ति णत्थि पर समय वत्तव्वया, कम्हा ? जम्हा परसमय १ अणट्ठे, २ अहेउ, ३ असब्भावे, ४ अकिरिए, ५ उम्मग्गे, ६ अणुवएसे, ७ मिच्छा दंसण, मितिकट्टु तम्हा सव्व ससमय वत्तव्वया णत्थि पर समय वत्तव्वया, से तं वत्तव्वया ।

अनुयोग द्वार सूत्र ।

॥ भावार्थ ॥

प्रश्न - वक्तव्यता कितने प्रकार की है। उत्तर—वक्तव्यता तीन प्रकार की सो कहते हैं:—१ स्व समय, २ पर समय, ३ और स्वपर समय वक्तव्यता। स्वसमय वक्तव्यता किसे कहते हैं ? "स्वसमय अर्थात् स्वमत जिन प्रणीत सूत्रों को संक्षेप से कहे, विस्तार पूर्वक कहे, प्ररूपणा करे, दृष्टान्तादि कर दर्शावे, प्रथा में उपदिशे, विशेष कर दर्शावे. सो स्वसमय वक्तव्यता।" अहो भगवान् पर समय वक्तव्यता किसे कहते हैं ? "जो अन्य मत के शास्त्र उक्त प्रकार सामान्य प्रकार कहे, प्ररूपे, दृष्टान्त से कहे, विस्तार से कहे, विशेष कर दर्शावे और उपदिशे, वह पर समय वक्तव्यता है।" स्वपर समय वक्तव्यता किसे कहते हैं ? "जो स्वमत के शास्त्रों और परमत के शास्त्रों को शामिल करके कहे यावत् उपदिशे सो स्वपर समय वक्तव्यता है।" अब नयों का समास कहते हैं—नैगम संग्रह और व्यवहार यह तीन नय वस्तु वक्तव्यता को माने, और ऋजु सूत्र नय दो प्रकार की वक्तव्यता को माने, स्वसमय और पर समय वक्तव्यता। परन्तु दोनों को मिला के मिश्र वक्तव्यता को नहीं माने क्योंकि जो स्व समय वक्तव्यता है उसे स्वमत में स्थापन करे, और जो पर समय वक्तव्यता है उसे पर मतमें स्थापन करे, इसलिये दोनों ही प्रकार की वक्तव्यता है। शब्द और समभिरूढ़ और एवं भूत नय केवल एक स्वसमय वक्तव्यता को ही माने, परन्तु पर समय वक्तव्यता को नहीं इच्छे,

क्योंकि जो पर समय वक्तव्यता है उसमें अनर्थ है, अहेतु है, असद्भाव है, क्रिया रहित है, उन्मार्ग है, कुउपदेश है, मिथ्या दर्शन है। यह सात दोष पर शास्त्र में है। अतः एक स्व समय वक्तव्यता ही है पर समय वक्तव्यता नहीं।

॥ बोल बीसमां ॥

केवली प्ररूपियां धर्म एकान्त प्रधान कह्यो सा० सू० प्र० सूयगडांग अ० ६ गा० ७।

॥ दोहा ॥

केवल ज्ञानी भाषियो, तेहिज धर्म एकान्त।
धुर सूयगडांगे छट्ठे, सप्तमी गाथा तंत ॥८९॥
प्रधान धर्म श्री जिन कह्यो, तसु नेता वर्द्धमान।
शोभे हुए देवां विचे, इन्द्र समा गुण ग्वान ॥९०॥
सब नेतां में श्रेष्ठ है, काश्यप गोत्र उत्पन्न।
दिव्य धर्म जिनवर कह्यो, तेहिज धर्म सुमन्न ॥९१॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अणुत्तरं धम्म मिणं जिणाणं, णेया मुणी कासव आसुपन्ने।
इन्देव देवाण महाणुभावे, सहस्स णेता दिवणं विसिट्ठे ॥७॥

प्र० सूयगडांग अध्ययन ६ गा।

॥ भावार्थ ॥

प्रधान धर्म है जिनेश्वरों का कहा हुआ. उनके नेता मुनीश काश्यप गोत्रोत्पन्न श्री महावीर स्वामी हैं. वे हजारों नेताओं में सुशोभित हैं।

॥ बोल इक्कीसवां ॥

केवली प्ररूप्यो धर्म यथार्थ सरल शुद्ध माया कपटाई रहित कह्यो। सा० सू० सूयगडांग अ० ६ गाथा १।

॥ दोहा ॥

धर्म यथा तथ्य आखियो, जेह माहणं मतिवन्त।
कपट रहित तेह सरल छै, जिनोक्त धर्म सुन तन्त ॥६१॥
प्रथम सूयगडांगे कह्यो, नवम अध्ययन रे मांहि।
पहिली गाथा ने विषे, जिन कह्यौ धर्म कहाहि ॥६२॥

॥ सूत्र पाठ ॥

कयरे धम्मे अक्खाये, माहणेणा मति मता।
अजुं धम्मं जहा तच्चं, जिणाणां तं सुणेह मे ॥१॥

प्र० सूत्र कृतांगे नवम अध्ययने १ गाथा

॥ भावार्थ ॥

माहण अर्थात् मत हनों २ ऐसा उपदेश जिन का वै मुनि कैसा धर्म कहे—ऋतु अर्थात् सरल माया कपटाई रहित जैसा जिनेश्वरों से सुना है वैसा ही धर्म कहें।

॥ बोल बावीसवां ॥

जिस करणी में किंचित मात्र हिंसा नहीं ते करणी ज्ञान री सार कही। सा० सू० प्र० सूयगडांग अध्ययन १ उ० ४ गाथा १० वीं।

॥ दोहा ॥

किञ्चितमात्र हिंसा नहीं. ते करणी करे आर्य ।
धुर सूयगडांगे कह्यो, ज्ञान सार तेह कार्य ॥६४॥
अहिंसा समता धरै, ज्ञान तणो यह सार ।
एहिज जाणपणो सिरे, भाष्यो श्री जगतार ॥६५॥
प्रथमाध्ययने चतुर्थे, उद्देशे दशमी गाह ।
अहिंसा में वर्त्तता, ते विज्ञानी कहाहि ॥६६॥

॥ सूत्र पाठ ॥

एवं नाणिणो सारं, जेन हिंसइ किंचियं ।
अहिंसा समयं चेव, एतावतं वियाणिया ॥१०॥

प्र० सूत्र कृतांगे १ अध्ययने ४ उद्देशे १० गाथा ।

॥ भावार्थ ॥

ज्ञान पाने का, निश्चय कर के यही सार है कि किञ्चितमात्र भी हिन्सा नहीं करे अहिंसा और समता धरै यही ज्ञान विज्ञान है ।

॥ बोल तेवीसवां ॥

केवली ज्ञानी भाष्यो धर्म सन्देह रहित कह्यो ।
सा० सू० प्र० सूयगडांग अध्ययन १० में गा० ३ री

॥ दोहा ॥

संदेह रहित सु आखियो, केवली भाषित धर्म ।
आतम वत् पर प्राणी गिण, न करे हिंसा कर्म ॥६७॥

शुद्ध आहार लेवे, सदा, संचय न करे लिगार।
सूयगडांग दशमें कह्यो, तीजी गाथा सार ॥९८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

सुयक्खाय धम्मे वितिगिच्छ तिएणे।
लाढे चरे आय तुले पयासु ॥
आयं न कुज्जा इह जीवियट्ठी।
चय न कुज्जा सु तवस्सि भिक्खू ॥३॥

॥ भावार्थ ॥

समाधिवन्त पुरुष केवली भाषित धर्म को सन्देह रहित मान कर सर्व जीवों को आत्म तुल्य मानता हुआ निर्दोष आहार की गवेषणा करके विचरे। असंयम जीवितव्य के लिये पापास्रव करे नहीं ऐसे सुतपस्वी साधु धनधान्यादि आहार पाणी का सञ्चय न करे।

॥ बोल चोवीसवां ॥

आप रो छान्दो रूंधे तेहिज धर्म। सा० सू० उत्तराध्ययन अ० ४ गा० ८ वीं।

॥ दोहा ॥

छांदो रूंधे आपणो, तेहिज धर्म उदार।
बहु वर्ष पूर्वां लगे, रोके स्वेच्छाचार ॥९९॥
पर छन्दे जिम अश्व लहै, मोगपणो अवधार।
तिम अप्रमत्त पणे मुनि, लोपे नहीं गुरुकार ॥१००॥

शीघ्र पणें कर्म क्षय करी, पामे मोक्ष प्रधान ।
चौथा उत्तराध्ययन में, अष्ठम गाथा जान ॥१०१॥

॥ सूत्र पाठ ॥

छन्द निरोहेण इवेइ मोक्खं, आसे जहा सिक्खिये वम्म धारी ।
पुव्वाईं वासाइं चर अप्पमत्तो, तुम्हा मुणी खिप्प मुवेइ मोक्खं ॥८॥

उत्तराध्ययन अ० ४ ।

॥ भावार्थ ॥

अपना छन्दा अर्थात् अपनी इच्छा का निरोध करने से मुक्ति होती है। जैसे जातिवन्त अश्व (घोड़ा) सवार की इच्छानुसार रहने से योग्यता प्राप्त करके दुःखों से छुटकारा पाता है। वैसे ही मुनि पूर्व का वर्षों पर्यन्त अपनी इच्छा (छन्दा) को रोक के गुर्वाज्ञा प्रमाण चलते अप्रमत्तपने विचरता हुआ मोक्ष प्राप्त करता है।

॥ बोल पच्चीसवां ॥

केवली प्ररूप्यो धर्म अहिंसा संयमो तवो कह्यो सा० सू० दशवैकालिक अध्ययन १ गा० १ली ।

॥ दोहा ॥

दशवैकालिक में कह्यो, धुर अध्ययन मझार ।
धुर गाथा केवली प्रणित, अहिंसा धर्म सार ॥१०२॥
अहिंसा संयम तपो, यह धर्म मंगलीक ।
तासु नमे सर्व देवता, जासु धर्म मन ठीक ॥१०३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

धम्मो मंगल मुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो ।
देवावि तं नमं संति, जस्स धम्म सयामणो ॥१॥

दशवैकालिक अ० १ ।

॥ भावार्थ ॥

अहिंसा संयम तप रूप धर्म उत्कृष्ट मङ्गल है, जिनका मन सदा धर्म में है । उन्हें देवता भी नमस्कार करते हैं ।

॥ बोल छबीसवां ॥

अपछन्दा री प्रशंसा करै करावै करता ने भलो जाणै तो चौमासी प्रायश्चित कह्यो । सा० सूत्र निशीथ उद्देशे ११ वें ।

॥ दोहा ॥

त्रिकरण प्रशंसा करे, अपछन्दा री सोय ।
प्रायश्चित्त मुनि ने कह्यो, निशीथ ग्यारहवें जोय ॥१०४॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू अहछन्दं पसंसइ पसंसं तं वा साइज्जइ ॥१८७॥

निशीथ उद्देशा अ० ११ वां ।

॥ भावार्थ ॥

जो साधु अपछन्दा अर्थात् अपनी इच्छानुसार चलने वाला अविनीत की प्रशंसा करे करावे अनुमोदे तो चौमासी प्रायश्चित आवै ।

॥ बोल सताबीसवां ॥

बाल मरण री प्रशंसा करे करावे अनुमोदे तो प्रायश्चित्त कह्यो । सा० सू० निशीथ उद्देशे ११ वें ।

॥ दोहा ॥

मुनिवर बाल मरण-तणी, करे प्रशंसा कोय ।
करतां प्रते अनुमोदियां, दंड निशीथ में जोय ॥१०५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

बाल मरणाणि वा पसंसइ पसंसं तं वा साइज्जइ ।

निशीथ उद्देशा ११ वां

॥ भावार्थ ॥

बाल मरण अर्थात् बिना अनशन किये मिथ्यात सहित मरे उसकी प्रशंसा करे करावे और उसका अनुमोदन करे तो प्रायश्चित्त ।

॥ बोल अठाबीसवां ॥

जो साधु गृहस्थ ने अणतीर्थी ने १ असण, २ पाण, ३ खादिम, ४ स्वादिम, ५ वस्त्र, ६ पात्र, ७ कम्बल, ८ पाय पुच्छणं, ये आठ बोल देवै देवावै देता ने भलो जाणै तो चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो । सा० सू० निशीथ उद्देशे १५ वें ।

॥ दोहा ॥

अन्य तीर्थि वा गृहस्थ ने, च्यार प्रकारे आहार ।
वस्त्र पात्र कम्बल वली, पाय-पुच्छणो धार ॥१०६॥

यें आठ बोल देवें तसु, तथा देवावे ताय।
देतां प्रते भलो जाणियां, दंड चौमासी आय ॥१०७॥
निशीथ उद्देशे पन्द्रहवें, भाष्यो श्री जगतार।
पक्षपात सहु परिहरी, जोवो नयण उघार ॥१०८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू अगाग उत्थिएगा वा, गारत्थिएगा वा, असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, देयइ देयं तं वा, साइज्जइ ॥७८॥

जे भिक्खू अगाग उत्थियेगा वा, गारत्थिएगा वा, वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा, पाय पुच्छणं वा, देयइ देयं तं वा साइज्जइ ॥७६॥

निशीथ उद्देशा १५ वां

॥ भावार्थ ॥

जो साधु अन्य तीर्थी को गृहस्थ को आहार पानी खादिम स्वादिम देवे देवावें देते हुए को भला जानें तो प्रायश्चित्त। जो साधु अन्य तीर्थी को गृहस्थ को वस्त्र पात्र कम्बल पाद (पग) पुच्छणा देवे देवावे देते हुए को भला जाने तो प्रायश्चित्त।

॥ बोल उनतीसवां ॥

जो साधु बूसी राई ने अबूसी राई कहै अबूसी राई ने बूसी राई कहैं तो चौमासी प्रायश्चित्त आवे। सा० सू० निशीथ उ० १६ वां।

॥ दोहा ॥

ज्ञान दर्शन चारित्र तणो, धारक बूसी जेह।
ते साधु गुण आगरा, तसु जे बूसी वदेह ॥१०६॥

विराधक ज्ञानादिक तणो, विषय लम्पटी जान।
ते अबूसी राई ने बूसी कहै, प्रायश्चित्त तसु मान ॥११०॥
निशीथ उद्देशो सोलहवें, तेरम चवदम बोल।
निन्दा करि गुणवन्त की, गुण तेहना मत ओल ॥१११॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू बूसी रायइ अबूसी रायइयं वदइ वदं तं वा साइज्जइ।
जे भिक्खू अबूसराइयं बूसराइयं वदइ वदं तं वा साइज्जइ।

निशीथ उद्देशा १६ वां

॥ भावार्थ ॥

जो साधु बूसीरायई अर्थात् ज्ञान दर्शन चरित्र गुणके धारक अपने से बड़े मुनिराजको अबूसी रायई कहे और अबूसी रायई जो विषय लम्पटी को बूसी रायई कहे तो चौमासी प्रायश्चित्त।

॥ बोल तीसवां ॥

सरीखा साधु होकर सरीखा साधुआं ने स्थानक देवे नहीं. देवावे नहीं, देतां प्रते भलो जाणै नहीं, तो प्रायश्चित्त कह्यो सा० सू० निशीथ उद्देशे १७ वें।

॥ बोल इकतीसवां ॥

सरीखी साध्वी होकर सरीखी साध्वी ने स्थानक देवे नहीं, देवावे नहीं, देतां प्रते भलो जाणे नहीं, तो प्रायश्चित्त कह्यो। सा० सू० निशीथ उद्देशे १७ वें।

॥ दोहा ॥

सरिखा साधु ने मुनी, थानक में ठहराय ।
निशीथ उद्देशे सतरहवें, प्रायश्चित्त कहवाय ॥ ११२ ॥
इमहिज सरखी साधवी, साध्वियां प्रते जान ।
प्रायश्चित्त आवे तसु, जो नहीं दे निज स्थान ॥ ११३ ॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिखू निग्गंथे निग्गंथस सरिसगस्स सं ते उवासे, अन्ते उवासे, न देइ न देयं तं वा साइज्जइ । जे भिक्खूणि णिग्गंथी णिग्गंथिए सरिसयाए, सं ते उवासे न तं वा साइज्जइ ।

सा० सू० निशीथ उद्देशा १७ वां

॥ भावार्थ ॥

जो साधु निर्ग्रन्थ सदृश निर्ग्रन्थ को अपनी निश्रा में उनके रहने जैसी जगह हैं वे उनको नहीं देवे, नहीं देवावे, और नहीं देने वाले को अनुमोदना करे, तो प्रायश्चित आवे। जो साध्वी अपने जैसी साध्वियों को अपनी निश्रा में रहा उपाश्रय नहीं देवे, नहीं देवावे, नहीं देते को भला जाने, प्रायश्चित्त आवे।

॥ बोल बत्तीसवां ॥

अन्य तीर्थी की गृहस्थ की वेयावच्च करे, करावे, करतां प्रते भलो जाणे तो प्रायश्चित्त आवे। सा० सू० निशीथ उ० ११ वां।

॥ दोहा ॥

अन्य तीर्थी वा गृहस्थ की, वेयावच कियां है दंड ।
भलो जाण्यां पिण दंड है, निशीथ ग्यारहवें मंड ॥११४॥
तेलादिक मर्दन करे, मसले दाबे पाय ।
धोवे रंगे प्रमार्जे, बलि लोद्रवादि लगाय ॥११५॥
तसु तन में देखी करी, गड़गुम्बड़ादिक कोय ।
पूंजे धोवे मालिश करे, वलि छेदे अवलोय ॥११६॥
रुधिर राध काढे तसु, तेल लेपादि लगाय ।
धूपादिक देई करि, क्रिमि आदि निकलाय ॥११७॥
केश संवारे काट कर, दन्तादिक धोवाय ।
घसे दांत मज्जन करे, कान नाक नूं मैल कढ़ाय ॥११८॥
नेत्र रोग युत देख के, प्रक्षाली साफ करेह ।
सुरमादिक घाले तसु, भौंह बाल संवारे तेह ॥११९॥
पसीनादिक साफ करि, साता दे उपजाय ।
तृतीय उद्देशे जिम कह्या, पचपन बोल गिणाय ॥१२०॥
यावत् विचरन्ता मुनी, अन्य तीर्थि प्रते देखि ।
वा ग्रहस्थी प्रत देख कर, शिर ढांके सुविशेष ॥१२१॥
इत्यादिक वेयावच कियां, बलि करायां ताह ।
भलो जाण्यां पिण दंड कह्यो, सूत्र निशीथ रे मांह ॥१२२॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू अराणा-उत्थियस्स वा, गारत्थियस्स वा, पाये संवाहेज्ज

वा, पलि मद्देज्ज वा, संबाहंतं वा, पलि मद्द तं वा, साइज्जइ । एवं जाव तइयो उद्देसो गमो खेयव्वो, अरणय उत्थियस्स वा, गारत्थियस्स वा, अभिलावो जाव जे भिक्खू गामाणुगाम दुइज्ज माणे, अरणय उत्थियस्स वा, गारत्थियस्स वा, सीस दुवारियं करेइ, करे तं वा साइज्जइ ।

सा० सू० निशीथ उद्देशा ११ वाँ

॥ भावार्थ ॥

जो साधु अन्य तीर्थी का वा गृहस्थ का पग मसले मर्दन करे अथवा करते हुए को भला जाने तो प्रायश्चित्त । जिस प्रकार तीसरे उद्देशे में ५५ बोल कहे हैं उसी प्रकार यहां सर्व कहना यथा—१ अन्य तीर्थी को वा गृहस्थ को प्रमार्जे २ मर्दन करे, ३ तेलादि मसले, ४ लोद्रादि लगावे, ५ धोवे, ६ रंगे, ७ ऐसे ही शरीर को प्रमार्जे, ८ मर्दन करे, ९ तेलादि मसले, १० लोद्रवादि लगावे, ११ धोवे, १२ रंगे, १३ शरीर के गड़गुम्ब-ड़ादि होय उन्हें प्रमार्जे १४ मर्दन करे, १५ तेलादिक लगावे, १६ लोद्र-वादि लगावे, १७ धोवे, १८ रंगे, १९ गुम्बड़ादिको छेदे, २० रक्त निकाले, २१ पीप निकाले, २२ धोवे २३ लेप करे २४ मर्दन करे, २५ धूप देवे, २६ गुदा की कृमि निकाले, २७ नख सुधारे २८ गुह्य स्थान के बाल छेदे, २९ भौंहों के जंघा के कांख के दाढ़ी के मूंछ के मस्तक के कान के नाक के आंख के इन नवों स्थानों के केश छेदे, ३८ दांत घसे, ३९ दांत धोवे, ४० दांत रंगे, ४१ ओष्ठ घसे ४२ ओष्ठों का मैल निकाले, ४३ ओष्ठ धोवे, ४४ खटाइ देवे, ४५ रङ्ग चढ़ावे, ४६ लम्बे ओष्ठों को काटे, ४७ दीर्घ मूंछे काटे, ४८ आंख साफ करे, ४९ आंख का मैल निकाले, ५० आंख धोवे, ५१ आंख शुद्ध करे, ५२ अञ्जन सुरमादि डाले, ५३ भौंहों के केश सुधारे, ५४ आंख, कान, नाशिका, दांत, नखों का मैल निकाले, ५५ स्वेद (पसीना) पोंछे, यावत् साधु मुनिराज ग्रामानुग्राम विचरते हुए अन्य

तीर्थी वा गृहस्थ को देखकर उनका मस्तक छत्र वस्त्रादि से ढांके इत्यादि वैयावृत्य करे करावे, करते हुए की अनुमोदना करे, तो प्राय- श्चित्त।

॥ बोल तेतीसवां तथा चौतीसवां ॥

साधु आप रहता होय जिण स्थानक में न्यातीला वा अण न्यातीला. श्रावक वा अश्रावक ने आखो रात वा आधो रात, राखे तो प्रायश्चित्त आवे। सा० सू० निशीथ उद्देशे ८ वें बोल १२ वें।

साधु रहता होय जिण स्थानक में न्यातीला वा अण न्यातीला, श्रावक वा अश्रावक, आखो रात वा आधी रात रहे उणां ने नहीं निषेधे तो प्रायश्चित्त आवे। सा० सू० निशीथ उद्देशे ८, बोल १३ वें।

॥ दोहा ॥

साधु बसे तिण स्थान में. निज नाती प्रते जान।
अथवा अण न्याती प्रते, राख्या दंड पिछान ॥१२३॥
श्रावक हो अथवा बलि, अश्रावक जो होय।
सर्व वा अर्ध रात्रि में, राख्यां प्रायश्चित जोय ॥१२४॥
इमहिज रहता हुयां प्रते, नहीं निषेधै तास।
निशीथ उद्देशे आठवें, प्रायश्चित कह्यो जास ॥१२५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा उवासयं वा अणुवासयं वा,

अन्तो उवस्सयस्स अद्ध वरायं, कसिण वरायं, सवसावेइ, संवसा वन्ता साइज्जइ ॥१२॥ जे भिक्खू तं न पडियाएक्खेइ न पडियाइक्खं तं वा, साइज्जइ ॥१३॥

सू० निशीथ उद्देशे ८ वें।

॥ भावार्थ ॥

जो साधु ज्ञाती ने तथा अज्ञाती ने, श्रावक ने तथा अश्रावक ने, आप जिस स्थान में रहते हों उसी स्थान में सर्व रात्रि अथवा अर्द्ध रात्रि उनके साथ रहे यावत् अनुमोदे तो प्रायश्चित्त। रहते हुए को न निषेधे अर्थात् मना न करे तो प्रायश्चित आवे।

॥ सोरठा ॥

एक स्थान इक कल्प रे, तिण में ग्रहस्थी ने मुनी।
राख्यां प्रायश्चित्त जल्प रे, अर्द्ध तथा सर्व रात्रि तक ॥१२६॥
इक आंगण उपरान्त रे, सामायक पौषध ग्रही करे,
ते ठाम २ विरतन्त रे, सूत्र देख निर्णय करो ॥१२७॥

॥ बोल पैंतीसवां ॥

सावद्य दान की प्रशंसा करे तिण ने प्राणी जीवां को बध बंछणहारो कह्यो। सा० सू० सूयगडांग अ० ११ वें गा० २० वीं।

॥ दोहा ॥

दो सांसारिक दान री, करे प्रशंसा कोय।
बध बंछे षट् काय नूं, सूयगडांगे जोय ॥१२८॥

अध्ययन इग्यारहवां ने विषे, बीसमी गाथा मांहि ।
निषेधियां वर्त्तमान में, वृत्ति छेद कहाहि ॥१२९॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जेय दाणं पसंसंति, वह मिच्छंन्ति पाणिणो ।
जेयणं पडि सेहंति, वित्तिच्छेयं करन्ति ते ॥१३०॥

॥ भावार्थ ॥

जो दान की प्रशंसा करे सो प्राणी जीवों का बधः वंछता है, और जो वर्त्तमान मे निषेध करे तो लेने वाले की वृत्ति का छेद करे।

॥ सोरठा ॥

इहां को प्रश्न करेह रे, सावद्य शब्द नहीं पाठ में।
समुचै दान कहेह रे, तसु उत्तर आगे सुणो ॥१३०॥
छहुं काय री घात रे, मुनि ने देतां नहिं हुवै।
ते निरवद्य साक्षात रे, तिणरी प्रशंसा बहु जगह ।१३१।
दान शील तप भाव रे, च्यार मार्ग यह मुक्ति रा।
ते निरवद्य ठहराव रे, करे जिन आज्ञा सहित जो ।१३२।
शरीर अधिकरण नांहि रे, पीहर है षट् काय ना।
यावज्जीव लग ताहि रे, मुनि रे हिंसा त्याग है ।।१३३।।
तसु दीधां पुण्य जान रे, अशुभ कर्म पिण क्षय हुवै।
दियां सुपात्र दान रे, श्रावक रे व्रत बारमूं ॥१३४॥
दुर्लभ कह्या जिनराय रे, शुद्ध दान दाता तिका।
दीधां शुभ गति जाय रे, दशवैकालिक विषे कह्यो ॥१३५॥

सुमुख प्रमुख दश ताय रे, मुनि ने दान देई करी ।
एकावतारी थाय रे, केइक तिण भव मोक्ष में ॥१३६॥
पञ्चम अङ्ग पिछाण रे, अष्टम शत उद्देश षट् ।
तथा रूप मुनि ने जाण रे, श्रावक पडिलाभे तसु ।१३७।
एकान्त निर्जरा होय रे, किञ्चित्मात्र पिण पाप नहीं ।
पुण्य बन्ध अवलोय रे, ठाम ठाम सूत्रे कह्यो ॥१३८॥
स्थानाङ्ग नवमे जोय रे, नव विधि पुण्य बन्धे कह्यो ।
निर्वद्य नवों अवलोय रे, मुनि ने कल्पे ते कह्या ॥१३९॥
नमस्कार कियां जाहि रे, तेहने निर्दोष अन्न दियां ।
पुण्य तणो बन्ध थाहि रे, नव ही सरीखा जाणिये ।१४०।
ते मांटे इहाँ जान रे, निर्वद्य दान न लेखवो ।
बीसमीं इकबीसमीं पिछान रे, गाथा देख निर्णय करो ॥
अस्ति नास्ति ये दोय रे, पुण्य पाप नी नहीं कहे ।
वर्त्तमान में जोय रे, पूछ्यां थी मुनि नहीं वदे ।१४२॥
तेम इहां अवधार रे, निषेधियां वर्त्तमान में ।
करन्ति शब्दे धार रे, क्रिया तेह वर्त्तमान री ॥१४३॥
कियां प्रशंसा सोय रे, बध बंछणहारो कह्यो ।
प्रत्यक्ष ही अवलोय रे, सावद्य दान यह जाणवो ।१४४।
ठाम २ जिन राय रे, कुपात्र दान तणा कह्या ।
फल कडुआ अधिकाय रे पक्षपात तज सांभलो ॥१४५॥
मृगा लोढा ने देख रे, गौतम जिनपे आय करि ।

दुःख विपाक में लेख रे, पूछ्यो किं दत्ता इणे ॥१४६॥
सूत्र भगवती मांहि रे, अष्टम शतके देखलो।
छट्ठे उद्देशे ताहि रे, असंयती अविरतिने ॥१४७॥
पाप एकान्त जे थाय रे, सचित अचित पड़िलाभियां।
निर्जरा किञ्चित नाहिं रे, प्रत्यक्ष पाठ विषे कह्यो ॥१४८॥
तथा सूयगडाअंगेह रे, नवम अध्ययन तेवीसमीं।
गाथा में इम लेह रे, साधु विन अनेरा प्रते ॥१४६॥
दान देवो अवधार रे, कारण पाप तणो तिको।
भ्रमण हेतु संसार रे, इत्यादिक बहु सूत्र में ॥१५०॥
वलि आनन्द श्रावक जान रे, अन्य तीर्थी ने देण रा।
कीधा छे पचखान रे, सप्तम अंगे देखल्यो ॥१५१॥
जो फल न कहे कदेह रे, सावद्य दान तणा अशुभ।
तो भवी किम जाणेह रे, सुपात्र कुपात्रज दान ने।१५२।
निषेधियां वर्त्तमान रे, अन्तराय लागे तसु।
वलि वृत्तिच्छेदक जान रे, दान लेण वाला तणी ॥१५३॥
प्रशंसियां जे दान रे, प्राण घात वांछक कह्यो।
तो ते दीधां दान रे, ते हिंसक किम नहीं हुवै ॥१५४॥
मुनि विन अपर शरीर रे, अधिकरण षट् काय नूं।
तसु तीखो कियां सीर रे, हिंसादिक कारज तणो।१५५।
अव्रत मांहि देह रे, लेवे ते पिण अविरत में।
दूजो आस्रव सेवेह रे, तिण थी न हुवे पुण्य बंध।१५६।

कोई कहै शुभ परिणाम रे, दान देण वाला तणां।
तिण सूं पुन्य बन्ध ताम रे, तसु उत्तर हिये विचारिये ॥
साता बंछी एक रे, धुर आस्रव सेवावियो।
दूजो बोल अलीकरे, दुःख दूजा रो मेटियो ॥१५८॥
तीजो चोरी कराय रे पर साता परिणाम से।
इक मैथुन सेवाय रे, साता रा परिणाम से ॥१५९॥
इम परिग्रह रखवाय रे, हित बंछी भल भाव से।
यह पंचास्रव न्याय रे, बुद्धिवन्त हिये विचारिये।१६०।
धुर पंचम रे मांहि रे, धर्म पुण्य जो होय तो।
विचला तीन में ताहि रे, धर्म पुन्य पिण जाणवो ॥१६१॥
न हुवे शुभ परिणाम रे, पंचास्रव सेवावतां।
जिन आज्ञा बिन काम रे, कीधां थी धर्म पुण्य नहीं ॥
तिणसूं लौकिक दान रे, प्रशंसवो नहीं मुनि भणी।
प्रशंसियां थी जान रे, इच्छक प्राणी बध नणुं ॥१६३॥

॥ बोल छत्तीसवां ॥

विषय सहित धर्म बुरो, जिम ताल पुट जहर खायां, कुरीति से हाथ में शस्त्र लिया, कुविधि मन्त्र जपियां मरण पामें, तिम इन्द्रियों को विषय सहित धर्म प्ररूपे ते घणा जन्म मरण बधावे। सा० सू० उत्तराध्ययन अ० २० वें गा० ४४

॥ दोहा ॥

जिम विष खायां तालपुट, कुविधि शस्त्र हाथ मझार।
मन्त्र कुरीति जपियां थकां, पामे मरण तिवार ॥१६४॥
तिम विषय सहित जे धर्म छे, प्ररूपियां तसु जान।
दुःखदाई होवे घणो, जन्म मरण बहु मान ॥१६५॥
उत्तराध्ययन में जिन कह्यो, बीसमाध्ययन रे मांहि।
चार चालीसवीं गाह में, हिंसा धर्म दुःखदाय ॥१६६॥

॥ सूत्र पाठ ॥

विसन्तु पीयं जह काल कूडं, हणाइ सत्थं जह कुग्गहियं।
एसो विधम्मो विसओव वन्नो, हणइ वेयालइवा विवन्नो ॥४४॥

उत्तराध्ययन अ० २० वें।

॥ भावार्थ ॥

जैसे कालकूट जहर पीने से, कुविधि शस्त्र ग्रहण करने से, और कुरीति से वेतालादि मन्त्र जपने से, मृत्यु प्राप्त हो। वैसे इन्द्रिय विषय सहित धर्म प्ररूपना करने से जन्म मरणादि की वृद्धि हो तथा दुःखदाई हो।

॥ बोल सैंतीसवां ॥

भाषा २ कही १ आराधक, २ विराधक। विराधक भाषा में औगुण ४ कह्या यथा—१ असंयम, २ अविरति, ३ अपडियाई, ४ अपच्चक्खाण पाप कर्म सा० सू० पन्नवणा पद ११ वें।

॥ दोहा ॥

दोय प्रकारे जाणवी, भाषा जे बोलेह ।
आराधक प्रथमा कही; द्वितीय विराधक जेह ।१६७॥
सउपयोग यथोक्त जे, ते आराधक जान ।
विराधक तेण पर अछे, बिन उपयोग अयुक्त पिछान ॥
अवगुण चार तिण में अछे, असंयम अव्रत अवलोय ।
अप्रतिहत अपचक्खाण इम पन्नवणा इग्यारहवें जोय ॥

॥ सूत्र पाठ ॥

इच्चेयाइं भन्ते चत्तारि भासाज्जायाइं भासमाणे किं आराहए विराहए ? गोयमा इच्चेयाइं चत्तारि भासाज्जायाइं आउत्त भासमाणे आराहए णो विराहए, तेणां पर असंजय, अविरय, अपडिहत, अपचक्खाय पाव कम्मे ।

पन्नवणा पद ११ वाँ ।

॥ भावार्थ ॥

हे भगवान् यह चार भाषा जाति भाषते हुए आराधक है या विराधक ? हे गौतम यह चार प्रकार की भाषा उपयोग सहित जैसे की जैसे बोले तो आराधक है, विराधक नहीं । इसके उपरान्त असंयम, अविरत, अप्रतिहत, पाप कर्मों का अप्रत्याख्यान है ।

॥ बोल अड़तीसवां ॥

मिश्र भाषा बोल्यां महा मोहनीय कर्म बंधे ।
सा० सू० दशाश्रुतस्कन्ध अध्ययन ६ वें बोल ६ वें ।

॥ दोहा ॥

मिश्र भाषा बोल्यां थकां, महा मोहनीय बन्ध ।
नवमें बोले आखियो, श्रीदशाश्रुतस्कन्ध ॥१७०॥
जाणंतो परिषद विषे, सांच झूठ थिहुं मेल ।
बोले कपट सहित जे, मिश्र वच कुकला खेल ॥१७१॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जाणमाणो परिसाए, सच्चा मोसाइं भासए ।
अक्खीण झंझे पुरिसे, महा मोह पकुव्वइ ॥९॥

दशाश्रुतस्कन्ध अ० ९ ।

॥ भावार्थ ॥

जो जानता है कि यह झूठ है तो भी सभा में बैठ कर मिश्र भाषा बोले, अर्थात् सत्य झूठ का निर्णय न होवे ऐसी भाषा बोले सत्यासत्य भाषा बोले, क्लेश की वृद्धि करे, सो महा मोहनीय कर्म उपार्जन करता है ।

॥ बोल उनचालीसवां ॥

मिश्र भाषा छोड़े छुड़ावे तिण ने समाधि कही ।
सा० सू० प्र० सूयगडांग अ० १० वें गा० १५ वीं ।

॥ दोहा ॥

वचन गुप्ति प्राप्त मुनी, परम समाधिवन्त ।
छोड़े छोड़ावे मिश्र वच, शुभ लेश्या धर सन्त ॥१७२॥

घर छावे नहीं महा ऋषी, नहीं छवावे जेह।
वर्जे संग स्त्री तणो, दशम सूयगडा अंगेह ॥१७३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

गुत्तोवई एय समाहि पत्तो, लेस समाहट्टु परिव्वयेज्जा।
गिहं न छाये णवि छायेज्जा, समिस्स भाव पयहे पयासु ॥१५॥

॥ भावार्थ ॥

वचन गुप्तिवन्त अर्थात् सावद्य वचन गोपने वाले समाधि और शुभ लेश्या के धारक अपने रहने के लिये घर छावे नहीं, अन्य से छवावे नहीं, समभाव धारण करता हुआ मिश्र भाषा का त्याग करे।

॥ बोल चालीसवां ॥

मिश्र भाषा तथा असत्य भाषा सर्व प्रकारे छोड़नी कही, सत्य और व्यवहारनी भाषा बोलनी कही। सा० सू० दशवैकालिक अ० ७ गाथा १ लो।

॥ दोहा ॥

सर्व प्रकारे असत्य, मिश्र, नहीं बोले मुनि वैण।
सत्य व्यवहार ही भाषवे, च्यार भाषा में सैण ॥१७४॥
दशवैकालिक में कह्यो, सप्तमध्ययने स्वच्छ।
पहली गाथा ने विषे, सीखे सविनय वच्छ ॥१७५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

चउण्हं खलु भासाणं, परिसंखाए पण्णवं।
दोण्हं तु विणयं सिक्खे, दो ण भासिज्ज सव्वसो ॥१॥

दशवैकालिक अ० ७ वाँ।

॥ भावार्थ ॥

चार प्रकार की भाषा है जिसमें सत्य और व्यवहार तो विवय पूर्वक सीखे, किन्तु असत्य और मिश्र भाषा सर्वथा प्रकारे नहीं बोले।

॥ बोल इकचालीसवां ॥

मिश्र भाषा रा धणी रो वचन अवक्तव्य कह्यो, अणविमासो बोलनहार कह्यो, अज्ञानवादी कह्यो, पूछ्यां रो जवाब देवा असमर्थ कह्यो, मिश्र धर्म प्ररूपणे वालो आप रो मत थापवा भणी छलबल मांडतो कह्यो। सा० सू० प्र० सूयगडांग अध्ययन १२ वें गाथा ५ वीं।

॥ दोहा ॥

मिश्र भाषा प्रास थको, मिश्र नूं बोलणहार।
बोले विना बिचारियो, अज्ञान वादी धार ॥१७६॥
जाब देवा समरथ नहीं, पूछ्यां थी अवलोय।
मिश्र धर्म प्रते स्थापवा, छल बल मांडै सोय ॥१७७॥
आत्म अक्रिया मान कर, फुन प्रकृति क्षय मुक्ति।
इम इक पख इम दोय पख, सांख्य दर्शनी उक्ति ।१७८।
प्रथम सूयगडाअङ्ग कह्यो, द्वादशाध्ययने पेख।
मिश्र वक्ता अवक्त हैं, पंठमी गाथा पेख ॥१७९॥

॥ सूत्र पाठ ॥

सम्मिस्स भावं च गिरा गहीए, से मुम्मुई होइ अणाणुवाई ।

इम दु पक्खं इममेग पक्खं, आहंसु छलाय तणं च कम्मं ॥५॥

प्र० सूत्र कृतांगे द्वादशमध्ययने ।

॥ भावार्थ ॥

मिश्र भाव को प्राप्त होके, प्रश्न करने वाले को उत्तर देनेमें असमर्थ होते हैं, और मौन धारण करते हैं. वे अज्ञानवादी कभी क्या कहे, कभी क्या कहे, इस तरह से कभी एक पक्षी, कभी दो पक्षी होते हैं। और छल बल करके अपना मत स्थापन करते हैं।

॥ बोल बयालीसवां ॥

साधु री आज्ञा बारे धर्म श्रद्धे तिण ने काम भोग में खूतो कह्यो, हिंसा रो करणहार कह्यो। सा० सू० प्र० आचारांग अध्ययन ६ उद्देशो ४ थो।

॥ दोहा ॥

साधु री आज्ञा बिना, श्रद्धे धर्म उदार ।
ते काम भोग में खूतिया, हिंसा रा करणहार ॥१८०॥
प्रथम आचारांगे कह्यो, षष्टम ध्ययन मझार ।
चौथा उद्देशा विषे, सांभलज्यो विस्तार ॥१८१॥
ब्रह्मचर्य वसता थकां, आण न मन मानेह ।
माननीय होऊं लोक में, इम धारी घर छांडेह ॥१८२॥

ते काम भोग गृद्धी छता, मूर्च्छित विषय मझार।
समाधि मार्ग जिन भाषियो, ते नहीं सेवे लिगार ।१८३।
आर्य व शुद्ध साधु तसु, शिक्षा दे किण वार।
तो तेहनी निन्दा करे, वे द्विगुण मूर्ख इम धार ॥१८४॥

॥ सूत्र पाठ ॥

वसित्ता बंभचेरंसि आणं तं णो त्ति मणणमाणा, अग्घायं तु सोच्चाणि सम्म समणुन्ना जिविस्सामो, एगे णिक्खम्मते असम्भवेता विडज्झमाणो कामेहि गिद्धा, अज्झो वणणा समाहि माणाए मज्झो सयं ता सत्था मेव फरू सं वदन्ति । सील मता उव सन्ता संखाए रीयमाणा असीला अणुवय माणस्स वितिया मंदस्स बालया ।

प्र० आचारांगे षष्ठमध्ययने चतुर्थोद्देशे।

॥ भावार्थ ॥

कितनेक साधू होकर आज्ञा का अनादर करते हुए विषय लम्पटी होकर उनमें लिप्त हो जाते हैं। मैं सब का माननीय होऊंगा ऐसा विचार करके दीक्षा अंगीकार करते हैं, ब्रह्मचर्य धारते हैं, परन्तु गुर्वाज्ञा प्रमाण मोक्ष मार्गमें नहीं चलते। काम इच्छा से सुखों में मूर्च्छित होकर विषयों की और ध्यान दे गृद्धि हो तीर्थङ्कर भाषित जो समाधि मार्ग है उसका सेवन नहीं करते, यदि उन्हें कोई अच्छी शिक्षा देवे तो उनकी निन्दा करते हैं, गुर्वाज्ञा विना अपने मनमाना हिंसा धर्म प्ररूपते हुए सुखों से जीवें ऐसा विचार के भ्रष्ट हुए, वे बाल, मन्द बुद्धि वाले, शुद्धाचार के पालने वाले साधुओं से द्वेषभाव रखके निन्दा करने में तत्पर हैं अतः वे दुगुने मूर्ख हैं।

॥ दोहा ॥

बलि तिणहिज उद्देशे कह्यो, धर्म कहे आज्ञा बाहर।
प्राण जीव हिंसक तिका, असंयम अर्थी धार ॥१८५॥
अधर्मार्थी बाल ते, आरम्भार्थी जेह।
हने हनावे प्राणी ने, भलो जाणता तेह ॥१८६॥
दुक्कर धर्म जिनवर कह्यो, ते पालन समर्थ नाहिं।
तब तसु करे अवहेलना, तत्पर हिंसा माहिं ॥१८७॥
ते आज्ञा बाहिर थई, धर्म प्ररूपे एम।
जिन आज्ञा नहीं मानतो, भ्रष्ट किया निज नेम ॥१८८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अहमट्ठी तुमंसि णाम बाले आरम्भट्ठी अणुवय माणे हण पाणे घायमाणे हणा ओयावि समणु जाणा माणे घोरे धम्मे उदीरिए उव इइणं अणाणाए एस विसणे वितट्टे वियाहितेत्तिवेमि।

प्र० आचारांग सूत्रे षष्ठमध्ययने चतुर्थोद्देशे।

॥ भावार्थ ॥

संयम से भ्रष्ट हुए को सत्पुरुष इस तरह बोध देते है कि हे पुरुष तू प्राणियों की हिंसा करता है हिंसा का उपदेश देता है अतः तू हिंसा का चाहने वाला है अज्ञान है अधर्म का अर्थी है। तीर्थङ्करों ने तो अहिंसा धर्म अराधना दुष्कर कहा है किन्तु तू आज्ञा बाहर होके आज्ञा बाहिर धर्म प्ररूपता है धर्म की उपेक्षा करता है इसलिये तू मन्द बुद्धि है।

॥ बोल तीयालीसवां ॥

आज्ञा बाहर धर्म कहसी तिण रा तप अने नियम भ्रष्टकह्या, तिण ने मूर्ख कह्यो, संसार से पार पामतो नहीं कह्यो । सा० सू० आचारांग अध्ययन २ उद्देशो २ ।

॥ दोहा ॥

कहसी धर्म आज्ञा बिना, तिणरा तप अरु नेम ।
भ्रष्ट कह्या धुर अंग में, द्वितीय अध्ययने एम ॥१८६॥
दूजे उद्देशे देखल्यो, परिसह उपसर्ग पाय ।
आज्ञा बाहिर होयके, शिथिल थई मोह वर्तात ॥१६०॥
कहे मैं अपरिग्रही अछूं, पिण भोग मिल्यां भोगाय ।
तथा भोग मिलवा तणा, करत अनेक उपाय ॥१६१॥
ते भेष लजावे साधु नूं, सेवे काम विकार ।
वार २ मोह में फंस्या, जे नहीं पामे पार ॥१६२॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अणाणाए पुट्ठावि, णोणियट्टं ति मन्दा मोहेण पाउडा, अपरिग्गहा भविस्सामो समुट्ठाए लद्धे कामे अभिगाहेंति, अणाणाए मुणिणो पडिलेहन्ति, एत्थं मोहे पुणो पुणो सएणा णो पाराए ।

आचारांगे द्वितीयध्ययने द्वितीय उद्देशे ।

॥ भावार्थ ॥

अज्ञानी मूर्ख जीव परीपह उपसर्ग आने से आज्ञा बाहिर होके

संयम से भ्रष्ट होते है, और कहते हैं हम अपरिग्रही हैं दीक्षा लेके मुनि का वेश लजाते हैं, काम भोग प्राप्त होने से अभिग्रहण करते है कामादि प्राप्त करने को उपाय करते रहते हैं इस तरह आज्ञा बाहिर धर्म कहने वाले जो हैं वे बार २ मोह में फंसे हुए संसारका पार नहीं पाते।

॥ बोल चमालीसवां ॥

आज्ञा बारे उद्यम, आज्ञा मांहि आलस्य, ए दो बोल मत होज्यो, यह कुशल पुरुष भगवान् को श्रद्धा छै। सा० सू० आचारांग अ० ५ उ० ६।

॥ दोहा ॥

कुशल पुरुष महावीर नी, यह श्रद्धा है सार।
आज्ञा में उद्यम सदा, नहिं उद्यम आज्ञा बार ॥१६३॥
उद्यम आज्ञा बाहिरे, आज्ञा में आलस्य।
यह दोनूं मत होयज्यो, इम भाख्यो कुशलस्स ॥१६४॥
धुर आचारांगे कह्यो, पंचम अध्ययने पेख।
छट्ठा उद्देशा विषे, जिन दर्शन इम लेख ॥१६५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अणाणाए एगे सोवट्ठाणे, आणाए एगे निरूवट्ठाणे।

एतं ते माहोउ, ए यं कुसलस्स दंसणं ॥

[आचारांग पंचम अध्ययने षष्ठमोद्देशे।

॥ भावार्थ ॥

कितनेक आज्ञा बाहिर विपरीत प्रवृत्तिमें उद्यमी वर्त्तते हैं और कितने ही जिनाज्ञानुकूल प्रवृत्ति में निरुद्यमी होते हैं अतः यह दोनों

अर्थात् आज्ञा में आलस्य और आज्ञा बाहिर उद्यम कभी न होवे, यही कुशल पुरुष भगवान् महावीर का दर्शन है।

॥ बोल पैंतालीसवां ॥

प्रवचन से विरुद्ध प्ररूपने वाला ने भगवान निन्हव कह्यो। सा० सू० उववाई प्रश्न १६ वें।

॥ दोहा ॥

प्रवचन विरुद्ध प्ररूपणा, करे ते निन्हव धार।
सूत्र उववाई में कह्यो, उन्नीसवां प्रश्न मझार ॥१६६॥
सप्त निन्हव प्रवचन तणा, भाख्या श्री जगतार।
करता अशुद्ध प्ररूपणा, श्रद्धा तास असार ॥१६७॥

॥ सूत्र पाठ ॥

इच्चे दे सत्तत्त पवयण णिण्हका।

उववाई प्रश्न १६ वें।

॥ भावार्थ ॥

यह सातों प्रवचन के निन्हव हैं ॥ इति ॥

॥ बोल छयालीसवां ॥

राग द्वेष दोनूं पाप कह्या दोनां से न्यारा रहे सो संसार में नहीं रुलै। सा० सू० उत्तराध्ययन अ० ३१ वें गाथा ३ री।

॥ दोहा ॥

राग द्वेष दो पाप हैं, अवर्त्तें पाप मझार ।
जे भिक्खू न्यारा रहै, ते न रुलै संसार ॥१६८॥
उत्तराध्ययने आखियो इकतीसम अध्ययने जान ।
तीजी गाथा ने विषे, भाष्यो श्री भगवान ॥१६९॥

॥ सूत्र पाठ ॥

राग दोसे य दो पावे, पाव कम्म पवत्तणे ।
जे भिक्खू रुम्भये निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥३॥

उत्तराध्ययन अ० ३१ वां ।

॥ भावार्थ ॥

राग द्वेष ये दोनों पाप है, पाप कर्म में ही प्रवर्त्तते हैं। अर्थात् किसी पै राग करने में भी पाप है और द्वेष करने में भो पाप है। इसलिये साधु राग द्वेष किसी पर भी न करें। वे संसार रूपी मंडल में भ्रमण नही करते हैं।

॥ बोल सैंतालीसवां ॥

कोई इम कहै साता दियां साता होय, तिण ऊपर भगवान छव बोल प्ररूप्या—१ आर्य माग से वेगलो, २ समाधि मार्ग से न्यारो, ३ जिन धर्म री हेलणा रो करणहार, ४ अमोच्च रो कारण, ५ थोड़ा सुखां रे कारणे घणा सुखां रो हारणहार, ६ लोह

बाणिया नी परे घणो झूरसी । सा० सू० सूयगडांग अ० ३ उद्देशो ४ गाथा छठी ।

॥ दोहा ॥

साता दियां साता हुवे, इम को कहै अविचार ।
तिण ऊपर षट् बोल इम, भाष्या श्री जगतार ॥२००॥
शाक्यादिक इक एक जे, वा स्वतीर्थी जेह ।
परिषह थी डरता थका, ते जे इम भाषेह ॥२०१॥
साता से साता हुवे, एम कहै जे कोय ।
ते आर्य मार्ग से वेगला, समाधि से अलगा होय ॥२०२॥
वलि हेलण हार जिन धर्म नां, ते अल्प सुखां रे काज ।
घणां सुखां ने हारता, अछै अमोक्ष रो काज ॥२०३॥
लोह बाणिया नी परे, घणा झूरसी जेह ।
साता दियां साता हुवे, जे कोई एम वदेह ॥२०४॥

॥ सूत्र पाठ ॥

इह मेगेउ भासन्ति, सातं सातेण विज्जति ।
जे तत्थ आरिअं मग्गं, परमं च समाहिए ॥६॥
भाएवं अव मन्नंता, अप्पेणां लुंपहा बहुं ।
एतस्स अमोक्खाए, अय हारिव्व जूरह ॥७॥

॥ भावार्थ ॥

यहां एक एक ऐसा कहते हैं, कि साता से साता होती है अर्थात् सुख देने से सुख होता है ऐसा कहने वाले आर्य मार्ग से पृथक् हैं १,

परम समाधि का करने वाला जो जिन प्रणीत मार्ग है उससे दूर हैं २, जिन मार्ग की निन्दा करने वाले हैं ३, अल्प सुखों के लिये बहुत सुखों के हारने वाले है ४, अमोक्ष का कारण है ५, और वे लोह वणिक की तरह बहुत पछतावेंगे ६।

॥ सोरठा ॥

कोई कहै इम वाय रे, इहां मुनि निज तनु आश्रयी।
उपसर्ग थी डरता ताय रे, कहै साता दियां साता हुवे ॥
तप लोचादि अनेक रे, करतां कष्ट हुवे घणो।
भूख तृषादि विशेष रे, सह न सके तब इम कहै ।२०७।
पिण अन्य अन्य ने देख रे, अनुकम्पा आणी करी।
भोजन वस्त्र सुविशेष रे, साता दियां साता हुवे ॥२०८॥
इम निज मन अनुसार रे, सूत्र विरुद्ध जो को कहै।
तसु उत्तर अवधार रे, बुद्धिवन्त हिये विचारिये ॥२०९॥
क्षुधा निवारण काम रे, आहार उदक मुनि आचरे।
वस्त्र कल्पनीक आम रे, पहिरे ओढे बावरे ॥२१०॥
अथवा निज तनु नी सार रे, व्यावच करावे शिष्य कने।
देवे वस्त्र अरु आहार रे, अन्य मुनिनी वैयावच करे ॥२११
एम अनेक प्रकार रे, साधर्मी साधू बनी।
करता सार संभार रे, नव लघु वृद्ध मुनिवर तणी ।२१२।
ते साता अवधार रे, निरवद्य छे जिन आण में।
करे करावे सार रे, दे आदेश अरु उपदिशे ॥२१३॥

मुनि विन अपर शरीर रे, अधिकरण षट्काय नूं ।
तसु तीखो कियां शरीर रे, हिंसादिक कारज तणो ॥२१४॥
प्रथम उद्देशा मांहि रे, सप्तम शतके भगवती ।
सामायक में ताहि रे, श्रावक आतम अधिकरण ॥२१५॥
तो विन सामायक जेह रे, ग्रहस्थी तणो शरीर जे ।
ते अधिकरण कहेह रे, शस्त्र पृथ्व्यादि छहों तणो ।२१६।
तसु तीखो करे कोय रे, अव्रत सेवावि करी ।
तासु धर्म किम होय रे, इम सावद्य साता दियां ॥२१७।
सेवे अव्रत पाप रे, प्रथम करण ग्रहस्थी तिको ।
देखो स्थिर चित्त आप रे, दूजे करण सेवावियां ॥२१८॥
धर्म पुन्य किम थाय रे, फुन अनुमोद्यां तृतीय करण ।
हिये विचारो न्याय रे, जिन आज्ञा विन धर्म नहीं ॥२१९॥
षोडशमूं अनाचार रे, साता पूछ्यां ग्रहस्थ नी ।
दशवैकालिक अवधार रे, तीजे अध्ययने कह्यो ॥२२०॥
मुनि ग्रहस्थ नी जान रे, तिणहिज अध्ययनने विषे ।
वैयावच्च कियां पिछान रे, अनाचार अठवीसमूं ॥२२१॥
भूती कर्म करेह रे, ग्रहस्थ नी रक्षा निमित ।
प्रायश्चित आवेह रे, निशीथ उद्देशे तेरहवें ॥२२२॥
मार्ग बतायां दंड रे, सूत्र निशीथ मांहि कह्यो ।
बतावे औषधादि सुमंड रे, ग्रहस्थ ने तो प्रायश्चित ॥२२३॥
जीव संसार मझार रे, असाता बहु पावी रह्या ।

स्व स्व कर्म अनुसार रे, इन्द्रिय विषय विकार थीं।२२४।
तसु सेवावे भोग उपभोग रे, खाणा पीणा आदि दे।
त्यांरो मिलायां जोग रे, दूजे करणें पाप है ॥२२५॥
निज खाणो पीणो जेह रे, श्रावक अव्रत में गिणे।
तो पर ने खवांव्यां तेह रे, किम धर्म श्रद्धे समकिती ॥
असंख्य एकेन्द्रिय जीव रे, मार असाता तसु करें।
पंचेन्द्रिय ने साता अतीव रे, कियां धर्म किण विध हुवें॥
मोह अनुकम्पा आण रे, साता बंछै निज पर तणी।
ते सावद्य ही पिछाण रे, जिन आज्ञा नहीं तेह में ॥
उपदेशो त्याग कराय रे, घटावे अव्रत ग्रहस्थी नी।
तप चारित्र बढ़ाय रे, मुक्ति मार्ग साहमूं करे ॥२२९॥
चिहुंगति भ्रमण मिटाय रे, दुख जन्म मरण मूंकाय दे।
आतम सुख प्रकटाय रें, निरवद्य साता इम हुवें ॥२३०॥
ते माटे इहां जोय रे, सावद्य साता जाणवी।
स्व परनी अवलोय रे, बंछ्या थी जिन धर्म नहीं ॥२३१॥
सांसारिक उपकार रे, सांसारिक नूं मार्ग है।
जिन धर्म नहीं लिगार रे, जिन आज्ञा बिन कार्य में ॥
तिंण सूं कह्यो जिनराय रे, जे को इक इक इम वदे।
सुख दियां सुख थाय रे, ते आर्य मार्ग से वेगला।२३३।
यावत् झूरसी तेह रे, लोह बाणिया नी परें।
सूत्रें जे भाषेह रे, तेह सत्य करि जाणवो ॥२३४॥

॥ बोल अडतालीसवां ॥

साधू होकर अनुकम्पा रे वास्ते त्रस जीवां ने बांधे बंधावे बांधतां ने अनुमोदे, तथा अनुकम्पा करि बंध्या जीवां ने छोड़े छोड़ावे छोड़तां प्रते भलो जाणे तो चौमासी प्रायश्चित्त। सा० स० निशीथ उ० १२ वें बोल १ तथा २ रे।

॥ दोहा ॥

मुनि अनुकम्पा आण कर, त्रस जीवां ने जोय।
तृणादिक पाशे करी, बांधे बंधावे कोय ॥ २३५॥
अथवा बंधिया देख कर, छोड़े छोड़ावे तास।
बांध्यां छोड्यां भलो जाणियां, प्रायश्चित चौमास।२३६।
निशीथ उद्देशे बारमे, पहले दूजे बोल।
यह करुणा आज्ञा बाहर है, आंख हिया री खोल॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू कोलुण पडियाए, अण्णयरिं तस पाण जायं।
तण पासएणवा, मुंज पासएणवा, चम्म पासएणवा रज्जु ॥
पासएणवा सुत्त पासएणवा, बंधइ बंध तं वा साइज्जइ ॥१॥
जे भिक्खू बंधेल्लयं वा, मुयइ मुयं तं वा साइज्जइ ॥ २ ॥

निशीथ उद्देशे बारहवें।

॥ भावार्थ ॥

जो साधु अनुकम्पा के लिये अन्य त्रस प्राणियों की जाति अर्थात् त्रस जीवों को घास की डोरी से, चमड़े की डोरी से, रज्जू की डोरी से, इत्यादिक डोरियों से, बाँधे बंधावे बाँधते को अनुमोदे तो चौमासी प्रायश्चित्त ॥१॥ ऐसे ही बंधे हुए त्रस जीवों को देख अनुकम्पा करके छोड़े छोड़ावे और अनुमोदे तो चौमासिक प्रायश्चित्त ॥ २ ॥

॥ सोरठा ॥

शब्द अर्थ अज्ञ जेह रे, ते केइक इहां इम कहै ।
कोलुण दीन भावेह रे, बांध्या छोड्यां दंड है ॥२३८॥
ततोत्तर विज्ञ कह्यो एथ रे, दीन भाव इहां स्यूं हुवे ।
त्रस प्रति बांध्यां तेथ रे, गरीब भाव होवे किण तणो ॥
मुनिवर दीनज होय रे, त्रस बांधे किण कारणे ।
कदा दीन त्रस जोय रे, तो साधू अनुकम्प करि ॥२४०॥
तथा बंधिया प्रति देख रे, दीन पणो मुनि स्यूं करै ।
जो दीन अनुकम्पा लेख रे, सावद्य तिण सूं प्रायश्चित कह्यो
न्याय दृष्टि अवलोय रे, लघु चूर्णि जिन दास कृत ।
तिहां कोलुण शब्दे जोय रे, कोलुणं अनुकम्प अर्थ ।२४२।

॥ जिनदास आचार्यकृत लघुचूर्णिका पाठ ॥

भिक्खू पुव्व भणिओ कोलूणांति-कारुणयं अनुकम्पा प्रतिज्ञाया इत्यर्थः ।

॥ सोरठा ॥

जो कहै कौतुहल काज रे, कोलुण शब्द तणो अरथ ।
तो कोऊल कौतुहल बाज रे, तेह पाठ न्यारो अछै ॥
सप्तदशम उद्देश रे. निशीथ सूत्र में देखिये ।
बांधे वा छोड़ेश रे, कोऊल बड़ियाए तिहां शब्द है ॥
तिहां कौतुहल निमित्त रे, मुनि त्रस प्राणी देख कर ।
बांधे छोड़े इत्तरे, तो प्रायश्चित्त है मुनि भणी ॥२४५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू कोऊल वडियाए अरणयरां तस पाणजाति तसा पासएणावा जाव सुत्त पासएणावा वंधंति बंधं तं वा साइज्जइ ॥१॥ जे भिक्खू कोऊल वडियाए बंधेल्लयं वा मुयति मुयं त वा साइज्जइ ॥२॥

निशीथ उ० १७ वें ।

॥ भावार्थ ॥

जो साधु कौतूहल निमित्त अन्य त्रस प्राणियोको घास की डोरी से यावत् सूत की डोरी से बाँधे बंधावे बांधते को अनुमोदे तो प्रायश्चित ॥१॥ जो साधु कौतूहल के निमित्त अन्य त्रस प्राणियों को छोड़े छोड़ावे छोड़ते को अच्छा जाने तो प्रायश्चित ॥२॥

॥ सोरठा ॥

कौतुहल काज मुनिराज रे, बांध्यां छोड्यां त्रस प्रति ।
दंड कह्यो जिनराज रे, सतरहवें उद्देश निशीथ में ।
बारमा उद्देश मझार रे, कोलुण ते अनुकम्प करि ।

बांध्यां खोल्यां दंड धार रे, त्रस जीवां प्रति आखियो ॥
इम बिहुं स्थाने जोय रे, पाठ शब्द छै जुजूआ ।
कोलुंण अनुकम्प होय रे, कोऊल ते कौतुहल कह्यो ॥
त्रस जीवां रे मांहि रे, मनुष्य तिर्यञ्च सहु आविया ।
तसु अनुकम्पा ल्याहि रे, बांधे खोले मुनि तदा ।२४६।
प्रायश्चित्त कह्यो तिहिवार रे, सूत्र वचन ते सत्य है ।
ग्रहस्थ नी सार संभार रे, सावद्य जाण मुनि नहीं करे ॥
ग्रहस्थ तणो जे काम रे, ते करवूं कल्पे नहीं ।
कदा अकल्पनीक ठाम रे, पाम्या ग्रहस्थ अनुकम्प करि ॥
तेलादि मर्दन करेह रे, मुनि तनु शान्ति पमायवे ।
यह दोष उपजेह रे, द्वितीय श्रुत स्कन्धे धुर अंगे ।२५२।
तिहां पिण कोलुंण ही शब्द रे, तसु अनुकम्पा अर्थ छै।
एम इहां पिण लब्द रे, कह्यो कोलुण शब्द सारखो ॥
तथा आजीविका निमित्त रे अर्थ करे कौलुण तणो ।
ते पिण है विपरीत रे, इहां मुनि ने कांई आजीविका ॥
किहां ही न सूत्र विषेह रे, कोलुण ते आजीविका ।
जे सूत्रार्थ न जाणेह रे, ते मन कल्पित अर्थ करे ।२५४।
वलि कहै इम वाय रे, अनुकम्प सावद्य न हुवे ।
निर्वद्य ही कहिवाय रे, ततोत्तर न्याय विचारिये ।२५६।
अनुकम्पा रे काज रे, देवकी ना षट् सुत प्रते ।
सुलसा घरे समाज रे, हरणा हरण गवेषि सुर ॥२५७॥

अनुकम्पा चित्त आण रे, डोहलो पूर्ण कियो देवता ।
ज्ञाता सूत्र बखाण रे, अभय कुमार तणी तदा ॥२५८॥
श्रीकृष्ण ईंट उपार रे, मेली वृद्ध तणे घरे ।
अंतगड़ सूत्र मझार रे, अनुकम्पा करि तेहनी ॥२५९॥
भोग प्रार्थना कीध रे, रयणा देवी जिन ऋषि प्रते ।
ते अनुकम्पा करी प्रसिद्ध रे, ज्ञाता नवमाध्ययन में ॥
इत्यादिक बहु ठाम रे, अनुकम्पा करीने बहु ।
कीधा सावद्य काम रे, ते सावद्य अनुकम्प इम ।२६१।
सांसारिक उपकार रे, तेह थी मुनि न्यारा थया ।
श्री जिन आज्ञा बार रे, कार्य कियां प्रायश्चित हुवे ।२६२।
तेम इहां अवलोय रे, अनुकम्पा अर्थे मुनि ।
त्रस बांधे मूके कोय रे, तो चौमासी प्रायश्चित ॥२६३॥

॥ बोल उनचासवां ॥

मोक्ष रो मार्ग जाणे नहीं तिण ने श्री भगवान् री आज्ञा रो लाभ नहीं । सा० सू० प्रथम आचारांग अ० ४ उ० ४ ।

॥ दोहा ॥

मोक्ष मार्ग जाणे नहीं, प्रथम आचारांग मांहि ।
लाभ नहीं जिन आण ने, तूर्य अध्ययने ताहि ॥२६४॥

उद्देशा चौथा विषे, भाष्यो श्री जिनराय।
मोक्षाभिलाषी वीर ने, मार्ग विकट कहिवाय ॥२६५॥
तिण सुं तप थीं निज तनु, लोही मांस सुकाय।
ब्रह्मचर्य बसवें करी, माननीय कहवाय ॥२६६॥
प्रथम इन्द्रियां वश करी, पिण मोह उदय ते बाल।
विषयासक्त होवा थकी, न सके बन्धन टाल ॥२६७॥
वलि प्रपंच करे घणो, एहवो पुरुष अयाण।
मोह तिमिर में वर्त्ततो, किम पामे जिण आण ॥२६८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

दुरणु चरो मग्गो, वीराणं अणियट्ट गामीणं, विगिंच मंस लोणियं एस पुरिसे दवीए वीरे जायाणिज्जे वियाहिए जे धुणाति समुस्सयं वसिता बम्भचेरंमि, णोत्तेहिं पलिछन्नेहिं आयाण सोय गढिए बाले अवोच्छिन्न बंधणे अणभिक्कंत संजोए। तमंसि अविजाण ओ आणाए लम्भो णत्थि त्तिवेमि।

श्री आचारांग सूत्रे प्रथम श्रुत स्कन्धे चतुर्थ अध्ययने।

॥ भावार्थ॥

मुक्ति पाने वाले वीर पुरुषों का मार्ग बहुत ही कठिन है। इसलिये हे मुनि! तपश्चर्यादि करके मांस रक्त को शुष्क कर। जो पुरुष सदैव ब्रह्मचर्य पूर्वक रह कर, तप से शरीर को दमते हैं वे मोक्ष प्राप्त करने वाले वीर पुरुष माननीय होते हैं। और जो पुरुष शुरूआत में कदाचित् इन्द्रियों को वश करके वर्त्ते हैं और पीछे मोह के जोश में आके विषयों में आशक्त हो गये हैं ऐसे बाल (अज्ञानी) पुरुष किसी बन्धन से नहीं

छूटते और प्रपञ्च रहित नहीं होते। अतः ऐसे अजान पुरुष को मोह मय अन्धकार में वर्त्तते हुए, भगवान की आज्ञा का लाभ नहीं होता है।

॥ बोल पचासवां ॥

ब्राह्मण ने जिमायां तमतमा कही। सा० सू० उ० अ० १४ गाथा १२।

॥ दोहा ॥

विप्र जिमाया तमतमा, कह्यो भृगु ना पुत्र।
उत्तराध्ययने चवदमें, गाथा बारमी सूत्र ॥२६६॥
वेद भण्यां नहीं त्राण शरण, नहीं आतम उद्धार।
भोजन जिमायां तमतमा, पहोंचे नरक मझार ॥२७०॥
सुत जायां नहीं शिव गति, ते माटे अवधार।
ग्रहस्थाश्रम नहीं रहां, हमें लेस्यां संयम भार ॥२७१॥

॥ सूत्र पाठ ॥

वेया अहिया न भवन्ति तायां, भुत्ता दिया निंति तमं तमेयां।
जायाय पुत्ता न हवन्ति तायां, को णाम ते अणु मन्नेज एयं ॥१२॥

उत्तराध्ययने अ० १४।

॥ भावार्थ ॥

वेद पढ़ने से ही त्राण शरण नहीं होता, भोजन देने से तमस्तमा में जाते है और पुत्रादि होने से संसार समुद्र नहीं तिरते, अतः अहो तात जी तुमारे वचनो को कैसे स्वीकारें।

॥ सोरठा ॥

इहां कोई युक्ति लगाय रे, कहे भृगु सुत तो ग्रहस्थ छा।
तसु वच केम मनाय रे, वा तमतमा मिथ्यात हुवे ॥
तसु उत्तर सुविचार रे, न्याय दृष्टि अवलोकिये।
इग्यारहवीं गाथा मझार रे, भगवन् गणधर इम कह्यो ॥
बोले वचन विमास रे, तूर्य पदे इम आखियो।
तो मिथ्या वच किम तास रे, गणधर तास सरावियो॥
सांचो सुत वच मान रे, भृगु पिणसंयम लियो।
जिन मत सांचो जान रे, निज मत खोटो छंडियो।२७५।
कहै हुवै मिथ्यात् रे, धर्म अद्धी जिमावियां।
ते लेखे पिण थात रे, पाप बन्ध भोजन दियां ॥२७६॥
अवचूरी रे मझार रे, अन्धकारे अन्धकार छै।
रौरवादि नरक विस्तार रे तमतमा नूं अर्थ इम ॥२७७॥

॥ अवचूरि का पाठ ॥

भोजिता द्विजा विप्रा नयन्ति तम सोपियत्त मस्तस्मिन् रौद्रे रौरवादिके नरकेणं वाक्यालंकारे।

॥ सोरठा ॥

तथा सूयगडाअङ्ग मझार रे, आर्द्र मुनि पिण इम कह्यो।
द्वितीय श्रुतस्कन्धे धार रे, अध्ययन छट्ठा ने विषे ।२७८॥

स्नातक दोय हजार रे, विषयाशक्त विप्रां प्रते।
जावे नरक मझार रे, भोजन जिमायां इम कह्यो ।२७९।
मांस लोलुपी जेह रे, एकान्त० अर्थी खाण रा।
घर २ भमता तेह रे, पेट भराई कारणे ॥२८०॥
ब्रह्म क्रिया न पालेह रे, हिंसा धर्म प्रशंसता।
वलि निषेधना ते करेह रे, प्रधान दया धर्म तेहनी ।२८१।
हीनाचारी एक रे, एहवा प्रते जे जीमावतां।
जावे नरक मझार रे, सुरावतार जिहां ही रह्यो ।२८२।

॥ सूत्र पाठ ॥

सिणाय गाणं दुओ वे सहस्से, जे भोयए णित्तिए कुलाल याणं।
से गच्छइ लोलुपा सम्पगाढे, तिव्वा भितावी णरगाहि सेवी ॥४४॥
दयावरं धम्म उगंछ माणो, वहावहं धम्म पसंस माणे।
एगम्पि जे भोय भयइ असीलं णिवोणि संजाइ क ओ सुरेहिं ॥४५॥

सूत्र कृतांगे द्वि० श्रुत० षष्ठमध्ययने।

॥ भावार्थ ॥

आर्द्र कुमार मुनि को ब्राह्मणों ने कहा कि दो हजार विप्रों को जिमाने से पुण्य का स्कन्ध उपार्जन करके देवता होता है। तब आर्द्र कुमार मुनि ने उत्तर दिया कि जो दो हजार स्नातक आमिष्यार्थी ब्रह्मचर्य क्रिया रहित घर २ में भिक्षा मांगने वाले कुपात्र ब्राह्मणों को जिमाने से महा तीव्र वेदना वाली नरक में जाते हैं। क्योंकि जो प्रधान दया धर्म है उसकी तो वे निन्दा करते हैं और हिंसा धर्म की प्रशंसा करते हैं ऐसे एक को भी भोजन कराने से सुरगति तो जहां ही रही परन्तु नरक गति प्राप्त होती है।

॥ बोल इकावनवां ॥

साधु रे सर्व थकी अठारह पाप रा त्याग छै पिण देश थकी नहीं। सा० सू० उववाई प्र० २१ वें।

॥ दोहा ॥

सर्व प्रकारे त्यागिया, पाप अठारह जान।
उववाई प्रश्न इकीसवें, साधु महा गुणखान ॥२८३॥
गामागर अरु नगर में, यावत् सन्निवेश।
इक २ मनु एहवा अछे, सांभल जो सुविशेष ॥२८४॥
अणारम्भ अपरिग्रही, धार्मीक धर्म इष्ट।
यावत् धर्म नी वृत्ति कल्प, सुशील सुव्रती शिष्ट ।१८५
आनन्दकारी मुनि तिका, सर्व प्राणातिपात।
यावत् सर्व परिग्रह थकी, निवृत्त तेह सुजात ॥२८६॥
क्रोध मान माया अरु, लोभ थकी मुनि तेह।
जाव मिथ्या दर्शन शल्य थी, प्रति विरत्या छै तेह ॥
सब आरम्भ समारम्भ बलि, करण करावण जाण।
पचन पचावन तेहना, सर्वथा किया पचखान ॥२८८॥
कूटन पीटण तर्जना, ताडन वध अने बंध।
परि क्लेशों थी निवृत थया, छोड़ दिया सर्व धन्ध ॥
सर्व थकी न्याचा तणा, बलि मर्द्दन पीठी जान।
तैल विलेपन आदि ना, छै त्यारें पचक्खाण ॥२९०॥

शब्द स्पर्श रस रूप गन्ध, माला ने अलंकार।
सर्व प्रकारें छांडिया, सावद्य योग व्यापार ॥२६१॥
कष्ठ परिताप पर प्राणि ने, होवे जेह उपाय।
यावज्जीव निवर्त्या तेह थी, ते अणगार कहाय ॥२६२॥
इरिया भाषा समिति युत, निर्ग्रन्थ वचनज तंत।
तसु आगे करके मुनि, विचरें महा गुणवन्त ॥२६३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

से जे इमे गामागर नगर जाव सन्निवेसेसु मणुया भवन्ति तंजहा— अणारम्भा, अपरिग्गहा, धम्मिया, धम्मिट्ठा, जाव धम्मेणं चेव वित्ति कप्पे माणा, सुशीला सुव्वया सु पडियाणं दा, सव्वा ओ पाणाइवाया ओ पडि विरया, जाव सव्वा ओ परिग्गहा ओ पडि विरया सव्वा ओ कोहा ओ माणा ओ माया ओ लोहा ओ मिच्छा दंसण सल्ला ओ पडि विरया, सव्वा ओ आरम्भ समारम्भा ओ पडि विरया, सव्वा ओ करण करावण ओ पडि विरया, सव्वा ओ पयण पयावणा ओ पडि विरया, सव्वा ओ कोट्टण पीट्टण तज्जण ताडण वह बन्ध परि किलेसा ओ पडि विरया, सव्वा ओ ण्हाण मद्दण-वण्णक विलेवन सद्द फरिस रस रूवं गन्ध मल्ला लंकारातो पडि विरया जे पावयणे तहप्पगारे सावज्ज जोगो वहिया कम्मन्ता पर पाण परियावण करा कज्जन्ति तत्तोवि पडि विरया, जावज्जीवाए, से जहा नामए अणगारा भवन्ति, इरिया समिया भासा समिया जाव इण मेव णिग्गंथपावयणं पुराओ काओ विहरन्ति।

उववाई प्रश्न २१ वां।

॥ भावार्थ ॥

वे जो ग्राम आगर नगर यावत् सन्निवेश में मनुष्य होते हैं तद्यथाः— सर्वथा छवों ही कायों के आरंभ रहित, सर्वथा मृषावाद रहित, सर्वथा अदत्त रहित, सर्वथा मैथुन रहित, सर्वथा धातु मात्र-परिग्रह रहित होते हैं, जिन्हों को धर्म ही इष्ट है यावत् धर्म की ही वृत्ति कल्पते हुए विचरते हैं, वे सुशील शुद्धाचारी सुव्रती अच्छा कार्य कर आनन्द मनानेवाले सर्व प्रकार तीन करण तीन योग से प्राणातिपात से निवृत्त हुए यावत् परिग्रह निवृत्त हुए तैसे ही सर्व प्रकार से क्रोध मान माया लोभ यावत् मिथ्या दर्शन शल्य से निवृत्त हुए, सब तरह आरम्भ समारम्भसे निवृत हुए एवं पचन पचावनादि क्रिया से निवृत्त हुए सब तरह से कूटन पीटन तर्जन ताड़न वध बन्धन क्लेश से निवृत्त हुए एवं सब तरह से स्नान, पीठी मर्द्दन, तिलकादि विलेपन से निवृत्ते, शब्द स्पर्श रूप गन्ध माला अलंकार आदि से सर्वतः निवृत्त हुए और भी सावद्य काम योगोपाधि कर्म से अन्य प्राणी को परिताप होय ऐसे कार्य्य से यावज्जीव पर्य्यंत सर्वथा निवृत्त हुए वे अणगार यानी साधू होते हैं, वे ईर्या समितिवन्त भाषा-समितिवन्त यावत् जिन प्रणीत निग्रन्थ प्रवचन को आगे कर उनके अनुगामी बने विचरते हैं।

॥ बोल बावनवां ॥

साधु रा भंड उपकरण परिग्रह में कह्या नहीं मूर्च्छा राखे तो परिग्रह लागे इम कह्यो। सा० सू० दशवैकालिक अ० ६ गाथा २१ वीं।

॥ दोहा ॥

वस्त्र पात्र ने कम्बल, पाय पूछणा आदि।
संयम लज्जा अर्थे मूनि, धारैं तज असमाधि ॥२६४॥

षड् जीव निकाये प्रते, हणे हणावे नांहि ।
अनुमोदे न हणतां प्रति, मन वच काया ताहि ॥२६८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

इच्छेहिं छर्यहं जीव निकायाणं नेव सयं दंडं समारम्भेज्जा नेवन्नेहिं दण्डं समारम्भेज्जा, दण्डं समारं भन्ते वि अन्नेन समणु जाणेज्जा जाव-ज्जीवाए तिविहेणं २ मणेणं वायाए कायेणं न करेमि न कारवेमि करं तं पि अन्नं न समणु ज्जाणामि ।

दशवैकालिक अध्ययन ४ था ।

॥ भावार्थ ॥

इन षड् जीव निकायों का स्वयं आरम्भ करे नहीं अन्य सें आरम्भ करावे नहीं और करने वाले को अच्छा जाने नहीं मन वचन काया से यावज्जीव पर्यंत वैसा करे नहीं अन्य से करावे नहीं करते को अच्छा जाने नहीं इस तरह नव कोटी पच्चखान है ।

॥ बोल चौपनवां ॥

आचारज नी आज्ञा बिना आहार करे करता ने भलो जाणे तो प्रायश्चित कह्यो । सा० सू० निशीथ उ० ४ बोल २२ वां ।

॥ दोहा ॥

आचार्य नी आज्ञा बिना, अरु बिन दीधां आहार ।
जे साधु जो भोगवे, प्रायश्चित तसु धार ॥२६९॥

इम कह्यो सूत्र निशीथ में, चौथे उद्देशे मझार ।
गुरु-आज्ञा बिन भोगव्यां, आख्यो दंड उदार ॥३००॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू आयरिय अदिंतं आहारं आहारन्तंवा साइज्जइ ।

निशीथ उ० ४ बोल २२ वाँ ।

॥ भावार्थ ॥

जो साधु आचार्य के बिना दिये चारों प्रकार का आहार करे करते को भला जाने तो प्रायश्चित ।

॥ बोल पचपनवां ॥

पुन्य पाप से जीव ने पचतो दीठो कह्यो । सां० सू० उत्तराध्ययन अ० १० गाथा १५ वीं ।

॥ दोहा ॥

पुन्य पाप से जीव ने, पचतो देख्यो सोय ।
दशमें उत्तराध्ययन में, पनरमी गाथा जोय ॥३०१॥
भव संसारे संसरइ, शुभाशुभ कर्म प्रभाव ।
प्रमाद बहोल पणे करइ, न जाणे तिरण रो दाव ।३०२।

॥ सूत्र पाठ ॥

एवं भव संसारे, संसारइ सुहा सुहेहि कम्मेहि ।
जीवो पमाय बहलो, समयं गोयम मा पमायए ॥

उत्तराध्ययने १० वे ।

॥ भावार्थ ॥

ऐसे भव संसार में प्रमादी जीव शुभाशुभ कर्म करके परिभ्रमण करता है इसलिये हे गौतम ! समय मात्र भी प्रमाद मत कर ।

॥ बोल छप्पनवां ॥

पुन्य पाप ने खपावणा कह्या । सा० सू० उत्त० अ० २१ वें गाथा २४ वीं ।

॥ दोहा ॥

पुन्य पाप बेहूं भणी, खपावणा सुविशाल ।
उत्तराध्ययने इकबीसमें, चौबीसमी गाथा न्हाल ॥३०३॥
द्विविध खपायां शीघ्र ते, पुन्य पाप असराल ।
अपुनरागम गति लही, भवाब्धि तस्यो समुद्रपाल ।३०४।

॥ सूत्र पाठ ॥

दुविहं खवे ऊय पुरणा पावं निरंगणे सव्वाओ विप्पमुक्के ।
तरित्ता समुद्दं व महाभवोघं, समुद्द पाले अपुणागमं गए तिबेमि ॥

उ० अध्य० २१ वें गा० २४ वीं ।

॥ भावार्थ ॥

पुन्य पाप दोनों का क्षय कर शैलेसी अवस्था को प्राप्त हो महा प्रभाविक भव समुद्र है उसे तैर कर पुनः वापिस न आना पड़े ऐसी जो सिद्ध गति है सो समुद्रपाल मुनि प्राप्त हुए ।

॥ बोल सतावनवां ॥

उसन्ना पासत्था अर्थात् ढीला शिथिलाचारी ने वन्दना करे प्रशंसा करे करावे करता ने भलो जाणे तो प्रायश्चित कह्यो। सा० सू० निशोथ उद्देश १३ बोल ४२-४३-४४-४५।

॥ दोहा ॥

जे मुनि पासत्था प्रते, वन्दना करे कराय।
करतां ने भलो जाणियां, चौमासी प्रायश्चित आय ।३०५।
दोषी मूल उत्तर गुणे, ते उसन्ना कहवाय।
तेहने पिण वांद्या थकां, इमहिज दंड सुपाय ॥३०६॥
बलि पासत्था उसन्नातणी, करे प्रशंसा कोय।
प्रायश्चित चौमासी तसु, निशीथ तेरहवें जोय ॥३०७॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू पासत्थं वन्दइ वन्दतं वा साइज्जइ ॥४२॥

जे भिक्खू पासत्थं पसंसन्ति, पसंसं तं वा साइज्जइ ॥४३॥

जे भिक्खू उसण्णं वन्दइ वन्दतं वा साइज्जइ ॥४४॥

जे भिक्खू उसण्णं पसंसेइ पसंसं तं वा साइज्जइ ॥४५॥

निशीथ उ० १३।

॥ भावार्थ ॥

जो भिक्षु पासत्था अर्थात् शिथिलाचारी को वन्दे वन्दावे अनुमोदे सो प्रायश्चित्त ॥४२॥ जो भिक्षु शिथिलाचारी की प्रशंसा करे करावे अनु-

मोदे तो प्रायश्चित ॥४३॥ जो भिक्षु उसन्ना यानी मूल उत्तर गुणों में दोष लगाने वाले को वन्दे वन्दावे अनुमोदे तो प्रायश्चित ॥४४॥ जो भिक्षु उसन्ना की प्रशंसा करे करावे अनुमोदे तो प्रायश्चित ॥४५॥

॥ बोल अठावनवां ॥

जो साधु ग्रहस्थ की औषधि करे करावे करतां प्रते अनुमोदे तो प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ उ० १२ वें बोल १७ वूं।

॥ दोहा ॥

ग्रहस्थ नी औषध करे, जो साधु मुनिराय।
निशीथ उद्देशे बारहवें, दंड कह्यो जिनराय ॥३०८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू गिहि तिगिच्छं करेइ करं ते वा साइज्जइ ॥१७॥

॥ भावार्थ ॥

जो साधु ग्रहस्थ की औषधि करे करावे करते को अनुमोदे तो प्रायश्चित्त।

॥ बोल उणसठवां ॥

सामायक दो कही १ आगार सामायक २ अणागार सामायक। सा० सू० ठाणांग ठाणे २ उ० ३ रा।

॥ दोहा ॥

सामायक दो विध कही, आगार अने अणगार ।
स्थानांग ठाणे दूसरे, तीजा उद्देशा मझार ॥३०६॥
आगार सामायक ग्रहस्थ रे, करे आगार सहित्त ।
अणागार अणगार रे, ते आगार रहित्त ॥३१०॥

॥ सूत्र पाठ ॥

दुविहे सामाइए पएणत्ते तंजहा—आगार सामाइए चेव अणागार सामाइए चेव ।

स्थानांगे द्वितीय स्थाने ।

॥ भावार्थ ॥

दो प्रकार की सामायिक कही तद्यथा:— आगार सामयिक अर्थात् ग्रहस्थ श्रावक के मुहूर्त्तादिक की मर्याद सहित सामायिक। दूसरी अणागार सामायिक यानी साधु के जो महाव्रत रुप यावज्जीवन पर्यंत है सो आगार रहित ।

॥ बोल साठवां ॥

चारित्र दोय कह्या—१ आगार चारित्र, २ अणागार चारित्र। सा० सू० स्थानांग ठाणे २ उ० १ ।

॥ दोहा ॥

चारित्र धर्म द्विविध कह्यो, आगार अणागार जाण ।
स्थानांग ठाणे दूसरे, पहले उद्देशे पिछाण ॥३११॥

॥ सूत्र पाठ ॥

चरित्त धम्मे दुविहे पगणाते तंजहा:—आगार चरित्त धम्मे चेव, अणागार चरित्त धम्मे चेव।

सू० स्थानांग द्वितीय स्थाने।

॥ भावार्थ ॥

चारित्र धर्म के दो भेद प्ररूपेतद्यथा:—आगार चारित्र धर्म सो ग्रहस्थ सम्यक्त्व सहित स्थूलपने व्रत आदरे। अणागार चारित्र धर्म सो ग्रहस्था-श्रम का सर्वथा त्याग कर पञ्च महाव्रत आदरे।

॥ बोल इकसठवां ॥

धर्म दोय कह्या—श्रुत धर्म १, चारित्र धर्म २ सा० सू० ठाणाङ्ग ठा० २ उ० १।

॥ दोहा ॥

दोय धर्म जिन आखिया, श्रुत चारित्र उदार।
श्रुत ते आगम जिन कथित, चारित्र ते व्रत धार।३१८।
स्थानांग स्थाने दूसरे, प्रथमा उद्देश मझार।
बोल पचीसमां ने विषे, कह्यो धर्म विस्तार ॥३१९॥

॥ सूत्र पाठ ॥

दुविहे पं० तं० सुअधम्मे चेव चरित्त धम्मे चेव।

ठाणांग ठा० २।

॥ भावार्थ ॥

दुर्गति में पड़ते हुए को धार रक्खे वह धर्म दो प्रकार का कहा—श्रुत धम द्वादशांग रूप १, चारित्र धर्म पंच महाव्रत रूप २।

॥ बोल बासठवां ॥

कर्म खपावा री करणी दोय कही—संयम, और तप। सा० सू० उत्तराध्ययन अ० २८ वें गाथा ३६ वीं।

॥ दोहा ॥

करणी कर्म खपायवा, दोय कही जिनराय।
उत्तराध्ययन अठवीसमें, छत्तीसवीं गाथा ताय ॥३१४॥
पूर्व संचित कर्म ते, तप संयम थी खपाय।
हीन करण सब दुःख तणों, महा ऋषि करणी कराय ॥

॥ सूत्र पाठ ॥

खवेत्ता पुव्व कम्माइं, संजमेण तवेणय।
सव्व दुक्ख पहीणट्ठा, पक्कमन्ति महेसिणो तिवेमि ॥३६॥

उत्तराध्ययन अ० २८ वां।

॥ भावार्थ ॥

सतरे प्रकार संयम से और बारे प्रकार तप से पूर्व संचित कर्मोंको क्षय करे और जन्म जरा मृत्यु रूप सर्व दुःखों से रहितार्थ महा ऋषि करणी करे।

॥ बोल तरेसठवां ॥

मार्ग दोय कह्या—भगवान रो प्ररूप्यो मार्ग १, और पाखंडिया रो प्ररूप्यो मार्ग २। सा० सू० उ० अ० २३ वें गा० ६३ वीं।

॥ दोहा ॥

दोय मार्ग हैं जगति में, इक पाखंडि कहाय ।
द्वितीय मार्ग है जिन कथित, तेह परम सुखदाय ।३१५।
उत्तराध्ययन तेबीसवें, केशी श्रमण पूछंत ।
तब गोयम इह विधि कह्यो, ते सुणिजो धरि खंत ।३१६।
कुप्रवचन पाखंडी ना, सर्व उन्मार्ग गछंत ।
सन्मार्ग जे जिन कह्यो, उत्तम मार्ग ते तंत ॥३१७॥

॥ सूत्र पाठ ॥

कु पव्वयण पासंडी, सव्वे उम्मग्ग पट्ठिया ।
सम्मगं तु जिणक्खायं एसमग्गे हि उत्तमे ॥ ६३ ॥

॥ भावार्थ ॥

कुप्रवचन है सो पाखंडियों का कहा हुआ उन्मार्ग है उसमें जाने वाले सर्व कुमार्ग जा रहे हैं और जो जिनेश्वरों का कहा हुआ है सो सन्मार्ग है सोही उत्तम अर्थात् श्रेष्ठ है ।

॥ बोल चौसठवां ॥

संबर गुण अने आस्रव गुण जुदा २ कह्या ।
सा० सू० प्र० आचारांग अ० ४ उ० २ ।

॥ दोहा ॥

संबर गुण न्यारो कह्यो, आस्रब गुण कह्यो न्यार ।
प्रथम आचारांग चतुर्थ वें, बुद्धिवंत करो विचार ।३१८।

जेह आस्रव द्वार छै, रोक्यां संबर थाय ।
खोल्यां आस्रव होंत है, इम गुण अलग कहाय ।३१६।
कर्म बंधना हेतु ते, प्रवर्त्यां आस्रव होय ।
तसु त्याग कियां संबर हुवे, इम जुदा २ गुण जोय ॥
आस्रव नूं अणास्रव हुवे, अणास्रव नूं आस्रव ।
प्रणमें जिण २ भाव में, पृथक २ गुण सर्व्व ॥ ३२१ ॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे आसवा ते परिसव्वा, जे परिसवा ते आसवा, जे अणासव्वा ते अपरिसव्वा जे अपरिसव्वा ते अणासव्वा ।

प्र० आचाराङ्ग अ० ४ उ० २ ।

॥ भावार्थ ॥

जो कर्म बाँधने के हेतु हैं वे कर्म छपाने के या रोकने के हेतु हो सकते हैं, जो कर्म क्षपाने के या रोकने के हेतु है वे कर्म बाँधने के हेतु हो जाते हैं, तथा जितने कर्म बाँधने के हेतु है वे रोकने के हेतु हो जाते हैं और कितने कर्म रोकने के हेतु हैं वे बाँधने के हेतु हो जाते हैं, अर्थात् जिन २ कारणों से कर्म बंधते हैं वे आस्रव द्वार है और उन्हीं का त्याग करने से वेही संबर हो जाते हैं—जैसे मिथ्या श्रद्धना मिथ्यात आस्रव द्वार है, हिंसा करना प्राणातिपात आस्रव द्वार है, और मिथ्या श्रद्धनाँ का त्याग कर सम श्रद्धना सम्यक्त्व संबर द्वार है इसी तरह हिंसा का त्याग करें सो अहिंसा संबर द्वार है, तात्पर्य कर्म आने के जो द्वार हैं सो खुल्ले द्वार हैं उनको बंध करे सो संबर है, इस प्रकार आस्रव और संबर का गुण अलग २ हैं ।

॥ बोल पैंसठवां ॥

करणी च्यार कही—इह लोक रे हित १, परलोक रे हित २, कीर्त्ति वर्ण शब्द व पूजा श्लाघा रे हित ३, निर्जरा रे हित ४, इण च्यार प्रकार में से एकान्त कर्म निर्जरा रे हित तप करणो कह्यो। सा० सू० दशवैकालिक अ० ६ उ० ४।

॥ दोहा ॥

करणी च्यार प्रकार नी, कही दशवैकालिक मांहि।
नवमां अध्ययन ने विषे, चोथे उद्देशे ताहि ॥३२२॥
इह लोक अर्थ तप नहिं करे, बलि नहीं परलोक ने हेत।
वर्ण श्लाघा शब्दादि निमित, न करे तप संकेत ।३२३।
एकान्त निरजरा कारणे, तप करणो कह्यो सोय।
समाधि हुवै चौथे पदे, तसु गुण श्लोके जोय ॥३२४॥
नित्य विविध गुण होत हैं, आश रहित तप आसक्त।
निरजरा अर्थी पाप क्षय करे, तप समाधि सदा संयुक्त॥

॥ सूत्र पाठ ॥

चउविहा खलु तव समाहि भवइ तंजहा:—नो इह लोगट्टयाए तव महि ट्ठिज्जा, नो परलोगट्टया ए तव महि ट्ठिज्जा, नो कित्ति वएण सद्द सिलोगट्ठयाए तव महि ट्ठिज्जा, नन्नथ निज्जरट्टयाए तव महि ट्ठिज्जा, चउत्थं पयं भवइ भवइ एत्थसिलोगो, विविह गुण तवोरए्य निच्च,

भवइ निरासए निज्जरट्ठिए, तव साधुणइ पुराण पावगं जुत्तोसया तव समाहिए।

दशवैकालिक अ० ६ उ० ४।

॥ भावार्थ ॥

च्यार प्रकार तप समाधि कही—इस लोक के सुखों के लिये तप नहीं करे १, परलोक के सुखों के लिये तप नहीं करे २, कीर्त्ति वर्ण शब्द श्लाघा के लिये तप नहीं करे ३, एकान्त निरजरा का अर्थी होके तप करे ४, चतुर्थ पद जो निरजरार्थी होके तप करे जिसका गुण श्लोक में कहा सो कहते है—तप समाधि में सदा युक्त सांसारिक आशा रहित निरजरा का अर्थी, पूर्व कृत पापों का नाश करता है।

॥ बोल छासठवां ॥

प्रज्ञा दोय कही—ज्ञान प्रज्ञा १, पच्चखान प्रज्ञा २, ज्ञान प्रज्ञा करी जाणै और पच्चखान प्रज्ञा करी पच्चखान करै। सा० सू० आचाराङ्ग प्र० श्रु० अ० १

॥ दोहा ॥

दोय प्रकारे वर्णवी, प्रज्ञा ते बुद्धि जान।
जाणे ज्ञान प्रज्ञा करी, प्रत्याख्यान पच्चखान ॥३२६॥
धुर आचारांगे कह्यो, धुर अध्ययन मझार।
द्विविध प्रज्ञा इधकार नूं, बुद्धिवंत करे विचार ॥३२७॥
समजी क्रिया भेद प्रते, द्विविध प्रज्ञा थी जेह।
समझ कर्म कारण भणी, दूर रहै मुनि गुण जेह ।३२८।

॥ सूत्र पाठ ॥

जस्स ते लोगं सि कम्म समारम्भा परिरणाया भवन्ति, से हु मुणी त्तिवेमि ।

प्र० आचाराङ्ग अ० १ उ० १ ।

॥ भावार्थ ॥

समस्त वस्तुओं के जानने वाले भगवान केवलज्ञान से साक्षात देखके उपरोक्त जो क्रियाओं के भेद बताये तथा दो प्रकार की प्रज्ञा बताई उन्हें अच्छी तरह समझ के कर्मों के कारणों से दूर रहै सो मुनि कहलाते हैं ।

॥ बोल सड़सठवां ॥

धर्म दोय कह्या—आगार धर्म १, अणागार धर्म २, सा० सू० उववाई समवशरण अधिकार में ।

॥ दोहा ॥

धर्म दोय प्रकार नूं, कह्यो उववाई मांहि ।
आगार ने अणगार रो, ते व्रत में धर्म कहाहि ॥३२९॥
सर्व प्रकारे मुण्ड हो, आगार से अणागार ।
प्रवर्ज्या अंगीकार करि, 'अणागार धर्म धार ॥३३०॥
हिन्सा सर्व प्रकार से, मृषा सर्व प्रकार ।
चौरी मैथुन परिग्रह, सर्व प्रकार निवार ॥३३१॥
सर्व प्रकारे त्यागियो, रात्री भोजन जेह ।
अहो आयुष्यमान ते, अणागार सामाइ कहेह ॥३३२॥

ये धर्म सीख्या ऊठिया, निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थ नी जान।
ते आराधक जिन आण नां, इम भाख्यो भगवान ॥३३३॥
आगार धर्म द्वादश विध, आख्यो श्री जिनराय।
पंच अणुव्रत तीन गुण, च्यार सिक्खा व्रत मांय ॥३३४॥
हिंसा झूठ अदत्त फुन, मैथुन परिग्रह जान।
स्थूल थकी त्यागन किया, ते पंच अणुव्रत मान ॥३३५॥
दिशि उपभोग परिभोग नीं, कीधी जे मर्याद।
विरम्यां अनर्थ दंड से, यह तीनुं गुण व्रत लाध ॥३३६॥
सामाइ देशावगासियं, पोषह अतिथि संविभाग।
च्यार सिक्खा व्रत एह है, सर्व द्वादश व्रत साग ॥३३७॥
अपश्चिम मर्णान्त जे, संलेखण झूसण करंत।
आगार सामाई धर्म ये अहो आयुष्मन्त ॥३३८॥
इण विध धर्म में ऊठिया, सीख्यो यह व्रत धर्म।
विचरे श्रावक श्राविका, ते आज्ञा आराधक पर्म ॥३३९॥
जे जे अविरत्ति निवृत्तिया, ते ते श्रावक धर्म।
धर्म नहिं आगार में, यह जिन शासन मर्म ॥३४०॥

॥ सूत्र पाठ ॥

धम्मं दुविहे पण्णत्ते तंजहा—आगार धम्मं च १, अणगार धम्मं च २. तत्थ इह खलु सव्वओ सव्वत्ताए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइयस्स. सव्वओ पाणाइ वायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिन्ना दाणाओ वेरमणं, सव्वाओ

मेहुणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं, सव्वाओ राई भोयणा ओ वेरमणं. अयमाउसो अणगार सामाइए धम्म पण्णत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए निग्गंथे निग्गंथी विहरमाणे आणाए आराहए भवति। अगार धम्म दुवालसविहं आइक्खइ तंजहा-पंचअणुव्वा-यं तिन्नि गुणव्वया. चत्तारि सिक्खा वयाइं, पंचअणुव्वयाइं तंजहा-थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं, थूलाओ अदिन्ना दाणाओ वेरमणं, सदार संतोसे, इच्छापरिमाणं गुणव्वओ दि-सावहाओ वेरमणं, सिक्खावयाइं तंजहा--दिसि वय, उवभोग परिभोग परिमाण, अणत्थ दंड वेरमणं, चत्तारि सिक्खा वयाइं तंजहा--सामाइयं, देसावगासियं, पोसहोववासे, अतिहि संविभागो, अपच्छिम मरणांतिया संलेहणा झूसणाराहणाए। अयमाउसो अगार सामाइए धम्मे पणत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए समणो-वासियावा विहरमाणे आणाए आराहए भवति।

॥ भावार्थ ॥

धर्म दो प्रकार का कहा सो कहते है --आगारिक धर्म सो गृहवास मे रहता हुआ धर्म पाले २. अणागारिक धर्म गृहवास त्याग कर साधु धर्म पाले सो निश्चय कर के सर्वथा प्रकार मुण्ड होके आगार से अना-गार हो सर्वथा प्रकार प्राणातिपात से निवृत्ते. सर्वथा प्रकार मृषावाद से निवृते, सर्वथा प्रकार चोरी से निवृत्ते, सर्वथा प्रकार स्त्री संग से निवृत्ते, सर्वथा प्रकार परिग्रह से निवृत्ते, सर्वथा प्रकार रात्रि भोजन से निवृत्ते, हे आयुष्यमान यह अणागार सामाइ धर्म प्ररूप्या है, यही धर्म सीखा है, इसी धर्म में उठे हैं साधु तथा साध्वी उपरोक्त पंच महाव्रत रूप धर्म पालते हुए विचरते है। आगार धर्म बारे प्रकार का कहा है

सो कहते हैं—पञ्च अणुव्रत तीन गुण व्रत च्यार सिखा व्रत इस प्रकार द्वादश व्रत रूप धर्म कहा सो कहते है—स्थूल से प्राणातिपात से निवृत्ते १, स्थूल से मृषावाद से निवृत्ते २, स्थूल से चोरी कर्म से निवृत्ते ३, स्वः स्त्री से ही संतोष अर्थात् पर स्त्री के त्याग ४, स्थूल से परिग्रह से निवृत्ते ५, (उपरोक्त पंच अणुव्रत कहे) तीन गुण व्रत इस प्रकार—दिशि मर्याद अर्थात् दशों दिशा में मर्याद उपरान्त जाने का त्याग ६, उपभोग परिभोग की मर्याद ७, अनर्थ दण्ड परिहार ८, (च्यार सिखा याने छोटी समान व्रत इस प्रकार) सामायक एक मुहूर्त्त प्रमाण सावद्य जोगों के त्याग ९, देशावकासी काल की मर्याद करके इच्छा प्रमाण सावद्य जोगों को त्यागें १०, पोषह उपवास ११, अतिथिसं विभाग अर्थात् शुद्ध साधु, साध्वियों को निदूर्षण चउदे प्रकार का दान दे १२, इस प्रकार द्वादश व्रत धर्म पालता हुआ मर्णान्ते संलेषणा संथारा दिक करे, व्रतों में कोई दोष लगा, उसका प्रायश्चित्त लेके आराधक होना ऐसा व्रतमयी धर्म श्रावक श्राविकों से सीखा है, इसी धर्म में उठे हैं, इसी धर्म में विचरते हुए जिन आज्ञा का आराधक होते हैं।

सोरठा

पंच महाव्रत रूप रे, मुनि नूं धर्म इहां कह्यो।
द्वादश व्रत सरूप रे, श्रावक धर्म जिन आखियो।३४१।
केइ कहै बारमूं व्रत रे, अतिथि ते आयां प्रते।
देवे सचित्तअचित्त रे, ते पिण श्रावक धर्म है ॥३४२॥
एम सूत्र विपरीत रे, अर्थ करे निज मन थकी।
तसु उत्तर सुवंदीत रे, बुद्धिवंत हिये विचारिये।३४३।
अव्रत-घट्यां व्रत होय रे, तो अव्रत में देवतां।

व्रत्ति धर्म किम जोय रे, अव्रत सेवायां थकां ॥३४४॥
ठाम २ सिद्धान्त रे, बारमूं व्रत श्रावक तणूं ।
श्रमण निर्ग्रन्थ ने तंत रे, दान दे चउदे प्रकार नूं ।३४५।
प्रासूक दोष रहित रे, मुनि प्रते प्रतिलाभतो ।
विचरे छै इण रीत रे, ते बारमूं व्रत सूत्रें कह्यो ॥३४६॥
बलि देवगुरु धर्म काज रे, हिन्सा करै षटकाय नीं ।
ते धर्म न कह्यो जिनराज रे, आगार धर्म विषे इहां ॥।

॥ बोल अड़सठवां ॥

ध्यान च्यार कह्या—आर्त्ति ध्यान, रौद्र ध्यान, धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान। सा० सू० उववाई समवसरण अधिकार में।

॥ दोहा ॥

च्यार ध्यान जिनवर कह्या, आर्त्त ने रौद्र ध्यान।
धर्म ध्यान है तीसरो, चौथो शुक्ल ध्यान ॥३४८॥
समवसरण इधकार में, तप वर्णन रे मांहि।
आर्त्त रौद्र नहिं ध्यावणो, सूत्र उववाई ताहि ॥३४९॥

॥ सूत्र पाठ ॥

से किं तं झाणे? झाणे चउव्विहे पन्नते तंजहा—अट्टे झाणे रूद्दे झाणे, धम्मे झाणे सुक्के झाणे।

उववाई।

॥ भावार्थ ॥

ध्यान कितने ? ध्यान च्यार प्रकार के प्ररूपे—आर्त्तध्यान १ रौद्र ध्यान २, धर्म ध्यान ३, शुक्ल ध्यान ४ ।

॥ बोल उणसत्तरवां ॥

साधु असंयती ने ऊभो रहै बैठ सो ऊभो रहै । आव जाव काम कर, इम न कहै सा० सू० दशवैकालिक अ० ७ गा० ४७ वीं ।

॥ दोहा ॥

असंयती ने नहिं कहे, ऊभो रहै वा बैस ।
सयन आव अरु जाव नूं, कार्य कर इम न कहेस ।३५०।
सावद्यकारी बचन इम, न कहे प्रज्ञावंत ।
धीर वीर जे संयती, इम भाख्यो भगवंत ॥३५१॥
दशवैकालिक आखियो, सप्तम् अध्ययन मझार ।
गाथा सैंतालीसमीं, बुद्धिवंत करो विचार ॥३५२॥

॥ सूत्र पाठ ॥

तहेवा संजयं धीरो, आसएहि करे हिवा ।
सय चिट्ठ वयाहित्ति, नेवं भासेज्ज पराणवं ॥४७॥

दशवैकालिक अ० ७ वें

॥ भावार्थ ॥

वैसे ही साधु असंयती को बैठो उठो आवो जावो अमुक कार्य्य करो, ऐसी सावद्य भाषा प्रज्ञावंत न कहै ।

॥ दोहा ॥

ए गुणोत्तर बोल इम, आख्या आगम मांय।
लोंकाजी संग्रह किया, तिण सूं लोंका हुण्डी कहाय ॥
प्रगटे पंचम् अर्क में, भिक्षु महा गुणधार।
श्री जिन आज्ञा शिर धरी, प्रगट कियो उजियार।३५४॥
यथा तथ्य ओलखावियो, यह प्रभु तेरापंथ।
पाले महाव्रत पंच समिति, तीन गुप्त निर्ग्रन्थ ॥३५५॥
हिन्सा धर्म उथापियो, दयामयी धर्म दिपाय।
कहणी करणी एकसी, आगम न्याय-बताय ॥३५६॥
श्री जिन धर्म अनादि रो, हुआ अनन्त अरिहन्त।
जे जिम भाख्यो तिम कह्यो, निशंक सूं भिक्षु सन्त ॥
तसु पट भारीमालजी, तीजे पाट ऋषिराय।
जयगणी चौथे पाट वर, पंडित प्रसिद्ध कहाय ॥३५८॥
मघवा सम मघवा गणी, पंचम् पट अवलोय।
पाट छठे माणक भला, सप्तम् डाल गणीश्वर जोय ॥
वर्त्तमान शासन धणी, अष्टम पाटे जान।
सुखदाता सुरतरु समा, कालूगणी गुणखान ॥३६०॥
दिन २ वृद्धि ज्ञान नी, चारित्र गुण इधकाय।
दिन २ सुख सम्पति बढ़े, सुगुरु तणें सुपसाय ॥३६१॥

दिन २ ऋद्धि सम्पजे, वीर्य लद्धि प्रगटाय ।
दिन २ सद्बुद्धि बधै, सिद्धि नेड़ी थाय ॥३६२॥
समकित व्रत सुध पालियां, सीझे वाञ्छित काज ।
दुःख दोहग दूरा टले, पामें अविचल राज ॥३६३॥
भिक्षु फुन जयाचार्य कृत, ग्रन्थ मांहि इधकाय ।
बारूं न्याय बताविया, प्रगट पणें सुखदाय ॥३६४॥
तसु अनुसारे में इहां, दोहा सोरठा मांहि ।
न्याय कह्यो किञ्चित पणें, देख २ करि ताहि ॥३६५॥
सूत्र पाठ जे जिम कह्या, ते तिम लिख्या इण स्थान ।
ओछा इधक आया हुवै, तो मिच्छामि दुक्कडं जान ।३६६।
अक्षर लघु दीर्घादि नूं, नहिं मुझ ज्ञान विशेष ।
लघु बुद्धि माफक रची, सोरठ दोहा कहेस ॥३६७॥
तिण सूं पण्डित जन जिके, बांचि न करस्यो हास्य ।
गुण ग्राही गुणवन्त नूं, सदा अछूं मैं दास ॥३६८॥
श्रमणोपाशक श्रमण नूं, श्री जिन मत में सीर ।
समकित धर्म साधर्मी फुन, श्रावक नूं लघु बीर ॥३६९॥
श्री श्री कालू गणपति, प्रतपो जेम दिनन्द ।
तसु अनुग्रह दिन दिन इधक, गुलाबचन्द आनन्द ॥
शत उन्नीस तियांसिये, बिक्रम सम्बत् येह ।
जोड़ रची हुण्डी तणी, जयपुर नगर विषेह ॥३७१॥

॥ कलश ॥

(चाल गीतक छन्द)

गुण रयन बयन जिनेश केरा, अति भलेरा जानिये। जे कह्या, जे जिम सत्य तथ्य, सुअथ्य पथ्य बखानिये। धरि आसता प्रतीति रीति, विनीत केरी आनिये। सुगुरु वाचा सर्व सांचा, अधिक आछा मानिये ॥१॥ तज कपट लपट मिथ्यात नी, निज आथिनी सुध ल्याविये ॥ अव्रत घटावी व्रत बढ़ावी, आतम भावे आविये ॥ सुख सम्पदा निज घर घणी, गुणवन्त नां गुण गाविये। कहै गुलाबचन्द आनन्द अति ही; सुगुरु सेयां पाविये ॥२॥



३०६ बोल की हुराडी की जोड ।

॥ दोहा ॥

नमुं वीर वर्द्धमान जी, त्यां सूत्र प्ररूप्या सार ॥
जे समदृष्टि जीवड़ा, त्यांरा वचन किया अंगीकार ॥१॥
कई अज्ञानी इम कहै अव्रत सेवायां धर्म ॥
बले धर्म कहै आज्ञा बारणें ते भुला अज्ञानी भ्रम ॥२॥
अव्रत में नहीं जिण आगन्या, जिण आज्ञा बिण धर्म न होय ॥
सूत्र साख दे वरणवूं, सांभलज्यो सहुकोय ॥ ३ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

॥ आ अणुकम्पा जिण आज्ञा में (एदेशी) ॥

श्रावकरो खाणो पीणो सरब अव्रत में, पिंण साधु रे अव्रत नहीं लिगारो । ए दोनूंई बोल उवाई में चल्या, बले सूयगडांग अठारमाध्ययन मझारो । आ श्रद्धा श्री जिणवर भाषी ॥ १ ॥ धर्म अधर्म मिश्र तीनूंई पक्ष चाल्या, सूयगडांग अठारमा अध्ययन मझारो । धर्म पक्ष में साधु सरब व्रती अणारंभी, ए आर्य मुक्त रो मारग सारो ॥ २ ॥ अधर्म पक्ष माहें च्यार गुणठाणा, ते अव्रत आश्री आरंभी जाणो । बले अव्रत आश्री एकंत अनार्य, पिंण सम्यक्त निरजरा शुद्ध बखाणो ॥ आ ॥ ३ ॥ मिश्र पक्ष माहें श्रावक व्रता-

व्रती, बले आरंभी अणारंभी जाणो। ते व्रतां आश्री तो अणारंभी आर्य, ते मुक्त रो मारग निर्मल ठाणो॥ आ॥ ४॥ ए दोनूंई स्थानक जू जूवा छै, ते धर्म अधर्म दोयां में तायो। साध श्रावक व्रत आश्री धर्म आर्य, असंजती अव्रत आश्री अधर्म मांयो॥आ॥ ५॥ अधर्म पक्ष ने अनार्य कह्यो छै, पिण सम्यक्त निर्जरा अधर्म नाहीं। ज्यूं श्रावक ने धर्म आर्य कह्यो छै, पिण अव्रत नहीं धर्म आर्य मांही॥ आ॥ ६॥ जिन आज्ञा लोपी आप रै छांदै चालै, तिण ने ज्ञान-रहित कह्यो भगवंत। आचारांग दूजा अध्ययन रे छट्ठे उदेशे, तो आज्ञा बारै धर्म कहै नहीं संत॥ आ॥ ७॥ केवली आचरयो ते छद्मसत आचरै, केवली अणाचरयो ते आचरै नाहीं, आचारांग दूजा अध्ययने रे छट्ठै उदैशै, ए दोयां रो एक आचार छै ताही॥ आ॥ ८॥ वीर कह्यो आज्ञा माहिलो धर्म मांह रो, आज्ञा बारै बोल बोलवो युक्तो नांही। ए उतकष्टी चरचा कही आचारंगे छट्ठे अध्ययने दूजा उदेशा माहीं॥आ॥९॥ प्राण भूत जीव ने दुख नहीं देणो, ए तीन काल रा तीर्थंकर नी वाणी। ए सुध धर्म आचारांग चौथे, पहिला उदेशा सूं लीज्यो पिछाणी॥ आ॥ १०॥ प्रमादी द्रव्यलिंगी पासत्थादिक, सगला छै जिणआज्ञा बारै। चौथे

अध्ययने आचारांग रै पहिले उद्देशै, पिण आज्ञा बारे धर्म नहीं छै लिगार ॥ आ ॥ ११ ॥ धर्म अधर्म री करणी जूई जूई छै, आचारांग माहिं भाख्यो अरिहन्त। चौथा अध्ययने रे दूजै उद्देशै, तीजी मिश्र री करणी न कही भगवंत ॥आ॥१२॥ अबुद्ध ने धर्म कह्यो अणकह्यो सरीषो, ते हेत अहेत मारग नहीं जाणै। चौथाध्ययन आचारांग रै बीजै उद्देशै, जिण आज्ञा तो बुद्धवंत हुवै ते पिछाणै ॥ आ ॥ १३ ॥ च्यार तीर्थ जिण आगन्या ने वांछै, हिंस्या धर्मी अधर्मी रो संग निवारै। चौथाध्ययन आचारांग रै तीजै उद्देशै, तो धर्म कहो किम आज्ञा बारै ॥ आ ॥ १४ ॥ चौथाध्ययन आचारांग रै चौथे उद्देशै, ते जीव जिण आज्ञा तणा छै अजाण। तिणने सम्यक्त आवणी दुर्लभ कही छै, तो जिण आज्ञा ने करलेणी प्रमाण ॥ आ ॥ १५ ॥ तीर्थंकर धर्म कह्यो तेहिज मोक्ष नो मारग, पिण अवर मुक्ति नो मारग नांही। पांचमाध्ययन रे तीजै उद्देशै, वीर कह्यो आचारांग मांही। ॥ आ ॥ १६ ॥ आज्ञा बारै उद्यम आज्ञा में आलस, ए दोय बोल शिष्य तोने म होय। आचारांग पांचमाध्ययन रे छठै उद्देशै, वीर ना बचन हियै अवलोय ॥ आ ॥ १७ ॥ छाड़वा आदरवा जोग वस्तु जाणी ने, जिण आगन्या लोपै नहीं साध।

आचरङ्ग पांचमांध्येन रे छठै उदेशे, तो जिन आज्ञा ने लीजो आराध ॥ आ ॥ १८ ॥ उन्मार्ग खोटो सर्वथा छांडूं, मुक्ति मारग ने करूं अङ्गीकारो। चौथा अध्येन आवसग रे मांही, साधां छोड्यो ते जिण आज्ञा वारो ॥ आ ॥ १६ ॥ ठाणां अङ्ग सूत्र रे नवमें ठाणै, नव प्रकारै पुंण्य समचे बतायो। पिण असंजती ने दीधां पुन्य नाहीं, तिणरो थे न्याय सुणो चित्तलायो ॥ आ ॥ २० ॥ असंयती ने निरदोषण दीधां, एकन्त पाप भगवती रे मांह्यो। आठमां शतक रे छठै उदेशै, पुन्य कहै ते तो मूसावायो ॥ आ ॥ २१ ॥ अन्य तीर्थी ने च्यार आहार देवारा, आणन्दजी सूंस किया जिन आगै। उपासकदशा रे पहिले अध्येने, तो तिण ने दीधां पुन्य किसी पर लागै ॥ आ ॥ २२ ॥ पात्र ने देवै कुपात्र ने देवै, ए चौभङ्गी कही ठाणाअङ्ग मांय। चौथे ठाणै कुपात्र कुक्षेत्र कह्या छै, तिण ने पोष्यां सूं पुन्य किसी पर थाय ॥ आ ॥ २३ ॥ अन्यतीर्थी गृहस्थ ने देवो छोड्यो, ते संसार भमवा नो हेतु जाणी। सूयगडा अङ्ग ने नवमाध्येन, तेवीसमी गाथा वीर बखाणी ॥ आ ॥ २४ ॥ उत्तराध्येन चवदमारी बारमी गाथा, भृगु प्रोहित ने बेटा बोल्या बिमासी। विप्र जिमायां तमंतमा जावै, तो पुन्य कहै ते घणो दुःख पासी ॥

आ ॥ २५ ॥ ब्राह्मण पापकार्या क्षेत्र कह्या छै, ते पांच आस्रव ना सेवणहारो । उत्तराध्येन हरकेसी मुंहडै यक्ष बोल्यो, बारमाध्येन री गाथा चवदमी धारो ॥ आ० ॥ २६ ॥ कोई कहै ओ तो यक्ष देव कह्यो छै, पिण साधु री तो नहीं दीसै बाच, तो यक्ष विप्रां ने क्रोधी मानी कह्या छै, ते सगला बोल नहीं छै साच ॥ आ० ॥ २७ ॥ कोई कहै असंयती ने दीधां, धर्म रो अंश तो नहीं लिगार । पिण पुन्य हुवै तिण सूं सुरपद पावै, इम कहै ते पिण मूढ गिवार ॥ आ ॥ २८ ॥ आद्रकुमार ने ब्राह्मण बोल्या, विप्र जिमायां बंधै पुन्य भारी । तिण पुन्य थकी मोटो देवता थावै, हिवै आद्रकुमार कहे छै विचारी ॥ आ ॥ २९ ॥ दोय सहंस स्नातक विप्र जिमायां, नरकां तणा फल पामै दाता । सूयगडाअङ्ग रे दूजै श्रुत खंधे, छठा अध्येन चमालीसमी गाथा ॥ आ ॥ ३० ॥ दया धर्म दुगंछै हिंसा धर्म थापै, शील रहित एहवा विप्र जीमावै । सूयगडाअङ्ग रे बावीसमाध्येन, पेतालीसमी गाथा में नरक सिधावै ॥ आ० ॥ ३१ ॥ मास २ में दश लाख गाय देवै छै, कोई किंचित् मात्र देवै नहीं ताहि । संयम श्रेय दोयां ने ई भाख्यो, उत्तराध्येन नवमाध्येन माहिं ॥ आ० ॥ ३२ ॥ जिण चोरी करवा रा सूंस न

कीधा, तिण ने चोर कह्यो छै दशमा अंगे। तिणने अन पाणी देवै ते पिण चोर, तीजै अध्ययन जोवो मन-रंगे ॥ आ ॥ ३३ ॥ सचित खवायां उत्कृष्टे भांगै, च्यार चोरी ठाणाअंग अर्थ मांय। तो वीर नी आज्ञा विण सरब चोरी छै, पहिले ठाणा में भाख्यो जिनराय ॥ आ ॥ ३४ ॥ लोकिक रो दान माठो जाणी छोडवो, निरवद्य दान परूपणो सार। आचारांग छठाध्ययन रे पांचमै उद्देशो, वर्तमान मौन साझै अणगार ॥ आ ॥ ३५ ॥ देता लेता इसो वर्तमान देखी, साधु ने मून कही तिण कालो। सूगडाअंग इकवीसमेध्ययन, छत्ती-समी गाथा जोय संभालो ॥ आ ॥ ३६ ॥ सावद्य दान प्रशांस्यां छःकाय री हिंसा, वर्त्तमानकाल निषेध्यां अंतराय। सूयगडाअंग रे इग्यारमाध्ययने, बीसमी गाथा भाखी जिनराय ॥ आ० ॥ ३७ ॥ ठाणाअङ्ग सूत्र रे दशमै ठाणै, दश शस्त्रां में अव्रत शस्त्र जाणो। ते शस्त्र तीखो कियां पुण्य परूपै, त्यांने पुन्य धर्म री नहीं छै पिछाणो ॥ आ ॥ ३८ ॥ कर्मां ने मुकावा ने जीव हणै ते, नरक तणा फल पामै विशेष। तो धर्म हेते जीव हणै तो, आचारांग दूजाध्ययन रे दूजै उद्देश ॥ आ ॥ ३९ ॥ जन्म मरण मुकावाने जीव हणै तो सम-कित जावै ने आवै मिथ्यात। आचारांग पहिला

अध्ययन रे पहिले उदेशै, वले नरक में पामै अनंती घात ॥ आ० ॥ ४० ॥ धर्म हेते जीव हणै मंद बुद्धि, अत्यन्त मूढ़ तिणने कहीजै । वले सत्व रहित माठी मत तिणरी, प्रश्नव्याकर्ण पहिलेध्ययन जोय लीजै ॥ आ ॥ ४१ ॥ उपासगदसारे सातमाध्ययन, गौशाला ने शकडाल बोल्यो वाय । ए पाट पाटीया बाजोट संथारो, ते धर्म तप अर्थे देवूं नांय ॥ आ० ॥ ४२ ॥ गाय भैंस चरावी करै आजीविका, तथा सतुकार ऊपर रहै ताम । वले हाथी घोड़ा वलद मोर कुकड़ी इत्यादिक, ऊपर रहै पौषण काम ॥ आ० ॥ ४३ ॥ उपासगदसारे पहिलेध्ययन, पनरेई कह्या छै विणज व्यापार । पइसो लेई ने असंजती पौषे, ते पनरमो असइजण पोषणियाधार ॥ आ० ॥ ४४ ॥ पइसो लेई असंजती ने पौषे, तिणरे कर्म बंधै तिण सूं कर्मादान । तो पइसै विना जे असंजती पौषे तिण में पिण धर्म कहै ते अज्ञान ॥ आ० ॥ ४५ ॥ अन्य तीर्थी गृहस्थ पास्थादिकने, साधु असणादिक देवै नांहि । दूजा आचारांग रे पहिलेध्ययन, जोयलो पहिला उदेशा मांहि ॥ आ० ॥ ४६ ॥ सावद्य दान देवै तिण में धर्म प्ररूपै, त्यांने छःकाय ना घाती कहीजै । आचारांग सातमें अध्ययन, पहिला उदेशा में जोय लीजै ॥ आ० ॥ ४७ ॥ मृगालोढा ने अशुभ

देखी ने पूछ्यो, इण कवण दियो कुपात्र दान। विपाक रे पहिले अध्ययन गौतम पूछ्यो, तिणरा सांप्रत फल भोगवै छै अज्ञान ॥ आ० ॥ ४८ ॥ धर्म ना अवगुण अधर्म ना गुण बोलै, निशीथ इग्यारमें दंड चौमासी। आज्ञा मांहि पाप आज्ञा बारै धर्म कहै ते, चिहुं गति मांहि घणो दुख पासी ॥ आ० ॥ ४९ ॥ जिण आज्ञा मिलै तिम तिम धर्म कहणो सूयगडाअङ्ग रे चवदमा मांय। सनावीसमी गाथा श्री जिण भाषी, आज्ञा बारै धर्म न कहै मुनिराय ॥ आ० ॥ ५० ॥ बारै व्रत आद्-ख्या ते पहिलो विसरामो, १ सामाई २ पोसो ३ ने करै संथारो ४। ए च्यार विश्रामां ठाणा अङ्ग चौथे, पिण आज्ञा विण धर्म नहीं छै लिगारो ॥ आ० ॥ ५१ ॥ तीन चाल्या श्रावक रा मनोरथ, ठाणा अङ्ग सूत्र रे तीजै ठाणै। परिग्रह छाडण री भावना भावै, पिण धन दीधां में पुन्य अज्ञानी ताणै ॥ आ० ॥ ५२ ॥ दश दान कह्या ठाणा अङ्ग दशमें, दश धर्म कह्या तिणरी कीजै पिछाण। दश स्थविर कह्या ते पिण ओलख लेणा, यांनें न्यारा न्यारा औलखै बुद्धिवान ॥ आ० ॥ ५३ ॥ हिंस्या करी जाणी ने झूठ बोले, साधु ने असणादिक अशुद्धवहि-रावै। भगवती पांचमें शतक रे छठै उद्देशै, जिण कह्यो अल्प आउषो बंधावै ॥ आ० ॥ ५४ ॥ अफासु

अणेषणी साधु ने बहिरावै, तिणरे बहुत निर्जरा ने अल्प पाप। भगवती आठमें शतक रे छठे उद्देशे, तिण सूं मूढ करै अशुद्ध लेवा री थाप ॥ आ० ॥ ५५ ॥ ए पाठ अजाण पणै मिलतो दिसै, पिण श्रावक तो शुद्ध जाण बहिरावै। अल्प पाप ते पाप तणो छै नकारो, चोखा परिणामा सूं बोहत निरजरा थावै ॥ आ० ॥५६॥ इणन्याय ए पाठ मिलतो दिसै, ते पिण केवल ज्ञानी ने देणो भोलाय। टीका करणवाले पिण केवलियां ने भोलायो, पिण अशुद्ध लेवारी थाप न करणी काय ॥ आ० ॥ ५७ ॥ आधाकर्मी भोगव्यां रूलै चिहूं गत में, छःकाय रो घाती कह्यो जिनराय। पहिलै शतक भगवती रे नवमे उद्देशै, अशुद्ध दीधां बहुत निरजरा किम थाय ॥ आ० ॥ ५८ ॥ सनतकुमार नी पूछा चाली, ते वर्त्तमान काल आश्री आख्यो। तीजै शतक भगवती रे पहिले उदेशै, पिण पाछिल भव रो तो नाम न भाख्यो ॥ आ० ॥ ५९ ॥ धर्म रे काजे हिंसा में करणी थापै, त्यांने अनार्य कह्या भगवान्। चौथेध्ययन आचारांग रे दूजै उदेशै, तो हिंसा में धर्म न कहै बुद्धिवान् ॥ आ० ॥ ६० ॥ सम्बत अठारा ने वर्ष असीये, वैशाख विद एकम बुधवार। ए सावद्य दान री करणी ओलखावा जोड़ कीधी सर गांव मझार ॥ आ० ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

हिवैं निर्वद्य करणी ओलखायवा, संक्षेप कहूं विस्तार।
ते करणी करतां पुन्य नीपजे, पिण सावद्य सूं नहीं पुन्य लिगार ॥ १ ॥
जिण आगन्यां माहिली करणी करै, शुभ जोग वर्त्तै तिणवार।
तिहां कर्म कटै पुन्य नीपजै, देखो सिद्धान्त मझार ॥ २ ॥
केई अज्ञानी इम कहै, आज्ञा बारली करणी सूं पुन्य।
त्यांने खबर नहीं जिण धर्मनी, त्यांरी जावक बात जघून्य ॥ ३ ॥
शुभ कर्म बंधै जीवरे, आज्ञा माहिली करणी सूं जाण।
ठाम ठाम सिद्धान्त में जिण कह्यो, ते सुणज्यो सुमता आण ॥ ४ ॥

॥ ढाल २ जी ॥

भवियण जिण आज्ञा सुखकारी (ए देशी)

साधु ने सूझता च्यारूं आहार बहिरावै, तो एकंत निर्जरा जाण। भगवती आठमें शतक छठे उदेशै, शुद्ध निर्वद्य करणी पिछाण रे ॥ भवियण जोवो रे हृदय विचारी ॥ या निरवद्य करणी सुखकारी रे भवियण, तिण सूं पामै भवपारी ॥ १ ॥ हिंस्या झूठ दोनूं न सेवै, साधां ने शुद्ध आहार बहिरावै। भगवती पांचमें शतक छट्ठे उदेशै, दीर्घ आउखो बंधावै रे ॥ भवि ॥ २॥ वले साधां ने वंदणा नमस्कार करी ने, मनोगम शुद्ध आहार बहिरावै। भगवती पांचमें शतक छठे उदेशै, शुभ लांबो आउखो बंधावे रे ॥ भवि ॥ ३ ॥ वंदणा कर नीच गोत्र खपावै, ऊंच गोत्र कर्म बंधायो।

उत्तराध्येन गुणतीसमा माहिं, दश बोलां में श्रीवीर दीपायो रे ॥ भवि ॥ ४ ॥ प्रवचन प्रभावना किणनें कहीजै, सिद्धान्त ना गुण दीपावै । उत्तराध्येन गुणतीस में बोल तेवीसमो, तिण सूं पिण शुभ कर्म बंधावै रे ॥ भवि ॥ ५ ॥ व्यावच कीधां तीर्थंकर नाम बंधै, ए बोल तयालीसमो धार । उत्तराध्येन गुणतीसमें भाख्यो, तिणरो बुद्धिवन्त न्याय विचारै रे ॥ भ ॥ ६ ॥ दश प्रकार री व्यावच चाली, ठाणाअङ्ग दश में ठाणै, आचार्य १ उपाध्याय २ स्थविर ३ तपसी री ४, रोगीने ५ नवो शिष्य ६ पिछाण रे ॥ भवि ॥ ७ ॥ एक आचार्य ना शिष्य ने कुल कहीजै, दोय आचार्य ना शिष्य ने गण जाण । घणा आचार्य ना शिष्य ने संघ कहीजै, साधर्मी सर्व साध पिछाण रे ॥ भवि० ॥ ८ ॥ कोई कहै संघ ते चतुर्विध तीर्थ, तिणरी सावद्य व्यावच में धर्म । बले साधर्मी में श्रावक ने घालै, ते भूला अज्ञानी भ्रम रे ॥ भवि ॥ ९ ॥ यां दशांई बोलां में श्री जिण आज्ञा, श्रावक री व्यावच में आज्ञा नांय । तिणरो शरीर छःकाय रो शस्त्र, तिणने तीखो कियां पुन्य किम थाय रे ॥ भवि ॥ १० ॥ सामायक माहें श्रावक नी आत्मा, अधिकरण कही भगवान् । भगवती सातमें शतक पहिले उदेशै, निर्णय करै बुद्धिवान् रे

॥ भवि ॥ ११ ॥ ग्रहस्थ री व्यावच करै करावै, करै तिण ने भलो जाणै तायो । निशीथ रे इग्यारमें उदेशै, चौमासी प्रायश्चित आयोरे ॥ भवि ॥ १२ ॥ तिणने भलो जाणै तो ही डंड कह्यो छै, पुन्य कहै किण न्याय । ए सावद्य काम संसार नो मारग, तिण में श्री जिण आज्ञा नांयरे ॥ भवि ॥१३॥ वली सातमा शतक रे दशमें उदेशै, अठारै पाप सेव्या सूं पाप । अठारै पाप न सेव्या सूं पुन्य बंधै, ओ कह्यो जिणेश्वर आप रे ॥ भवि ॥ १४ ॥ ठाणाअङ्ग रे दशमें ठाणै, दश बोल थकी पुन्य बंधै, त्यां दशांई बोलां री श्री जिण आज्ञा, इम भाख्यो वीर जिणंद रे ॥ भवि ॥ १५ ॥ भगवती सातमें शतक रे छठै उदेशै, अठारै पाप न सेवै कोय । तिण रे अकरकश वेदनी कर्म बंधै छै, सेव्यां करकश वेदनी होय रे भवि ॥ १६ ॥ तीर्थंकर नाम कर्म बंधै बीस बोलां, ज्ञाता आठमाध्येन माह्यो । ते महाबल अणगार सेव्या छै, तिण सूं थया तीर्थंकर ताह्यो रे ॥ भवि ॥ १७ ॥ तिण में सतरमो बोल समाहिय भाख्यो, इण बोल ने लीजो आराध । गुरु री कार्य करी समाधि उपजावै, वले ज्ञानादि भाव समाध रे ॥ भवि ॥ १८ ॥ कोई कहै सगला जीवां ने, द्रव्य साता उपजावै । श्रावक ने असणादिक खवावै, तो तीर्थंक-

शादि गोत बंधावै रे ॥ भवि ॥ १६ ॥ इम कहै तिणने पूछा कीजै, ओ बोल चाल्यो किण ठाम । जब तो कहै ज्ञाता माहिं चाल्यो, सेव्यो महाबल अणगार ताम रे ॥ भवि ॥ २० ॥ महाबल अणगार सेव्यो कहै छै, ते तो हुंतो मोटो अणगार । ते सावद्य साता किम उपजावै, ते जोवो अन्तर नयण उघार रे ॥ भवि ॥ २१ ॥ महाबल अणगार सेव्यो कहै छै, बले तिण मांहे थापै सावद्य साता । ते सावद्य साता में धर्म परूपै, ते मोहमिथ्यात में राता रे ॥ भवि ॥ २२ ॥ बले विनो कियां तीर्थंकर गोत बंधै, बलि व्यावच कियां जाण । तिणमें श्रावक रा सावद्य विनो व्यावच थापै, ते पिण पूरा मूढ अयाण रे ॥ भवि ॥ २३ ॥ ए तीनूंई बोल साधां आश्री कह्या छै, तिण में श्री जिण आज्ञा जोय । श्रावक री द्रव्य साता ने विनो व्यावच में, जिण आज्ञा नहीं छै कोय रे ॥ भवि ॥ २४ ॥ यां बीसांई बोलां में श्री जिण आज्ञा, ते सेव्या महाबल अणगारो । ते श्रावक रो विनो व्यावच किम करसी, ते बुद्धिवन्त न्याय विचारो रे ॥ भवि ॥ २५ ॥ सुबाहु कुमार री पूछा चाली, इण कांई दियो शुद्ध दान । विपाक सूत्र रे पहिले अध्येन, ए पिण निर्वद्य करणी जाण रे ॥ भवि ॥ २६ ॥ प्राण भूत जीवरी अणुकंपा कीधां, साता वेदनी नो

कह्यो बंधं। भगवती सातमें शतक रें छठै उदेशै, इणरी पिण आज्ञा देवै जिणंदरे ॥ भवि ॥ २७ ॥ भगवती आठमें शतक रे नवमें उदेशै, आठ कर्म बंधण रो न्याय। तिणमें आठांई पाप कर्म री करणी, माठी कही जिनराय रे ॥ भवि ॥ २८ ॥ वेदनी आउखो नाम गोत ए च्यारूं, शुभ कर्म तणी शुद्ध करणी। निरवद्य ने आज्ञा मांह कही छै, तिण सूं जीवने आदरणी रे ॥ भवि ॥ २६ ॥ कोई कहै साधु आहार करै नींद लेवै, वले भोगवै उपाधि अनेक। त्यांने आज्ञा छै तोहि पाप बंधै छै, इम बोलै ते बिना विवेक रे ॥ भवि ॥ ३० ॥ कोई कहै पंच प्रमाद कह्या छै, निद्रा लेवै ते प्रमाद मांय। इम कही आज्ञा माहें पाप थापै छै, तिणरो जाब सुणो चितलाय रे ॥ भवि ॥ ३१ ॥ निद्रा प्रमाद माहें ते तो भाव निद्रा, द्रव्य निद्रा प्रमाद नांय। मिथ्यात अज्ञान रूप मोह कर्म उदा सूं, भाव निद्रा कही जिणराय रे ॥ भवि ॥ ३२ ॥ आचारांग तीजाध्ययन रे पहिले उदेशै, द्रव्य भाव निद्रा कही दोय। मिथ्यादृष्टि भाव निद्रा में सूता, साधु सदा जागता सोयरे ॥ भवि ॥ ३३ ॥ द्रव्य निद्रा दर्शणावर्णी कर्म उदै सूं, तिण सूं पाप न बंधै कोय। पाप बंधै एक मोह कर्म उदै सूं, अवरां सूं पाप न होय रे ॥ भवि ॥

३४ ॥ ज्ञानावर्णी सूं तो ज्ञान दबै छै, दर्शणावर्णी सूं दर्शण दबाय। तिणमें थिणोदी निद्रा दर्शणावर्णी उदै सूं, पाप न लागै ताय रे ॥ भवि ॥ ३५ ॥ तिण निद्रा में अर्ध वासुदेव नो बल छै, ते अन्तराय रो क्षय-उपशम जाणो। तिणमें माठा कर्त्तव्य करै ते मोह कर्म उदासूं, तिण सूं पाप लागै छै आणो रे ॥ भवि ॥ ॥ ३६ ॥ और निद्रा में माठो सुपनो आवै, ते पिण मोह कर्म उदै सूं जाणो। तिण निद्रा सूं तो पाप कर्म न लागै, माठा सुपना सूं पाप पिछाणो रे ॥ भवि ॥ ॥ ३७ ॥ वेदनी उदै सूं साता असाता भोगवै, आउखो भोगवै उदै आय। गोत उदै थी गोत भोगवै, भली वस्तु आडी अन्तराय रे ॥ भवि ॥ ३८ ॥ नाम उदै सूं शुभ जोग चालै, त्यां सूं तो पुन्य लागै आण। एक मोह बिना पाप कर्म न लागै, समझो चतुर सुजाण रे ॥ भवि ॥ ३९ ॥ साधु आहार उपधि जिन आज्ञा सूं भोगवे, तिण रे पाप न लागै लिगार। ठाम ठाम सिद्धान्त में वीर कह्यो छै, तिणरो अल्प कहूं विस्तार रे ॥ भवि ॥ ४० ॥ जयणा सूं साधु अहार करै छै, तिण रे पाप न बंधे लिगार। दशवेकालिक रे चौथे अध्ययन, पाप कहै ते मूढ गिंवार रे ॥ भवि ॥ ४१ ॥ निर्वद्य गोचरी ऋषेश्वरांरी, मोक्ष री साधन जिन

भाखी। सुध लेवे देवे ते सुध गति जावे, ते दशवैकालिक साखी रे। भवि॥ ४२॥ भगवती पहिले शतक रे नवमें उदेशो, आहार करतां तोड़े सात कर्म। बलि कह्यो सातमा शतक रे पहिले उदेशो, आहार करे चलावाने धर्म रे। भवि॥ ४३॥ साधु आहार करे संजम यात्रा निभावा, बले करणो कह्यो ठंढो आहार। उत्तराध्येने रे आठमें भाख्यो, इग्यारमी बारमी गाथा सार रे। भवि॥ ४४॥ मूर्छा रहित संजम यात्रा निभावा, साधु ने करणो आहार। उत्तराध्येन पैंतीसमें सतरमी गाथा, पिण प्रमाद न कह्यो लिगार रे। भवि॥ ४५॥ आचाराङ्ग तीजा ध्येन रे दूजे उदेशो, संजम पालवा करणो आहार। प्रमाद सूं तो संजम यात्रा विणसै छे, बले हुवे संजम रो बिगार रे। भवि॥ ४६॥ ठाणाअङ्ग रे नवमें ठाणै, पहिला छेहला तीर्थंकर रो धर्म। मानोपेत उपधि ने पांच महाव्रत, तिण सूं लागै नहीं पाप कर्म रे। भवि॥ ४७॥ साधु ने परिग्रह रहित कह्यो छे, धर्म उपधि ने परिग्रह कह्यो नाहीं। दशमा अङ्ग रे दशमें अध्येने, पिण पाप नहीं तिण माहीं रे। भवि॥ ४८॥ रागद्वेष रहित उपधि भोगवै, तिण ने परिग्रह कह्यो नाही। दशमाअङ्ग रे दशमेध्येने, परिग्रह कहै ते मूरख माहीं

रे । भवि ॥ ४६ ॥ दशवैकालिक रै छठे अध्येने, साधु रा उपधि परिग्रह नाहीं। निज काया ऊपर पिण ममता न करणी। ममता करै तो परिग्रह माहीं रे ॥ भवि ॥५०॥ धर्म उपधि टाली सर्व परिग्रह, तीजै ठाणै ठाणा अङ्ग मांय। उपगरण निपरिग्रही ठाणाअङ्ग चौथे भाख गया जिनराय रे। भवि ॥ ५१ ॥ साधु संजम पालवा उपधि राखै, ते नहीं परिग्रह माहीं। प्रश्न व्याकरण पांचमेध्येन, पिण श्रावकरा कह्या नाहीं रे ॥ भवि ॥ ५२ ॥ मोक्ष मारग आडो आगल सरीषो, परिग्रह ने कह्यो भगवान्। प्रश्न व्याकरण रैं पांचमें अध्येने, दियां पुन्य कहै ते अज्ञान रे ॥ भवि ॥ ५३॥ बलि परिग्रह ने अनर्थ कह्यो छै, प्रश्न व्यांकरण पचमें जाणो, ते अनर्थ सेवायां में पुन्य परूपै, ते पूरा छै मूढ अयाणो रे ॥ भवि ॥ ५४ ॥ उत्तराध्येन चवदमां री सोलमी गाथा, धन अनर्थ रो मूल जाणो। धन सूं धर्म रूपणी धुरा नहीं चाले, ते दीधां पुन्य कहै ते अयाणो रे। भवि ॥ ५५ ॥ साधु पचखाण करै तप रो प्रमाद टालवा, भगवती पहिले शतक अर्थ मांय। तपरो प्रमाद कहीजै किणने, तिणरो न्याय सुणो चितलाय रे । भवि ॥ ५६ ॥ पचखाण कीधां तो तपस्या निपजै, नहीं करै तो तपस्या नाहीं। तप नहीं तिण सूं तपरो प्रमाद

कह्यो छै, पिण नहीं सावद्य माहीं रे। भवि ॥ ५७ ॥
प्रमाद रा फल तो कडुवा कह्या छै, प्रमाद में जिन-
आज्ञा नांय। वले केवलज्ञानी पिण आहार करै छै,
ते तो अप्रमादी जिनराय रे। भवि ॥ ५८ संजम रो
गुण तो कर्म रोकवा रो, तपस्या सूं कर्म बोदा पार।
उत्तराध्येने गुणतीस में आख्यो, सतावीसमा बोल
मझार रे। भवि ॥ ५९ ॥ उपधि तणा पचखाण कियां
सूं, सझाय नो पलिमंथ न थाय। उत्तराध्येन गुणतीस
में ध्येने, चौतीसमां बोल मांय रे। भवि ॥ ६० ॥
उपधि पड़िलेहतां सझायनो पलिमन्थ, तिण सूं पाप न
लागै कोय। पडिलेहणा करै जब पडिलेहणा रो धर्म,
सझाय रो धर्म न होय रे। भवि ॥ ६१ ॥ ज्यूं आहार
करै ते प्रमाद तपस्या रो, तिण सूं पाप न लागै कोय।
आहार करै तिण बेलां धर्म आहार रो पिण तपस्या रो
धर्म न होय रे। भवि ॥ ६२ ॥ पडिलेहणा करै ते
सझाय नो पलिमंथ, पिण तिण ने सावद्य कहिजै नाहीं।
पलिमंथ रो नाम सुणी ने, न थापणो सावद्य माहीं रे
॥ भवि ॥ ६३ ॥ ज्यूं आहार करै ते तो प्रमाद तपरो,
पिण सावद्य नहीं छै लिगार। तपस्या तणी प्रमाद
सुणी ने, बोलणो नहीं बिना विचार रे॥ भवि ॥६४॥
ठाणाअंग रे पांचमें ठाणै, पांच अचेल कह्या अरिहन्त।

तिण में सझायनो पलिमंथ पड़िलेहणं, पिण तिण में पाप न कह्यो भगवन्तरे ॥ भवि ॥ ६५ ॥ मन वचन काय उपगरण ए च्यारूं, शुद्ध प्रणिधान भला व्यापार। ए साध टाल औरां में नहीं पावै, ठाणाअङ्ग चौथे ठाणै मझार रे । भवि ॥ ६६ ॥ मन वचन काया उपगरण ए च्यारूं, प्रणिधान सावद्य निरवद्य दोय। ए सन्नी में पावै ठाणाअङ्ग चौथे, असन्नी में मन न होय रे। भवि ॥ ६७ ॥ ए च्यारूं भला ते साधु रे कह्या छै, पिण औरां रे भला न कह्या कोय। तो श्रावक रा उपधि तो परिग्रह माहिं, ते सेवायां पुण्य किम होय रे। भवि ॥ ६८ ॥ ए निर्वद्य दान करणी ओलखावा, जोड़ कीधी रेहलाणा मझार। समत् अठारा ने वर्ष असीये, वेशाख सुदी तीज शुक्रवार रे। भवि ॥ ६९ ॥

॥ दोहा ॥

हिवै अणुकंपा ऊपरे, संक्षेप कहूं विस्तार।
सूत्र साख दे वरणवूं, ते सुणज्यो अधिकार ॥ १ ॥
असंजती रो जीवणो, साधु वांछै नांह।
मोह कर्म उदै सूं वांछियां, डंड कह्यो सिद्धान्त रे मांह ॥ २ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥

रास भणी निन्द्वां तणो ॥ ए देशी ॥

अणुकंपा तस जीवनी, बांधै छोड़ै भलो जाणै

मन मांयकै। चौमासी डंड निशीथ में, बारमें उदेशै कह्यो जिनराय कै, भीणो ज्ञान जिनराज नो ॥ १ ॥ सिंह बाघ हिंसक जीव देखने, मार न कहिणो तिण सूं द्वेष आण कै। मत मार न कहिंणो राग आणने, सूयगडाअङ्ग एकवीसमें पिछाण कै ॥ २ ॥ दश बांछा करवी नहीं, दशमें ठाणै ठाणाअङ्ग मांय कै। तिणमें जीवणो मरणो न बांछणो, तो पारको किम बांछै मुनि-राय कै ॥ ३ ॥ बाल अज्ञानी बांछै घणो जीवणो, ते पंडित नहीं बांछै ताम कै। आचरंगध्येने पांच में, पहिले उदेशें प्रभु कह्यो आम कै ॥ ४ ॥ दशमें अध्येन सूयगडाअङ्ग में, चौवीसमी गाथा रे मांय कै। साधु जीवणो मरणो बांछै नहीं, ते असंयम जीतव्य बाल मरण छै ताय कै ॥ ५ ॥ सूयगडाअङ्ग रे तेरमें, वीसमी गाथा में विस्तार कै। जीवणो मरणो न बांछै साधजी, ए पिण असंयम जीतव्य धार कै ॥६॥ असंयम जीतव्य उपरांठो करै, तिणने आदर नहीं देवै अणगार कै। सूयगडाअङ्ग रे पनरमे, दशमी गाथा रो करो विचार कै ॥ ७ ॥ असंयम जीतव्य नहीं बांछणो, बाल मरण न बांछै धीर कै। सूयगडाअङ्गध्येने तीसरै, दूजै उदेशै कह्यो महावीर कै ॥ ८ ॥ बाल अज्ञानी जीवड़ा, असं-जम जीतव्य ना अर्थी जाण कै। सूयगडा अङ्ग रे पांच-

में पहिले उदेशै तीजी गाथा पिछाण कै ॥ ९ ॥ साधु असंजम जीतव्य बांछै नहीं सूयगडाअङ्ग दशमाध्येन मांय कै । तीजी गाथा में देखल्यो, तो पारको किम बांछै मुनिराय कै ॥ १० ॥ उपसर्ग उपनां साधजी, असंयम जीतव्य बांछै नाहिं कै । सूयगडाअङ्गध्येने दूसरे, दूजे उदेशै सोलमी गाथा माहिं कै ॥ ११ ॥ संजम जीतव्य बांछणो, ते जीतव्य वधारवा ने करणो आहार कै । चौथै अध्येन उत्तराध्येन में, सातमी गाथा साधु ने श्रीकार कै ॥ १२ ॥ सूयगडाअङ्गध्येने दूसरै, पहिले उदेशै आठमी गाथा धार कै । साधु असंजम जीतव्य बांछै नहीं, पंडित मरण करै अङ्गीकार कै ॥ १३ ॥ संजम जीतव्य दोहिलो, और जीतव्य दोहिलो कह्यो नाहिं कै । सूयगडाअङ्गध्येन दूसरे, पहिलै उदेशै पहिली गाथा माहिं कै ॥ १४ ॥ उत्तराध्येन बावीसमें, उगणीसमी गाथा में नमिनाथ कै । ए जीव हणै मुझ कारणे, तो सिरै नहीं मुझने ए बात कै ॥ १५ ॥ मिथिला नगरी बलती जाण ने, साह्मो न जोयो नमि ऋषिराय कै । उत्तराध्येन नवमें कह्यो, पिण असंयम जीतव्य बांछ्यो नाय कै ॥ जी ॥ १६ ॥ देव मनुष्य तिर्यंच रे, विग्रह हुवै त्यां न बांछै हार जीत कै । दशवैकालिक सातमें

बीच पड़ै तैं तो विपरीत कै ॥ १७ ॥ वायरो, वर्षा सी, तावडो, कलह, उपद्रव रहित सुकाल कै। ए साधु ने नहीं वांछणा, दशवैकालिक सातमें संभाल कै॥ जी ॥ १८ ॥ केई भेषधारी इसड़ी कहै, म्हे ऊंदरा ने बचावां मिनकी ने न्हसाय कै। तो उपद्रव रहित नहीं बांछणा, तो उपद्रव सहित किम करणो जाय कै। जी ॥ १६ ॥ दूजै आचारांगध्येन दूसरे, पहिले उदेशै गृहस्थ लड़ै मांहों मांय कै। तो मार मतमार कहिणो नहीं, राग द्वेष करणो नहीं ताय कै ॥ जी ॥ ॥ २० ॥ दूजै आचारांगध्येन दूसरै, पहिले उदेशै गृहस्थ हूणै तेऊकाय कै। तो अग्नि लगावा रो कहिणो नहीं, बुझावा रो पिण न कहैं मुनिराय कै॥ जी ॥ ॥ २१ ॥ सूयगडाअङ्ग श्रुतखंध दूसरै, छठे अध्येने कह्यो आर्द्रकुमार कै। वीर धर्म कहै कर्म काटवा, बलि अनेरा ना तारण हार कै॥ २२ ॥ उपदेश देई समझावणो, आ पैला री अणुकंपा जाण कै। चौथे ठाणैठाणाअंग में, ए चउभंगी लीज्यो पिछाण कै। ॥ २३ ॥ हरणगवेषी देवता, देवकी रा पुत्रां ने म्हेल्या आण कै। सुलसांरी अणुकंपा आणनें, अन्तगड़ सूत्र में जिन वाण कै॥ २४ ॥ ईंट उपाड़ी कृष्ण जी, तिण पुरुष तणी अनुकम्पा आण कै। अन्त-

गढ़ सूत्र माहें कह्यो, ए पिण सावद्य माहें जाण कै ॥ २५ ॥ उत्तराध्येन रे बार में हरकेशी री यक्ष अणुकम्पा आण कै। ऊंधा पाड्या ब्राह्मणा भणी, ए पिण सावद्य लीजो पिछाण कै ॥ २६ ॥ रेणादेवी री करुणा करी, जिन ऋषि सांह्मो जोयो ताम कै। ज्ञाता रा नवमाध्येन में, निश्चै पाप बंधण रो ठाम कै ॥ २७ ॥ निज गर्भ री अणुकम्पा करी. धारणी किधा मनगमना आहार कै। ज्ञातारा पहिलाध्येन में, इण में पुन्य कहे ते मूढ गिंवार कै ॥ २८ ॥ असंजती री अणुकम्पा आणनें, सचित अचित देवै अणुकम्पा दान कै। दशमें ठाणै ठाणाअङ्ग में, इणमें, पुन्य कहै ते घोर अज्ञान कै ॥ २९ ॥ अभयकुमार नी अणुकम्पा करी, धारणी रो डोहलो पूर्‌यो देव आय कै। ज्ञाता रा पहिलाध्येन में, इण में पुन्य कहै ते मूसावाय कै ॥ ३० ॥ गोशाला नी अणुकम्पा करी, भगवन्त शीतल लेश्या म्हेली ताम कै। भगवती पनरमा शतक में टीका में कह्यो सराग प्रणाम कै ॥ ३१ ॥ आचारांग नवमा अध्येन में, चौथे उदेशै आठमी गाथा धार कै। वीर पाप न कियो खोटो जाण ने, सर्वसाधां रो छै ओहिज आचार कै ॥ ३२ ॥ केई मूढ मिथ्याती इम कहै, गोशाला ने दीक्षा दीधी नांय कै।

भगवन्त दीक्षा दीधी गोशाला भणी, पनरंमा शतक भगवती मांह कै ॥ ३३ ॥ ए सावज अणुकम्पा कही, तिणरी आज्ञा नहीं दे जिनराय कै । हिवै निरवद्य अणुकम्पा कहूं, ते सांभलज्यो भवियण चित्तल्याय कै ॥ ३४ ॥ सुसला प्राण भूत जीव नी, हाथी अणुकंपा कर कियो प्रत संसार कै । ज्ञाता रा पहिला अध्येन में, ते मरने हुवो छै मेघकुमार कै ॥ ३५ ॥ चित्त कह्यो केशो स्वाम ने, आप धर्म कहो तो प्रदेशी रे गुण थाय कै । घणा दौपद चौपद पशु पंखियां भणी, राय प्रसेणी उपांग रे माह कै ॥ ३६ ॥ कोई कहै गुण जीवां तणो, पिण जीवांरे तो भाव गुण नहीं थाय कै । भाव गुण तो न जीवां तणो, इण द्रव्य गुण सूं तो मोक्ष नहीं जाय कै ॥ जी ॥ ३७ ॥ नमोथुणं कह्यो आवसग मझे, तिण में कह्यो संजम जीतव्य ना दातार कै । पिण असंजम जीतव्य कह्यो नहीं, असंजम में नहीं धर्म लिगार कै ॥ जी ॥ ३८ ॥ समद्‌पाल चोर ने देखने, संजम लीधो वैराग मन आण कै । उत्तराध्येन रे इकबीस में, पिण ग्रंथ देई न छोडायो जाण कै ॥ जी ॥ ३९ ॥ गृहस्थ मारग भूलो उजाड़ में, तिणने जो मारग बतावै मुनि-राय कै । निशीथ उदेशै तेरमें, चौमासी डंड कह्यो जिनराय कै ॥ ४० ॥ भगवती शतक सात में, दश में

उदेशै कह्यो दीन दयाल कै। घणो आरंभ अग्नि लगावियां, बुझायां थोड़ो आरम्भ निहाल कै ॥ ४१ ॥ तीजै ठाणै ठाणाअङ्ग में, तीजे उदेशै कह्यो जिनराय कै। हिंसा देखीने समझावणो, समझावणी न आवै तो रहिणो मुन साझ कै ॥ ४२ ॥ समझावणो पिण आवै नहीं, अण बोल्यो पिण रह्यो नहीं जाय कै। तो एकन्त जायगा जावणो, पिण बिच में न पडणो कह्यो जिन-राय कै ॥ ४३ ॥ साधरी हरस छैदे तेहने क्रिया कही, पिण साधु रे क्रिया न कही भगवती मांय कै। तीजे उदेशै शतक सोल में, वैद्य साधु रे पाडी धर्म अंतराय कै ॥ ४४ ॥ गृहस्थ री रक्षा निमते यंत्र करै, तो चौमासी डंड निशीथ रे मांय कै। तेरमे उदेशै बोल बारमो, तो उंदरा नी रक्षा किम करै मुनिराय कै ॥ ४५ ॥ साधु डरावै अनेरा जीवने, तो चौमासी डण्ड निशीथ में देख कै। इग्यार में उदेशै बोल तेसठमो, बुद्धिवन्त हुवै ते करै विवेक कै ॥ ४६ ॥ तीजै अध्येन आचा-रांग में कह्यो, एक आत्मा तुल्य और मित्र न कोय कै। और सर्व मोहनो कारण कह्यो, आत्मा वश कियाँ विण धर्म न होय कै ॥ ४७ ॥ सावद्य अणुकम्पा जिण आज्ञा बाहिरे, निरवद्य श्री जिण आज्ञा मांय कै। इन सांभल उत्तम नरां, सावद्य निरवद्य ओलखो न्याय

कै ॥ ४८ ॥ ए अणुकम्पा ओलखायवा, जोड़ कीधी रेहलाणा मझार कै। समत् अठारा असीये, बैशाख विद् तीज शुक्रवार कै ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

नव तत्वं ओलख्यां, विना, सम्यक्त आवै नांय।
ठाम ठाम सिद्धान्त मे जिन कह्यो, ते सुणज्यो चित्तलाय ॥ १ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥

(देशी—पाखण्ड वधसी आरै पंचमें रे)

च्यार संघ कह्या ठाणाअंग सूत्रमें रे, ते च्यारूं ही गुणरत्नांरी खाण रे। त्यांरा गुण ओलख ने निरणय करो रे, साची सरध्यां सूं सम्यक्त जाण रे ॥ नव तत्व ओलखियां बिन समकित नहीं रे ॥ १ ॥ तीजै ठाणै ठाणाअंग सूत्रमें रे, पहिला ते भणवो नव तत्व ज्ञान रे। तपस्या ने ध्यान दोनूं भणियां पछै रे, भणियां बिण निरफल तपस्या ध्यान रे ॥ २ ॥ उत्तराध्ययन अध्ययन अठावीसमें रे, नव तत्व जाण्यां बिण सम्यक्त नांय रे। भावे करी सरध्यां सूं समकिती हुवे रे, पनरमी गाथा कही जिनराय रे ॥ ३ ॥ ज्ञान पहली ने दया पाछै कही रे, दशवैकालिक रे चौथे जाण रे। दशमी गाथा देखो दिल खोलने रे, ज्ञान बिन सम्यक्त नहीं पिछाण रे ॥ ४ ॥ जीव अजीव दोनूं ही जाणै

सूं नहीं छै मोक्ष रे ॥ १२ ॥ तपस्या पिण अशुद्ध नहीं छै तेहनी रे, जे तपस्या कर गृहस्थ ने देवै जताय रे। ते पूजा श्लाघा रा अर्थी थका रे, सूयगडा अङ्ग आठमा अध्यने मांय रे ॥१३॥ आचाराङ्ग रे पांचमां ध्ययनमें रे, पांचमें उदेशै करो पिछाण रे। उंधी श्रद्धा कही छै छोडणी रे, शुद्ध श्रद्धा आदरणी नव तत्व जाण रे॥१४॥ समकित विण चारित्र निश्चय नहीं रे, चारित्र विण मोक्ष म जाणो कोय रे। उत्तराध्ययन अध्यन अठावीस में रे, नव तत्व ओलखियां सम्यक्त होय रे॥१५॥ दशमें ठाणै ठाणाअङ्ग देखल्यो रे, मिथ्यात तणा चाल्या दश भेद रे। एक बोल ऊंधो सरध्यां मिथ्याती कह्यो रे, तो नवतत्व ओलखो आण उमेद रे ॥ १६ ॥ तस थावर जीव अजीव जाणै नहीं रे, तिण त्याग किया ते दुपच्चखाण रे। सात में शतक भगवती सूत्र में रे, बीजै उदेशै करो पिछाण रे ॥ १७ ॥ तिण त्याग किया ते व्रत नहीं निपजै रे, ते पिण संबर आश्री जाण रे। शुभ जोग वर्तै छै मिथ्याती तणै रे, तिणरे कर्म निर्जरा शुद्ध बखाण रे ॥१८॥ तिणरै निर्जरा हुवै तिणसूं जिन आगन्यां रै, अशुद्ध कहै ते मूढ़ गंवार रे। ठाम २ सूत्र में जिन कह्यो रे, मिथ्यातीरी करणी जिन आज्ञा मझार रे ॥ १९ ॥ आठ में शतक भगवती सूत्रमें रे,

देशमें उदेशै दाख्यो वीर रे। ज्ञान नहीं पिण क्रिया सहित छै रे, तिण ने देश आराधक कह्यो महावीर रे ॥ २० ॥ ए पिण निर्जरा आश्री जाणज्यो रे, तिण में निश्चेई श्रीजिन आज्ञा जाण रे। इण करणी ने जिन आज्ञा बारै कहै रे, ते तो पूरा छै मूढ अथाग रे ॥२१॥ मेघकुमर हाथी रा भव मझेरे, वले सुबाहुकुमर पाछिल भव मांहि रे। या मिथ्याती थकां दया शुद्ध दानसूं रे, परत संसार कियो छै ताहि रे ॥ २२ ॥ इत्यादिक परत संसार कियो तिहांरे, जिनाज्ञा वले निर्जरा निरमल जोय रे। पिण सम्यक्त संवर त्यांरे को नहीं रे, नव-तत्व ओलखियां सम्यक्त होय रे ॥ २३ ॥ नवतत्व में आस्रव तत्व पांचमों रे, तिणने जीव कह्यो तीर्थंकर देव रे। सूत्र नी साख देई निर्णय कहूं रे, न-जाणै मिथ्याती तिणरो भेव रे ॥ २४ ॥ नव में ठाणै ठाणा अंग सूत्र में रे, श्रीजिन भाख्या नव तत्व सोय रे। त्यां अर्थ मांही घणों विस्तार छै रे, त्यां आस्रव ने जीव कह्यो ते जोय रे ॥ २५ ॥ पांच में ठाणै ठाणा अङ्ग सूत्रमें रे, आस्रव ने कह्यो उघाड़ै द्वार रे। संवर ने कह्यो छै रुंध्या बारणा रे, तिण रो पिण बुद्धिवन्त करो विचार रे ॥ २६ ॥ उत्तराध्येन रै गुणतीसमें रे, व्रतांरा छिद्र कह्या आस्रवद्वार रे, तिणद्वार माहें

आवै ते कर्म छै रे, यां दोयां ने बुद्धिवन्त सरधो न्यार रे ॥ २७ ॥ उत्तराध्येन अध्येन गुणतीसमें रे, पचखाण सूं आस्त्रवद्वार रूंधाय रे। बली उत्तराध्येन गुणतीसमें रे, ब्रतांरा छिद्र कह्या आस्त्रव द्वार रे। तिणद्वार माहें आवै ते कर्म छै रे, यां दोयांने बुद्धिवन्त सरधो न्यार रे ॥ २७ ॥ उत्तराध्ययन अध्ययन गुणतीसमें रे, पचखाण सूं आस्त्रवद्वार रूंधाय रे। बली उत्तराध्ययन गुणतीसमांध्ययनमें रे, अप्रशस्तद्वार आस्त्रव कह्यो ताय रे ॥ २८ ॥ उत्तराध्ययन अध्ययन तीसमें रे, आस्त्रव रूपीया नाला सोय रे। बली उत्तराध्ययन अध्ययन चौतीसमें रे, कृष्ण लेश्यारा लक्षण आस्त्रव जोय रे ॥ २९ ॥ भाव लेश्या ने तो कहै जीव छै रे, तो त्यांरा लक्षण किम हुवै अजीव रे। त्यां जीव अजीव दोनूं नहीं ओलख्या रे, त्यांरे मोटी मिथ्यात तणी छै नींव रे ॥ ३० ॥ छः भाव लेश्या सञ्ज्ञा दर्शण दृष्टिने रे, यां ने अरूपी कह्या भगवती मांय रे। बारमें शतक उदेशै पांचमें रे, कोई बुद्धिवन्त जोय विचारो न्याय रे ॥ ३१ ॥ प्राणातिपातमें वर्तै तेहने रे, भगवतीमें जीव कह्यो जगनाथ रे। सातमें शतक उदेशै दूसरै रै, तिणने अजीव कहै ते जड़ मिथ्यात रे ॥ ३२ ॥ प्राणातिपात वेरमण तेहने रे, भगवतीमें

जीव कह्यो जगदीश रे। चौथे उदेशै शतक बारमें रे, इण न्याय संबर ने जीव कहीस रे ॥ ३३ ॥ कोई कहै आस्रव ने कह्यो खपावणो रे, आस्रव ते जीव खपावै केम रे। इण न्याय आस्रवने कर्म कह्या अछै रे, तेहनो न्याय सूणो धर प्रेम रे ॥ ३४ ॥ अशुभ आस्रव माठा प्रणामने रे, खपावणा कह्या ते मेटण जोय रे। खपावण मेटण रो अर्थ एक छै रे, पिण माठा परिणाम अजीव न होय रे ॥ ३५ ॥ अप्रशस्त अशुभ माठा परिणाम सूं रे, ज्ञान दर्शन चारित्र खपाय रे। अनुयोग द्वारमें अरिहन्त आखियो रे, तो ज्ञान दर्शन ते अजीव किम थाय रे ॥ ३६ ॥ ज्ञान दर्शण चारित्र तो जीव छै रे, ते माठा परिणामा सूं खप जाय रे। ज्यूं माठा परिणाम ते आस्रव जीव छै रे, ते चोखा परिणामा सूं मिट जाय रे ॥ ३७ ॥ जे कहै जीव खपायो खपै नहीं रे, तिणरे लेखै ज्ञानादिक पिण अजीव रे। ए न्याय बतायां निरणो नहीं करै रे, त्यांरै मोह मिथ्यात तणी छै नींव रे ॥ ३८ ॥ बले द्रव्य जोग ने पिण आस्रव कहै रे, पिण द्रव्य जोग आस्रव नहीं ताम रे। भाव लेश्यारा लक्षण ने आस्रव कह्या रे, तिणसूं भाव जोग छै आस्रव जीव परिणाम रे ॥ ३९ ॥ जे साधुनो द्रव्य मन जोग चोखो हुवै रे, तो भावे पिण निरमल

सुध पिछाण रे । अनुयोग द्वार मांहें अधिकार छै रे, भावे मन छै ते आरूव जाण रे ॥ ४० ॥ तीजै ठाणै ठाणाअंग तेह में रे, पहिले उदेशै देखो सोय रे । कर्म क्षयोपशम वीर्य तेहने रे, जोग क्षयोपशम ते अव-लोग रे ॥ ४१ ॥ पहिले ठाणै ठाणाअङ्ग अर्थ में रे, जोय प्रणाम ते लेश्या जाण रे । ते लेश्या ने जोग सरीषा लेखव्या रे, भाव लेश्या ते जोग पिछाण रे ॥४२॥ पहिले ठाणै ठाणाअंग पेखल्यो रे, आस्रव कर्म अवा-ना द्वारा रे । ते द्वार ने कर्म जू जुवा जाणज्यो रे, तिणरो मूढ़ न जाणै मूल विचार रे ॥ ४३ ॥ शतक तीजै भगवती सूत्र में रे, तीजै उदेशै दियो दृष्टान्त रे । जीव रूपी तो नावा जिन कही रे, आस्रव रूप छिद्र जल पंथ रे ॥ ४४ ॥ ते आस्रव रूपी छिद्र रूंध्यां थकां रे, ते साधु पामै शिव रमणी संग रे। पिण पाणी रूपियो तो आस्रव नहीं कह्यो रे, ए जूजुवा जाण्यां सम्यक्त रङ्ग रे ॥ ४५ ॥ नव तत्व ओलखियां बिण सम्यक्त नहीं रे, ते जोड़ी रहलाणा गाम मझार रे । सम्वत अठारै असीयसमें रे, वैशाख बिद तीज ने शुक्रवार रे ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

हिवै समचै आचार साधु तणो, भाख्यो श्री भगवान।
तिणरा भाव भेद प्रकट करूं, ते सुणो सूरत दे कान ॥ १ ॥

॥ ढाल ५ वीं ॥

(देशी—जिन वचने प्रति बुझो रे प्राणी)

साधु अर्थे करायो उपासरो, पुरषांतर बिन कल्पै मांही रे। दूजै श्रुतखंध आचारङ्ग देखल्यो, दूजाध्येन पहिला उदेशा मांही रे॥ आचार सुणो साधु तणो ॥ १ ॥ साधु काजे आरम्भ कर जागां करी, त्यां रह्यां कह्यो ग्रहस्थ भेषधारी रे। वली महा सावद्य क्रिया कही, दूजा उदेशा मझारी रे ॥ २ ॥ उदेशिक जे उपासरो, जो इक दिन भोगवै जाणी रे। मासिक दण्ड निशीथ में, पांचमें उदेशै पिछाणी रे ॥ ३ ॥ इम सपाहुडिय सेझा में रहे, साधु काजे लींप्यो रेने छायो रे। मासिक दण्ड निशीथ में, पांचमें उदेशै मांयो रे ॥ ४ ॥ इम भींत करै बांसादिक बांधै आण ने, ते सपरिकम्म सेझ्या में रहै जाणी रे। मासिक दण्ड निशीथ में पांचमें उदेशै पिछाणी रे ॥ ५ ॥ आधाकर्मी साधु जाणी भोगवे, तो चिहुंगत में दुःख थायो रे। भगवतीरा पहिला शतक में, नवमें उदेशै बतायो रे ॥ ६ ॥ दशमा अंगरै आठ में, अठारह आदि थानक सीधा रे। ते

कल्पै साधु भणी, साधां काजे नहीं कीधा रे । ए मारग छै साधु रो ॥ ७ ॥ दूजै श्रुतखंध आचाराङ्ग अध्येन दूसरै, छट्ठे उदेशै तायो रे । एक काय हण्यां हिंसा छःकायरी एक व्रत भांगां छहुं जायो रे ॥ ८ ॥ अठारा ठाणा मांहिलो, एक सेव्यां सूं भिष्ट थायो रे ॥ दशवैकालिक छट्ठा ध्येन मे, सातमो गाथा मांयो रे ॥ ६ ॥ आचाराङ्ग रे आठ में, पहिले उदेशै मांयो रे । अकल्पतो लेवै तेहने. चोर कह्यो जिनरायो रे ॥ १० ॥ पूतीक्रम नो अंश भोगवै, तिण ने कह्यो ग्रहस्थ भेषधारी रे। पहिला अध्येन सूयगडा अङ्ग में, तीजा उदेशा मझारीरे ॥ ११ ॥ कारण अशुद्ध लेणो कहै, तिणने कह्यो बहुल संसारीरे । आचाराङ्ग छट्ठा ध्येन में, चौथे उदेशै विस्तारीरे ॥ १२ ॥ शरीर छांडै धर्म कारणे, पिण आधाक्रम्यादिं लेणो नाहीं रे । आचाराङ्ग छट्ठा ध्येन में, चौथा उदेशा मांही रे ॥ १३ ॥ पांचमां आरारो नाम ले, दोष लगावै ते दुःख पासी रे । आचाराङ्ग छट्ठा ध्येन में, जोवो चौथो उदेशो विमासी रे ॥१४॥ क्रय विक्रय में वर्तै तेहने, कह्यो साधां तणी पांत बारो रे । उत्तराध्येन पैंतीसमें, देखी करो निस्तारो रे ॥१५॥ अचित वस्तु मोल लिरावियां, चौमासी दण्ड पिछांणोरे । निशीथ उदेशै उगणीस में तिणने निश्चेई

साध म जाणो रे ॥ १६ ॥ मोल रो लियो पात्रो बहि-रियां, चौमासी चारित्र जायो रे । निशीथ उदेशै चवद में, तिणने किम कहिये मुनिरायो रे ॥ १७ ॥ मोल लियो जो भोगवै, तो दशवैकालिक में अणाचारो रे । तीजै अध्येन गाथा दूसरी, तो लेवै ते नहीं अण-गारो रे ॥ १८ ॥ उदेशिक ने कृतगढ़ भोगवै, बले नित पिण्ड लेवै च्यारू आहारो रे । दशवैकालिक रे तीसरै, दूजी गाथा में कह्यो अणाचारो रे ॥ १६ ॥ नितपिण्ड उदेशिक कृतगढ लीये, ते हिंसारा अनु-मोदनहारो रे । दशवैकालिक छट्ठा ध्ययन में, गुण पचासमी गाथा धारो रे ॥ २० ॥ उदेशिक कृतगढ़ नितपिंड लीये, ते नरक तिर्यंच रा जावणहारो रे । उत्तराध्येन रे बीसमें, सैंतालीसमी गाथा मझारो रे ॥ २१ ॥ नितपिण्ड भोगवियां निशीथ में, मासिक दण्ड बतायो रे । दूजै उदेशै बोल तेतीसमो, भाख गया जिनरायो रे ॥ २२ ॥ केई कहै नितपिण्ड लेणो नहीं, तो कारण पड़ियां ले किण न्यायो रे । ते सूत्र माहें तो खुल्यो नहीं, तिणरो न्याय सुणो चित्तलायो रे ॥ २३ ॥ पहिला पहोररो छेहले पहोर भोगवै, तो चौमासी प्रायश्चित आयो रे । मासिक प्रायश्चित नित-पिण्ड तणो, कह्यो निशीथ रे मांयो रे ॥ २४ ॥ गाढा

गाढा कारण पडियां थकां, पहिला पहोर रो आण्यो आहारो रे। छेहले पहोर भोगवणो कह्यो, बृहत्कल्प मझारो रे ॥ २५ ॥ चौमासी प्रायश्चित वालो कारण पड्यां, लियां दोष नहीं एमोरे। ते मासिक दण्ड नितपिण्ड तणो, ते कारण पड्यां लियां दोष केमो रे ॥ २६ ॥ बले मास कल्पे रहिणो शेषै काणमें, पिण कारण पड्यां दोष नांही रे। ज्यूं कारण पड्यां नित-पिण्ड लीये, तिण रो दोष नहीं दीसै काई रे ॥ २७ ॥ ए तो वर्ज्यो ढीला पड्ता जाणने, निणसूं कारण पड्यां दोष न कोयोरे, आधाकर्म्यादिक कारण पड्यां, लेणो नहीं छै सोयोरे ॥ २८ ॥ ग्रहस्थ ने साता पूछियां, दशवैकालिक में अणाचारो रे। तीजे अध्येन गाथा तीसरी, तो साता बंछ्यां न धर्म लिगारो रे ॥ २९ ॥ ग्रहस्थरी वियावच कियां, अठावीसमो अणाचारो रे। दशवैकालिक रे तीसरै, छट्ठी गाथामें न्याय विचारो रे ॥ ३० ॥ ग्रहस्थने साधु कहै नहीं, आव जाव वेस कर कामो रे। दशवैकालिक सात में, सेतालीसमी गाथा में तामोरे ॥ ३१ ॥ ज्ञान दर्शण चारित्र सहित छै, तिणने साधु कह्यो जिनरायो रे। ते पिण थोड़ा लोकमें, दशवैकालिक सातमां मांयो रे ॥ ३२ ॥ पहिले उदेशै बृहत्कल्प में, साधु ने रहिणो उघाड़ै द्वारोरे।

साधवी ने जड़णो कह्यो, शीलादिक कारण विचारो रे ॥ ३३ ॥ पहिले उदेशै बृहत्कल्प रे, साधुने प्रतिबन्ध सेज्या न रहिणोरे । तिणने किंवाड़ कल्पै नहीं, ए परमार्थ लेणो रे ॥ ३४ ॥ बृहत्कल्प पहिले उदेशै कह्यो, घर मध्य निकाल पेसारो रे । तिहां पिण साधुने कल्पे नहीं, ओहिज परमार्थ धारोरे ॥ ३५ ॥ साधुने किंवाड़ जडणों नहीं, ग्रहस्थरो धन चोर लेज्यायोरे । जब हेला निन्दा हुवै साधु भणी, एह विचारो न्यायोरे ॥ ३६ ॥ तिण स्यूं इसी जायगां साधुने रहिणो नहीं, साध्वी ने रहिणो कह्यो वीरोरे । किंवाड़ जड़णो तेहने, ए न्याय विचारो धीरोरे ॥ ३७ ॥ मन करी किंवाड़ न वांछणो, उत्तराध्ययन पैंतीसमो साखी रे । तो हाथां स्यूं जड़वो किहां थकी, चौथी गाथा वीर भाषी रे ॥ ३८ ॥ आवसग्ग चौथा ध्ययन में, थोड़ो उघाड्यां हिंसा रो दोषो रे । केई जड़ियां में दोष श्रद्धे नहीं, ते किण विध जासी मोखोरे ॥ ३९ ॥ सूने घर रह्यां साध ने, किंवाड़ न जड़णों तामोरे । तो दूजी ठोड़ पिण किम जड़ै, सूयगडा अङ्ग दूजा ध्ययन आमो रे ॥४०॥ कोई कहै ए जिन कल्पी तणो, तेरमी गाथामें आचारो रे । पिण जिणकल्पी थिवरकल्पी तणो, दोयां रो भेलो देख विचारो रे ॥ ४१ ॥ दूजै श्रुतखन्ध आचारङ्ग

पहिलाध्ययनमें, पांचमें उद्देशै पिछाणो रे। कांटांरी डाली अलगी करी, आज्ञा मांग गृहस्थ घर जाणो रे ॥ ४२ ॥ साधु रहै तिहां श्रावक भणी आधी आखी रात बसावै रे। निशीथ उद्देशै आठमें, चौमासी प्रायश्चित आवै रे ॥ ४३ ॥ जोरीदावे रहतां ने बरजे नहीं, तो पिण चौमासी प्रायश्चित पावै रे। तीजो प्रायश्चित जोरी दावे रह्यां, तिण साथे बारै जावै पाछो आवै रे ॥ ४४ ॥ प्रमाण अधिको उपगरण धरै, तो चौमासी दण्ड पिछाणो रे। निशीथ उद्देशै सोलमें, गुणचालीसमो बोल जाणो रे ॥ ४५ ॥ शंख दांत नहीं राखणो, काच मणि पाषाणो रे। प्रश्न व्याकरण दशामें कह्यो, चशमो राखे ते मूढ़ अयाणो रे ॥ ४६ ॥ थोड़ोई उपधि पड़िलेहै नहीं, तो मासिक प्रायश्चित आयो रे। दूजै उद्देशै निशीथ में, छेहलो बोल कह्यो जिनरायो रे ॥ ४७ ॥ छती शक्ति कल्प स्यूं अधिका रहै, तो मासिक दण्ड विचारो रे। दूजा उद्देशा माहें कह्यो, सेंतीसमो बोल सारो रे ॥ ४८ ॥ दूजै श्रुतखन्ध आचाराङ्ग दूसरै, दूजै उद्देशै कह्यो भगवन्तो रे। तो कल्प लोपी ने अधिको रहै, क्रिया लागै काला इकंतो रे ॥ ४९ ॥ ऋतु बन्ध ग्रह्या पाट पाटला, ऋतुबन्ध जो देवै नाहीं रे। मासिक दण्ड निशीथ में, दूजा उद्देशै माहीं रे ॥

५० ॥ पांत बैठी त्यां ऊभो रहणो नहीं, पहिलेध्ययन उत्तराध्ययन मांह्यो रे । गाथा बत्तीसमी देखल्यो, अरिहन्त अर्थ बतायो रे ॥ ५१ ॥ जीमणवार जाणी तिण मारगे, साधु ने जाणो नाहीं रे । पहिले उद्देशै वृहत-कल्प में, मत राखो शङ्का मन माहीं रे ॥ ५२ ॥ पूरब कानी जीमणवार जाण ने, पश्चिम कानी बहिरवा जाणो रे । दूजा आचारङ्ग पहिलाध्ययन में, दूजै उद्देशै जिन बाणो रे ॥ ५३ ॥ आप सरीषा साधने, छती जायगां ऊभो रहिण दे नाहीं रे, चौमासी दण्द निशीथ में, सातमां उद्देशा माहीं रे ॥ ५४ ॥ ज्ञान दर्शण पाछा मेल्या ते पासत्था ने, त्यांने बान्द्यां प्रशंस्यां दंड चौमासी रे । उसणो ते थाका संयम थकी, त्यांने बान्द्यां प्रशंस्यां दंड पासी रे ॥ ५५ ॥ तिणरो खोटो आचार ते कुशीलियो. नित बस्यां सूं नितियो संसत्तो थावै रे । ते पासत्था माहें बसै, पिण लोकां में प्रियधर्म्मी देखावै रे ॥ ५६ ॥ सभाय मूकी विकथा करै, तिणने कहियो कह्यो जिनरायो रे । पासणियो नटादिक देखतो फिरै, पमाइयो ते ममता मांह्यो रे ॥ ५७ ॥ जो गृहस्थ नो कारज करै, ते संपराइयो जाणो रे । यां सगलां ने बान्द्यां प्रशंसियां, चौमासी दण्ड पिछाणो रे ॥५८॥ निशीथ उद्देशै तेरमें,

भाख्यो वीर जिणन्दो रे । तो पासत्थादिक री व्यावच क्रियां, धर्म्म कहै ते मति अन्धो रे ॥ ५६ ॥ बलि सेलक ने पासत्थो कह्यो, बले कह्यो हीणाचारी रे । एहनी विनय व्यावच क्रियां, किम हुवै धर्म्म लिगारी रे ॥६०॥ च्यारूं आहार वस्त्र पात्र काम्बलो, बले रजोहरण विचारो रे । ए आठ बोल देवै गृहस्थ भणी, तो दण्ड चौमासी धारो रे ॥ ६१ ॥ निशीथ उद्देशै पनरमें, जोय करो निस्तारो रे । तो गृहस्थ ने देवै पूंजणी त्यांने, किम कहिए अणगारो रे ॥ ६२ ॥ पूछ्यां कहै म्हे दीधी नहीं, म्हे तो परठ दीधी छै तायो रे । इम झूठ बोलै जाणने, तिण साधु रो भेष लजायो रे ॥ ६३ ॥ बले पासत्थादिक सगला भणी, ए आठ बोल लेवै देवै रे । तो पिण चौमासी दण्ड छै, ते परमार्थ नहीं वेवै रे ॥ ६४ ॥ निशीथ उद्देशै पनरमें, श्रीजिन बचन सम्भालो रे । तो पंथक असणादिक दियो सेलक भणी, तिण में धर्म्म कहै ते बालो रे ॥ ६५ ॥ पासत्था ना सरीषो आचार छै, तिणने कह्यो असणादिक बहिरी आणो रे । पछै भोगवस्यां आपे जू जुवा, तो पिण चौमासी प्रायश्चित्त जाणो रे ॥ ६६ ॥ चौथे उद्देशै निशीथ में, एक सौ तयांलीसमो बोलो रे । तो पन्थक ने धर्म्म किहां थकी, आंख हिया री खोलो रे ॥ ६७ ॥

पासत्थादिक कह्या तेहने, शिष्य देवै लेवै त्यां आगै रे। चौथे उद्देशै निशीथ में, मासिक चारित्र भागै रे ॥६८॥ जो सेलक ने पासत्थो कह्यो, पन्थक रह्यो तिण री व्यावच काजो रे। ते छान्दो छै आपरो, तिण री आज्ञा न दे जिनराजो रे ॥ ६९ ॥ पोता रे छान्दे बरतै तेहने, वान्दै प्रशंसे तायो रे। निशीथ उद्देशै इग्यारमें, चौमासी चारित्र जायो रे ॥ ७० ॥ तो पन्थकव्यावच करी सेलक तणी, ते सेलक छै आहाछन्दो रे। तिणरी व्यावच कियां धर्म्म कहै, ते तो पूरा छै मति अन्धो रे ॥७१॥ सरीषी साध्वी छै तेहने, छती जायगां उतरने दे नाहीं रे। चौमासी दण्ड निशीथ में, सतरमां उद्देशा माहीं रे ॥ ७२ ॥ शुद्ध साध सम्भोग करै साध स्यूं, तिण में कहै कर्म बन्ध ठिकाणो रे। निशीथ उद्देशै पांचमें, मासिक प्रायश्चित्त जाणो रे ॥ ७३ ॥ साध कहै बलि तेह स्यूं, भेलो न करै सम्भोगो रे। बलि पाप कहै सम्भोग में, त्यांरै लागो जोग ने रोगो रे ॥ ७४ ॥ धाय नीं परे बालक रमाय ने, देवै असणादिक आहारो रे। चौमासी दण्ड निशीथ में, तेरमां उद्देशा मझारो रे ॥ ७५ ॥ साधु उतरिया तिण थानक विषै, करै पगथिया पग मेलण कामो रे। बलि पाणी काढ़वा ने खाल करै, बले छींका करै वस्त्र में तामो

रे ॥ ७६ ॥ मासिक दण्ड निशीथ में, बीजै उद्देशै अधि-
कारो रे । तो पाणी काढवा ने खाल करै, त्यांने किम
कहिजै अणगारो रे ॥७७॥ वले कादो हुवै थानक मझे
जब कांकरादिक न्हखावै रे । वले गृहस्थ रो कियो
त्यांमें, साध पणो किम थावै रे ॥ ७८ ॥ राजा ने करै
आपरो, इम प्रधान नगर अधिकारी रे । वले घाण्या
रा अधिकारी भणी, आपरो करै तो दण्ड भारी रे
॥ ७६ ॥ वले सर्व ना अधिकारी भणी, वले देश तणो
अधिकारी रे । यां सगलां ने करै आपरा, तो मासिक
दण्ड विचारी रे ॥ ८० ॥ चौथे उदेशै निशीथ में, इण
रो न्याय हिये में धारीजै रे । बन्धो करावै गृहस्थ
भणी, कहै म्हां आगेइज दीख्या लीजै रे ॥ ८१ ॥ वले
कहै म्हे समझावियो. तिणरी राखे छै धणीयापो रे ।
तिण गृहस्थ ने कियो आप रो, तिण स्यूं कर रह्या
कुगुरु बिलापो रे ॥ ८२ ॥ कोई दीख्या लेवै आचार्य्य
कने, तिण शिष्य रा परिणाम पाड़ै रे । वले शिष्य
ल्यावै त्यांरो चोर ने, वले आचार्य्य रो पिण मन उतारै
रे ॥८३॥ जो पूरव कानी दीख्या लेवै छै, तो आचार्य्य
ने मेलै पच्छिम कानी रे । च्यारूं बोल सेव्यां दण्ड
चौमासी छै, निशीथ रे दशमें पिछाणीरे ॥ ८४ ॥ तो
केई मांहो मांह साध सरधै छै, शिष्य काजे करै झगड़ा

राड़ो रे। वले अवर साधां ना अवगुण बोलने, तिण रा परिणाम देवै उतारो रे ॥८५॥ अनल संयम लायक नहीं, तिणने दिख्या देवै करै त्यारी रे। चौमासी दंड निशीथ में, इग्यारमां उद्देशा मझारी रे ॥ ८६ ॥ वले अनल तणी व्यावच करै, तो पिण चौमासी दण्ड तिण ठामो रे। तो दोषीला जाणी भेला रहै, वले व्यावच करै मांहो मांहि तामो रे ॥ ८७ ॥ मन बिना लज्या स्यूं पालै तेहने, साध न कह्यो जिनरायो रे। सूत्र न्याय पाल्यां स्यूं साधु कह्यो, जोवो आचाराङ्ग मांह्यो रे ॥८८॥ तीजे उद्देशै तीसरे, जिन कह्यो जुगत लगायो रे। तो अजाण ने मूंड़ मांहे लिये, त्याने किम कहिये मुनिरायो रे ॥ ८९ ॥ दूजे आचाराङ्ग ध्ययने पांचमें, पहिलै उद्देशै प्रभु वाणो रे। च्यार पछेवड़ी कही साध्वी भणी, वले ठाणा अङ्ग चौथे ठाणो रे ॥ ९० ॥ दुगन्छ-णीक कुल रो बहिरियो, चौमासी प्रायश्चित्त आयो रे। निशीथ उद्देशै सोलमें, तोही बहिरै कलाल रो जायो रे ॥ ९१ ॥ एक निकाल हुवै तिण गांव में, साध साध्वी भेला न रहै तायो रे। पहिलै उद्देशै बृहत्कल्प रे, तोहि एकण दरवाजे दिसां जायो रे ॥ ९२ ॥ मोल लियो वस्त्र भोगवे, तो चौमासी प्रायश्चित्त आयो रे। निशीथ उद्देशै अठारमें, ते बिकलां ने खबर न कायो

रे ॥ ६३ ॥ पात्रों लेवै स्हामो आणियो, तो चौमासी प्रायश्चित्त आयो रे । निशीथ उद्देशै चवदमें, ते भोलांने खबर न कायो रे ॥ ६४ ॥ तीन घरां उपरान्त स्हामो आणियो, बले असणादिक च्यारूं आहारो रे । मासिक दण्ड निशीथ में, तीजा उद्देशा मझारो रे ॥ ६५ ॥ आचार साधु नो ओलखायवा, जोड़ी पचेवड़ मझारो रे । समत अठारै असीयै समै, वैशाख विद छट्ठ सोमवारो रे ॥ ६६ ॥

॥ दोहा ॥

आदिनाथ आदे करी, चौवीसमा वर्द्धमान ।
त्यां अर्थ रूप बाणी बागरी, घाली भव जीवां रे कान ॥ १ ॥
त्यां सूत्र दिया साधां भणी, ते पिण मर्याद प्रमान ।
पिण औरां ने सूत्र दिया नहीं, तिण रो न्याय सुणो बुद्धिवान ॥२॥
जे साधु मर्यादा सूं भणै, तिणने श्रीजिन आज्ञा लोय ।
मर्यादा बिण साधु भणै, तिण ने पिण आज्ञा न कोय ॥ ३ ॥
ते भणावणा साधु भणी, पिण औरां ने भणावणा नांहि ।
केई सूत्र भणावे गृहस्थ भणी, जिन आज्ञा नहीं तिण मांहि ॥४॥
साधु ने सूत्र भणावणा. ठाम २ सिद्धन्त रे मांय ।
गृहस्थ ने नहीं भणावणा, । ते सुणज्यो चित्त ल्याय ॥५॥

॥ ढाल ६ ठी ॥

(देशी—चतुर विचार करी ने देखो)

गृहस्थ ने साधु सूत्र री बांचणी देवै, बलि बांचणी देवै तिण आगै रे । निशीथ रे उगणीसमें उद्देशै, तिण

रो चौमासी चारित्र भागै रे ॥ चतुर विचार करी ने देखो ॥ १ ॥ गृहस्थ ने कोई सूत्र सिखावै, तो साधु मन में पिण भलो न जाणै रे। भलो जाण्यां दण्ड आवै चौमासी, तिणरी बुद्धिवन्त रहिस पिछाणै रे ॥ चतुर० ॥ २ ॥ साधु बंचावै तो दण्ड चौमासी, तो तिण ने बंचायां नहीं धर्मो रे। कोई धर्म कहै गृहस्थ ने बंचायां, ते भूला अज्ञानी भ्रमो रे ॥ ३ ॥ अन्यतीर्थी पासत्थादिक ने, सूत्र बंचावै तो दंड पावै रे। वलि पासत्था आगै बांचणी लेवै, तो पिण दंड चौमासी पावै रे ॥ ४ ॥ अन्यतीर्थी पासत्थादिक आगै, बांचणी लियां सूं हेला थावै रे। वले लघुताई हुवै जिन मारग री, पाखंडी री महिमा वधावै रे ॥ ५ ॥ अन्यतीर्थी गृहस्थ सूं बात करै छै, तिण श्लोक कह्या तिणवारो रे। ते धार लेवे साधु आपरी बुद्धि सूं, तिण रो दोष नहीं छै लिगारो रे ॥ ६ ॥ वले चरचा बारता करै गृहस्थ सूं, वलै करै पाखंडी सूं बादो रे। दिष्टन्त सुणै साधु तिण रो, ते सुणियां धारी लेवै साधो रे ॥ ७ ॥ इम धार्यां सूं साधु ने दोष न लागै, जिन मत री हेला न थायो रे। साधु नी हेला पाखंडियां री महिमा होवे, तिण कारण न सीखणो जायो रे ॥ ८ ॥ गृहस्थ ने जो साधु सुणावै, ते सुणियां गृहस्थ लेवै धारो रे। जब साधुने

दोष न लागै, ते बुद्धिवन्त न्याय विचारो रे ॥९॥ केई मूढ़ मिथ्याती भारी कर्मा, ते धर्म कहै जिन आज्ञा बारो रे। ते कहै गृहस्थ ने साधु सूत्र बचावै, तो तिण में दोष न सरधै लिगारो रे ॥१०॥ भणावण वाला नें पिण आज्ञा नाहीं, भणवा वाला ने पिण आज्ञा नाहीं रे। भणै भणावै ते आपरै छान्दै, पिण धर्म नहीं तिण मांही रे॥ ११ ॥ रसाकसा रूप जे सूत्र नी गाथा, ते श्रावक ने साध सीखायो रे। तिण रो दोष तो मूल न दीसै, तिण रो न्याय सुणो चित्त ल्यारो रे ॥ १२ ॥ पहिला छेहला पहोर सूत्र कालिक कल्पै, और पहोर में कल्पै नाहीं रे। पिण कसा रूप प्रश्न नो काम पड़े तो, तीन प्रश्न कह्या सूत्र मांही रे ॥ १३ ॥ बले आवशक सूत्र गृहस्थ ने भणावै, तिण रो पिण दोष न दीसै तायो रे। इणरी पिण अंश आज्ञा न दीसै, देख विचारो न्यायो रे ॥ १४ ॥ आचारङ्ग नवमो ध्ययन बांच्यां बिण, ऊपरला सूत्र बचावै जो साधो रे। निशीथ उगणीसमें दण्ड चौमासी, सूत्र जोय छोड़ो विषवादो रे ॥ १५ ॥ नव ध्ययन बांच्या बिण ऊपरला सूत्र बचावै, तिण साधु ने धर्म न थायो रे। तो गृहस्थ सूत्र बांच्या धर्म किहां थी, जोय विचारो न्यायो रे ॥ १६ ॥ अव्यक्त ने जो सूत्र बचावै, सोलै वर्षां पहिली

जाणो रे। तथा दीक्षा लियां तीन वर्ष न हुवा, तिण ने बंचायां दण्ड पिछाणो रे ॥ १७ ॥ अप्राप्त ने जो सूत्र बंचावै, तिण रे सूत्र री प्राप्ति नाहीं रे। व्यक्त प्राप्त ने नहिं जो बंचावै, तो दण्ड निशीथ रे माहीं रे ॥१८॥ बले दोनूंई शिष्य बरोबर सरिषा, विनय बुद्धि तुल्य जाणों रे। एकण ने बंचावै एकण ने न बंचावै, तो पिण दंड पिछाणो रे ॥१९॥ आचार्य उपाध्याय आज्ञा दियां बिण, वाणी आचरियां दण्ड आयो रे। उगणीसमें उद्देशै दण्ड चौमासी, कह्यो निशीथ रे मांयो रे ॥२०॥ अव्यात्क्तादिक साधु ने न भणावै, तो गृहस्थ ने केम भणावै रे। जो गृहस्थ भणै तो आपरै छान्दै, पिण साधु नहीं सरावै रे ॥ २१ ॥ भगवन्त वर्ज्यो अवगुण जाणी ने, गुण जाणै तो बरजै नाहीं रे। साधु ने भणवारी विध भाषी पिण गृहस्थ रे न कही ताहि रे ॥ २२ ॥ ठाणा अङ्ग रै तीजै ठाणै, समीप रा बैसणहारो रे। त्यां तीना ने पिण बांचणी न देणी, ते सांभलज्यो विस्तारो रे ॥ २३ ॥ सूत्रार्थ रा देणहार ने, वन्दणा न करै जाणी रे। ते अवनीत ने बांचणी न देणी, आ श्री जिनवरजी नी बाणी रे ॥ २४ ॥ बले विषैरा लोलपी ने बांचणी वर्जी, बले क्रोधी ने पिण देणी न कायो रे। यां तीनां ने बांचणी बरजी तीर्थंकर, बचन हिये

विमासी जोयो रे ॥ २५ ॥ थां तीनां ने भणावैते आज्ञा बारै, भणै ते पिण आज्ञा बारो रे । तो गृहस्थ सिद्धन्त भणै छै तिण में, जिन आज्ञा नहीं लिगारो रे ॥२६ ॥ तो गृहस्थ तो क्रोधी मानी हुवै छै, वले स्त्रियादिकरो लोलपी थावै रे । इत्यादिक अनेक अवगुण गृहस्थमें, तो साधु सूत्र केम सीखावै रे ॥२७॥ वले प्रश्न व्याकरण रे सातमें ध्येने, सत्य वचन तणो विस्तारो रे । तिण में कह्यो ए सूत्र साधु ने इज दीधो, पिण औरां ने नहीं दीध लिगारो रे ॥ २८ ॥ साधु ने इज वीतराग री आज्ञा, औरांने नहीं आज्ञा लिगारो रे । और जो सिद्धन्त भणै भणावै, ते श्रीजिन आज्ञा बारो रे ॥ २९ ॥ तीन वर्ष थया हुवै दीक्षा लियांने, कल्पै आचारङ्ग बले निशोथो रे । तीन वर्ष पहिलां निशीथ न भणवो, आ श्रीजिन मारगरी रीतोरे ॥३०॥ तीन वर्ष पहिली साधु ने नहीं भणवो, आ श्रीजिन आज्ञा सारो रे । तो गृहस्थ ने जिन आज्ञा किहांथी, न्याय ते चतुर विचारो रे ॥ ३१ ॥ सम्वत् अठारै ने वर्ष असीये, बैशाख बिद सातम शनिवारो रे । सूत्र भणवा ऊपर जोड़ कीधी, डगी गाम ढूंढाड़ मझारो रे ॥ ३२ ॥

अथ खराडा जोयरा।

जम्बुद्वीप लाख जोजन लम्बो पहोलो; थालीके आकार, झालरके आकार तेलके पुड़लेके आकार। तेहनें दोली जगती आंठ जोजन ऊंची, बारै जोजन मूलमें पहोली, आठ जोजन बीचमें पहोली, च्यार जोजन ऊपरमें पहोली। ते जगती ऊपर एक जाली छै। दो गाऊ ऊंची पांच सौ धनुष पहोली जगती के ऊपर एक पदम्बर वेदिका छै। दो गाऊ ऊंची, पांचसौ धनुष पहोली। वेदिका ने वेहुं पासे दो बनखण्ड छै। देश ऊणा दो जोजन का चौड़ा, जगती प्रमाण लम्बा छै। तेह बनखण्ड में नाना प्रकार रत्नमणि ना वृक्ष छै, बावड्यां छै। तिहां वाणव्यन्तर देवता आवै, जावै, सुवै, उठै, बैठे, अनेक प्रकार की क्रीड़ा करै छै। तेह जगती ने विषै च्यार दरवाजा छै. दरवाजा ना नाम-- पूर्व दिशि--विजय, दक्षिण दिशि--विजयन्त, पश्चिम दिशि--जयन्त, उत्तर दिशि अपराजित। च्यारूं दरवाजा आठ जोजन ऊंचा, च्यार जोजन पहोला, च्यार जोजन प्रवेश, नव-भूमिया महल, अनेक तोरण पुतली करी सहित शोभायमान छै। दरवाजे नाम देवता बसै

छै। तेह दरवाजे दरवाजे आन्तरो ७९०५२॥ मठेरो छै। ते जगती नी बाहारली परिधि ३१६२२७ जोजन, ३ कोस, १२८ धनुष, १३॥ आंगुल, १ जौ, १ जूं, १ लीख, ६ बालागर, ६ त्रीसरेणु जाभी।

गाथा।

खंडा जोयण वासा पव्वय कुडा तित्थ सेढीओ।
विजह द्रह सलिलाओ पिंडए होइ संगहणी॥

पहलो खण्ड द्वार।

जम्बु द्वीपका भरत क्षेत्र जितना खण्ड करै, तो १९० खण्डवा हुवै ते किम? भरत एरवत क्षेत्रका १-१, चुल हेमवन्त शिखरी परबत का २-२, हेमवय क्षेत्रका ४-४, महा हेमवन्त रूपी पर्बत का ८-८, हरिवास रम्यकवास क्षेत्र का १६-१६, निषंढ नीलवन्त पर्बत का ३२-३२, महा विदेह क्षेत्रका ६४, सर्व १९० खण्डवा थया।

दूजो जोजन द्वार।

जम्बुद्वीप का जोजन जोजन का टुकड़ा करै, तो सात सौ नब्बे कोड़ छप्पन लाख, चोराणवे हजार, एक सौ पचास जोजन १॥। कोस साडी पन्द्रह धनुष, बारै आंगुल जाभी ७९०५६९४१५० जो० १॥। कोस १५॥ धनुष १२ आंगुल जाभी।

तीजो वासा द्वार।

वासा ७ तथा १० । सात हुवै, तो—भरत क्षेत्र १ एरवत क्षेत्र २ हेमवय ३ अरुणवय ४ हरिवास ५ रम्यकवास ६ महाविदेह ७ ।

दश हुवै तो—भरत क्षेत्र १ एरवत क्षेत्र २ हेमवय ३ अरुणवय ४ हरिवास ५ रम्यक वास ६ देवकुरु ७ उत्तर कुरु ८ पूर्व महाविदेह ९ पश्चिम महाविदेह १० ।

१ भरत क्षेत्र का दोय भेद । दक्षिण भरत १ उत्तर भरत २ ।

१ दक्षिण भरतको विषम पणो २३८ जोजन ३ कला। तेहनी बाहा नथी। तेहनीजीवा ९७४८ जोजन १२ कला। तेहनी धनुपृष्ट ९७६६ जोजन १ कला। तेहनो शर २३८ जोजन ३ कला।

२ उत्तर भरत को विषम पणो २३८ जोजन ३ कला तेहनी बाहा १८९२ जोजन ७॥ कला। तेहनी जीवा १४४७१ जोजन ६ कला जाझी। तेहनी धनुपृष्ट १४५२८ जोजन ११ कला। तेहनो शर ५२६ जोजन ६ कला।

२ हेमवय क्षेत्र को विषम पणो २१०५ जोजन ५ कला। तेहनी बाहा ६७५५ जोजन ३ कला। तेहनी

जीवा ३७६७४ जोजन १६ कला मठेरी। तेहनी धनुपृष्ट ३८७४० जोजन १० कला। तेहनो शर ३६८४ जोजन ४ कला।

३ हरिवास क्षेत्रको विषमपणो ८४२१ जोजन १ कला। तेहनी बाहा १३३६१ जोजन ६॥ कला। तेहनी जीवा ७३९०१ जोजन १७॥ कला। तेहनी धनुपृष्ट ८४०१६ जोजन ४ कला। तेहनो शर १६३१५ जोजन १५ कला।

४ महा विदेह क्षेत्र को विषमपणो ३३६८४ जोजन ४ कला। तेहनी बाहा ३३७६७ जोजन ७ कला। तेहनी जीवा मध्य भाग में १००००० लाख जोजन। तेहनी धनुपृष्ट बेहुं पासे १५८११३ जोजन १६ कला जाभेरी। तेहनो शर च्यारूं पासे पचास पचास हजार जोजन।

५ देवकुरु क्षेत्र को विषमपणो ११८४२ जोजन २ कला। तेहनी बाहा नथी। तेहनी जीवा ५३००० जोजन। तेहनी धनुपृष्ट ६०४१८ जोजन १२ कला। तेहनो शर ११८४२ जोजन २ कला।

भरत क्षेत्र जिम एरवर्त क्षेत्र जाणवो। हेमवय जिम अरुणवय क्षेत्र जाणवो। हरिवास जिम रम्यकवास क्षेत्र जाणवो। देवकुरु जिम उत्तरकुरु क्षेत्र

जाणवो। पूर्व महाविदेह जिम पश्चिम महाविदेह जाणवो।

चौथो पर्वत द्वार।

जम्बुद्वीप में २६९ पर्वत शाश्वता। ६ वर्षधर पर्वत मेरु ७ चित्त ८ विचित्त ९ जमक १० समक ११ दोय सौ कञ्चन गिरि २११ च्यार गजदन्ता सोलह वख रा पर्वत, चौतीस लम्बा वैताढ़, च्यार वाटला वैताढ़, सर्व २६९ पर्वत हुवा।

१ चूल हिमवन्त, शिखरी ए दोय पर्वत १००० जोजन ऊंचा, पचीस जोजन जमीन में ऊंडा। तेहनो विषमपणो १०५२ जोजन १२ कला। तेहनी बाहा ५३५० जोजन १५॥ कला। तेहनी जीवा २४९३२ जोजन ॥ कला। तेहनी धनुपृष्ट २५२३० जोजन ४ कला। तेहनो शर १५७८ जोजन १८ कला।

२ महा हिमवन्त और रूपी ए दोय पर्वत २०० जोजन ऊंचा, ५० जोजन जमीन में ऊंडा। तेहनो विषमपणो ४२१० जोजन १० कला। तेहनी बाह ९२७६ जोजन ९ कला। तेहनी जीवा ५३९३१ जोजन ६ कला। तेहनी धनुपृष्ट ५७२९३ जोजन १० कला। तेहनो शर ७८९४ जोजन १४ कला।

३ निषढ़ और नीलवन्त ए दोय पर्वत ४०० जोजन ऊंचा, १०० जोजन जमीन में ऊंडा। तेहनो विष-मपणो १६८४२ जोजन २ कला। तेहनी बाहा २०१६५ जोजन २॥ कला। तेहनी जीवा ६४१५६ जोजन २ कला। तेहनी धनुपृष्ट १२४३४६ जोजन ६ कला। तेहनो शर ३३१५७ जोजन १७ कला।

४ मेरू पर्वत जम्बुद्वीप के मध्य भाग में एक लाख जोजन को। तिण में १००० जोजन जमीन में ऊंडो। ९९००० जोजन ऊंचो। जमीन में १००० जोजन छै तिण में २५० जोजन पृथ्वीमय २५० पृथ्वी हीरा मय २५० कठिन पृथ्वी मय २५० वज्र हीरामय। ९९००० जोजन ऊपर छै तिण में १५७५० जोजन स्फटिक रत्नमय १५७५० अंक-रत्न मय १५७५० रूपा रत्नमय १५७५० पीला सुवर्ण मय ३६००० जोजन जम्बु नद (राता) सुवर्ण मय। तेह मेरू पर्वत नीचे थकी १००९० जोजन, एक जोजन का इग्यारिया १० भाग को लम्बो पहोलो, सम्भु-तले पासे १०००० जोजन लम्बो पहोलो। ऊपर इग्यारह जोजन लारै १ जोजन घटतां घटतां मेरू नो शिखर १००० जोजन लम्बो पहोलो तिगुणी जाझेरी परिधि पद्मवर वेदिका वनखण्ड करी सहित।

ते मेरू पर्वत में च्यार वनखण्ड छै तेहना नाम— भद्रशाल वन १ नन्दन वन २ सोमनस वन ३ पंडग वन ४ ।

१ भद्रशाल वन सम्भुतले पासे बाइस बाइस हजार जोजन पूर्व पश्चिम लम्बो २५०-२५० जोजन उत्तर दक्षिण लम्बो पद्मवर वेदिका वनखण्ड सहित शोभनीक छै। तेह भद्रशाल वनमें मेरू पर्वत सुं ५०-५० जोजन च्यार दिशा में जावै तब च्यार सिद्धायतन छै ५० जोजन लम्बा, २५ जोजन चौड़ा, ३६ जोजन ऊंचा। अनेक थम्भा, तोरण, पुतल्यां करी शोभायमान छै। तेह सिद्धायतन के तीन तीन दरवाजा छै। ८ जोजन ऊंचा ४ जोजन चौड़ा। तिणरे मध्य भाग में एक मणिपीठिका ८ जोजन लम्बी पहोली च्यार जोजन की जाडी सर्व रत्न मय छै। तिण मणि पीठिका ऊपर देवछन्दो गुम्भारो छै ८ जोजन लम्बो पहोलो ८ जोजन जाभेरो ऊंचो। तिण में शाश्वती जिन प्रतिमा छै। मेरूपर्वत सुं ५०-५० जोजन च्यार विदिशा में जावै जठै च्यार महलायत छै। दक्षिण का दोय महल शक्रेन्द्र महाराजकी हद में छै। उत्तरका २ महल

ईशान इन्द्र की हद में छै। च्यारूं महलायत २५० जोजन लम्बा पहोला ५०० जोजन का ऊंचा छै। एक एक महल के च्यारूं दिशा में ४-४ बावड्यां छै। तिणरा नाम ईशाण कोण में बावड़ी ४ पद्मा १ पद्मप्रभा २ कुमुदा ३ कुमुद प्रभा ४। अग्नि कोण में बावड़ी ४ उत्पला १ गुम्मा २ निलना ३ उज्वला ४। वायुकोण में बावड़ी ४ लिंगा १ भिंग नाभा २ अंजना ३ अंजन प्रभा ४ नैऋत्य कोण में बावड़ी ४ श्री-कन्ता १ श्रीचन्दा २ श्रीमहिता ३ श्रीनलिता ४। ए सोलेंही बावड़ी ५० जोजन लम्बी २५ जोजन चौड़ी १० जोजन ऊंड़ी। अनेक कमलां सौ पांखड़ियां, सहस पांखड़ियां कमलां करी शोभा-यमान छै। भद्रशाल बन में च्यार विदिशा में ८ हस्ती कूट छै।५०० जोजन ऊंची ५०० जोजन नीची लंबी पहोली ३७५ जोजन बीच में लंबी पहोली २५० जोजन ऊपर लंबी पहोली तिगुणी जाझेरी परिधि गौपूंछ संठाण छै।

२ नन्दन बन, भद्रशाल बन सुं ५०० जोजन ऊंचो जावै जठै नन्दन बन छै। ५०० जोजन चौड़ो मेरू पर्वत के चौफेर चक्रवाल पहोलो पदमवर

वेदिका बनखण्ड करी सहित छै। सिद्धायतन, महलायत, बावड़ी भद्रशाल बननी परै १ बल-कूट १००० जोजन ऊंची १००० मूलमें लम्बी पहोली ७५० जोजन बीचमें लम्बी पहोली ५०० जोजन ऊपर में लम्बी पहोली तिगुणी जाझेरी परिधि, बलनामे देवता बसै छै।

३ सोमनसबन, नन्दनबनके तलासे ६२५०० जोजन ऊंचो जावै जठै सोमनस नाम बन छै। ५०० जोजन चौड़ा मेरूने चौफेर चक्रवाल पहोलो सिद्धायतन महलायत बावड़ी भद्रशाल बननी परै, कूट नथी।

४ पंडुक बन, सोमनस बनसुं ३६००० जोजन ऊपर जावै जठे मेरू पर्वतके शिखर ऊपर छै। ४९४ जोजन चौड़ा चूलकाने चौफेर चक्रवाल पहोलो सिद्धायतन महलायत बावड़ी भद्रशाल बननी परै। कूट नथी। च्यार मोटी शिला छै तेहना नाम पूर्व पंडु शिला १ दक्षिण पंडु कमल शिला २ पश्चिम रक्तशिला ३ उत्तर रक्त कमल शिला ४ च्यारूं शिला ५०० जोजन लम्बी २५० जोजन पहोली ४ जोजन की जाडी। अर्द्ध चन्द्रके संठाण सर्व सोनामय छै। पूर्व पश्चिम की शिला ऊपर

दो-दो सिंहासन छै। उत्तर दक्षिण की शिलापर १-१ सिंहासन छै। छव सिंहासन ५०० धनुषका लम्बा २५० धनुष चौड़ा, तिण ऊपर श्रीतीर्थंकर देवका जन्म अभिषेक आदि महोछव चौष्ट इन्द्र मिलने करै छै।

५ मेरू पर्वत ऊपर एक मन्दिर चुलिका छै। ४० जोजन की ऊंची १२ जोजन मूलमें लम्बी पहोली ८ जोजन मध्यमें लम्बी पहोली ४ जोजन ऊपर में लंबी पहोली तिगुणी जाझेरी परिधि तिण ऊपर घणो रमणीक भूमिभाग छै। तिणरै मध्य भागमें १ महलायत छै १ कोसकी लम्बी ॥ कोसकी पहोली देशूणा १ कोसकी ऊंची अनेक थम्भाकरी शोभायमान छै। तिणमें शाश्वती जिन प्रतिमा छै।

५ चित्त. विचित्त दोय पर्वत देवकुरु क्षेत्रमें निषढ़ पर्वत सुं ८३४ जोजन एक जोजन का सातीया ४ भाग उत्तर जावै जठै सीतोदा नदीके वेहुं पासे छै। इमही जमक, समक ए दोय पर्वत उत्तर कुरुक्षेत्रमें नीलवन्त पर्वत सुं ८३४ जोजन एक जोजनका सातीया ४ भाग दक्षिण सीता नदी के वेहुं पासे छै। ए च्यारूं पर्वत १०००

जोजन का ऊंचा २५० जोजन जमीन में ऊंडा १००० जोजन मूलमें लम्बा पहोला ७५० जोजन मध्यमें लम्बा पहोला ५०० जोजन ऊपरमें लम्बा पहोला तिगुणी जाझी परिधि। पर्वत नामे देवता बसै छै।

६ गजदन्ता पर्वत, निषढ नीलवन्त पर्वतसुं नीकल्यां मेरू पर्वत के आंगुलके असंख्यातमें भाग अलगा रह्यां तेहना नाम गंधमादन, मालवन्त, विद्युत्प्रभ, सोमनस। च्यारूं पर्वत ३०२०६ जोजन ६ कला लम्बा निषढ नीलवन्त के पासे ४०० जोजन ऊंचा १०० जोजन जमीमें ऊंडा ५०० जोजन पहोला मेरूने पासे ५०० जोजन ऊंचा १२५ जोजन जमीमें ऊंडा, आंगुल के असंख्यातमें भाग पहोला हाथी दांतके संठाण।

७ दोय सौ कंचनगिरि देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्र में ५-५ द्रह छै। एक-एक द्रहने बेहुं पासे १०-१० कञ्चन गिरि पर्वत छै। सर्व २०० कञ्चनगिरि १०० जोजन ऊंचा २५ जोजन धरतीमें ऊंडा १०० जोजन मूलमें लंबा पहोला ७५ जोजन मध्यमें लंबा पहोला ५० जोजन ऊपर में लंबा पहोला तिगुणी जाझेरी परिधि। पर्वत नामे देवता बसै छैं।

८ सोलै वखारा पर्वत महा विदेह क्षेत्रमें तेहना नाम—

चित्र १ विचित्र २ निलन ३ एकसेल ४ त्रिकूट ५ वेसमण ६ अंजन ७ मयंजन ८ अंकाभाई ६ पवमा- बाई १० आसीविष ११ सुहावह १२ चन्द्र १३ सूर्य १४ नाग १५ देव १६। सोलह वखारा पर्वत निषढ नीलवन्त सूं निकल्या सीतासीतोदा नदीने पासे रह्या सोलैही पर्वत १६५६२ जोजन लंबा निषढ नीलवन्तने पासे ४०० जोजन ऊंचा १०० जोजन जमीन में ऊंडा ५०० जोजन का पहोला सीता सीतोदा पासे ५०० जोजन ऊंचा १२५ जोजन धरतीमें ऊंडा ५०० जोजन का पहोला।

६ चौतीस लंबा वैताढ़ पर्वत महाविदेह क्षेत्र में ३२ विजय छै तिण में ३२ वैताढ़ भरत क्षेत्रमें १ वैताढ़ एरवर्त क्षेत्रमें १ वैताढ़। तिणमें भरत एरवर्त क्षेत्र का वैताढ़ २५ जोजन ऊंचा ६ जोजन धरती में ऊंडा ५० जोजन पहोल पणै। तेहनी बाहा ४८८ जोजन १६॥ कला तेहनी जीवा १०७२० जोजन १२ कला तेहनी धनुपृष्ठ १०७४२ जोजन १५ कला तेहनो शर २८८ जोजन ३ कला बतीस महाविदेह क्षेत्रका वैताढ़ २२१२ जोजन एक जोजन का आठीया ७ भाग लंबा, २५ जोजन ऊंचा ६। जोजन धरती में ऊंडा ५० जोजन का पहोला पलङ्ग के

आकार। चौतीसुं वैताढ़ में २-२ गुफा छै। तमस्र गुफा, खण्डप्रभा गुफा। द्रोनूं गुफा ५० जोजन लंबी १२ जोजन पहोली ८ जोजन ऊंची। तिण गुफा में २-२ नदियां हैं उमंगजला, निगम जला। गुफा के दरवाजे सुं २१ जोजन जावै जठै उमंग जला नदी छै। १२ जोजन लंबी ३ जोजन पहोली। तिण में कूड़ो, कचरो, कलेवर पड़ जावै, तो तीन भुवाली देकर बाहर फेंक देवै। पाणी निरमलो रहवै। तिहां थी २ जोजन आगै जावै जठै निगमजला नदी आवै १२ जोजन लम्बी ३ जोजन पहोली। तिण में कूड़ो, कचरो, कलेवर तीन भुवाली देकर भीतर बैठा लेवै। तिण नदी सुं २१ जोजन जावै जणा गुफा को उत्तर दरवाजो आवै। ते गुफा में कांगणी रत्न ४६ मांडला चक्रवर्ती करै तिणरो उज्वालो चक्रवर्ती को राज रहवै जठे तांई रहवे।

१० वाटला वेताढ़ च्यार हेमवय अरुणवय हरिवास रम्यकवास क्षेत्र में। तेहना नाम—शब्दापाती १ विकटापाती २ गंधापाती ३ मालवन्त ४। च्यारूं पर्वत १००० जोजन ऊंचा २५० जोजन धरती में ऊंडा १००० जोजन लंबा पहोला। पायली ने संठाण। पर्वत नामे देवता बसै छै।

पांचवों कूंट द्वार ।

जम्बुद्वीप में ६१ पर्वत ऊपर ४६७ कूंट ते किम ? चौतीस वैताढ़, निषढ़, नीलवन्त, विद्युत्प्रभ, मालवन्त, नन्दन वन ए ३६ पर्वत ऊपर ६-६ कूंट छै ३५१ कूंट हुई। चूल हेमवन्त ऊपर ११ शिखरी पर्वत ऊपर ११ महा हेमवन्त ऊपर ८ रूपी पर्वत ऊपर ८ गन्ध मादन ऊपर ७ सोमनस गजदन्ता पर्वत ऊपर ७ सोलै बखारा पर्वत ऊपर ४-४ कूंट ६४ कूंट। सर्व मिली ६१ पर्वत ऊपर ४६७ कूंट छै। धरती ऊपर कूंट ५८ भद्रशाल वन में हस्ती कूंट ८ देवकुरु क्षेत्र में कूंट ८ उत्तरकुरु क्षेत्र में कूंट ८ चौतीस विजय में ऋषभ कूंट ३४ सर्व मिली ५२५ कूंट जम्बुद्वीप में छै।

१ चौतीस वैताढ़ की कूंट ३०६ ते २५ गाऊ ऊंची २५ गाऊ मूल में पहोली १८॥। गाऊ मध्य में पहोली १२॥ गाऊ ऊपर में पहोली। तिगुणी जाभी परिधि, गौ पूंछ संठाण।

२. गजदन्ता की कूंट २ नन्दन वन की कूंट १ ए ३ कूंट १००० जोजन ऊंची १००० जोजन मूल में लम्बी पहोली ७५० जोजन मध्य में लम्बी पहोली ५०० जोजन ऊपर में लम्बी पहोली। तिगुणी जाझेरी परिधि।

३ शेष पर्वत ऊपर १५८ कूंट ५०० जोजन ऊंची ५०० जोजन मूल में लम्बी पहोली ३७५ मध्य में लम्बी पहोली २५० जोजन ऊपर में लंबी पहोली तिगुणी जाझेरी परिधि छै।

४ धरती पर कूंट ५८ तिणमें भद्रशाल बन की ८ हस्ती कूंट ५०० जोजन ऊंची ५०० जोजन मूल में लम्बी पहोली ३७५ जोजन मध्य में लम्बी पहोली २५० जोजन ऊपर में पहोली। तिगुणी जाझेरी परिधि चौतीस ऋषभ कूंट ३४ जम्बु पीठिका ८. सामली पीठिका ८ ए ५० कूंट ८ जोजन ऊंची ८ जोजन मूलमें लम्बी पहोली, ६ जोजन मध्य में लंबी पहोली ४ जोजन ऊपर लम्बी पहोली तिगुणी जाझेरी परिधि। मतान्तर ८ जोजन ऊंची १२ जोजन मूल में लम्बी पहोली ८ जोजन मध्य में लम्बी पहोली ४ जोजन ऊपर में लम्बी पहोली। तिगुणी जाझेरी परिधि।

छट्ठो तीर्थ द्वार।

जम्बुद्वीप में १०२ तीर्थ छै। चक्रवर्त की ३४ विजय एक एक विजय में ३-३ तीर्थ तेहना नाम मागध, वरदाम, प्रभास। तीनूं तीर्थ १२ जोजन लम्बा ६ जोजन का चौड़ा तीर्थ नामे देवता बसै छै।

सातवों श्रेणी द्वार ।

जम्बुद्वीप में १३६ श्रेणी ते किम ? चौतीस वैताढ़ पर्वत ऊपर ४-४ श्रेणी छै।

१ भरत क्षेत्र को वैताढ़ २५ जोजन ऊंचो छै। तिण पर्वत ऊपर धरती सुं १० जोजन ऊंचो जावै जठे वेहुं पासे २ विद्याधरनी श्रेणी १० जोजन चौड़ी वैताढ़ प्रमाण लाम्बी तिहां नमि विनमि विद्याधर वसै छै। वसवाना नगर दक्षिण श्रेणी में ५० उत्तर में ६० तिहां थकी १० जोजन ऊंचो जावै जठे वेहुं पासे २ अभियोगी देवता नी श्रेणी छै। १० जोजन चौड़ी वैताढ़ प्रमाण लम्बी। तिहां अभियोगी देवता वसै छै। वसवाना नगर दक्षिण श्रेणी में ५० उत्तर श्रेणी में ६०

२ एरवर्त क्षेत्र को वैताढ़ इमहिज नगर उत्तर श्रेणी ५० दक्षिण श्रेणी ६०।

३ महाविदेह का वैताढ़ इमहिज। नगर वेहुं पासे ५५-५५।

आठवों विजय द्वार ।

जम्बुद्वीप में ३४ विजय ३४ नगरी ३४ राजधानी ३४ वैताढ़ ३४ तमस गुफा ३४ खण्ड प्रभा गुफा ३४

नटमाली देवता ३४ कृतमाली देवता ३४ ऋषभ कूंट । ते ऋषभकूंट उत्तर भरत के बिचले खण्ड में म्लेछां के मध्य भाग में छै । तिहां चक्रवर्ती आपको नांव लिखै छे ।

नवमों द्रह द्वार ।

जम्बुद्वीप में १६ द्रह छै । छंवं पर्वतां ऊपर ६ द्रह देव कुरुक्षेत्र में ५ द्रह उत्तर कुरुक्षेत्र में ५ द्रह ।

१ चूल हेमवन्त पर्वत ऊपर पद्म द्रह पूर्व पश्चिम १००० जोजन लम्बी उत्तर दक्षिण ५०० जोजन पहोली १० जोजन ऊंडी छै । तिणमें श्री देवी बसै छै बसना कमल १२०५०१२० कमल छै बीचे १ मोटो कमल छै । तेहने चौफेर १०८ भंडारी देवतां ना १०८ कमल छै दूजी परिधिमें च्यार मेंहतर का देव्यां का ४ कमल सात अनि कटक के देवता का ७ कमल च्यार हजार सामानीक देवां का ४००० कमल छै । ८००० अभिन्तर परिषदा के देवां का ८००० कमल १०००० मध्य परिषदा के देवां का १०००० कमल १२००० बाहर की परिषदा के देवां का १२००० कमल सर्व मिली ३४०११ कमल दूजी परिधि में छै तीजी परिधि में १६००० आत्म रक्षक देवों का १६००० कमल छै तीन मोटा कोट छै ३२०००००

कमलानो अभिन्तर कोट ४०००००० कमलानो मध्यम कोट ४८००००० कमलां ना बाह्य कोट सरब मिल १२०५०१२० कमल छै कमलां नो मान बीचे १ मोटो कमल छै ते कमल १ जोजन लम्बो पहोलो आधा जोजन जाडो १० जोजन पाणीमें ऊंडो २ कोस पाणी सुं ऊंचो तिणरै मध्य भागमें १ कनीका आधा जोजन की लम्बी पहोली १ गाऊकी जाड़ी तिण ऊपर घणो रमणीक भूमि भाग छै। तिणरै मध्य भागमें १ महलायत छै १ कोस लम्बी आधा कोस पहोली देशूणी १ कोस ऊंची अनेक थम्भा करी शोभायमान छै। तिणमें श्रीदेवी बसै छै। बारला कमलको मान परिधि धर परिधि आधा आधा जानना, पानीमें ऊंडा सरीषा जानना।

२ शिखरी पर्बत ऊपर पुंडरिक द्रह, पद्मद्रह जिम जाणवो लच्छी देवी बसै छै।

३ महाहेमवन्त पर्बत ऊपर महा पद्मद्रह रूपी पर्वत ऊपर महापुण्डरिक द्रह ए २ द्रह २००० जोजन पूर्व पश्चिम लम्बा १००० उत्तर दक्षिण पहोला १० जोजन ऊंडी महापद्म द्रहमें हरिदेवी महापुण्डरिक द्रहमें बुद्धि देवी बसै छै। बसवाना कमल १२०५०१२० कमलां नो मान श्रीदेवी थकी दूणा

दूणा जाणवा पाणीमें ऊंडा ऊंचा सरीषा जाणवा।

४ निषढ पर्वत ऊपर तिगछ द्रह नीलवन्त पर्वत ऊपर केशरी द्रह ए २ द्रह ४००० जोजन पूर्व पश्चिम लम्बा २००० जोजन उत्तर दक्षिण पहोला १० जोजन ऊंडा तिगछ द्रह में धृती देवी केशरी द्रहमें कीर्त्ति देवी बसै छै। बसवाना कमल १२०५०१२० कमल छे। कमलांको मान हरिदेवी थी दूणो दूणो जाणवो। पाणीमें ऊंडा ऊंचा सरीषा जाणवा।

५ देवकुरु क्षेत्रमें ५ द्रह छे तेहना नाम निषढ द्रह, देवकुरु द्रह, सुरद्रह, सुलेसद्रह, विद्युत्प्रभ द्रह, उत्तर कुरु-क्षेत्रमें ५ द्रह तेहना नाम नीलवन्त द्रह, उत्तर कुरु द्रह, चंद्रद्रह. एरवर्त द्रह, मालवन्त द्रह, ए १० द्रह १००० जोजन लम्बा ५०० जोजन पहोला १० जोजन ऊंडा द्रह नामे देवता बसै छै बसवाना कमल १२०५०१२० कमल कमलानो मान श्री देवीनी परें जांणवो।

द्रहकों सलीला द्वार।

जम्बुद्वीपमें १४५६०९० नदी शाश्वती।

१ भरत क्षेत्रमें गङ्गा सिंधु ये २ नदी चूलहेमवंत पर्वत का पद्म द्रहसे नीकली एरवर्त क्षेत्रमें रक्ता

रक्तवती ए २ नदी शिखरी पर्वतकी पुण्डरिक द्रह सुं नीकली। नदी नावें ४ कुण्ड १० जोजनका लम्बा पहोला १० जोजन का ऊंडा। तिणमें १ द्वीपो ८ जोजन लम्बो पहोलो १० जोजन ऊंडो २ कोस ऊंचो तिण ऊपर घणो रमणीक भूमि भाग छै तिणरे मध्य भागमें १ महलायत छै १ कोस लम्बी आधा कोस पहोली देशूणी १ कोस ऊंची तिणमें नदी नामे देवी परिवार सहित वसै छै ते नदी नीकलती ६। जोजन पहोली आधा गाऊ ऊंडी समुद्रमें मिली जठै ६२॥ जोजन पहोली १। जोजन ऊंडी १४०००-१४००० नदियां के परिवार सुं लूण समुद्रमें मिली।

२ रोहिता रोहितंसा ये दो नदी हेमवय क्षेत्रमें सोवन कला रूपकला ये २ नदी अरुणवय क्षेत्रमें। रोहिता चूल हेमवन्त पर्वत के पदुम द्रह सुं नीकली। रोहितंसा महा हेमवन्त पर्बत के महा पदुम द्रह सुं नीकली। सोवनकला शिखरी पर्बत के पुण्डरिक द्रह सुं नीकली। रूपकला रूपी पर्वत के महा पुण्डरिक द्रहसुं नीकली। नदी नावें ४ कुंड १२० जोजन लम्बा पहोला १० जोजन ऊंडा तिणरे मध्यमें १ द्वीपो १६ जोजन लम्बो पहोलो १० जोजन ऊंडो

२ कोस ऊंचो। तिण ऊपर घणो रमणीक भूमि भाग छै। तिणरै मध्य भागमें १ महलायत छै १ कोस लम्बी आधा कोस पहोली देशूणी १ कोस ऊंची। तिणमें नदी नामे देवी परिवार सहित बसै छै। ते नदी नीकलती १२॥ जोजन पहोली १ गाऊ ऊंडी समुद्र में मिली जठै १२५ जोजन पहोली २॥ जोजन ऊंडी २८०००-२८००० नदियांके परिवारसुं परवरी लूण समुद्रमें जाय मिली।

३ हरिकन्ता हरि सलीला ए २ नदी हरिवास क्षेत्र में नरकन्ता नारीकन्ता ए २ नदी रम्यकवास क्षेत्र में हरिकन्ता महा हेमवन्त पर्वत के महा पद्मद्रह सुं नीकली। हरिसलीला निषद पर्वत के तिगच्छ द्रह सुं नीकली। नरकन्ता रूपी पर्वत के महा पुण्डरिक द्रह सुं नीकली। नारीकन्ता नीलवन्त पर्वत के केशरी द्रह सुं नीकली। नदी नांव ४ कुण्ड २४० जोजन लम्बा पहोला १० जोजन ऊंडा तिण में १ द्वीपो ३२ जोजन लम्बो पहोलो १० जोजन ऊंडो २ कोस ऊंचो तिण ऊपर घणो रमणीक भूमि भाग छै तिणरे मध्य भाग में १ महलायत छै १ कोस लम्बी आधा कोस पहोली देश ऊंणी १ कोस ऊंची तिण में नदी नामे देवी परिवार सहित वसे छै। ते नदी

नीकलती २५ जोजन पहोली २ गाऊ ऊंडी समुद्र में मिली जठै २५० जोजन पहोली ५ जोजन ऊंडी ५६०००-५६००० नदियां के परिवार सु परवरी लूण समुद्र में मिली।

४ सीता सीतोदा दोय मोटी नदी महाविदेह क्षेत्र में सीतोदा निषढ़ पर्वत का तिगच्छ द्रह सुं नीकली। सीता नीलवन्त पर्वत के केशरी द्रह सुं नीकली। नदी नाम २ कुण्ड ४८० जोजन लम्बा पहोला १० जोजन ऊंडा तिण में १ द्वीपो ६४ जोजन लम्बो पहोलो १० जोजन ऊंडो २ कोस पाणी सुं ऊंचो तिण ऊपर घणो रमणीक भूमि भाग छै तिणारे मध्य भाग में १ महलायत छै १ कोस लम्बी आधा कोस पहोली देशूणी १ कोस ऊंची तिण में नदी नामे देवी परिवार सहित बसे छै। ते नदी नीकलती ५० जोजन पहोली १ जोजन ऊंडी समुद्र में मिली जठै ५०० जोजन पहोली १० जोजन ऊंडी ५३२०००-५३२००० नदियां के परिवार सुं परवरी लूण समुद्र में मिलो।

१ ८४००० नदी देवकुरु क्षेत्र में मिली।

२ ८४००० नदी उत्तरकुरु क्षेत्र में मिली।

३ १६ गंगा १६ सिन्धु १६ रक्ता १६ रक्तवती ए

६४ नदी महाविदेह क्षेत्र में निषढ़ नीलवन्त के पास ६४ कुण्ड छै तेह थकी नीकली तेह ६४ कुण्ड ६० जोजन लम्बा पहोला १० जोजन ऊंडा तिण रै मध्य भाग में १ द्वीपो ८ जोजन लम्बो पहोलो १० जोजन ऊंडो २ कोस ऊंचो तिण ऊपर घणो समो रमणीक भूमि भाग छै तिणरे मध्य भाग में १ महलायत छै १ कोस लम्बी आधा कोस पहोली देशूणी १ कोस ऊंची तिण में नदी नामे देवी परिवार सहित वसे छै तिण में सुं नदी नीकली छै। ते नदी नीकलती ६। जोजन पहोली आधा गाऊ ऊंडी १६५९२ जोजन २ कला लम्बी सीता सीतोदा में मिली जठै ६२॥ जोजन पहोली १। जोजन ऊंडी १४०९०-१४००० हजार नदियां के परिवार सुं परवरी सीता सीतोदा में मिली।

५ बारै अन्तर नदी महाविदेहक्षेत्र में निषढ़ नीलवन्त पर्वत पासे कुण्ड थकी नीकली ते कुण्ड १२० जोजन को लम्बो पहोलो १० जोजन को ऊंडो तिण में १ द्वीपो १६ जोजन लम्बो पहोलो १० जोजन ऊंडो २ कोस ऊंचो तिण ऊपर घणो समो रमणीक भूमि भाग छै तिणरे मध्य भाग में १ महलायत १ कोस

लम्बी आधा कोस पहोली देसूणी १ कोस ऊंची तिण में नदी नावें देवी परिवार सहित बसे छै। ते नदी नीकलती १२५ जोजन पहोली २॥ जोजन की ऊंडी १६५६२ जोजन २ कला लम्बी सीता सीतोदा में मिली।

पूर्व पश्चिम	लाख जोजन मान।
मेरू पर्वत	१००००
भद्रशाल वन दोनों तरफा	४४०००
८ बखारा पर्वत	
५०० जोजन	४०००
६ अन्तर नदी १२५ जोजन	७५०
१६ विजय २२१२ जोजन	
१ जोजनका आठीया भाग ७	३५४०६
सीतोदा मुखबन	२९२२
सीता मुखवन	२९२२
	१०००००

उत्तर दक्षिणं लाख जोजन मान।	
भरतक्षेत्र	जोजन कला
	५२६—६
चूल हेमवन्त पर्वत	१०५२—१२
हेमवय क्षेत्र	२१०५—५
महा हेमवन्त पर्वत	४२१०—१०
हरिवास क्षेत्र	८४२१—१
निषढ़ पर्वत	१६८४२—२
महा विदेहक्षेत्र	३३६८४—४
नीलवन्त पर्वत	१६८४२—२
रम्यकवास क्षेत्र	८४२१—१
रूपी पर्वत	४२१०—१०
अरुणवयक्षेत्र	२१०५—५
शिखरी पर्वत	१०५२—१२
ररवर्त क्षेत्र	५२६—६
	१०००००

जीवके १४ भेदों की अल्पाबोहत ।

१ जीव के तेरहमें भेदवाला सर्व सूं थोड़ा ।
२ तेहथी जीवके १४में भेदवाला असंख्यातगुणा ।
३ तेहथी जीवके १०में भेदवाला संख्यात गुणा ।
४ तेहथी जीवके १२में भेदवाला विशेषाईया ।
५ तेहथी जीवके ६ठे भेदवाला विशेषाईया ।
६ तेहथी जीवके ८में भेदवाला विशेषाईया ।
७ तेहथी जीवके ११में भेदवाला असंख्यात गुणा ।
८ तेहथी जीवके ६में भेदवाला विशेषाईया ।
९ तेहथी जीवके ७में भेदवाला विशेषाईया ।
१० तेहथी जीवके ५में भेदवाला विशेषाईया ।
११ तेहजी जीवके ४थे भेदवाला अनन्तगुणा ।
१२ तेहथी जीवके ३जे भेदवाला असंख्यात गुणा ।
१३ तेहथी जीवके १ले भेदवाला असंख्यात गुणा ।
१४ तेहथी जीवके २जे भेदवाला संख्यात गुणा ।